अध्याय 4

अक़ीदा (3)

अल्लाह तआला का संदेश

अल्लाह का आम संदेश

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٣٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٣٩

हमने हुक्म दिया कि तुम यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर तुम को मेरी जानिब से कोई हिदायत पहुँचे तो जो कोई मेरी हिदायत पर चलता रहेगा, तो उसको ना कोई .ख़ौफ़ होगा और न कोई ग़म व रंज। और जो कुफ्र करेंगे और हमारी आयात को झूठ जानेंगे, सो वो ही दोज़ख़ी होंगे और उसमें हमेशा पड़े रहेंगे। (2:38-39)

और देखें:(7:35-36; 20:123-126)

जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम और उनकी पत्नी हव्वा को जन्नत से बे दख़ल करने और ज़मीन पर इंसानी जीवन शुरू करने का फ़ैसला किया, जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी क़ियामत तक चलता रहेगा, और इंसान पर इस ज़मीन को उसके सभी संसाधनों व सम्भावनाओं के साथ तरक़्क़ी देने तथा ख़ुद इंसानी जीवन को व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर बहतर बनाने के लिए महनत व संघर्ष करने की ज़िम्मेदारी डाली, तो इसके लिए अल्लाह ने वायदा किया कि उसकी तरफ़ से मार्गदर्शन और सीख देने की व्यवस्था रहेगी जिसकी मदद से इंसान सामने आने वाली दिक़्क़तों को दूर करे और अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करे। यह अल्लाह की तरफ़ से एक के बाद एक लगातार आने वाले उन पैग़ामों की तरफ़ साफ़ इशारा है जो इंसानों के मार्गदर्शन के लिए उनके पास आता रहेगा ताकि उनके अन्दर सदाचारिता और सदकर्म की भावना को उभरने और विक्सित होने का मौक़ा मिलता रहे जो कि उनके अन्दर डाली गयी हैं और जिनके साथ वो कमज़ोरियाँ भी लगी हुई हैं जिनसे बचने की ज़िम्मेदारी ख़ुद इंसान पर ही है (91:8) और शैतान जिनका शोषण करता रहता है। इंसान जब भी अल्लाह के संदेश पर अमल करेगा जो पैग़म्बरों के द्वारा या आसमानी ग्रन्थों के माध्यम से इंसानों के लिए आया है तो इंसान को पूर्व जीवन का कोई दुख और आगामी जीवन का कोई डर न होगा (2:38)। वह न तो भटकेगा और न भौतिक, या आत्मिक और मानसिक व नैतिक पीड़ा से ग्रस्त होगा (20:123)।

जो लोग अल्लाह की हिदायत को नज़रअंदाज़ करते हैं और केवल अपने मानवीय विचारों व अनुमानों पर चलते हैं और शैतान के भटकावों में आ जाते हैं जो उनकी कमज़ोरियों से फ़ायदा उठाने में लगा रहता है वो इस जीवन में भौतिक और अध्यात्मिक रूप से कंगाल हो जाते हैं, और आख़िरत के जीवन में वो अपने कुकर्मों की सज़ा भुगतेंगे।

अल्लाह ने तो अपना वायदा पूरा कर दिया है और अपना पैग़ाम पहुंचाने वाले पैग़म्बरों के भेजा है जिनमें से कुछ के साथ अल्लाह के ग्रन्थ भी आए हैं जिन्हें किताब के रूप में या और किसी लिखित रूप में सुरक्षित किया गया ताकि उसका संदेश पैगम्बर के दुनिया से जाने के बाद भी सुरक्षित रहे। यह मुसलमानों का अक़ीदा है कि वो अल्लाह के सभी पिछले पैग़म्बरों के भी मानते हैं और उनमें से कुछ पर अल्लाह के जो ग्रन्थ उतरे उनपर भी विश्वास रखते हैं। मुसलमानों का ईमान है कि हज़रत आदम अल्लाह के पहले पैग़म्बर थे जिन्हें अल्लाह ने जन्नत में अपना पैग़ाम दिया और सम्भवतःधरती पर भी उनकी तरफ़ संदेश उतारा (देखें पिछला भाग ''मानव जाति'')। हज़रत आदम के बेटों की क़ुर्बानी जो अल्लाह के यहाँ स्वीकार होने के संदर्भ में उनके बीच झगड़े की वजह बन गयी थी, क़ुर्बानी की आसमानी शिक्षाओं की एक मिसाल है (5:27-31)।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

तुम कहो के हम अल्लाह पर यक़ीन लाए हैं और उस पर जो हमारे ऊपर उतरी है, और नीज़ उस पर जो इब्राहीम और इसमाईल, औ इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िली हुई हैं, और उस पर भी जो मूसा और ईसा पर उतरी हैं, और उस पर भी जो दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से मिली हैं, और हम उन सब रसूलों में कोई फ़र्क़ नहीं करते, और हम सब उसी एक ही ख़ुदा की इताअत करते हैं। (2:136)

(और देखें 3:84)

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۤ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से रसूल पर नाज़िल हुई है (यानी क़ुरआन) उस पर रसूल को और तमाम मोमिनीन को पूरा अक़ीदा है। सबके सब अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर अक़ीदा रखते हैं, कि हम अल्लाह के रसूलों में से किसी में तफ़रीक़ नहीं करते। और उन सब ने यही कहा

के हमने आपका कलाम सुना हम ने .ख़ुशी से इताअत की हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब! और आप ही की तरफ़ लौटना है। (2:285)

الَّذِیْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ مَنْ یَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَ
مَلٰٓىِٕكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا ﴿۱۳۶﴾

और जो इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा उससे हरगिज़ क़बूल किया जाएगा, और वो ही आख़िरत में नुक़सान उठाने वाला होगा। (3:185)

(और देखें 3:19)

क़ुरआन और पैग़म्बर साहब की शिक्षाओं के अनुसार, यह मुसलमानों की मौलिक आस्था है कि वो अल्लाह के उन तमाम पैग़म्बरों को मानते हैं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले दुनिया में आए थे, और इसी तरह क़ुरआन से पहले अवतरित होने वाले आसमानी ग्रन्थों पर भी ईमान रखते हैं (2:177,285; 4:136,149-151; और पैग़म्बर मुहम्मद सललल्लाहो अलैहि वसल्लम की वह हदीस जिसमें आप ने इस्लाम, ईमान और अहसान का अर्थ बताया, और जिसे हदीसों के संकलनकर्ता मुस्लिम, अबुदाऊद, तिरमिज़ी और नसई ने बयान किया है)। इस्लाम का पैग़ाम अल्लाह के पिछले पैग़ामों का सिलसिला और उसकी पूर्ति है और मुसलमानों की आस्था में यह बात शामिल है कि वो इंसानियत के नाम अल्लाह के पैग़ाम के सभी माध्यमों पर ईमान रखें और उनमें कोई भेद न करें, हालांकि अल्लाह के नज़दीक उसके पैग़म्बरों की वरिष्ठता और समीपता के दर्जे अलग अलग हैं। फिर भी सभी पैग़म्बरों की शिक्षाओं का निचोड़ एक ही है और वह यह कि इंसान पूरी तरह अल्लाह के आगे समर्पित हो जाए और उसकी हिदायत को पूरी तरह अपना ले। इस लिहाज़ से इस्लाम जिसका मतलब अल्लाह के आगे ख़ुद को समर्पित करना है, अपने व्यापक अर्थों में केवल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं का नाम ही नहीं है, बल्कि उन मौलिक आस्थाओं का नाम है जो पूरे इंसानी इतिहास में पैग़म्बरों के माध्यम से इंसानों को सिखाई जाती रही हैं।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ
الْكِتٰبِ الَّذِیْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ الْكِتٰبِ
الَّذِیْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ مَنْ یَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَ
مَلٰٓىِٕكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِیْدًا ﴿۱۳۶﴾

मोमिनों! तुम अल्लाह पर पूरा पूरा यक़ीन रखो, और उसके रसूल पर, उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल की, और उन सब किताबों पर जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं और जो अल्लाह का इन्कार करे, उसके फ़रिश्तों का इन्कार करे, उसकी किताबों का, उसके रसूलों का, और रोज़ क़यामत का

इन्कार करे तो वो गुमराही में बड़ी दूर जा पड़ा है।

(4:136)

वास्तविक ईमान किसी जन्म प्रमाण पत्र से या पैतृक रूप से मिलने से प्राप्त नहीं हो सकता। जिन लोगों को इस तरीक़े से ईमान प्राप्त होता है उन्हें अपने ईमान को नया करने की ज़रूरत होती है ताकि वो इस विश्वास तक पहुंच जाएं कि वो ईमान की हक़ीक़त को जानते हैं और ईमान के तक़ाज़ों को स्वीकार करते हैं। अल्लाह पर, उसके पैग़म्बरों पर, उसकी किताबों पर, फ़ैसले के दिन पर और आख़िरत के जीवन पर विश्वास इस्लामी आस्था के मौलिक तत्व हैं जिन्हें मानसिक संतोष और अध्यात्मिक भावना से मज़बूत किया जा सकता है। ये अक़ीदे जोकि हमैशा से ही मौजूद रहे हैं, एक इंसानी ज़रूरत हैं और ये प्राथमिक युग के इंसानों के अन्दर मौजूद थे।

जैसा कि फ़रिश्तों का मामला है, जिनमें से जिब्राईल अलैहिसस्सलाम ख़ास है, कि वो एक माध्यम हैं जो पैग़म्बरों के पास आसमानी संदेश लेकर आते थे, इसलिए फ़रिश्तों पर ईमान को अल्लाह के पैग़ाम से अलग नहीं किया जा सकता (16:12, 102; 26:193-195; 42:52 और देखें 2:98,177,285; 4:136,149-151; 22:75; 35:1)। लेकिन फ़रिश्ते यद्यपि अल्लाह ने केवल अपने पैग़म्बरों के पास भेजे लेकिन आम इंसानों को अल्लाह का पैगाम उनके जैसे इंसानों के द्वारा ही पहुंचा (6:8-9; 50:111; 11:12; 15:7-8; 17:95; 25:7,21-22), कुछ फ़रिश्तों को इस दुनिया में इंसानों से सम्बंधित कुछ ख़ास ज़िम्मेदारिया दी गयी हैं (2:248; 3:42,45,124-125; 4:97; 6:93; 8:9,50; 11:69-70,81; 16:28,32; 32:11; 41:14; 97:4)। आख़िरत में इंसान फ़रिश्तों को देखेंगे क्योंकि उस समय जिस तरह पूरी सृष्टि बदल जाएगी उसी तरह खुद इंसान के अपने अन्दर बहुत से बदलाव आ जाएंगे (2:102; 6:111,158; 16:33; 43:77; 66:6; 67:8; 69:17; 74:31; 78:38; 89:22)।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا

जो अल्लाह के साथ और उसके रसूलों के साथ कुफ़्र करते हैं और चाहते हैं के अल्लाह और उसके रसूलों के दरमियान फ़र्क़ डालें, और कहते हैं के बाज़ों पर तो हम ईमान ले आए हैं और बाज़ के मुन्किर हैं और चाहते हैं के बैन बैन एक राह इख़्तियार करें। ये लोग यक़ीनन काफ़िर हैं, और काफ़िरों के लिए हमने अहानत आमेज़ अज़ाब तैयार कर रखा है। जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में फ़र्क़ नहीं

بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ
مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ
وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾

करते तो अल्लाह उनका जल्द ही उनका सवाब ज़रूर अता करेगा और अल्लाह तो है ही बड़ा बख़्शने वाला और रहमत करने वाला। (4:150-152)

जो कोई अल्लाह पर ईमान रखता है और व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में स्थिरता व संतुलन के लिए इस ईमान को ज़रूरी समझता है तो उसके लिए उचित यही है कि इंसानियत के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह के दिशा निर्देश को भी माने जो अल्लाह ने विभिन्न युगों में और विभिन्न स्थानों पर अपने ख़ास पैग़म्बरों के द्वारा इंसानों को दिया है। अलबत्ता, इस पैग़ाम की सच्चाई व प्रमाणित होने की जांच उसके अपने पैमाने के अनुसार की जा सकती है, इसमें किसी पूर्वाग्रह को आड़े नहीं आना चाहिए या किसी समुदाय के प्रति पहले से बनी हुई किसी धारणा की वजह से इस काम से खुद को नहीं रोकना चाहिए (3:72-76; 5:18-19; 6:155-157; 7:75-76,88; 11:27,91-93; 43:31-32,51-45)।

اِنَّاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ كَمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى نُوْحٍ وَّ
النَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰۤى
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ
الْاَسْبَاطِ وَ عِيْسٰى وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَ
هٰرُوْنَ وَ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۱۶۳﴾ وَ
رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ
رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ
مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿۱۶۴﴾ رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَ
مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ
حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ﴿۱۶۵﴾

हमने आपकी तरफ़ वही की जैसे नूह की तरफ़ की थी, और उनके बाद दूसरे नबियों की तरफ़ की थी, और हमने वही की थी इब्राहीम की तरफ़, इसमाईल की तरफ़, इसहाक़ की तरफ़, याक़ूब की तरफ़, और औलादे याक़ूब की तरफ़, और ईसा की तरफ़, अय्युब की तरफ़, यूनुस की तरफ़, हारून की तरफ़ और सुलेमान की तरफ़, और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी। और हमने ऐसे लोगों को रसूल बनाया जिनका हाल हम आपको पहले बात चुके हैं और ऐसे रसूल पैदा किये जिनका हाल हमने आपको नहीं बताया, और अल्लाह ने मूसा से ख़ास तौर पर कलाम कियाँ उन सब रसूलों को खुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा था, ताके लोगों को अल्लाह के सामने उन रसूलों के बाद कोई उज़्र बाक़ी ना रहे, और अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त और बड़ी बड़ी हिकमतों वाला है। (4:163-165)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا ؕ

हमने इसको हक़ के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। और कोई उम्मत नहीं

मगर उस में डराने वाला (ज़रूर) गुज़र चुका है। وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝
(35:24)

अल्लाह ने जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले दूसरे लोगों को अपना पैग़म्बर बनाने के लिए चुना था, जिनमें से हर एक पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुयायी ईमान रखते हैं, उसी तरह अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना पैग़म्बर बनाने के लिए चुना और उन पर अपना संदेश अवतरित किया जिसका प्रचार करने की ज़िम्मेदारी उन पर डाली गयी। इतिहास में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनके सही स्थान पर रखा जाना चाहिए, न उनकी वास्तविक हैसियत से कम और न ज़्यादा:"कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक इंसान हूँ (लेकिन) मेरी तरफ़ संदेश आता है कि तुम्हारा पूज्य (वही) एक पूज्य है"(18:110)। अल्लाह की तरफ़ से एक के बाद एक आने वाले संदेश विभिन्न स्थानों पर विभिन्न समुदायों की तरफ़ और विभिन्न संदेश्टाओं के द्वारा भेजे गए जो स्वयं उसी समुदाय में से होते थे और उनकी ही भाषा बोलते थे (14:4), अल्लाह ने अपने हर पैग़म्बर को उसके समुदाय के लोगों का भाई कहा है (7:65,73,85; 11:50,61,84; 26:102,124,161; 27:49; 29:36। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में देखें 2:151; 9:128)। इसलिए मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस दीवार या भवन की एक ईंट हैं जो अल्लाह के मार्गदर्शक संदेश की घोषणा करती है, जैसा कि ख़ुद हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने एक हदीस में फरमाया है (बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल और तिरमिज़ी)।

अल्लाह की हिदायत कभी भी किसी विशेष समुदाय के लिए निश्चित या सीमित नहीं रही है, जिन क़ौमों का ज़िक्र क़ुरआन में है वो अरब द्वीप और मिस्र व फ़लस्तीन के अलग अलग क्षेत्रों में बिखरी हुई थीं। हज़रत नूह उत्तरी मेसोपोटामिया (इराक़) के उपरी फ़िरात में और अनातौलिया के दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में आए। हज़रत हूद को दक्षिण अरब में बसी क़ौम 'आद' की तरफ़ भेजा गया, जबकि हज़रत स्वालेह उत्तरी अरब में बसी 'समूद' कौम की तरफ़ भेजे गए, जहाँ 'मदयन' भी स्थित था जिसके रहने वालों की तरफ़ हज़रत शुऐब पैग़म्बर बनाए गए थे। हज़रत इब्राहीम मेसोपोटामिया और कुनआन में रहते थे और अपने बेटे हज़रत इस्माईल के साथ वह अरब में भी गए जहाँ उन्होंने अल्लाह की इबादत का घर यानि "काबा" का निर्माण किया, और फिर हज़रत इस्माईल स्थायी रूप से वहीं रहे। हजरत इस्हाक़ के वंश से हज़रत इब्राहीम की सन्तानें एक विशेष समुदाय में पैग़म्बर के रुत्बे पर रखी गयीं जिनमें से कुछ जैसे हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान शासक (महाराजा) भी थे। हज़रत सुलैमान ने अल्लाह से इतनी बड़ी बादशाही देने की इच्छा की कि उनके बाद दुनिया में किसी को ऐसी बादशाही न मिले। क़ुरआन से मालूम होता है कि उनकी यह दुआ क़ुबूल हुई (21:81-82; 27:16-44;

34:12-14; 38:35-40) जबकि हज़रत अय्यूब बीमारी में धीरज की एक पहचान बने। हज़रत मूसा जिन्हें अल्लाह से प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करने का श्रेय प्राप्त हुआ वह अपने समुदाय के संरक्षक और मार्गदर्शनक बने, और हज़रत ईसा को जो कुंवारी मां के पेट से पैदा होने का एक चमत्कार थे, कई तरह के चमत्कार दिए गए थे, ये दोनों हस्तियाँ (मरियम और मरियम के पुत्र) आसमानी संदेश के इतिहास में विशेष महत्व रखते हैं। इसके अतिरिक्त पैग़म्बर (नबी और रसूल) केवल उन्ही कौमों और स्थानों पर नहीं आए जिनका ज़िक्र क़ुरआन में हुआ है, ऐसे भी बहुत से पैग़म्बर हुए होंगे जिनका उल्लेख क़ुरआन में नहीं किया गया है (4:164; 40:78)।

अल्लाह का पैग़ाम पहले स्थानीय रूप से और कुछ विशेष लोगों को सम्बोधित करके आता रहा और फिर एक विश्व व्यापी पैग़ाम बन गयाँ इस बदलाव की एक पहचान यह है कि अल्लाह के पैग़ाम को झुटलाने वालों के लिए इस दुनिया में अल्लाह की तरफ़ से सीधे तौर से दी जाने वाली सज़ा का सिलसिला आख़िर ख़त्म हो गयाँ मिसाल के तौर पर हज़रत ईसा का भी यद्यपि विरोध हुआ, उनके ख़िलाफ़ योजनाबन्दी हुई और यहाँ तक कि उनकी हत्या कर देने का प्रयास भी किया गया लेकिन यह अपराध करने वाले कुकर्मियों को सामूहिक रूप से समाप्त नहीं किया गया और उन सब को जीते रहने दिया गयाँ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दुशमनों ने भी जब आप को मारने की योजना बना ली तो आप को मक्का से मदीना जाना पड़ा, यहाँ तक कि क़ुरआन साफ़ कहता है कि ''अगर अल्लाह चाहता तो (औरों की तरह) उनसे बदला ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी जांच एक (को) दूसरे से (लड़वाकर) करे'' (47:4)। क़ुरआन का यह बयान कि ''और जब तक हम (किसी क़ौम में) पैगम्बर न भेज लें (उस क़ौम को मारने के लिए) अज़ाब नहीं दिया करते''; 17:15 और देखें 16:13; 28:59), का इशारा उन लोगों को अल्लाह की तरफ़ से सीधे सज़ा मिलने की तरफ़ हो सकता है जो सत्य के स्पष्ट प्रतीक और प्रमाण देखने के बाद उसके संदेश को स्वीकार करने से इंकार करते हैं। चुनांचि इस दुनिया में उस प्रत्यक्ष आसमानी अज़ाब को आख़िरत में अपराधियों को मिलने वाली सज़ा के लिए एक आम शर्त नहीं समझा जा सकता (अर्थात यह ज़रूरी नहीं है कि सत्य को झुटलाने वाले जिन लोगों पर दुनिया में अज़ाब नहीं आया उन्हें आख़िरत में भी सज़ा नहीं मिलेगी), अलबत्ता व्यक्तियों और समुदायों को अपने बुरे कामों के नुक़सान.दायक नतीजे इस दुनिया में प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत भुगतने पड़ सकते हैं, जबकि अन्तिम फ़ैसला और सज़ा तो आख़िरत में ही होगी।

وَ مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَ اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ

हमने तमाम रसूलों को सिर्फ़ .ख़ुश.ख़बरी सुनाने वाला या सिर्फ़ डराने वाला ही बना कर भेजा है, फ़िर जो ईमान लाये और नेक काम किये तो उनका ना तो कोई .ख़ौफ़

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

होगा, और ना कोई रंजो ग़म होगा। (6:48)

अल्लाह के पैग़म्बरों ने किसी अप्राकृतिक शक्ति का प्रदर्शन नहीं किया कि इंसानी अक़्ल उससे दंग रह जाए और इंसान उसे मानने पर मजबूर हो जाए, इसके विपरीत उन्होंने और उनके पैग़ाम ने इंसानी क्षमताओं को विक्सित करने का काम कियाँ एक अल्लाह पर और आख़िरत के जीवन पर ईमान अच्छे व बुरे हालात में व्यक्तियों और समाज को संतुलन पर बनाए रखता है और इस दुनिया के जीवन को स्थिरता, उत्पादकता, नैतिकता, न्याय, और शान्ति के लिए एक अकेला आधार उपलब्ध कराता है। जो लोग अल्लाह के संदेश को स्वीकार करते हैं और अपनी समस्त क्षमताओं को विक्सित करते हैं उन्हें इस दुनिया में शान्ति व संतोष प्राप्त होता है और आख़िरत में भी वो संतुष्ट व सुरक्षित होंगे और उन्हें कभी कोई डर और दुख नहीं होगा।

وَ تِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى
قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ
وَ يَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ
قَبْلُ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ وَ
اَيُّوْبَ وَ يُوْسُفَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ
كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَ زَكَرِيَّا وَ
يَحْيٰى وَ عِيْسٰى وَ اِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَ يُوْنُسَ
وَ لُوْطًا ؕ وَ كُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَ
مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ اِخْوَانِهِمْ ۚ وَ
اجْتَبَيْنٰهُمْ وَ هَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ
بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ لَوْ اَشْرَكُوْا
لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ

और ये हमारी इज्ज़त थी, वो हमने इब्राहीम को दी थी उनकी क़ौम के मुक़ाबले में और हम मरतबों में बढ़ा देते हैं जिसे हम चाहते हैं, बेशक आपका रब बड़ी बड़ी हिकमतों वाला और बड़ा इल्म वाला है। और हमने इब्राहीम को एक बेटा इसहाक़ दिया, और एक पोता याक़ूब दिया, और हमने हर एक को हिदायत दी, और इब्राहीम से पहले ज़माने में हमने नूह को हिदायत दी थी, और इब्राहीम की औलाद में से दाऊद को, सुलेमान को, अय्युब को, यूसुफ़ को, मूसा को और हारून को हिदायत दी थी और हम इस तरह एहसान करने वालों को यही सिला दिया करते हैं। और हमने ज़क्रिया को भी, याहिया को, ईसा को और इल्यास को भी यही हिदायत दी थी, ये सब बड़े शाईस्ता और नेक थे। और हमने इसमाईल को, यसअ को, यूनुस को और लूत को भी हिदायत की थी, और हर एक को तमाम जहान के लोगों पर फ़ौक़ियत दी थी। और उनके कुछ बाप दादों और कुछ उनकी औलाद को, और कुछ उनके भाईयों को भी तरीक़े हिदायत की तालीम दी थी, और हमने उन सबको मक़बूल बनाया, और हम ही ने उन सबको राहे रास्त की हिदायत की। ये अल्लाह की हिदायत है इसके ज़रिये से

النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰۤؤُلَآءِ فَقَدْ وَ
كَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ
هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

अपने बन्दों में से जिसको चाहता है हिदायत करता है, अगर बा फ़र्ज़े मुहाल ये हज़रात भी शिर्क करते तो जो कुछ ये आमाल करते वो सबके सब छीन लिये जाते और ये महरूम हो जाते अपने सिले से। और हमने इन ही लोगों को आसमानी किताब, हिकमती के उलूम, और नबूव्वत अता की थी, सो अगर ये लोग उनकी नबूव्वत का इन्कार करें तो (परवाह नहीं) इसके लिए हमने बहुत से लोग मुक़र्रर कर दिये हैं जो इसके मुनकिर नहीं हैं। उन सबको अल्लाह ने हिदायत की थी, सो आप भी उन ही की तरीक़े पर चलिये, आप फ़रमा दीजिये के क़ुरआन की तबलीग़ पर मैं तुम से कोई मुआवज़ा नहीं चाहता, ये तो सिर्फ़ एक नसीहत है तमाम जहान के लोगों के लिए। (6:83-90)

इन आयतों में 18 पैग़म्बरों के नाम तीन समूहों में आए हैं। लेकिन इनमें अरब के अन्दर आने वाले तीन प्राचीन पैग़म्बरों के नाम नहीं हैं जिनमें सब से पहले हज़रत हूद (अलैहिस्सलाम) थे जिन्हें 'आद' समुदाय की तरफ़ भेजा गया था जो अरब द्वीप के दक्षिण में बसते थे, दूसरे नज़रत स्वालेह (अलैहिस्सलाम) थे जो उत्तर में बसने वाले समुदाय 'समूद' की तरफ़ भेजे गए थे, और इन तीनों में सबसे अन्तिम हज़रत शुऐब थे जो 'मदाइन' की तरफ भेजे गए थे और मदाइन भी उत्तरी अरब में बसते थे।

अ) पहले समूह में दस पैग़म्बर हैं। यह थे हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, उनके बेटे हज़रत इस्हाक़, याक़ूब (इस्हाक़ के बेटे); और फिर याक़ूब के बंशज (''बनी इस्राईल'') का जिक्र है जो हज़रत यूसुफ से शुरू होता है और हज़रत मूसा व हारून तक पहुंचता है, और अन्त में दाऊद व सुलैमान का ज़िक्र है जिनका उल्लेख क़ुरआन ने पैग़म्बरों के रूप में ही किया है ना कि बाइबिल की तरह केवल बादशाहों के रूप में।

दस पैग़म्बरों का यह पूरा वर्गख हज़रत अय्यूब को छोड़ कर, उन हस्तियों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने एक अल्लाह पर ईमान और केवल उसी की इबादत की तरफ़ बुलाया, इसी आस्था का प्रचार किया और इसे मज़बूती दी। उनके लगातार और जोखिम भरे प्रयासों की बदौलत इस वर्ग को उपरोक्त आयतों में ''मुहसिनीन'' कहा गया है। हज़रत अय्यूब का ज़िक्र हज़रत दाऊद व सुलैमान के बाद आया है। यह बात ज़ाहिर है कि ये नाम उनके क्रम के हिसाब से नहीं हैं क्योंकि दाऊद व सुलैमान का ज़िक्र मूसा व हारून से पहले आया है। दो अन्य स्थानों

पर हज़रत अय्यूब का ज़िक्र दाऊद व सुलैमान के बाद आया है (21:78-83; 38:30-40)। हज़रत अय्यूब का ज़िक्र बाइबिल में विस्तार से आया है जिसके अनुसार शूरू में उन्हें सम्पन्नता व समृि) प्राप्त थी, बाद में उनकी दौलत जाती रही, संतानें समाप्त हो गयीं और ख़ुद उन्हें बीमारी लग गयी, लेकिन इस मुसीबत की हालत में उनके कड़े संयम व धीरज की वजह से उन्हें अल्लाह ने इसका बदला दियाँ कुछ लोग इस घटना को प्राचीन अरब की कहानी मानते हैं और इस आधार पर हज़रत अय्यूब एक अरबवासी ठहरते हैं ना कि यहूदी, ''जैसा कि उनके नाम 'अय्यूब' की बनावट और उनकी किताब के दृश्यःउत्तरी अरब से संकेत मिलता है'' (फ़िलिप हिट्टी, हिस्ट्री आफ दि अरब्स, लन्दन, 1937, पेज 42-43)। स्मिथ की बाइबिल डिक्शनरी यह बताती है कि अय्यूब (श्रवइ) का सम्बंध आरमीनियाई नस्ल की एक शाखा से था जो मेसोपाटामिया के निचले क्षेत्र (सम्भवतःफ़लस्तीन का दक्षिणी या दक्षिण पूर्वी क्षेत्र) में बस गयी थी। जो भी हो, बहरहाल हज़रत अय्यूब का ज़िक्र बनी इस्राईल के अन्तर्गत आया है (6:84)।

ब)दूसरे वर्ग में हज़रत ज़करिया का ज़िक्र है जिन्होंने हज़रत ईसा की मां मरियम का पालन पोषण किया था, उनके बेटे हज़रत यहया का जिक्र है (जो ईसाइयों में जान दि बापटिस्ट के नाम से मशहूर हैं क्योंकि उन्होंने हज़रत ईसा को ''बप्तिसमा'' (पवित्र स्नान) दिया था, और हज़रत ईसा का ज़िक्र है। ये तीनों एक ही ज़माने और एक ही जगह के पैग़म्बर हैं। हज़रत इलयास को बाइबिल में नबी (पैग़म्बर) के रूप में ज़िक्र किया गया है जिन्हें 'एलिजाह' कहा गया है ख्‍ इपदहे 17र्‍िं, 11 इपदहे 1-2, जो 9वीं शती ईसा पूर्व में इस्राईल की उत्तरी सरकार में रहते थे और जिनके बाद 'अलयसआ' (म्सपेीं) नबी बनाए गए थे जिनका ज़िक्र ऊपर की आयतों में तीसरे समूह में आया है। हालांकि हज़रत इलयास हज़रत ईसा से शाताब्दियों पहले हुए थे लेकिन हमेशा से यह माना जाता है कि वह किसी न किसी रूप में वापस आएंगे (मेथीव 11:114; 17:3)।

हज़रत ईसा अपनी दिल लगती शिक्षाओं और शान्ति पूर्ण व प्रेमपूर्ण व्यवहार की वजह से अल्लाह के संदेश और धर्मों के इतिहास में अलग शान रखते हैं इस बात से अलग कि उनके कुछ शिष्यों और मुख्य रूप से 'पाल' के जीवन में कुछ दुष्ट बातें व कर्म नज़र आते हैं। इस दूसरे वर्ग के जिसमें हज़रत ईसा का व्यक्तित्व केन्द्रीय है इस हक़ीक़त के बावजूद कि वह उनमें अन्तिम थे, ऊपर की आयतों में भलाई और सदाचारिता का नमूना बताया गया है यानि ''अस्सालिहीन''।

स)चार पैग़म्बरों पर आधारित अन्तिम वर्ग में वो पैग़म्बर हैं जो अलग अलग स्थानों पर अलग अलग युगों में आए। हज़रत इस्माईल यानि हज़रत इब्राहीम के बेटे अरब मरुस्थल में रहते थे, उनका ज़िक्र पहले वर्ग में उनके पिता के साथ नहीं है। जिस जगह अल्लाह का घर

काबा हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने मिल कर बनाया था वह क्षेत्र हज़रत इस्माईल की कोशिशों से आबाद हो गया था और काबा हज़रत मुहम्मद सल्ल० के युग में अरब में एक धार्मिक स्थल बन कर प्रसि) हो गया था। हज़रत यूनुस (जोनह) नेनवा की तरफ़ नबी बना कर भेजे गए थे जो बाइबिल के वर्णनों के अनुसार असीरिया की राजधानी था। शुरू में चूंकि उन लोगों ने उनकी दावत (आग्रह) को स्वीकार नहीं किया तो उन्होंने नाराज़ हो कर वह जगह छोड़ दी। यह एक ऐसी बात थी जिसकी इजाज़त उन्हें अल्लाह की तरफ़ से नहीं दी गयी थी इसलिए सज़ा के रूप में उन्हें मछली ने निगल लियाँ तब उन्हें अपनी ग़लती का अहसास हुआ और उन्होंने तौबा की और अल्लाह की रहमत से वह बच गए और उन्होंने अपना काम फिर से शुरू किया जिसका नतीजा पहले से बहतर रहा (10:98)। हज़रत लूत को सोडोम और गोमोरह में अपनी क़ौम की तरफ़ से कड़े विरोध और प्रतिरोध का सामना करना पड़ा (जेनेसिस 18:20-21; 19:24-28), जिनके यौन दुराचार और अप्रा.तिक यौन अपराधों से वह उन्हें लगातार रोकते रहे और जब अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब के फ़रिशते उतर आए और इंसानी रूप में वो हज़रत लूत के पास आए तो उनकी क़ौम के दुराचारी इन आगुन्तकों की तरफ़ भी बुरी नियत से आमादा हुए जिसकी वजह से झगड़ा खड़ा हो गया (11:77-83)। अलयसआ बनी इस्राईल के दो गुटों के बीच आपसी विवाद में फंसे और पूरी अडिगता के साथ सत्य पर जमे रहे। ऐसा मालूम होता है कि अन्तिम वर्ग के नबियों में समान विशेषता उनकी अडिगता और प्रतिरोध था कि घोर विरोध के माहौल में वो अपने ईमान पर जमे रहे और लोगों को अल्लाह की बन्दगी की तरफ़ बुलाते रहे और इस तरह उन्होंने असहनीय कठिनाइयों पर नियंत्रण प्राप्त कियाँ अल्लाह पर अडिग ईमान वाले ये लोग कठिन परिस्थितियों में अल्लाह के भरोसे पर संयम और धीरज का एक नमूना हैं। अपनी अडिगता और निरन्तरता की वजह से ये नबी अल्लाह की मदद के पात्र बने और दूसरे लोगों पर इन्हें विजय प्राप्त हुई।

पैग़म्बरों के इन तीन वर्गों में सभी पैग़म्बर नहीं आ गए हैं क्योंकि जिन पैग़म्बरों के नाम इन आयतों में आए हैं उनके अलावा और बहुत से पैग़म्बर भी हैं ''जिनके हालात हम तुम से पहले बयान कर चुके हैं'' और बहुत से पैग़म्बर हैं ''जिनके हालात तुम से बयान नहीं किए'' (4:164; 40:78; और देखें 35:24)।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰىٓ ۡ اِنَّهٗ كَانَ
مُخْلَصًا وَّ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝٥١ وَ نَادَيْنٰهُ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَ قَرَّبْنٰهُ
نَجِيًّا ۝٥٢ وَ وَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ

और इस किताब में मूसा (अ.स.) का ज़िक्र भी कीजिये, वो बेशक अल्लाह के ख़ासमख़ास बन्दे थे, और वो रसूल भी थे, नबी भी थे। और हमने उनको तूर की दाहिनी तरफ़ से पुकारा, और ख़ास बातें करने के लिये अपने क़रीब बुलायाँ और हमने अपनी ख़ास मेहरबानी से

उनके भाई हारून को भी नबी बनायाँ और इस किताब में इसमाईल का भी ज़िक्र कीजिये, वो बेशक वादा के सच्चे थे, वो रसूल भी थे, और नबी भी थे। और वो अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते थे, और अपने रब की नज़दीक पसंदीदा थे। और इस किताब में इदरीस (अ.स.) का भी ज़िक्र कीजिये, वो भी बड़े सच्चे नबी थे। और हमने उनको बुलंद मर्तबा तक पहुंचायाँ ये वो लोग हैं मिनजुमला अम्बिया में से जिनको अल्लाह ने औलादें आदम में से अपनी ख़ास इनायत से नवाज़ा, और उन लोगों की नस्ल से जिनको हमने नूह (अ.स.) के हमराह कश्ती में सवार किया, और इब्राहीम (अ.स.) और याक़ूब (अ.स.) की औलाद में से और उन लोगों में से जिनको हमने हिदायत दी और बरगज़ीदा बनाया, जब उनके सामने रहमान की आयात पढ़ कर सुनाई जाती थीं तो वो सज्दा में गिर पड़ते थे, और रोया करते थे। फ़िर उनके बाद ऐसे नाख़ल्फ हुए, उन्होंने नमाज़ को छोड़ दिया, और ख़्वाहिशात की पैरवी की, सो जल्द ही उनको इस सरकशी की सज़ा मिलेगी। मगर जो तायब हुए, और ईमान लाये और नेक अमल किये तो ये जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर कोई ज़ुल्म ना होगा। (19:51-60)

هٰرُوْنَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾ وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ
اِسْمٰعِيْلَ ؗ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَ
كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿٥٤﴾ وَ كَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ
بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ ۪ وَ كَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ
مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ؗ
اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا
عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَ
مِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؗ وَّ مِنْ ذُرِّيَّةِ
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْرَآءِيْلَ ؗ وَ مِمَّنْ هَدَيْنَا وَ
اجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ
الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ﴿٥٨﴾ فَخَلَفَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَ
اتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾
اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾

पिछली आयतों में हज़रत इब्राहीम और उन की दावत का ज़िक्र करने के बाद अल्लाह के कुछ दूसरे पैग़म्बरों का हवाला दिया गया है। हज़रत मूसा और उनके भाई हज़रत हारून का बयान है। इन आयतों में हज़रत इब्राहीम के वंश की एक दूसरी शाखा इस्माईल का हवाला भी है जिन्होंने अपने अमल (कर्म) से लोगों को एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाया और इस पैग़ाम को लोगों में फैलाया कि अल्लाह की इबादत करें, गरीबों की मदद करें। और मूसा व इस्माईल दोनों का 'नबी' और 'रसूल' की हैसियत से ज़िक्र किया गया है। इन दोनों शब्दावलियों में अन्तर है। नबी पर अल्लाह की तरफ़ से पहले से आए हुए संदेश को जीवन में बरतने के लिए लोगों को दावत देने की ज़िम्मेदारी होती है या नबी और उनके साथियों की मदद करना होती है, नबी पर पैग़ाम को ज़्यादा बड़े दायरे में पहुंचाने या किसी नए सामाजिक

बदलाव की ज़िम्मेदारी नहीं होती जिस तरह रसूल पर होती है। लिहाज़ा यद्यपि हर रसूल ने अपना काम नबी की तरह ही शुरू किया और बुनियादी रूप से वो नबी ही थे कि उन पर वह्यि उतरती थी लेकिन हर नबी निश्चित रूप से रसूल नहीं थे।

इन आयतों में दूसरे नबियों का हवाला भी है। ऐसा कहा जाता है कि हज़रत इदरीस, जिन का ज़िक्र क़ुरआन में यहाँ के अलावा एक और जगह (21:85 में) भी आया है, बाइबिल के एलिजाह हो सकते हैं जिन्हें क़ुरआन में 'इलयास' कहा गया है (6:85; 37:123 - 132), लेकिन इस अवधारणा के पक्ष में कोई ठोस सुबूत और तर्क नहीं है। ऊपर की आयतों में हज़रत आदम की औलाद में पैग़म्बरों के सिलसिले का और हज़रत नूह के ज़माने में तूफ़ान से बच जाने वाले लोगों का, फिर इब्राहीम की औलाद का, एक तरफ़ इस्हाक़ व याक़ूब के माध्यम से और दूसरी तरफ़ इस्माईल के माध्यम से, ज़िक्र है इस बात को उजागर करने के लिए कि अल्लाह के एक होने का संदेश अलग अलग चरणों में लगातार आता रहा है। लेकिन इंसानी दिमाग और उसके आज़ादी पूर्वक काम करने की वजह से बाद की नस्लों के तौर तरीक़ों में बदलाव आया इस बात को भूल कर कि उनके पूर्वज कितने दीनदार और अल्लाह की भक्ति व बन्दगी में कितने सच्चे थे (19:59)। लिहाज़ा, मुहम्मद सल्ल० और उनका संदेश फैलने के समय अरब में और अरब के बाहर भी हर जगह इस्राईल और इस्माईल दोनों की संतानें अपने पूर्वजों के दीन पर नहीं चल रही थीं।

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَ لَنَسْـَٔلَنَّ
الْمُرْسَلِيْنَ ۙ۝۶ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ
وَّ مَا كُنَّا غَآىِٕبِيْنَ ۝۷ وَ الْوَزْنُ يَوْمَىِٕذِ
ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝۸ وَ مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ
فَاُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝۹

फ़िर हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास रसूल पहुंचे थे और रसूलों से भी ज़रूर पूछेंगे। फ़िर हम उनके सामने पूरा पूरा क़िस्सा बयान कर देंगे जो हमें अच्छी तरह इल्म है, और कभी भी बेख़बर ना रहे। और उस रोज़ (यानी क़यामत के दिन) आमाल का वज़न भी होगा, फ़िर जिसका पल्ला भारी होगा, वो कामयाब बामुराद होगा। और जिसका पल्ला हल्का होगा ये वो लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान किया इसलिए के ये हमारी आयात की हक़ तल्फ़ी किया करते थे। (7:6-9)

अल्लाह के सामने इंसान की जवाबदेही सामान्यतःसब के लिए है, ख़ुद पैग़म्बर भी इससे अलग नहीं हैं। हर एक के कर्म तौले जाएंगे कि इस जीवन में उन्होंने कितने अच्छे कर्म अंजाम दिए। तराज़ू या मीज़ान में कर्म तौले जाने और भलाइयों व बुराइयों की तुलना करने का चित्रण क़ुरआन में कई जगह किया गया है (21:47; 23:102-103; 101:6-9), अतःफ़ैसले के दिन

अल्लाह का फ़ैसला पूरी तरह इंसाफ़ के साथ होगा। एक ऐसे ज़माने में जब हम ने कम्प्यूटराइज्ड तकनीक से भार तौलने की मशीनें बना ली हैं, यह बात समझना और भी आसान है कि अल्लाह के न्याय का तराज़ू इतना महीन और साफिस्टिकेटेड होगा कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

और तुम्हारा रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमात कर देता, और वो तो हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। मगर जिन पर तुम्हारा रब रहम करे, और इसीलिये उसने उनको पैदा किया है, और तुम्हारे रब का क़ौल पूरा हो गया, के मैं दोज़ख को जिनों और इनसानों सबे से भर दूंगा। और हम नबियों के क़िस्सों में से ये सारे हालात आपसे बयान करते हैं जिन से हम तुम्हारे दिल को तक़वीयत देते हैं, और इन क़िस्सों में तुम्हारे पास हक़ पहुंच गया, और मोमिनीन के लिये नसीहत और याददाश्त है। (11:118-120)

وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّ لَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا
مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ
تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ كُلًّا نَّقُصُّ
عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ
فُؤَادَكَ ۚ وَ جَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ
مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

अगर अल्लाह चाहता तो सारी इंसानियत को एक ही क़ौम बना देता जिसका आचार विचार एक ही तरह का होता, निश्चित रूप से वह ऐसा कर सकता था, लेकिन उसकी मंशा यह थी कि इंसानों को अन्तर और भेद के साथ पैदा करे। उसने यह चाहा कि हर व्यक्ति को इरादे और चयन की स्वतंत्रता हो और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की पसन्द और चयन से मतभेद करने का मौक़ा रखे।

चयन की आजादी से भलाई और बुराई दोनों अंजाम दी जा सकती हैं, इनाम व सज़ा का और जन्नत व जहन्नम का फ़ैसला हो सकता है। अतःसत्य को झुटलाना और ईमान न लाना भी सम्भव है। यही वजह है कि पिछले पैगम्बरों के अनुभव और क़िस्से क़ुरआन में बयान किए गए हैं और यह दिखाया गया है कि अल्लाह के पैग़ाम को झुटलाए जाने और कड़े विरोध की स्थिति में वो पैग़म्पर अपने मिशन पर कितने अडिग रहे, अपने आग्रह पर जमे रहे और धीरज व संयम के साथ उन्होंने विरोधों का सामना कियाँ इन पिछले पैगम्बरों के हालात व अनुभव की जानकारी देना और उनकी क्रिया प्रतिक्रिया से अवगत कराने का मक़सद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इसी तरह के नतीजों और विरोधों से पहले ही बाख़बर रखना था। यह चीज़ पैग़म्बर साहब और उन पर ईमान लाने वालों के दिल व दिमाग को रोशन रखने और उन्हें सत्य व तथ्यों से अवगत कराने के लिए है ताकि वो पिछले पैग़म्बरों के साथ हुए

मामलों से अपने वर्तमान और भविष्य के लिए सीख ले सकें।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَ جَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّ ذُرِّيَّةً ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝ يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ ۚۖ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝ وَ اِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَ عَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝

और हमने तुम से पहले भी रसूल भेजे, और उनको हमने औलाद और बीवियाँ भी दीं, और ये किसी रसूल के इख़्तियार में नहीं के वो अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाये, हर ज़माना के मुनासिब अहकाम होते हैं। अल्लाह जिसको चाहता है मिटा देता है, और जिसे चाहे क़ायम रखता है, और अल्लाह ही के पास असल किताब है। और अगर हम आपको कोई अज़ाब दिखा दें जिसका वादा हम करते हैं या तुम्हारी ज़िन्दगी पूरी कर दें (और फ़िर अज़ाब भेजें) तो तुम्हारा काम तो सिर्फ़ पहुंचाना है, और हमारा काम हिसाब लेना है। (13:38-40)

पिछली क़ौमों और नबियों के इतिहास को क़ुरआन बार बार दोहराता है ताकि उसकी सच्चाईयाँ और उसके पाठ मस्तिष्क में बैठ जाएं, और इस पूरे बयान से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हज़रत ईसा को छोड़ कर जो चमत्कारी ढंग से पैदा हुए थे, पिछले सभी पैग़म्बर भी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह एक सामान्य इंसान थे जिनकी पत्नियाँ और औलादें थीं। उनमें से कोई भी फ़रिशता नहीं था, जैसा कि मुहम्मद सल्ल० का विरोध करने वाले मांग कर रहे थे (6:8-9; 15:7-8; 23:24; 43:53)। और यह कि चमत्कारी निशानियाँ जिनकी मांग नकारने वाले कर रहे थे (2:118; 6:37; 10:20; 13:7,27; 20:133; 21:5) अल्लाह तआला ने केवल अपनी मर्ज़ी से जिस को चाहा उसको दीं, और यह ईमान लाने का आधार नहीं थीं क्योंकि हर इंसान को अलग ज़हन और मर्ज़ी दी गयी है (6:4,25,35,124; 7:146; 12:105)। असिल में तो यह सृष्टि और इसके समस्त जीव जन्तु और अल्लाह की तरफ़ से आने वाली वह्यि (क़ुरआन) अल्लाह की मुस्तक़िल निशानियाँ हैं जिसे बुद्धि और अन्तःदृष्टि रखने वाला हर इंसान देख सकता है (6:37-38; 29:50-51)।

अल्लाह ने अपने लगातार पैग़ामों में उन बातों का अनुमोदन किया है जो हमैशा के लिए हैं और इंसान की मुस्तक़िल ज़रूरत हैं, और जिस चीज़ को उसने बदलने की ज़रूरत समझी कि वह अब अप्रासंगिक है, उसे उसने बदल दिया (देखें 2:106)। वह उस सत्य और युक्ति (सच्चाई और हिकमत) का स्रोत है जो हर ज़माने में उतारी जाती रही, ग्रन्थ के रूप में, पैग़म्बरों की शिक्षाओं के रूप में और उनके जीवन के व्यवहारिक नमूनों में जो उन्होंने स्थितियों और ज़रूरतों के अन्तर्गत कहे और किए। पैग़म्बर का काम केवल अल्लाह का पैग़ाम ठीक ठीक

पहुंचा देना था। वह ख़ुद अपनी तरफ़ से कोई चमत्कार नहीं दिखा सकते थे। उन्होंने सत्य के इंकारियों पर ख़ुद अपने कमाल से कोई विजय प्राप्त नहीं की, यह केवल अल्लाह का फ़ैसला था कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में इस विजय को दिखा दे या उनके बाद। अलबत्ता, अल्लाह की पकड़ और उसका फ़ैसला आख़िरत में सभी लोग निश्चित रूप से देख लेंगे। दुनिया के इस जीवन में और आख़िरत के जीवन में एक बहतरीन संतुलन है जिसे ईमान वालों को अच्छी तरह समझना चाहिए ताकि वो केवल भौतिक उपलब्धियों की दौड़ धूप और निष्क्रिय अध्यात्मिकता की इधर उधर अतिवादी स्थिति से बच सकें।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

और हमने तमाम रसूलों को उनही की क़ौमी ज़बान में रसूल बना कर भेजा है। ताके उनको अहकाम बयान करें,. फिर जिस को चाहे गुमराह कर दे और जिसको चाहे हिदायत दे दे और वही सब उमूर पर ग़ालिब है और हिकमत वाला है। और हम ने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा के अपनी क़ौम को तारीकी से निकाल का रौशनी की तरफ़ लाओ, और उनको अल्लाह की नेमतें याद दिलाओ, बेशक इन उमूर में इबरत है, हर साबिर और शाकिर के लिये। (14:4-5)

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَ لَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝ وَ قَالَ مُوْسٰى اِنْ تَكْفُرُوْا اَنْتُمْ وَ مَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَ اِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا

और जब तुम्हारे रब ने तुम को इत्तेला दी के अगर तुम शुक्र करोगे तो तुम को .ज्यादा दूंगा, और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब सख़्त है। और मूसा ने कहा अगर तुम और दुनिया भर के सब आदमी मिल कर नाशुक्री करोगे तो अल्लाह बिलकुल बेपरवा सतोदा सिफ़ात है। क्या तुम को उन लोगों की .ख़बर नहीं पहुंचती, जो तुम से पहले थे यानी क़ौमे नूह, आद व समूद, और जो लोग उनके बाद हुए जिनका इल्म अल्लाह के सिवा किसी को नहीं उनके पास उनके पैग़म्बर निशानियाँ लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह पर रख दिये और कहा इस हुक्म को जिसके साथ तुमको भेजा गया है तसलीम नहीं करते, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बताते हो, हमें उसमें बहुत शक है, जिसने तरद्दुद

تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝٩ قَالَتْ رُسُلُهُمْ
اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ
يُؤَخِّرَكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ
اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ
نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ مَا كَانَ لَنَآ
اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى
اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ وَ مَا لَنَآ اَلَّا
نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَ
لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَاۤ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝١٢ وَ قَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ
اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٣

में डाला है। उनके रसूलों ने कहा क्या अल्लाह के बारे में शक है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, वो तुम को बुलाता है के तुम्हारे गुनाह बख़्शे, और एक मोईय्यन मुद्दत तक तुम को हयात दे, वो बोले, तुम हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम ये चाहते हो के जिन चीज़ों को हमारे बड़े पूजते रहे हैं, उनको पूजने से हमको रोक दो तो (अच्छा) कोई खुली निशानी लाओ। उनके रसूलों ने उनसे कहा के हां! हम तुम ही जैसे आदमी हैं, लेकिन अल्लाह एहसान फ़रमाता है अपने बन्दों में से जिस पर चाहे, ये हमारे इख़्तियार में नहीं के हम अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर तुम को कोई मोजज़ा दिखायें, और मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिये। और हम अल्लाह पर क्यों भरोसा ना करें जबके उसी ने हमको हमारे दीन के रास्ते दिखाये हैं, और जो तकलीफ़ तुम हमको देते ही, उन पर हम सब्र ही करेंगे, और भरोसा करना चाहिए। और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा के या तो हम तुम को अपनी ज़मीन से निकाल देंगे या हमारे मज़हब में लौट आओ, फ़िर उनके रब ने उनकी तरफ़ वही की, के हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे।

(14:7-13)

وَ لَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَ خَافَ وَعِيْدِ ۝١٤ وَ
اسْتَفْتَحُوْا وَ خَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝١٥ مِّنْ
وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۝١٦
يَّتَجَرَّعُهٗ وَ لَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَ يَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَ
مِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝١٧ مَثَلُ الَّذِيْنَ

और उनके बाद तुमको हम इस ज़मीन में आबाद करेंगे ये उसके लिये है जो मेरे सामने खड़े होने से डरते और मेरी वईद से डरे। और काफ़िर लोग फ़ैसला चाहने लगे और ना मुराद हुए सारे ज़िद्दी सरकश। उसके आगे दोज़ख है, और उसको पीप का पानी पिलाया जायेगा। जिसको वो घूंट घूंट कर के पियेगा, और गले से ना उतार सकेगा, और हर तरफ़ से मौत ही मौत आ रही होगी और वो मरेगा नहीं और उसके आगे और अज़ाब सख़्त होगा। जो लोग अपने रब के साथ कुफ़्र करते हैं

كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۣاشْتَدَّتْ
بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ
مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ
الْبَعِيْدُ ﴿۱۸﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَ يَاْتِ
بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۹﴾ وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
بِعَزِيْزٍ ﴿۲۰﴾ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ
الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ
تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَاۤ اَجَزِعْنَاۤ اَمْ
صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿۲۱﴾ وَ قَالَ
الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ
وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا
كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ
دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَ
لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ
اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ
اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾ وَ اُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ
تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ
طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾

उनके आमाल की मिसाल ऐसी है जैसा के राख के आंधी के दिन उस पर ज़ोर की हवा चले और उड़ा ले जाए, जो काम वो करते रहे उन पर उनको कुछ दसतरस ना होगी यही तो बड़ी दूर की गुमराही है। क्या तुम ने नहीं देखा के अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को बिलकुल ठीक ठीक पैदा किया है, अगर वो चाहे तो तुम को फ़ना कर दे, और नई मख़लूक़ पैदा कर दे। और ये अल्लाह के लिये कोई मुश्किल नहीं है। और (क़यामत के दिन) सब लोग अल्लाह के सामने पेश होंगे तो छोटे दर्जे के लोग बड़े दर्जे के लोगों में कहेंगे के दुनिया में हम तुम्हारे ताबे थे, तो क्या हमको अल्लाह के अज़ाब के किसी जुज़ से बचा सकते हो वो कहेंगे के अल्लाह हमें राह बता देता तो हम तुम को भी राह बता देते, अब चाहे हम घबरायें या सब्र करें तो दोनों बराबर हैं, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। और शैतान कहेगा जब हिसाब किताब का फ़ैसला हो चुकेगा के जो वादा अल्लाह ने तुम से किया था वो सच्चा था, और जो वादा मैंने तुम से किया था वो झूटा था, और मेरा तुम पर कोई ज़ोर ना था, हां मैंने तुम को बुलाया था तो तुमने मेरा कहना मान लिया तो तुम मुझे मलामत ना करो, और अपने आप को मलामत करो, ना मैं तुम्हारी फ़रयाद रस्सी कर सकता हूं और ना तुम मेरी फ़रयाद रसी कर सकते हो, मैं इससे इन्कार करता हूँ के तुम मुझे अल्लाह का शरीक बनाते थे। बिला शुबह ज़ालिमों के लिये दर्द देने वाला अज़ाब है। और दाख़िल किये जायेंगे वो लोग जो ईमान लाये और नेक अमल किये ऐसी बहिश्त में के उसके नीचे नहरें बह रही हैं अपने रब के हुक्म से वो हमेशा वहां ही रहेंगे, वहां उनको सलाम किया जाएगा अस्सलाम अलैकुम के लफ़्ज़ से। क्या तुम ने नहीं देखा के अल्लाह ने पाक कलमा की कैसी मिसाल दी है के वो मुशाबेह है पाकीज़ा दरख़्त के जिसकी जड़ ख़ूब मज़बूत

है और शाखें बुलन्द होती हैं आसमान की तरफ़। (14:14-24)

تُؤْتِيٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَ
يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ
كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ
الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿۲۶﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ
الظّٰلِمِيْنَ ۙۛ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿۲۷﴾

वो दरख़्त अपने रब के हुक्म से हर फ़सल में अपना फ़ल लाता है, और अल्लाह लोगों के लिये मिसालें बयान करता है ताके वो नसीहत पकड़ें। और नापाक कलमा की मिसाल नापाक दरख़्त की सी है के वो ज़मीन के ऊपर से ही उखाड़ लिया जाए उसे ज़रा भी क़रार नहीं रहता। अल्लाह मोमिनों को दुनिया की ज़िन्दगी में सही और पक्की बात से मज़बूत रखता है और आख़िरत में भी, और अल्लाह तआला ज़ालिमों को गुमराह कर देता है, और अल्लाह जो चाहता है करता है। (14:25-27)

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ
رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۴۷﴾
يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَ
السَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ
الْقَهَّارِ ﴿۴۸﴾ وَ تَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ
مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۴۹﴾ سَرَابِيْلُهُمْ
مِّنْ قَطِرَانٍ وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ ﴿۵۰﴾ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا
كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۵۱﴾
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ لِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَ
لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِيَذَّكَّرَ
اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۵۲﴾

तो फिर ये ख़्याल ना करो के अल्लाह उसके ख़िलाफ़ करेगा जो वादा उसने अपने रसूलों से किया है, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त पूरा बदला लेने वाला है। जिस रोज़ ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल जायेगी और आसमान भी बदल जायेंगे, और सबके सब एक अल्लाह के सामने पेश होंगे जो ज़बरदस्त है। और तुम देखोगे के उस दिन गुनाहगार लोग ज़ंजीरों में जकड़े हुए होंगे। उनके कुर्ते गंधक के होंगे और उनके चेहरों को आग लिपट रही होगी। ये इसलिये है के अल्लाह हर शख़्स को उसके किये की सज़ा देगा, बिला शुबह अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। ये (क़ुरआन) लोगों के लिये पैग़ाम का पहुंचाना है और ताके इसके ज़रिये से डराये जायें और ताके ये जान लें के वो ही अकेला माबूद है, और ताके अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें। (14:47-52)

उपरोक्त आयतों से यह बात सामने आती है कि अल्लाह का पैग़ाम हमेशा से अपने सम्बोधितों की सामाजिक व सांस्.तिक आवश्यकताओं के अनुसार आया है। इन आयतों में भी

अल्लाह के पैग़ाम का मौलिक तत्व पेश किया गया है और ईमान लाने से इंकार करने वालों के तर्क दोहराए गए हैं। अल्लाह ने हर समुदाय में अपने पैग़म्बर उन्ही लोगों में से भेजे जो उनकी स्थितियों और समस्याओं को जानते समझते थे और इस बात को समझते थे कि उनके सामने अल्लाह का पैग़ाम किस तरह पेश किया जाए। इसी तरह अल्लाह का संदेश उसके पैग़म्बरों की ज़बान से उसी भाषा में व्यक्त हुआ जिसे वो लोग बोलते थे, यदि ऐसा न होता तो अल्लाह का मार्गदर्शक संदेश भी और ख़ुद संदेश्टा भी अपने समुदाय में अलग थलग हो कर रह जाते जिसे सम्बोधित करने के लिए संदेश और संदेश्टा भेजे गए थे।

इतिहास वर्तमान और भविष्य के मार्गदर्शन के लिए पूर्व के अनुभवों से प्राप्त होने वाले पाठ पढ़ाता है। उदाहरण के तौर पर हज़रत मूसा का आग्रह और संघर्ष एक ऐसे अगुवा के रूप में देखा जा सकता है जिसने अपने समुदाय को स्वार्थपूर्ति और अदूरदर्शिता या तंगनज़री के अंधेरों से निकाल कर अल्लाह के मार्गदर्शन के प्रकाश में लाने का काम किया, और उन्हें ''अय्यामुल्लाह'' की याद दिहानी कराई कि जब अल्लाह की .पा से वह फ़िरऔन के दमन व उत्पीड़न से बच निकले, आज़ादी प्राप्त की, मरुस्थल की दिक़्क़तों को झेल कर जीवित रहे। ये सारे क़िस्से किसी के लिए भी सीख लेने का माध्यम बन सकते हैं। अल्लाह की हिदायत पर चल कर अल्लाह की शुक्रगुज़ारी (आभार व्यक्त करना) शुक्रगुज़ार यानि आभारी लोगों के लिए एक सफ़लता से दूसरी सफ़लता की तरफ़ प्रगति करने का माध्यम बनती है, और मानसिक व सामाजिक संतुलन और स्थिरता देती है।

अरब द्वीप में बसने वाली पिछली क़ौमों अर्थात दक्षिण में रहने वाले आद और उत्तर में बसने वाले समूद के क़िस्सों में बहुत से कारामद सबक़ हैं। अल्लाह जिसे चाहता है गुमराही में भटकने देता है और जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है, लेकिन उसकी मंशा लोगों को आज़ाद ज़हन और आज़ाद मर्ज़ी के साथ काम करने का मौक़ा देना है (2:26-27; 75:14-15; 79:37-41; 90:10; 91:7-9; 92:4-11)। सत्य को अहंकार के साथ झुटलाने वाले जानबूझ कर दुनिया के जीवन पर ही अपना पूरा ध्यान रखना चाहते हैं और अपने भौतिक हितों पर ही उनकी नज़र होती है, वो आख़िरत को नज़रअंदाज करते हैं और आत्मा व नैतिकता के तक़ाजों से तथा दूसरों के अधिकारों से नज़रे बचाते हैं और यह कोशिश करते हैं कि दूसरे लोग भी किसी न किसी तरह अल्लाह के रास्ते से भटक जाएं, इसके लिए वो झूट और छलकपट से भी काम लेते हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह की हिदायत को अपनाने वाले एक अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उसकी हिदायत की रोशनी में चलते हैं, उसी के अनुसार इस दुनिया में अपना व्यवहार रखते हैं, साथ ही साथ आख़िरत में इंसान की जवाबदेही और सज़ा व इनाम मिलने पर विश्वास रखते हैं।

जैसा कि पहले ज़िक्र किया जा चुका है, अल्लाह के रसूल एक इंसान थे आपकी प्रतिष्ठा और विशेषता आपके पैग़म्बर होने के आधार पर है और नैतिकता में परिपूर्ण होने से है। आपने कभी भी अप्रा.तिक शक्ति का दावा नहीं किया सिवाय इसके कि किसी ख़ास समय किसी ख़ास वजह से किसी चमत्कार का दर्शन हुआ। लेकिन ढिटाई के साथ सत्य का इंकार करने वाले अपनी बु‌ि और बोध का प्रभावी ढंग से स्तेमाल करने के बजाए और अपनी बात तर्क से कहने के बजाए अत्याचारी काम करने पर उतारू होते हैं। लेकिन अत्याचार और दमन हमैशा जारी नहीं रह सकता। आख़िरत के मामले में यह बात ख़ास तौर से सही है, जहाँ कमज़ोर लोग इस दुनिया में ज़ालिम और घमण्डी लोगों का अंधाधुंध समर्थन करने का ख़ुमियाज़ा भुगतेंगे और जहाँ ज़ालिम और अहंकारी लोग उन्हें इस अंधाधुंध समर्थन का कोई बदला नहीं दे पाएंगे। शैतान भी किसी पापी और कुकर्मी की कोई मदद नहीं कर पाएगा, चाहे दुनिया के इस छोटे से जीवन में वह उनके कितने ही क़रीब और साथ साथ रहा हो।

केवल भलाइयाँ और अच्छी बातें ही बाक़ी रहेंगी और फलेंगी फूलेंगी। नेकियाँ और अच्छा काम व बातें इस दुनिया में भी और ओख़िरत में भी हमैशा दिलसुख, ठोस और अच्छे नतीजों वाली होती हैं। जबकि बुराई की जड़ कमज़ोर होती है, इसलिए बुराई के लिए कहीं टिकाव नहीं है। इंसान के लिए यह समझना ज़रूरी है कि ख़ुद इस जीवन में भी अल्लाह बदलाव लाता रहता है और किसी भी समाज या सभ्यता को अपने निर्धारित नियमों के अनुसार उसके अंजाम तक पहुंचाता है। अल्लाह का संदेश भलाई का संदेश है जिसकी जड़ें गहरी होती हैं जो टिकाउ होता है, विश्वास करने योग्य होता है और प्रभावी व परिणामदायक होता है। कुकर्मी और पापी लोग भटकते रहते हैं, ख़ुद को इन फ़ायदों से वंचित कर लेते हैं और आख़िरकार नुक़सान उठाते हैं। इन सब बातों का सार यह है कि केवल एक अल्लाह की इबादत करना चाहिए, और हर इंसान के लिए अल्लाह का फ़ैसला और उसकी तरफ़ से इनाम या सज़ा निश्चित है, ‘‘वो जान लें कि वही अकेला पूज्य है और ताकि अक़ल वाले नसीहत पकड़ें’’ (14:52)।

अल्लाह ने अपने सभी पैग़म्बरों से फ़ैसले का दिन आने का और हर व्यक्ति को उसकी कमाई का बदला देने का जो वायदा किया है वह निश्चित रूप से पूरा होगा। इस दुनिया के गुण आख़िरत के जीवन में बदल जाएंगे (20:105-107; 39:67-69; 73:14; 81:1-6; 82:1-4; 84:1-4)। आख़िरत में कुकर्मी लोग एक साथ बेड़ियों में जकड़े जाएंगे, उन्हें तारकोल के कपड़े पहनाए जाएंगे, अज़ाब यानि यातना में डाले जाएंगे और ज़लील होंगे, क्योंकि दुनिया में उन्होंने एक दूसरे के साथ मिल कर बुरे काम किए, मौज मस्ती की और अहंकार व घमण्ड में पड़े रहे।

और हम हर उम्मत में कोई ना कोई रसूल भेजते रहे हैं के तुम अल्लाह की इबादत किया करो, और शैतान से	وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ

مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَ مِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾

बचते रहा करो, सो बाज़ को उनमें से अल्लाह ने हिदायत दी है, और बाज़ उनमें वो हुए जिन पर गुमराही साबित हुई तो फ़िर ज़मीन में ज़रा चलो फ़िरो, फ़िर नज़र डालो के झुटलाने वालों का क्या अंजाम हुआ।(16:36)

हर क़ौम को जिसके पास अल्लाह ने अपना दीन भेजा, और हम ठीक ठीक नहीं जान सकते कि वो कौन कौन सी क़ौमें थीं क्योंकि उन सब का क़ुरआन में उल्लेख नहीं किया गया है (4:164; 40:78), उसे मूल शिक्षा यही दी गयी थी कि एक अल्लाह की इबादत करें और बुराई की तरफ़ ले जाने वाली उन शक्तियों से बचें जो अत्याचार और अन्याय से काम लेती हैं और समाज पर अपना दबदबा बनाए रखती हैं। अल्लाह के संदेश का मक़सद लोगों को अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण करने और उसके मार्गदर्शन को अपनाने का आग्रह करके उन्हें एक दूसरे के शोषण और गुलामी से मुक्ति दिलाना है। अल्लाह की हिदायत (मार्गदर्शन) में किसी भी व्यक्ति, वर्ग, नस्ल यहाँ तक कि आस्था और धर्म के प्रति इस दुनिया में मानव अधिकारों और न्याय दिलाने के मामले में कोई पक्षपात नहीं है। जिन लोगों ने घमण्ड के साथ अल्लाह की हिदायत को रद कर दिया उन पर गुमराही सि) हो गयी उनके अहंकार और घमण्ड की वजह से (2:226-27; 92:4-10)। जमख़शरी ने इस बयान का मतलब यह लिया है कि अल्लाह ने उस व्यक्ति को अकेला छोड़ दिया कि उसने अपनी मर्ज़ी से अल्लाह की हिदायत का इंकार करने को पसन्द कियाँ इंसानी इतिहास हमें उन व्यक्तियों, समाजों और सभ्यताओं का अंजाम बताता है जिन्होंने घमण्ड और अन्याय में अपने आप को जकड़ लिया था, उनका पतन और उनकी तबाही उनके भौतिक फायदों के पीछे लगे रहने और स्वार्थपूर्ति में जीते रहने का नतीजा बन कर सामने आई।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ۙ بِالْبَيِّنٰتِ وَ الزُّبُرِ ؕ وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

और हमने तुम से पहले भी मर्दों ही को रसूल बना कर भेजा था, जिनकी तरफ़ हम वही किया करते थे, अगर तुम नहीं जानते हो तो इल्म वालों से दरयाफ़्त कर लो। (रौशन) दलीलें औ किताबें देकर, और हमने तुम पर भी ये किताब नाज़िल की है ताके तुम लोगों पर ज़ाहिर कर दो जो इर्शादात हमने लोगों पर नाज़िल किये हैं और ताके वो ग़ौर करें। (16:43-44)

अल्लाह के पैगम्बरों के इंसानी स्वभाव और नैतिक मिशन को जताने के लिए यह एक और कुरआनी पाठ है। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अल्लाह के संदेश को पहुंचाने का

एक इंसानी माध्यम थे जो उन लोगों से बातचीत कर सकते थे और उनके साथ घुल-मिल सकते थे जिनकी तरफ़ वह संदेश भेजा गया था। उन पर अल्लाह का संदेश उतरा ताकि वह उसका प्रचार करें और लोगों के सामने उसको स्पष्ट तरीक़े से बयान करें, क्योंकि यह ज़रूरी बात है कि संदेश संदेशवाहक के कथन और कर्म के द्वारा पहुंचता और स्पष्ट होता है। लेकिन अल्लाह का संदेश उन लोगों के अन्दर संदेश को ग्रहण करने की गम्भीर जिज्ञासा और ग़ौर व चिंतन करने की मांग करता है जो उसके सम्बोधित हैं, क्योंकि अनिच्छा, बे-दिली या बे-ध्यानी अल्लाह के पैग़म्बर की किसी भी कोशिश को बे-नतीजा कर देगी। यह आयतें इस बात पर भी ज़ोर देती हैं कि अल्लाह का दीन मौलिक शिक्षाओं और सिद्धांतों में एक ही है और निरन्तरता से आता रहा है, और इसलिए उन लोगों के बीच आपसी सम्बंध बने रहना चाहिएं जिनके पास एक के बाद एक अल्लाह का दीन आता रहा है, अगर वो वास्तव में अल्लाह से डरते हैं और अपनी नैतिक ज़िम्मेदारियों को पूरा करने वाले हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

और आपसे पहले हमने कोई रसूल नहीं भेजा जिसको हमने ये वही ना की हो, के मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो पस मेरी ही इबादत करो। (21:25)

ये आयत इस बात पर ज़ोर देती है कि अल्लाह के सभी पैग़म्बरों के द्वारा निरन्तर जो पैग़ाम आता रहा है वह एक ही है और यह कि केवल अल्लाह की ही इबादत की जाए। इस तरह यह आयत इंसानी ज़हन को और इंसानी समाज को मनगढ़त बातों, वहम, दमन व उत्पीड़न और दूसरी ग़लत प्रवृत्तियों के जमावड़े से मुक्ति देती है।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾

ये है तुम्हार तरीक़ा, एक ही तरीक़ा, और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मेरी इबादत किया करो। (21:92)

जब अल्लाह की हस्ती एक है तो उस पर ईमान रखने वालों को भी एक ही होना चाहिए, कि इन सब का एक ही ठोस आधार है, और एक ही जनक, मालिक व पूज्य रब की इबादत करना और उसकी बन्दगी को स्वीकार करना उनको आपस में जोड़ने का एक मज़बूत कारक है। लेकिन, एकजुटता से हालांकि बिखराव और फूट का समाधान होता है लेकिन इसका मतलब विविधता को मिटाना नहीं है। इसलिए मक़सद बस इतना ही है कि समान बुनियादों और बातों से आपसी समझबूझ और सहयोग हो, इसका मतलब एक ही सांचे में ढालना नहीं है। एक वास्तविक और जानदार एकजुटता दूरियों को ख़त्म करने, विवादों को सुलझाने और समस्याओं को हल करने के लगातार प्रयासों के लिए कारबन्द हुए बिना नहीं हो सकती।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ۝ اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝

हमने लौहे महफ़ूज़ के बाद दूसरी किताबों में भी लिख दिया है के मेरे नेक बन्दे इस ज़मीन के वारिस होंगे। बेशक इबादत करने वालों के लिये इसमें काफ़ी मज़मून है। और (ऐ नबी) हमने आपको सारे जहान के लिये रहमत बना कर भेजा है। आप कह दीजिये के मुझ पर वही आती है के तुम सबका माबूद एक ही माबूद है, तो क्या तुम अब भी मानते हो। (21:105-108)

ज़बूर का अर्थ है हिकमत की किताब, और क़ुरआन में कुछ जगहों पर इसे बहुवचन में स्तेमाल किया गया है (3:184; 16:44; 23:53; 26:196; 35:25; 54:53)। यह शब्द ख़ास तौर से उस किताब के लिए भी बोला जाता है जो हज़रत दाऊद पर उतरी थी (4:163; 17:55)। इसी तरह ज़िक्र शब्द का अर्थ है याददिलाना, या ऐसी बात जो पहले से ज़हन में हो, या कोई बात किसी से कहना (7:63,69; 13:28; 16:43; 21:7; 38:8; 54:25), और इसका एक मतलब क़ुरआन भी है कि यह क़ुरआन का एक नाम है (3:58; 15:9; 16:44; 21:50; 36:69)। उपरोक्त आयतों में दोनों शब्द ज़ाहिर में उनके साधारण अर्थ में ही स्तेमाल हुए हैं। इस तरह यह आयत इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि अल्लाह ने इंसानों को अच्छे और नेक कामों की तरफ़ रास्ता दिखाया है, और अपनी किताब में उसने वायदा किया है कि रास्ता पकड़ने वाले और सदाचारी लोग ज़मीन के वारिस होंगे और इंसानों के बीच न्याय स्थापित करने के लिए अल्लाह की तरफ़ से अधिकारों के पात्र बनाए जाएंगे। मुहम्मद सल्ल० का पैग़ाम इसी न्याय, दया और जीव जन्तुओं से हमदर्दी का आग्रह करता है, समस्त जीव जन्तुओं से हमदर्दी जिनमें इंसान (ख़ास तौर से वो जो कमज़ोर, पीड़ित और वंचित हों जैसे बच्चे, महिलाएं, महनत मज़दूरी करने वाले, यु) में बन्दी बनने वाले और ग़ुलाम वग़ैरह), जिन्न और दूसरे प्राणि सब शामिल हैं। अल्लाह का इंसाफ़ और उसकी .पा दोनों लिंगों के लिए है, हर उम्र के लोगों के लिए है, हर जाति व समुदाय और आस्था के लिए आम है, शासकों के लिए भी है और शासितों के लिए भी, अमीरों के लिए भी और ग़रीबों के लिए भी। लेकिन यह इंसाफ और .पा एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले और उसका तक़वा (डर) रखने वाले लोगों के बिना स्थापित नहीं हो सकता जो अपना दिल, दिमाग़, ऊर्जा और अपनी समस्त शक्तियाँ व क्षमताएं अल्लाह के आगे बिछा दें। इस तरह व्यक्ति और समाज एक तरफ़ स्वार्थपूर्ति, शोषण, ज़ुल्म और ज़ोरज़बरदस्ती, लालच और ना-इंसाफी व निर्दयता के दूसरे रूपों से अपने आप को बचा सकते हैं और दूसरी तरफ़ निराशा और हताशा से बचे रह सकते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

बेशक जो मोमिन हैं, और जो यहूदी हैं, और जो सितारा परस्त, और जो नसारा हैं और मजूसी हैं, और जो मुशरिक हैं, अल्लाह सबके दरमियान क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा, बिला शुबह अल्लाह हर चीज़ से बाख़बर है। (22:17)

यहाँ क़ुरआन उसी चीज़ पर ज़ोर देता है जो दूसरी जगहों पर कई बार कही गयी है कि विभिन्न अक़ीदों और उनके मानने वालों के मतभेदों का फैसला अन्तिम रूप से अल्लाह को ही करना है, वही हर इंसान की नियत और उसकी समस्त परिस्थितियों को जानता है (3:55; 5:48,105; 6:60,108,164; 10:23,93; 27:28; 29:8; 31:15; 39:7; 45:17)। यहाँ तक कि ज़ोरोष्ट्रियन को भी जो दो भगवानों का अक़ीदा रखने की वजह से ज़ाहिर में तौहीद को मानने वाले नहीं हैं, दूसरे लोगों के साथ एक अल्लाह का हवाला दिया गया है जो अपने पूरे ज्ञान और न्याय के साथ फ़ैसला करेगा। जहाँ तक साबिईन का सवाल है तो मैं उसे इसके सामान्य अर्थों में लेने का पक्षधर हूँ, उनसे अभिप्राय वो लोग हैं जो सत्य की खोज में एक आस्था से दूसरी आस्था की तरफ़ चले गए, यह मानने के बजाए कि इससे अभिप्राय ईसाइयों का एक विशेष सम्प्रदाय है जो हर्रान में जाना जाता है, क्योंकि ऊपर की आयत में साबिईन का ज़िक्र एक अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखने वाले लोगों के साथ किया गया है (देखे 2:62; 5:69)। जबकि सिबयान उनमें नहीं गिने जा सकते। इस शब्द का जो मूल है उसका अरबी में अर्थ है किसी आस्था को बदल लेना, और यह शब्द ख़ुद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए मक्का के लोगों ने स्तेमाल किया था जब आप ने एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाना शुरू कियाँ यह वर्ग जो हज़रत ईसा से पहले यहूदियों में से निकला होगा और जॉन बाप्टिस्ट जिसकी शिक्षाओं का एक प्रतिनिधि था, इराक़ के माण्डियन लोगों के रूप में देखा जा सकता है। वो लोग जो अल्लाह के साथ दो अन्य हस्तियों को भी ख़ुदाई में शामिल समझते हैं, यह आयत उनका मामला भी अल्लाह के हवाले करती है कि वही उनका फ़ैसला करेगा। वही है जो उनकी नियत, बूझ, उनकी चयन की आज़ादी और उनकी समस्त स्थितियों को जानता है, क्योंकि अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। इस सच्चाई को कि अल्लाह उन लोगों को कभी मआफ़ नहीं करेगा जो उसके साथ दूसरों को शरीक करते हैं (4:48,116) इस सिद्धांत से जोड़ कर देखना चाहिए कि ज़िम्मेदारी के लिए अनिवार्य और अग्रिम शर्त के रूप में उन पर हिदायत (सही रास्ते की सीख) स्पष्ट हो गयी हो (4:115; 47:25,32), और इस आम उसूल से भी अलग करके नहीं देखना चाहिए कि इंसान को उसकी क्षमता की सीमा में ही जवाबदेह बनाया गया है (2:223,286; 6:152; 7:42; 23:62)।

ثُمَّ اَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا تَتۡرَا ؕ کُلَّمَا جَآءَ اُمَّۃً رَّسُوۡلُهَا کَذَّبُوۡهُ فَاَتۡبَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ بَعۡضًا وَّ جَعَلۡنٰهُمۡ اَحَادِیۡثَ ۚ فَبُعۡدًا لِّقَوۡمٍ لَّا یُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۴۴﴾

फ़िर हम लगातार अपने रसलू भेजते रहे, और जब किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया उन्होंने उसको झुटलाया, तो हम भी बाज़ को बाज़ा के पीछे हलाक करते और उन पर अज़ाब लाते रहे और उनके अफ़साने बनाते रहे, पस जो ईमान नहीं लाये उन पर लानत। (23:44)

अल्लाह के पैग़म्बर अलग अलग युगों में अलग अलग जगहों पर आए। यद्यपि हम इन पैग़म्बरों, उनके ज़माने, और उनके स्थान की पूरी सूची नहीं बना सकते (4:164; 40:78), फिर भी हम यह मान सकते हैं कि उनकी शिक्षाओं में कुछ चीज़ें समान रही होंगी, क्योंकि उन सभी को अपने लोगों की तरफ़ से विरोध का सामना करना पड़ा। उनकी क़ौम के लोग दूसरे बहुत से लोगों की तरह स्वार्थपूर्ति और आत्मसंतोष में लिप्त रहे और उनकी सारी दिलचस्पियाँ भौतिक आनन्द और हित को साधने में लगी रहीं, उन्होंने अपनी अक़लों का स्तेमाल नहीं किया और अपनी आत्मा की आवाज़ को अनसुना कियाँ लेकिन ये लोग नुक़सान उठाने वाले हैं क्योंकि उनके अन्दर मानसिक और सामाजिक संतुलन और स्थिरता नहीं थी कि अल्लाह और आख़िरत पर ईमान से ही यह चीज बाक़ी रहती है, और उन्हें इस छोटे से जीवन के अनिवार्य अंजाम का सामना करना होगा। वो केवल बीते ज़माने की एक कथा बन कर रह गए, और इंसान की अदूरदर्शिता का एक उदाहरण बन गए।

وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَکَ مِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اِلَّاۤ اِنَّهُمۡ لَیَاۡکُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَ یَمۡشُوۡنَ فِی الۡاَسۡوَاقِ ؕ وَ جَعَلۡنَا بَعۡضَکُمۡ لِبَعۡضٍ فِتۡنَۃً ؕ اَتَصۡبِرُوۡنَ ۚ وَ کَانَ رَبُّکَ بَصِیۡرًا ﴿۲۰﴾

और हमने आप से पहले जितने रसूल भेजे थे वो सब खाते थे, और बाज़ारों में चलते फ़िरते थे, और हमने तुम में एक को दूसरे के लिये आज़माईश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे, और आपका रब ख़ूब देखने वाला है। (25:20)

अल्लाह के सभी पैग़म्बर इंसान ही थे जिन्होंने लोगों को नैतिकता, न्याय, शान्ति, आपसी सहयोग और हमदर्दी की शिक्षा देने के लिए अल्लाह के संदेश से अवगत करायाँ लेकिन चूंकि अल्लाह ने इंसान को आज़ाद मर्ज़ी के साथ पैदा किया है, इसलिए सभी लोग अक़ल और तर्कबु) से काम नहीं लेते हैं और पैग़म्बरों की दावत पर सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देते हैं। लोगों की परीक्षा इस बात में है कि वो अल्लाह की हिदायत पहुंचने के बाद क्या रवैया अपनाते हैं और एक दूसरे के साथ किस तरह बर्ताव करते हैं। यह मुस्तक़िल परीक्षा और परख जो हर इंसान को दूसरों के साथ मामला करने में सामने आती है अल्लाह की हिदायत पर अमल करने से आसान हो जाती है, कि यह हिदायत इंसानी स्वभाव के पूर्वाग्रहों और इंसान की सीमित

क्षमता व योग्यता के दायरे के बाहर से आती है। इंसानी सम्बंधों की परख में कामयाब होने के लिए व्यक्ति को इस हिदायत पर अमल करना चाहिए क्योंकि अल्लाह की हिदायत (सीख) सभी पक्षों के हितों व आवश्यकताओं को पूरा करती है और किसी के साथ कोई भेदभाव या पक्षपात नहीं करती, और यह हिदायत न्याय, दया और हमदर्दी पर आधारित है।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ
فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا
كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝

और आपका रब बस्तियों को हलाक नहीं करता, जब तक उनके बड़े शहर में कोई रसूल नहीं भेजता जो हमारी आयतों का पढ़ पढ़ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नहीं किया करते मगर इस हालत में के वहां के बाशिन्दे ज़ालिम हों। (28:59)

अल्लाह ने किसी भी क़ौम को उसके लगातार कुकर्मों के लिए तब तक कोई सज़ा नहीं दी जब तक उनके पास कोई डराने वाला पैग़म्बर नहीं भेज दिया, फिर उसे उन लोगों ने हठधर्मी के साथ झुटला दिया (6:92,131; 11:117; 17:15; 42:7)।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ
مِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ
عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ
مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ
صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا
اَلِيْمًا ۝

और जब हमने रसूलों से अहद लिया और आप (स.अ.स.) से और इब्राहीम (अ.स.) और मूसा, और मरयम के बेटे ईसा से, और हमने उनसे पुख़्ता अहद लियाँ ताके सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में दरयाफ़्त करे, और काफ़िरों के लिये दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (33:7-8)

जब अल्लाह ने किसी इंसान को पैग़म्बर बनाया तो उस पैग़म्बर से अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने का वचन लियाः''जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गए (क़ियामत के दिन) हम उनसे ज़रूर पूछेंगे और पैग़म्बरों से भी पूछेंगे'' (7:6; और देखें 3:83; 3:187; 5:12,70,169)। इसी लिएं हज़रत यूनुस को इस वचन को तोड़ देने का दोषी माना गया, उनकी क़ौम ने जब उनकी दावत को रद किया तो वह बस्ती छोड़ कर चले गए (21:87-88; 37:139-148)। अल्लाह ने जब भी किसी को पैग़म्बर बनाया तो उन्हें यह ज़िम्मेदारी दी कि वह ईमान लाने के बाद दूसरों को अल्लाह की इबादत की दावत देने से पहले ख़ुद एक अल्लाह की इबादत करें और उसके निर्देशों का पालन करें।

وَ لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا رُسُلًا مِّنۡ قَبۡلِكَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَصَصۡنَا عَلَيۡكَ وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ لَّمۡ نَقۡصُصۡ عَلَيۡكَ ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوۡلٍ اَنۡ يَّاۡتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمۡرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالۡحَـقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ﴿۷۸﴾

78. और हमने आप से पहले बहुत से रसूल भेजे हैं, उन में चन्द के हालात तो हमने आपसे बयान कर दिये, और चन्द के हालात नहीं बयान किये और किसी रसूल को इख़्तियार ना था के वो अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाये, फ़िर जब अल्लाह का हुक्म आया तो ठीक ठीक फ़ैसला हो गया, और उस वक़्त बातिल वाले नुक़सान में पड़ गए। (40:78)

अल्लाह ने अपने पैग़म्बर विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न समुदायों में भेजे लेकिन उन सब का ज़िक्र क़ुरआन में नहीं है (और देखें 4:64)। चूंकि अल्लाह के संदेश के साथ हर बार अनिवार्य रूप से कोई चमत्कारी प्रतीक नहीं दिया गया, और चूंकि ये चमत्कारी प्रतीक अल्लाह की मंशा और मर्जी से ही जब उसने चाहा, सामने आए इसलिए अल्लाह के कोई पैग़म्बर किसी ख़ास जगह और ख़ास लोगों के बीच किसी चमत्कारी निशानी के बग़ैर भी हो सकते हैं। पैग़म्बरों के पैग़ाम की सच्चाई का सुबूत ख़ुद उनका पैग़ाम और उनकी दावत (आग्रह अथवा अनुनय) ही होता था। जिन लोगों ने ख़ुद को झूट में लिप्त रखा वो फ़ैसले के दिन यह देख लेंगे कि उन्होंने सत्य को समझने में बहुत देर कर दी और अब वो हमैशा के नुक़सान में हैं।

وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحۡيًا اَوۡ مِنۡ وَّرَآىٴِ حِجَابٍ اَوۡ يُرۡسِلَ رَسُوۡلًا فَيُوۡحِىَ بِاِذۡنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِىٌّ حَكِيۡمٌ ﴿۵۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا كُنۡتَ تَدۡرِىۡ مَا الۡكِتٰبُ وَ لَا الۡاِيۡمَانُ وَ لٰـكِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِىۡ بِهٖ مَنۡ نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّكَ لَتَهۡدِىۡۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيۡرُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۵۳﴾

और किसी बशर के लिये ये मुमकिन नहीं है के अल्लाह उससे बात करे, मगर वही के ज़रिये से या पर्दे के पीछे से, या कोई फ़रिश्ता भेज दे, फ़िर वो अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहे पैग़ाम पहुंचा दे, बिला शुबह वो आला है, बड़ी हिकमत वाला है। और इसी तरह हमने अपने हुक्म से आपके पास रूह (यानी जिब्राईल) को भेजा, आप ना तो ये जानते थे के किताब क्या चीज़ है और ना ये जानते थे के ईमान क्या चीज़ है, लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया के इसके ज़रिये से हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं हिदायत करते हैं और बिला शुबह ऐ नबी! आप सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करते हैं। यानी उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ के उसी का है वो सब कुछ जो आसमानों और ज़मीन में है, याद रखो के सारे उमूर अल्लाह की तरफ़ रूजू होंगे। (42:51-53)

उपरोक्त क़ुरआनी आयतों से यह सष्ट होता है कि किसी पैग़म्बर पर अल्लाह की वह्यि (विशेष गुप्त संदेश) कैसे उतरता था। यह वह्यि अचानक महसूस होने वाला एक आन्तरिक अनुभव होता है, जैसा कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल० की एक हदीस से पता चलता है, या कोई आवाज़ होती है जो परदे के पीछे से आती है, जैसा कि हज़रत मूसा के साथ हुआ। बहुत से मामलों में अल्लाह किसी फ़रिश्ते को भेजता है और जिस पर जो वह्यि उतारना चाहता है उतारता है। जैसा कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पास आते थे। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबी बनाए जाने से पहले अपने क़बीले और परिवार के एक सदस्य ही थे, यद्यपि आपके अन्दर अल्लाह की हस्ती के प्रति एक गहरी जिज्ञासा, लगाव और श्रद्धा थी। अल्लाह के मार्गदर्शक संदेश से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यि के उतरने का अनुभव हुआ और यह मालूम हुआ कि सत्य धर्म को किस तरह बयान किया जाए और अल्लाह की बन्दगी करने का तरीक़ा क्या है। अल्लाह का पैग़ाम ''नूर'' (प्रकाश) है और सीधा रास्ता है जिसे किताब के रूप में आसानी से सुरक्षित किया जा सकता है, याद किया जा सकता है और उसका दर्शन और उच्चारण किया जा सकता है। यह व्यक्ति और समाज को न्याय, शान्ति और स्थिरता प्रदान करता है, क्योंकि इसका स्रोत अल्लाह की अपनी हस्ती है जो जातीय, वर्गीय, लैंगिक या और किसी भर तरह के पक्षपात और भेदभाव से पाक है।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۗ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾

और इसी तरह हमने आपसे पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर वहां के ख़ुशहाल लोगों ने कहा के हमने अपने बाप दादा को एक तरीक़ा पर पाया है, और हम क़दम ब क़दम उनके पीछे चलते हैं। रसूल ने कहा, मैं तुम्हारे पास ऐसा दीन लाया हूँ जो तुम्हारे बाप के दीन से बेहतर रास्ते पर ले जायेगा, तो उन्होंने कहा के हम तो उसको मानने वाले नहीं हैं जो तुम को देकर भेजा गया है। तो हमने उनसे बदला लिया, सो देख लो, झुटलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। (43:23-25)

इन आयतों में उन विरोधी बातों का ज़िक्र है जो अल्लाह के विभिन्न पैग़म्बरों को उन लोगों की तरफ़ से कहीं गयीं जो मौज मस्ती में पड़े हुए थे, घमण्ड और अहंकार में लिप्त थे और अपने पूर्वजों की आस्थाओं के अंधे अनुयायी बने हुए थे। उन्होंने अपनी करतूतों के नतीजे इस दुनिया में भुगते और आख़िरत के अनन्त जीवन में उसके नतीजे सदैव भुगतते रहेंगे। जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, अल्लाह ने इंसानों को इस दुनिया में जीने का अवसर दिया है

और किसी भी ग़लत काम के प्राकृतिक नतीजों का सामना करने का पाबन्द कर दिया है, जबकि उसने अपना फ़ैसला और अपनी तरफ़ से कर्मों का फल या सज़ा को आख़िरत के लिए छोड़ दिया है (6:60; 14:10; 16:16; 20:129; 29:53; 35:45; 40:67; 42:14; 47:4)।

अल्लाह का दीन सत्य की साफ़ निशानियों और सुबूतों तथा पैग़म्बर के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रतिष्ठा के विश्वास के साथ भेजा गया और उसके साथ दीन व सीधे रस्ते के मार्गदर्शन की शिक्षाएं दी गयीं, फिर उस पर अल्लाह ने पैग़म्बर की मदद के लिए जो अप्रा.तिक निशानियाँ और चमत्कार देना चाहे वो भी उनके साथ लोगों के सामने लाए गए। संदेश अथवा दीन का मूल तत्व उसकी मौलिक शिक्षाएं हैं और ये शिक्षाएं कभी कभी किताब के माध्यम से दी गयीं जो पैग़म्बर पर उतारी गयी। इन शिक्षाओं में वो संस्कार भी शामिल हैं जो इस बात को समझने के लिए कि कौन से कर्म और बातें नेकी और भलाई की हैं और कौन से काम गुनाह के औरे ग़लत हैं, नैतिक व सामाजिक आदर्श निर्धारित करती हैं। इस संदर्भ में ''अहकामे अशरा'' (मूसा की शरीअत की शिक्षाएं) को प्राथमिक मील का पत्थर के रूप में देखा जा सकता है।

अलबत्ता, अल्लाह की हिदायत और नैतिक मूल्यों को लिए एक मज़बूत बुनियाद ज़रूरी है जिसकी बौदलत यह हिदयात और मर्यादाएं व्यक्ति या समाज में रच बस जाएं। आर्थिक विकास, क़ानून व्यवस्था और आन्तरिक व बाहरी सुरक्षा इस बुनियाद की मज़बूती के लिए ज़रूरी हैं। इंसानी सभ्यता के इतिहास में लोहे का बहुत महत्व रहा है जो शान्तिपूर्ण आर्थिक विकास का भी साधन है जैसे उपकरण बनाने, यातायात के साधन जुटाने, गाड़ियां, जहाज़ आदि बनाने वग़ैरह और समाज व देश की सुरक्षा का भी साधन है कि इससे शस्त्र बनते हें जिनकी बदौलत समाज और उनके मूल्यों की सुरक्षा का बन्दोबस्त किया जाता है, या आन्तरिक और बाहरी ख़तरों की रोकथामं की जाती है। क़ुरआन यह सीख देता है कि लोहे को किस तरह इन दोनों मैदानों में न्यायिक ढंग से उपयोग में लाया जाए और समाज को शोषण, हिंसा, अत्याचार और दमन से बचाया जाए। शक्ति का उपयोग जायज़ मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए और जो लोग आन्तरिक या बाहरी स्तर से न्याय की हदों और अधिकारों को कुचलते हैं उनके ख़िलाफ़ किया जा सकता है (2:190,193)। और ताक़त का स्तेमाल शर्तों से बंधा हुआ और सीमित इस लिए है कि उसके नुक़सानों को कम से कम स्तर तक रोका जा सके और आम नागरिक या लड़ाई से अलग रहने वाले लोग इसकी चपेट में न आएं।

अल्लाह के संदेश यानि दीन को समझने के बाद और यह जानने के बाद कि इस दीन की मदद किस तरह की जा सकती है, ऊपर की आयतों में अल्लाह के दो पैग़म्बरों का ज़िक्र है। उनके इस वर्णन से एक अल्लाह की इबादत पर आधारित नैतिक शिक्षाओं को पेश किया गया है। पहले जिन पैग़म्बर का उल्लेख किया गया है वह हज़रत नूह हैं जिन्हें मानवता का दूसरा

पिता कहा जा सकता है, और दूसरे हज़रत इब्राहीम हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों को एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाने में लगा दिया, जहाँ कहीं भी वह गए मेसोपाटामिया, कुनआन या अरब। इन पैग़म्बरों के बाद उनकी संतानों को अल्लाह का दीन मिला और उन्होंने उसका प्रचार प्रसार कियाँ लेकिन एक ऐसे समय में जब इंसानी सभ्यता विक्सित होते हुए समाज के क़बायली तंत्र से आगे बढ़ कर वैश्विकता में बदलने लगी थी, और उस समय की महान विश्व शक्ति रोमन ऐम्पायर ने उसे आगे बढ़ाने का काम किया तो अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम को अकेला ही रखा और उनकी संतानों का सिलसिला आगे नहीं चला, और हज़रत ईसा के बाद जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पैग़म्बर बनाए गए तो उनकी कोई संतान बाक़ी नहीं रही। इस तरह अल्लाह का दीन किसी परिवार, वंश, समुदाय या किसी स्थान और क्षेत्र तक सीमित न रहा बल्कि विश्व व्यापी बनता गयाँ

उपरोक्त आयत के अन्त में क़ुरआन जीवन को त्याग कर तपस्याएं करने और अध्यात्मिक एकाग्रता (दुनिया और दुनिया के कामों से अलग थलग हो जाने) को नकारता है (उदाहरण के लिए देखें 2:168; 5:87-88; 7:31-32; 16:114-116; 18:7) और कहता है कि अल्लाह ने इस तरह की इबादत और तपस्याओं का आदेश नहीं दिया था, वह तो अपने बन्दों से यह चाहता है कि वो उसके दिशा निर्देश के अनुसार दुनिया की अच्छी चीजों से और अल्लाह की नेअमतों से फ़ायदा उठाएं, लेकिन रहबानियत यानि जोगी बन जाने (त्याग व तपस्या) के तरीक़े तो ईसाइयों ने ख़ुद ही निकाल लिए और यह समझने लगे कि इस तरह उन्हें महानता और पवित्रता प्राप्त हो जाएगी। दूसरी तरफ क़ुरआन यह बताता है कि बहुत से ईसाई (नसारा) दूसरों से हमदर्दी और दया का बर्ताव करते है:“यह इसलिए कि उनमें आलिम (ज्ञानी) भी हैं और मशाइख (पण्डित) भी और वो तकब्बुर (अहंकार) नहीं करते (34:5), और दोनों पक्षों का फ़ैसला आख़िरत में अल्लाह करेगा पूरे इंसाफ के साथ और किसी के साथ कोई ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

❁ ❁ ❁

वो पैग़म्बर जिनका क़ुरआन में बयान है

हज़रत आदम

(देखें अध्याय दो, मानवजाति)

हज़रत इदरीस

وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿۵۶﴾ وَّ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿۵۷﴾

और इस किताब में इदरीस (अ.स.) का भी ज़िक्र कीजिये, वो भी बड़े सच्चे नबी थे। और हमने उनको बुलंद मर्तबा तक पहुंचाया। (19:56-57)

बाइबिल में सम्भवतःइनको ही एनोक (म्दवबी) कहा गया है (जेनेसिसः5 18-19 और 21-24), लेकिन यह केवल एक अनुमान है। बाइबिल के अनुसार एनोक आदम के बेटे सेठ (Seth) की संतान थे, और बाइबिल यह बताती है कि अल्लाह को वह इतने प्रिय थे कि अल्लाह ने उन्हें मृत्यू नहीं दी बल्कि उन्हें अपने पास बुला लिया अर्थात उठा लिया (जेनेसिसः5:22; हेब्रीव्जः11:5), दूसरी तरफ क़ुरआन के कुछ प्राचीन व्याख्कारों जैसे अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद, क़तादह, इकरमा और अलज़हाक वग़ैरह का विचार है कि इदरीस हज़रत इलयास (Elijah) का ही दूसरा नाम है। बाइबिल में है कि एनोक और एलिजाह दोनों को ही उनके शरीर के साथ आसमान में उठा लिया गया था। स्मिथ बाइबिल डिक्शनरी में एनोक के बारे में स्मिथ के लेख में है कि एनोक और एलिजाह दोनों इंसानी शरीर के मृत होने के बाद फिर से जी उठने का एतिहासिक उदाहरण हैं। जैसा कि ऊपर लिखित क़ुरआनी आयत में है। उनको ‘‘ऊंची जगह उठा लिए’’ जाने का ज़िक्र से क़ुरआन की तफ़सीर में कुछ मुसलमान मुफस्सिरों का उन्हें एनोक या एलिजाह समझना समझ में आता है। हज़रत इदरीस को उठाया जाना अभौतिक या अशरीरिक रूप से हो सकता है जैसा कि अल्लाह से उनकी निकटता से इशारा मिलता है, जैसा कि हसन अलबसरी से रिवायत किया गया है, हालांकि इस बारे में एक हदीस की रिवायत यह है कि हज़रत इदरीस के पार्थिव शरीर को जन्नत में रखा गया है।

हज़रत नूह

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ

हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो फ़रमाया

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ
اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا
لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ يٰقَوْمِ
لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ
رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ
اَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ
ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ
لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ
مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की बन्दगी किया करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं, मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। उनकी क़ौम के बड़े बड़े लोगों ने कहा के हम तुमको सरीह ग़लती में मुबतला देखते हैं। आपने फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! मुझ में तो ज़रा सी भी ग़लती नहीं है, लेकिन मैं रब्बुलआलेमीन का रसूल हूँ। मैं अपने रब का पैग़ाम तुम को पहुंचाता हूँ और तुम्हारी खैर .ख़्वाही करता हूँ, और मैं अल्लाह की जानिब से वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। क्या तुम ताज्जुब करते हो के एक नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम ही में से एक शख़्स के ज़रिये तुम्हारे पास आई ताके तुमको डराये और ताके तुम डर जाओ, और ताके तुम सब पर रहम किया जाए। सो वो नूह (अ.स.) की तकज़ीब ही करते रहे, तो हमने नूह को और उन लोगों को जो उनके साथ कश्ती में थे, बचा लिया और उनको हमने ग़र्क़ कर दिया जो हमारी आयात को झुटलाया करते थे, बिला शुबह वो अंधे थे। (7:59-64)

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ
يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَ
تَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ
فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَيَّ وَ لَا
تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ
مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَ
اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَ
جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

और आप उनको नूह का क़िस्सा पढ़कर सुनाईये, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम को मेरा रहना और अल्लाह की आयात से नसीहत करना बुरा लगता हो तो मैं अल्लाह पर भरोसा रखता हूँ, तुम अपने शरीकों से मिल कर अपनी तदबीर पुख़्ता कर लो, और फ़िर तुम्हारी तदबीर में कोई शुबह ना रहे, फ़िर मेरे हक़ में कर गुज़रो, और मुझे मोहलत मत दो। फ़िर अगर तुमने मुंह फ़ेर लिया तो मैंने तुम से कोई मुआवज़ा नही मांगा, मेरा मुआवज़ा तो अल्लाह के ज़िम्मे है, और मुझे हुक्म है के मैं फ़रमांबर्दारों में रहूँ। तो उन्होंने उनको झुटलाया, पस उनको और उनके साथियों को जो कश्ती में सवार थे (सबको तूफ़ान से) बचा लिया और उनको आबाद किया, और जिन लोगों ने हमारी आयात को

بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُنْذَرِيْنَ ۝73 ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهٖ رُسُلًا
اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا
لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝74

झुटलाया था, उनको ग़र्क़ कर दिया, तो देख लो, जो डराये गए थे उनका अंजाम क्या हुआ। फ़िर हमने नूह के बाद और रसूलों को उनकी क़ौमों के पास भेजा, तो वो उनके पास खुली निशानियां लेकर पहुंचे, मगर वो लोग ऐसे ना थे के ईमान ले आते उस पर जिसको वो झुटला चुके थे, इस तरह हम जो हद से आगे निकल जाते हैं उनके दिलों पर मोहर लगा देते हैं।

(10:71-74)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ ؗ اِنِّيْ لَكُمْ
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝25 اَنْ لَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝26
فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا
نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَ مَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ
الرَّاْيِ ۚ وَ مَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ
بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۝27 قَالَ يٰقَوْمِ
اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ
اٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ
اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَ اَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝28

और हमने नूह (अ.स.) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा के मैं तुम्हें साफ़ साफ़ डराता हूँ। ये के अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की बन्दगी मत करो, मैं तुम्हारे हक़ में एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से अंदेशा रखता हूँ। तो उनकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने कहा, हम तुम को अपने ही जैसा एक आदमी जानते हैं, और हम ये भी देखते हैं के तुम्हारे पैरव भी वही होते हैं जो हम में अदना दर्जे के लोग हैं, और ये भी ज़ाहिर राय से, और हम तुम में अपने ऊपर फ़ज़ीलत की कोई बात भी नहीं पाते, बल्के हम तुम को झूटा ख़्याल करते हैं। नूह (अ.स.) ने कहा, के ऐ मेरी क़ौम भला ये तो बतलाओ, अगर मैं अपने रब की तरफ़ से दलील पर क़ायम हूँ, और उसने अपने पास से मुझ को रहमत अता की है, फ़िर वो आप लोगों को नज़र ना आये, क्या हम उसको तुम्हारे गले में डाल दें और तुम उससे नफ़रत किये जाओ। (11:25-28)

وَ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ لٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ
قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝29 وَ يٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से इस पर मोल नहीं मांगता, मेरा मिसला तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और मैं उनको निकालने वाला भी नही हूँ जो ईमान ले आये हैं, वो तो अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखत हूँ के तुम नादानी कर रहे हो। और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं उनको

निकाल दूं तो अल्लाह के अज़ाब से मुझे कौन बचायेगा क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुम से ये नहीं कहता के मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ग़ैब की बात जानता हूँ और ना मैं कहता हूँ के मैं फ़रिश्ता हूँ और ना मैं ये कहता हूँ के जिन को तुम नफ़रत की निगाह से देखते हो, अल्लाह उनको उनकी नेकी का बदला नहीं देगा, अल्लाह ख़ूब जानता है जो उनके दिलों में है अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं ज़ुल्म करने वाला होगा। उन्होंने कहा के ऐ नूह (अ.स.) तुमने हमसे झगड़ा तो किया है, और झगड़ा भी बहुत सा किया जिससे तुम हमें डराते हो वो ले आओ अगर तुम सच्चे हो। नूह (अ.स.) ने कहा वो तो अल्लाह ही लायेगा अगर वो चाहेगा और तुम उसको आजिज़ नहीं कर सकते। अगर मैं चाहूँ के मैं तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करूं और अल्लाह चाहे के तुम को गुमराह करे तो मेरी ख़ैर ख़्वाही तुम्हारे काम ना आएगी, वही तुम्हारा रब है, और तुमको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। क्या ये कहते हैं के मोहम्मद (स.) ने इस क़ुरआन को घड़ लिया है आप कह दीजिये के अगर मैंने ये क़ुरआन बना लिया है, तो मेरा गुनाह मुझ पर होगा, और जो तुम जुर्म करते हो मैं उससे बरीउलज़िम्मा हूँ। और नूह की तरफ़ वही की गई के तुम्हारी क़ौम में जो ईमान ला चुके हैं उनके सिवा कोई और ईमान नहीं लायेगा, तो जो कुछ ये लोग कर रहे हैं उस पर कुछ ग़म ना करो। और एक कश्ति हमारे हुक्म से हमारी निगरानी में बनाओ, और जो ज़ालिम हैं उनके बारे में हमसे कुछ ना कहना, क्योंके वो ज़रूर ग़र्क़ कर दिये जायेंगे। और नूह (अ.स.) ने कश्ति बनान शुरू की, और जब क़ौम का कोई सरदार नूह (अ.स.) के पास से गुज़रता तो मज़ाक़ उड़ाता, नूह (अ.स.) कहते के अगर आज तुम हमारे साथ तमसख़ुर करते हो तो हम तुम पर हंसते हैं, जिस तरह तुम हम पर हंसते हो। तो तुम को जल्द मालूम हो

مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِیْ
خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ
اِنِّیْ مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ تَزْدَرِیْۤ
اَعْیُنُكُمْ لَنْ یُّؤْتِیَهُمُ اللّٰهُ خَیْرًا ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْا یٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا
فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ اِنَّمَا
یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِیْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ
اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ
یُرِیْدُ اَنْ یُّغْوِیَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَاِلَیْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ ؕ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ
افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا
تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاُوْحِیَ اِلٰی نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ
یُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا
تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ
الْفُلْكَ بِاَعْیُنِنَا وَوَحْیِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِیْ
فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾
وَیَصْنَعُ الْفُلْكَ ۫ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَیْهِ مَلَاٌ
مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا
مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ؕ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ
یُّخْزِیْهِ وَیَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿٣٩﴾

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَ فَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا
احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ
اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَ مَنْ
اٰمَنَ ؕ وَ مَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٤٠

जाएगा के किस पर अज़ाब आता है जो उसे रूसवा कर देगा। और उस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है। यहां तक जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तन्नूर जोश मारने लगा, तो हमने नूह (अ.स.) से कहा हर क़िस्म के एक नर और एक मादा (दो अदद) कश्ति में चढ़ा लो, और अपने घर वालों को मगर जिस पर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है और दूसरे ईमान वालों को और बजुज़ थोड़े आदमियों के उनके साथ ईमान ना लाये थे।

(11:29-40)

وَ قَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ
مُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٤١ وَ هِيَ
تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَ نَادٰى
نُوْحُ ا۟بْنَهٗ وَ كَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ
مَّعَنَا وَ لَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٤٢ قَالَ سَاٰوِيْۤ
اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا
عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ
وَ حَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ
الْمُغْرَقِيْنَ ۝٤٣ وَ قِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ
وَ يٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَ غِيْضَ الْمَآءُ وَ قُضِيَ
الْاَمْرُ وَ اسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَ قِيْلَ بُعْدًا
لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤ وَ نَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ
رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَ اِنَّ وَعْدَكَ
الْحَقُّ وَ اَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٤٥ قَالَ
يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ
غَيْرُ صَالِحٍ ۗ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ
عِلْمٌ ؕ اِنِّيْۤ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ

और नूह (अ.स.) ने कहा, इस कश्ती में सवार हो जाओ, इसका चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम से है, बेशक मेरा रब ग़फ़ूर और रहीम है। और वो उनको लेकर चलने लगी, पहाड़ जैसी मौजों में, और नूह (अ.स.) ने अपने बेटे को पुकारा, वो एक अलेहदा मुक़ाम पर था, ऐ मेरे प्यारे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा, और काफ़िरों के साथ मत हो। उसने कहा अभी किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा, जो मुझे पानी से बचा लेगा, नूह (अ.स.) ने कहा आज अल्लाह के क़हर से कोई बचाने वाला नहीं है लेकिन आज अल्लाह के क़हर से कोई बचाने वाला नहीं है लेकिन जिन पर वही रहम करे, और दोनों के बीच में एक मौज हायल हो गई, पस वो भी ग़र्क़ हो गया। और हुक्म हो गया के ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा, और ऐ आसमान, थम जा, और पानी घट गया, और क़िस्सा ख़त्म हो गया, और कश्ती कोहे जूदी पर आ ठहरी, और कह दिया गया के काफ़िर लोग रहमत से दूर हों। और नूह (अ.स.) ने अपने रब को पुकारा, और अर्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मेरा ये बेटा मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा सच्चा है, और तू अहक़ामुलहाकमीन है। अल्लाह ने कहा, ऐ नूह! ये तुम्हारे घर वालों में से नहीं, ये तबाह कार है, सो मुझसे

ऐसी दरख़्वास्त ना करो जिसकी तुमको ख़बर नहीं, मैं तुम को नसीहत करता हूँ के नादान ना बनो। नूह (अ.स.) ने कहा ऐ रब! मैं इस अमर से तेरी पनाह मांगती हूँ, के ऐसी दरख़्वास्त करूं, जिसकी मुझे ख़बर ना हो, और अगर तूने मेरी बख़्शिश ना की और रहम ना फ़रमाया तो मैं तबाह हो जाऊंगा। कहा गया ऐ नूह! उतरो हमारी तरफ़ से सलाम और बर्कतें तुम पर नाज़िल होंगी, और उन जमातों पर जो तुम्हारे साथ हैं, और बहुत सी जमातें ऐसी भी होंगी जिनको मैं चन्द रोज़ ऐश दूंगा, फ़िर मेरी तरफ़ से सख़्त सज़ा होगी। ये सब ग़ैब की ख़बरों में से हैं जो मैं तुम को वही के ज़रिये बता रहा हूँ, इससे पहले तो ना तुम जानते थे और ना तुम्हारी क़ौम जानती थी, तो सब्र करो, अंजाम परहेज़गारों के लिये ही अच्छा है। (11:41-49)

الْجٰهِلِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَ تَرْحَمْنِیْۤ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۴۷﴾ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَ بَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ عَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَ اُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۴۸﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَاۤ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَاۤ اَنْتَ وَ لَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۹﴾

फ़िर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में सवार हो जाओ, तो ख़ुदा का शुक्र अदा करना और कहना सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं, जिसने हमको ज़ालिमों से बचाया। और ये भी कहना, ऐ मेरे रब! हमको मुबारक जगह उतारना, और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है। बिला शुबह इस क़िस्से में बहुत सी निशानियां हैं, और हम तो आज़माते हैं। (23:28-30)

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَ مَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۸﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۲۹﴾

और क़ौमे नूह ने जब हमारे रसूलों को झुटलाया तो हमने उनको ग़र्क़ कर दिया, और हमने उनको लोगों के लिये निशानी बना दिया, और ज़ालिमों के लिये हमने अज़ाबे दर्दनाक तैयार कर रखा है। (25:37)

وَ قَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَ جَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿ۚۖ۳۷﴾

और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वो उनमें साढ़े नो सौ बरस रहे, फ़िर तूफ़ान ने उनको आ

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ

فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا
فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾
فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا
آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

पकड़ा, और वो लोग ज़ालिम थे। फ़िर हम ने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया, और हमने उस वाक़ये को तमाम आलम के लिये मौजिबे इबरत बना दिया।
(29:14-15)

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾ إِذْ قَالَ
لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِذْ قَالَ
لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾ إِنِّي لَكُمْ
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ
أَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾ قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾ إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ
تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾ قَالُوا لَئِنْ لَمْ
تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾
قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾ فَافْتَحْ بَيْنِي
وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي
الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ
الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ
أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ
الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

नूह की क़ौम ने (भी) हमारे रसूलों को झुटलाया। जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा क्या तुम डरते हो? मैं तो तुम्हारा अमानत दार रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरा करो, और मेरी इताअत करो। मैं तुम से इसका कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला तो रब्बुलआलमीन ही के ज़िम्मे है। तो तुम सिर्फ़ अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। क़ौम ने कहा के क्या हम तुम को मान लें, और रज़ील लोग तुम्हारे पीछे पीछे हों। नूह ने कहा, मुझे क्या पता के वो क्या करते हैं। उनके हिसाब किताब का ज़िम्मा तो सिर्फ़ मेरे रब पर है, काश तुम समझो। और मैं तो मोमिनों को निकाल देने वाला नहीं हूँ। मैं तो साफ़ साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ। क़ौम ने कहा, नूह (अ.स.)! अगर तुम बाज़ ना आओगे तो तुम संगसार कर दिये जाओगे। नूह ने कहा, ऐ मेरे बाबा! मेरी क़ौम ने तो मुझे झूटा कह दिया। सो तू ही मेरे और उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे, और तू मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उनको बचा ले। (अल्लाह ने फ़रमाया) फ़िर हमने नूह को और जो भरी हुई कश्ती में उनके साथ सवार थे उनको बचा लिया। फ़िर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया। इस (क़िस्से में) निशानी है, और अक्सर लोग उसमें ईमान लाने वाले नहीं। बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त और रहम वाला है।
(26:105-122)

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ
نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ
يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا
النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝۱۰

अल्लाह ने काफ़िरों के लिये नूह की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान फ़रमाई है, ये दोनों हमारे दो नेक बन्दों के निकाह में थीं तो दोनों ने उनके साथ ख़्यानत की, तो वो अल्लाह के मुक़ाबले में उन औरतों के कुछ काम ना आये, और उनसे कहा गया के और दाख़िल होने वालियों के साथ तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ। (66:10)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ
قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝۱ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝۲ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوْهُ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۝۳ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ
يُؤَخِّرْكُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ
اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝۴ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ
لَيْلًا وَّ نَهَارًا ۝۵ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْۤ اِلَّا
فِرَارًا ۝۶ وَ اِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ
جَعَلُوْۤا اَصَابِعَهُمْ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَ اسْتَغْشَوْا
ثِيَابَهُمْ وَ اَصَرُّوْا وَ اسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝۷
ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝۸ ثُمَّ اِنِّيْۤ
اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۝۹
فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
غَفَّارًا ۝۱۰ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝۱۱ وَّ
يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِيْنَ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ
جَنّٰتٍ وَّ يَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝۱۲ مَا لَكُمْ لَا

हमने नूह (अ.स.) को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा के तुम अपनी क़ौम को डराओ पेश्तर इसके के उन पर दर्द देने वाला अज़ाब वाक़े हो। उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम मैं तुम को साफ़ साफ़ डराता हूँ। के तुम अल्लाह की इबादत किया करो, और उसी से डरा करो और मेरा कहना मानो। वो तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम को मुक़र्ररा वक़्त तक मोहलत अता करेगा, जब अल्लाह का मुक़र्ररा वक़्त आ जाता है तो ताख़ीर नहीं की जाती, काश तुम जानते होते। (जब क़ौम ने ना माना तो) नूह ने कहा ऐ मेरे रब! मैं क़ौम को रात और दिन बुलाता रहा। मगर मेरी दावत पर वो और ज़्यादा गुरेज़ करते रहे। और जब कभी भी मैंने उनको बुलाया (कहा के वो तौबा करें अपने गुनाहों से) के तू उनको बख़्शे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां दे लीं, और कपड़े ओढ़ लिये, और हट की, और बड़ा ग़ुरूर किया। फ़िर मैं उनको खुले तौर पर भी बुलाता रहा। और ज़ाहिर और पोशीदा हर तरह समझाता रहा। और कहा के अपने रब से माफ़ी मांगो के वो बड़ा माफ़ करने वाला है। वो तुम पर कसरत से बारिश बरसायेगा। और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा, और बाग़ात अता करेगा (उनमें) तुम्हारे लिये नहरें बहा देगा। तुम लोगों को क्या हो गया है के तुम ख़ुदा की अज़मत का एतक़ाद नहीं रखते। जबके वो तुम को तरह तरह से पैदा कर चुका है। क्या

تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ
اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّ جَعَلَ الْقَمَرَ
فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَ
اللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ
يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَ يُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَ
اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا
مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ
اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَ اتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ
مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا
كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَ قَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَ لَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَّ لَا سُوَاعًا ۙ وَّ لَا يَغُوْثَ وَ
يَعُوْقَ وَ نَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَ قَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَ لَا
تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ
اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ
لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾
اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَ لَا
يَلِدُوْۤا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَ
لِوَالِدَيَّ وَ لِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ لَا تَزِدِ
الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

तुम ने नहीं देखा के किस तरह सात आसमान ऊपर तले बनाये हैं। और उसी ने चांद को उनमें (ज़मीन का) नूर बनाया है, और सूरज को चिराग़ बनाया है। और अल्लाह ही ने तुम को ज़मीन से पैदा किया। फ़िर वो तुम को उसी में लौटा देगा, और वही तुम को उससे दोबारा निकालेगा। और अल्लाह ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श बनाया। ताके तुम उसके कुशादा रस्तों में चलो फ़िरो। नूह ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! ये लोग मेरे कहने पर नहीं चले, और ऐसों के ताबे हुए हैं के उनके माल और औलाद ने नुक़सान के सिवा कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाया। और वो बड़ी बड़ी चालें चले। और उन्होंने कहा, अपने माबूदों को हरगिज़ ना छोड़ना, और ना वद्द को सवाअ को, और ना यग़ूस ना यऊक़ को और ना नस्र को (कभी छोड़ना)। और उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है तो तू उनको और गुमराह कर दो। आख़िर वो अपने गुनाहों के सबब ग़र्क़ाब हुए, फ़िर आग में डाले गए, और अल्लाह के सिवा उनको और कोई हिमायती नहीं मिला। और नूह ने कहा, ऐ मेरे रब! काफ़िरों में से रूये ज़मीन पर कोई बसने वाला ना छोड़। अगर तू छोड़ देगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे, और उनसे जो औलाद होगी वो भी बदकार और नाशुक्रगुज़ार होगी। ऐ मेरे रब! मुझको, और मेरे मां बाप को और जो ईमान लाकर मेरे घर में आए उनको और तमाम मोमिन मर्दों, और तमाम मोमिन औरतों को बख़्श दे, और ज़ालिम लोगों को तबाह कर दे। (71:1-28)

हज़रत आदम के बारे में क़ुरआन में किए गए वर्णन से जिनमें उनको अल्लाह की तरफ़ से की गयी ताकीद भी शामिल है, इंसान को उसके स्वभाव, उसकी अध्यात्मिक, बौद्धिक व भाषाई योग्यताओं जिनसे वह सही और ग़लत का फ़र्क़ करता है, और उसकी मर्ज़ी व चयन की आज़ादी की शिक्षा मिलती है। इन बयानों से हमें शैतान और इंसान से उसकी दुशमनी का

भी पता चलता है जो उसकी उन लगातार भटकाऊ हरकतों से ज़ाहिर है जो पहले इंसान (हज़रत आदम) के साथ उसने शुरू कीं और आदम की संतान के साथ हमैशा के लिए जारी हैं। हज़रत आदम के बारे में अल्लाह के आदेश निर्देश से हमें यह पता चलता है कि शैतान की भटकाऊ हरकतों का और उसकी उक्साहटों का मुक़ाबला कैसे किया जाए, और यह कि इंसान के अन्दर जीने, शक्ति व अधिकार प्राप्त करने, अपना बर्चस्व स्थापित करने और यौन संतुष्टि प्राप्त करने की इच्छा और जिज्ञासा रहती है जिससे शैतान फ़ायदा उठाता है और इस इच्छा व जिज्ञासा को पूरा करने के लिए इंसान को सही रास्ते से हट कर गलत रास्तों की तरफ़ चले जाने के लिए उक्साता रहता है।

क़ुरआन के बयान के अनुसार इंसान के लिए अल्लाह की हिदायत व मार्गदर्शन के क्रम की अगली कड़ी हज़रत नूह और उनकी दावत व संदेश हैं, जिनका ज़िक्र क़ुरआन में आम तौर से थोड़ा थोड़ा आया है लेकिन कहीं कहीं विस्तार से भी उल्लेख किया गया है जिनमें अलग अलग बिन्दुओं पर ख़ास तौर से ज़ोर दिया गया है। लेकिन बहरहाल, हज़रत नूह की दावत का केन्द्रीय बिन्दु या मूल तत्व वही है जो अल्लाह के तमाम पैग़म्बरों की दावत का रहा है कि "ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की ही बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है" (7:59; 11:26, अन्य पैग़म्बरों के लिए देखें 7:65,73,85; 11:50,61,84)। हज़रत नूह की दावत पर लोगों की आपत्ति व विरोध भी वही था जो दूसरे पैग़म्बरों के साथ था, और इस विरोध का सम्बंध इस बात से नहीं था जिस बात की तरफ़ उन्हें बुलाया जा रहा था बल्कि उनकी आपत्ति ख़ुद पैग़म्बर पर थी कि वह "तुम हम में से ही एक आदमी हो"(7:63), और "हमारी ही तरह एक बशर है" (11:27, और उन के अनुयायी दुशमनों की नज़र में "उनमे से दबे कुचले लोग" थे जिन्हों ने "बे सोचे समझे तुम्हारी पैरवी कर ली" (11:27; और देखें 26:11)। लेकिन, यद्यपि हज़रत नूह की दावत पर लोगों की आपत्ति तर्क और बुि) के विपरीत थी फिर भी उन्होंनें इस सिद्धांत पर ज़ोर दिया जो अल्लाह के सभी संदेशों का सिद्धांत है:हर इंसान किसी भी मामले में आज़ादी के साथ ख़ुद अपनी अक़ल से सोचे परखे और फैसला करे, "... तो क्या हम इसके लिए तुम्हें मजबूर कर सकते हैं जबकि तुम हो कि इससे बिगड़ रहे हो" (11:28)। हज़रत नूह ने व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पर भी ज़ोर दिया:".... उसको (पापियों पर अल्लाह का प्रकोप को) तो अल्लाह ही चाहेगा तो लाएगा और तुम (उसको किसी तरह) हरा नहीं सकते"(11:33)।

क़ुरआन बताता है कि हज़रत नूह ने किस तरह बराबर और हर सम्भव तरीक़े से रात दिन और छुप कर व खुले आम अपनी क़ौम को अल्लाह की तरफ़ बुलाया (71:5-9)। उन्होंने एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाया और अपने गुनाहों के लिए अल्लाह से मआफी मांगने का निर्देश दियाँ उन्होंने लोगों को समझाया कि वो अल्लाह पर ईमान ला कर संतुलित व स्थिर व्यवहार अपनाएंगे और दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव करेंगे और सदकर्म अंजाम देंगे तो उन्हें इस

दुनिया में भी इसका अच्छा बदला मिलेगा और आख़िरत में भी उन्हें इसका बहतरीन फल मिलेगा:''वह तुम पर आसमान से लगातार बारिश बरसाएगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें बाग देगा और (उन में) तुम्हारे लिए नेहरें बहा देगा''(71:11-12)। उन्होंने क़ौम के लोगों का ध्यान अल्लाह की ताक़त की तरफ़ दिलाया जो सृष्टि के चमत्कारी बनावट और उसकी हैरत अंगेज़ व्यवस्था से, इंसान की पैदाइश के विभिन्न चरणों से, इंसानी जीवन की चौमुखी विकास से, सृष्टि की विविधता से, चांद के नूर (प्रतिबिम्बित होने वाले प्रकाश), और सूरज की धूप से जो कि तपिश और प्रकाश का स्रोत है, और ज़मीन की बनावट से जो कि गोल होने के बावजूद इंसान की चलत फिरत के लिए अनुकूल है, साफ़ ज़ाहिर है (71:13-20)। इंसानी जीवन के इस प्राथमिक काल में ये अवलोकन और .श्य इस बात को उजागर करते हैं कि अल्लाह के पैग़ाम में पैगम्बर की बौद्धिक, नैतिक व अध्यात्मिक दावत के साथ साथ हमैशा सृष्टि की पैदाइश व बनावट के भौतिक संदेश पर ज़ोर दिया गया है जो पूरी सृष्टि में दिखाई देता है।

लेकिन, संदेश पहुंचाने और लोगों को समझाने के इन तमाम प्रयासों के बावूजद हज़रत नूह की क़ौम के अधिकतर लोग अहंकार के साथ सत्य व सच्चाई का बराबर इंकार करते रहे, उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ ठूंस लीं और सत्य को सुनने से अपने कान बन्द कर लिए, अपने चेहरे अपने कपड़ों में छुपा लेते ताकि पैग़म्बर की नज़र उन पर न पड़े और दिल व दिमाग़ को प्रभावित करने वाली दावत के प्रभाव में वो न आ जाएं। सत्य को सुनने, समझने और अपनाने के बजाए उलटा उन्होंने उन लोगों का अनुसरण किया जिनके पास धन की बहुतात और संतान की कसरत (अधिकता) थी, हालांकि इस दुनिया के लास विलास में मगन रहना उनके लिए दुनिया व आख़िरत दोनों जगह अत्यधिक नुक़सान की वजह बना (71:21)। उन लोगों ने अल्लाह के पैग़म्बर की सभी बातों को रद किया और एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ आने की दावत को स्वीकार करने के बजाए अपने पांच झूटे देवताओं की पूजा पाठ में लगे रहे, बस थोड़े से लोगों ने ही हज़रत नूह के संदेश को माना (1:40)।

अपनी क़ौम के घमण्ड और अहंकार से हज़रत नूह इतने दुखी हुए कि उन्होंने आख़िरकार यह दुआ की कि मेरे पालनहार किसी काफ़िर को ज़मीन पर बसा न रहने दे (71:26)। क़ौम की तरफ़ से सत्य को अपनाए जाने की उनकी सारी उम्मीदें आख़िरकार समाप्त हो गयीं और उन्हें यह विश्वास हो गया कि वो लोग न केवल अपने कुकर्मों पर बने रहेंगे बल्कि ईमान लाने वाले नेक लोगों को भी रास्ते से भटकाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगाते रहेंगे, और यह कि उनकी पीढ़ियाँ भी उनकी ही तरह इंकारी और कुकर्मी होंगी (71:27)। फिर वह इस नतीजे पर पहुंचे कि बुराई के इस स्रोत का लुप्त हो जाना ही दूसरे लोगों के लिए बहतर है। आख़री पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तरह लोगों के लिए बददुआ करना पसन्द

न किया जो आपकी दावत और आग्रह को घमण्ड और अहंकार से रद कर रहे थे हालांकि वो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों को सताते भी थे और उनके विरु) सक्रिय रहते थे। आप ने फ़रमाया ‘‘मैं लोगों के लिए दुष्ट बनाकर या उन पर लानत करने के लिए नहीं भेजा गया हूँ , मैं रहमत (दयाशील) बनाकर भेजा गया हूँ। अल्लाह इन लोगों की पीढ़ियों में से ऐसे लोग उठाएगा जो अल्लाह की इबादत करने वाले होंगे। ऐ मेरे रब मेरी क़ौम को सीधा रस्ता दिखा, ये जानते नहीं है’’ (मुस्लिम, अबुदाऊद और इब्ने हंबल)। हज़रत नूह भी अपनी क़ौम से नाराज़गी के बावजूद अपने माता पिता के लिए दुआ करते रहे। उन्होंने ईमान लाने वालों के साथ मातापिता की मआफ़ी के लिए भी दुआ की जबकि क़ौम के लिए उन्होंने अल्लाह से यह फरियाद की थी कि ज़ालिम लोगों के विनाश को और.ज्यादा बढ़ा दे (71:28)।

हजरत नूह की क़ौम बाढ़ में घिर गयी थी, लेकिन ख़ुद हज़रत नूह और उन पर ईमान लाने वाले लोग एक कश्ती पर सवार होकर बच गए जिसे बनाने का निर्देश अल्लाह ने ख़ुद दिया था। क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में बताता है कि बाढ़ की चपेट में वही लोग आए जिन्होंने हमारी आयतों को झुटला दिया था (7:64), ‘‘और वह अपने गुनाहों के कारण ही डुबा दिए गए’’ (71:25)। इस तरह, यह विश्व व्यापी सैलाब नहीं था, इस सैलाब से वही भूक्षेत्र प्रभावित हुआ जहाँ हज़रत नूह की क़ौम बसी हुई थी, और जिसकी पहचान क़ुरआन में नहीं बताई गयी है, लेकिन ‘‘जूदी’’ पहाड़ जहाँ जा कर नाव रुकी थी, उसके बारे में यह माना जात है कि सम्भवतःपूर्वी अनातौलिया या उत्तरी मेसोपोटामिया में था। हज़रत नूह का अल्लाह तआला ने जिस तरह मार्गदर्शन किया उससे इंसान को यह शिक्षा मिलती है कि प्राकृतिक आपदाओं से किस तरह बचा जाए और बचने के लिए क्या उपाय किए जाएं। ईमान वाले लोग एक सूखे और सुरक्षित स्थान पर चले गए और अपने साथ हर प्रजाति के पशु पक्षियों का एक एक जोड़ा ले गए (11:40), और इस तरह नई आबादकारी (पुनर्वास) से सामाजिक जीवन फिर से शुरू हुआ और विक्सित हुआः‘‘हम ने उन को और जो लोग उनके साथ नाव में सवार थे सब को (तूफ़ान से) बचा लिया और उन्हें (ज़मीन में) ख़लीफ़ा बना दिया ’’ (10:73)। नाव में सवार होने वाले ईमान वालों को यह सिखाया गया कि यात्रा के दौरान अल्लाह को याद करते रहें और अल्लाह का नाम लेकर कश्ती में सवार होंः‘‘अल्लाह के नाम से (कि) उसका चलना और ठहरना (उसी के हाथ में है)’’ (11:41), ‘‘सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें ज़ालिम लोगों से मुक्ति दिलाई’’ (23:28), और जब उनकी कश्ती सकुशल थलभूमि पर जा टिकी तो उन्हें सिखायाः‘‘कहो ऐ रब मुझे उतारो मुबारक उतारना और आप बहतरीन उतारने वाले हैं’’ (23:29)।

इन आयतों में हज़रत नूह ने जिस तरह अपने बेटे को पुकारा, और फिर बाद में उसके बारे में दुआ भी की, उनकी वह पुकार मन को बहुत उद्वेलित करने वाली है। अल्लाह के यह पैग़म्बर

एक पिता भी थे जो अपने पुत्र के लिए अपनी भावनाओं को नहीं रोक सके:“और वह उनको लेकर (तूफ़ान की) लहरों में चलने लगी (लहरें क्या थीं) मानो पहाड़ (थे) उस समय हजरत नूह ने अपने बेटे को कि (नाव से) अलग था पुकारा कि बेटा हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न हो। उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड़ से जा लगूंगा वह मुझे पानी से बचा लेगा। उन्होंने कहा कि आज अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई नहीं है (और न कोई बच सकता है) मगर जिस पर अल्लाह दया करे, इतने में दोनों के बीच लहर आ गयी और वह डूब कर रह गया” (11:42-43)। फिर यह कि हज़रत नूह ने एक बाप के दिल से यह चाहा कि उनका बेटा आख़िरत में अज़ाब (यातना) से बच जाए:“और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा:अल्लाह मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में है (उसको भी निजात दीजिए) आपका वायदा सच्चा है और आप सबसे बहतर हाकिम हैं। अल्लाह ने फरमाया कि ऐ नूह, वह तुम्हारे घर वालों में नहीं है वह तो एक बिगड़ा हुआ कृत्य है, तो जिस चीज़ की वास्तविकता तुम्हें पता नहीं उसके बारे में मुझ से सवाल न करो और मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि नादान न बनो। नूह ने कहा, मेरे रब, मैं आप की पनाह चाहता हूँ कि ऐसी चीज़ का आप से सवाल करूं जिसकी हकीक़त मुझे पता नहीं और अगर आप मुझे नहीं बख़्शेंगे और मुझ पर दया नहीं करेंगे तो मैं तबाह हो जाउंगा” (11:45-47)। इन आयतों से यह ज़ाहिर होता है कि अल्लाह के फ़ैसले में किसी की तरफ़दारी नहीं है, अपने पैगम्बर की तरफ़दारी भी नहीं, लेकिन हज़रत नूह ने जो कुछ चाहा वह एक इंसानी दिल की पुकार थी और एक स्वभाविक इच्छा थी।

हज़रत नूह को अपने घर में एक दूसरी समस्या का भी सामना था:उनकी पत्नि उनकी दावत को नकारने वालों में शामिल थी। तो हज़रत नूह जिस तरह अपने बेटे को न बचा सके उसी तरह पत्नि के लिए भी कुछ न कर सके। मतलब यह कि किसी पापी के मामले में अल्लाह का फ़ैसला कोई पैग़म्बर भी नहीं बदलवा सकता, “और उनको आदेश दिया गया कि और दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी नरक में दाख़िल हो जाओ” (66:10)।

क़ुरआन बताता है कि हज़रत नूह अपनी क़ौम में 950 वर्ष रहे। यह लम्बी अवधि क्या उनके संदेश प्रचार की है या अपने उद्देश्य के लिए संघर्ष करते रहने की है ? या यह उनकी कुल आयु है ? क़ुरआन के बयान से दोनों ही बातें समझी जा सकती हैं, लेकिन बाइबिल का बयान यह है कि यह हज़रत नूह की उम्र है (जेनेसिस 9:29)।

प्राचीन अरब में आने वाले पैग़म्बरः

हज़रत हूद, हज़रत स्वालेह, हज़रत शुऐब

हज़रत हूद और 'आद' समुदाय; हज़रत स्वालेह और 'समूद' समुदाय

وَ اِلٰی عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ٦٥ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ
قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا
لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ٦٦ قَالَ یٰقَوْمِ
لَیْسَ بِیْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ
رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ٦٧ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ
اَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِیْنٌ ٦٨ اَوَ عَجِبْتُمْ اَنْ
جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰی رَجُلٍ مِّنْكُمْ
لِیُنْذِرَكُمْ ؕ وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ
مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ زَادَكُمْ فِی الْخَلْقِ
بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ٦٩ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ
وَحْدَهٗ وَ نَذَرَ مَا كَانَ یَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ
فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِیْنَ ٧٠ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَیْكُمْ مِّنْ
رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّ غَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِیْ
فِیْۤ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ
مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْۤا
اِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ٧١ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ

और हमने क़ौमे आद की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा, उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की बन्दगी किया करो उसके सिवा और कोई तुम्हारा माबूद नहीं है, सो क्या तुम नहीं डरते। उनकी क़ौम में जो बड़े बड़े आदमी थे उन्होंने कहा के हम तुम को बेअक़्ल समझते हैं, और बेशक तुम को हम झूटे लोगों में से समझते हैं। हूद (अ.स.) ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! ज़रा भी कम अक़्ली नहीं है, लेकिन मैं परवरदिगारे आलम की तरफ़ से रसूल हूँ। मैं तुमको अपने रब का पैग़ाम पहुंचाता हूँ, और मैं तुम्हारा सच्चा .ख़ैर .ख़्वाह हूँ। क्या तुम ताज्जुब करते हो के तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास एक आदमी के ज़रिये जो तुम में से हैं नसीहत आई है ताके तुम को डराये, और तुम याद करो के जब अल्लाह ने क़ौमे नूह के बाद तुमको .ख़लीफ़ा बनाया, और डील डौल में तुम को फ़ैलाओ भी .ज़्यादा दिया सो तुम अल्लाह की नेमतों को याद करो ताके तुम फ़लाह पाओ। वो कहने लगे, क्या आप हमारे पास इसलिये आए हैं के हम एक अल्लाह की बन्दगी किया करें और उनको छोड़ दें जिनको हमारे बाप दादा, पूजते थे, फ़िर वो अज़ाब हमारे पास लाओ जिसकी तुम धमकी दिया करते हो, अगर तुम सच्चे हो। हूद (अलैहिस्सलाम) ने कहा के बस अब तुम पर अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब और ग़ज़ब आने ही वाला है, क्या तुम मुझसे ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने ठहरा लिया है, उनके माबूद होने की कोई दलील अल्लाह की तरफ़ से

الَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا
مُؤْمِنِينَ ۝٧٢

नहीं आई, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूँ। (7:65-72)

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ
جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِ نَاقَةُ
اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ
اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝٧٣ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن
بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ
تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَ
تَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا
آلَاءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ
مُفْسِدِينَ ۝٧٤ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
مِن قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ
مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن
رَّبِّهِ ۚ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝٧٥
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنتُم بِهِ
كَافِرُونَ ۝٧٦ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ
أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا
تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٧٧
فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جَاثِمِينَ ۝٧٨ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ
لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ
وَلَٰكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ ۝٧٩

और हमने क़ौम समूद की तरफ़ उनके भाई स्वालेह को भेजा, उन्होंने कहा के ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की बन्दगी किया करो। उसके सिवा कोई माबूद तुम्हारा नहीं है तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास एक खुली निशानी आ चुकी है, ये है ऊँटनी अल्लाह की, जो तुम्हारे लिये एक निशानी है, सो इसको छोड़ दो के अल्लाह की ज़मीन में खाती फ़िरा करे, और इसको बुराई से हाथ भी ना लगाना कभी तुमको दर्दनाक अज़ाब आ पकड़े। और तुम याद करो के तुमको अल्लाह ने आद के बाद आबाद किया, और तुमको ज़मीन पर रहने के लिए ठिकाना दिया के नर्म ज़मीन पर महल बनाते हो, और पहाड़ों को तराश कर उनमें घर बनाते हो, सो तुम अल्लाह की नेअमतों को याद किया करो, और ज़मीन में फ़साद मत फ़ैलाया करो। उनकी क़ौम में मग़रूर सरदारों ने अपनी क़ौम के ग़रीब लोगों से पूछा जो ईमान ले आए थे के क्या तुम जानते हो के स्वालेह अपने रब की तरफ़ से रसूल बन कर आए हैं, उन्होंने कहा, बेशक हम तो उस पर पूरा यक़ीन रखते हैं जो उनको देकर भेजा गया है। वो मग़रूर लोग बोले के तुम जिस चीज़ पर यक़ीन लाये हुए हो हम तो उससे इन्कार करने वालों में से हैं। ग़र्ज़ उन्होंने ऊँटनी को मार डाला, और अपने रब के हुक्म से सरकशी की, और कहा के ऐ स्वालेह! जिसकी तुम धमकी दिया करते थे उसको मंगाओ, अगर आप अल्लाह के रसूल हैं। पस आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने सो वो अपने घरों में ही औंधे पड़े रह गए। उस वक़्त स्वालेह (अ.स.) उनसे मुंह मोड़ कर चले और फ़रमाया, ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुमको अपने रब का हुक्म पहुंचा दिया था

और मैंने तो तुम्हारे साथ भलाई की थी, लेकिन तुम भलाई करने वालों को पसंद ही नहीं करते थे।
(7:73-79) (और देखें 11:50-68; 41:13-18)

وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۸۰﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا
مُعْرِضِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ
الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ
الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ﴿۸۳﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۴﴾

और वादी-ए-सहरा वालों ने भी रसूलों को झुटलाया था। और हमने उनको अपनी निशानियां दीं तो वो उनसे मुंह फ़ेरते रहे। और ये लोग पहाड़ों को काट काट कर घर बनाते थे के उस में अमन से रहेंगे। तो एक चीख़ ने उनको सुबह होते ही आ पकड़ा। तो उनके कुछ भी काम ना आए वो जो कुछ करते थे। (15:80-84)

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ
اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ اِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۲۵﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۲۶﴾
وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۷﴾ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ
اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ
لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ وَاِذَا بَطَشْتُمْ
بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ﴿۱۳۱﴾ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ
جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۱۳۴﴾ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۳۵﴾ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ
اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ اِنْ
هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَمَا نَحْنُ
بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۱۳۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ اِنَّ فِيْ

आद की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया। जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा के तुम क्यों नहीं डरते। मैं तो तुम्हारा अमानत दार रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो, और मेरी इताअत करो। और मैं तुम से इस पर कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम हर ऊँची जगह पर अबस निशान तामीर करते हो। और बड़े बड़े महेलात तामीर करते हो जैसे के तुम हमेशा यहीं रहोगे। और जब तुम किसी को पकड़ते हो तो ज़ालमाना तरीक़े से पकड़ते हो। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और तुम उससे डरो जिसने तुम को मदद दी है उन चीज़ों से जो तुम जानते हो। उसने तुम्हें मदद दी है चौपायों और बेटों से। और बाग़ात और चश्मों से। मुझे डर है के कहीं तुम पर बड़े दिन का अज़ाब ना आ जाये। क़ौम ने जवाबन कहा, हमारे लिये दोनों बातें बराबर हैं ख़्वाह तुम नसीहत करो या ना करो। ये तो अगले ही लोगों के तौर तरीक़े हैं। और हम पर तो कोई अज़ाब नहीं आएगा। तो क़ौम ने हूद को झुटलाया, सो हमने उनको हलाक कर डाला, बेशक इसमें निशानी है और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले

ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ﴿۱۴۰﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اِذْ
قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۴۲﴾
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۴۳﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ﴿۱۴۴﴾ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾
اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَاۤ اٰمِنِيْنَ ﴿۱۴۶﴾ فِيْ جَنّٰتٍ
وَّ عُيُوْنٍ ﴿۱۴۷﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ نَخْلٍ طَلْعُهَا
هَضِيْمٌ ﴿۱۴۸﴾ وَ تَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿۱۵۰﴾
وَ لَا تُطِيْعُوْۤا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۵۱﴾ الَّذِيْنَ
يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَ لَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۱۵۲﴾
قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾

नहीं थे। और बिला शुबह आपका रब बड़ा ज़बरदस्त रहम वाला है। और क़ौमे समूद ने (भी) पैग़म्बरों को झुटलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा तुम क्यों नहीं डरते? मैं तो तुम्हारा अमानत दार रसूल हूँ। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और मैं तुम से इसका कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है। क्या जो चीज़ें तुम को यहां मयस्सर हैं उनमें तुमको यूं ही बेख़ौफ़ छोड़ दिया जायेगा। यानी इन बाग़ात और चश्मों में। और खेतियों और खजूरें जिनके ख़ोशे लतीफ़ों नाज़ुक होते हैं। और पहाड़ों में से तराश तराश कर तकल्लुफ़ से घर बनाते हो। फ़िर तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और हद से आगे बढ़ने वालों की बात मत माना करो। जो मुल्क में फ़साद फ़ैलाते हैं और इस्लाह नहीं करते। क़ौम ने कहा, तुम तो कोई जादू के मारे हुए हो। (26:123-153)

مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۴﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ
لَّهَا شِرْبٌ وَّ لَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۱۵۵﴾
قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّ لَكُمْ شِرْبُ
يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۱۵۵﴾ وَ لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ
فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵۶﴾
فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿۱۵۷﴾ فَاَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ
اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ
الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۵۹﴾

तुम तो महज़ हमारी तरह के एक आदमी हो, अगर तुम सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो। सालेह ने कहा, ये एक ऊँटनी है, एक दिन इसके पानी पीने की बारी है, और एक मोईय्यन दिन तुम्हारी बारी। और इसको कोई तकलीफ़ ना देना, वरना तुम को एक सख़्त दिन का अज़ाब आ पकड़ेगा। सालेह की क़ौम ने ऊंटनी की कोंचें काट डालीं, फ़िर नादिम हुए। सो उनको अज़ाब ने आ पकड़ा, बिला शुबह उसमें भी निशानी है, मगर अक्सर उनमें ईमान लाने वाले नहीं थे। और बेशक आप का रब तो बड़ा ज़बरदस्त और रहम वाला है।

(26:154-159)

وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ
مَّسٰكِنِهِمْ ۟ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا
مُسْتَبْصِرِيْنَ ۙ﴿۳۸﴾

और हमने क़ौमे आद और क़ौमे समूद को भी हलाक कर डाला, चुनांचे उनके वीरान घर तुम्हारी आंखों के सामने हैं, और शैतान ने उनके आमाल को आरास्ता करके उनको दिखलाया, और उनको सीधे रास्ते से हटाया, हालांके वो देखने वाले लोग थे। (29:38)

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ
جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ
مِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا
لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ
اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ
قَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا
اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ
قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿۱۵﴾
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ
نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْىِ
فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ
فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى
الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَنَجَّيْنَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸﴾

फ़िर अगर वो मुंह फ़ैर लें तो आप फ़रमा दें के मैं तुमको ऐसे अज़ाब से डराता हूँ जो क़ौमे आद और क़ौमे समूद को पेश आया था। जब उनके पास हमारे रसूल उनके आगे और पीछे से आये के अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करो, उन्होंने कहा, अगर हमारे रब को मंज़ूर होता तो वो फ़रिश्ते उतार देता, सो जो तुम लेकर आये हो हम उसको नहीं मानते। तो जो आद के लोग थे वो मुल्क में ना हक़ तकब्बुर करने लगे, और कहा हम से .ज्यादा क़ुव्वत वाला कौन ह, क्या उन्होंने नहीं देखा के अल्लाह जिस ने हम को पैदा किया, वो उनसे क़ुव्वत में बहुत.ज्यादा है और हमारी आयात का इन्कार करते रहे। तो हमने उन पर नहूसत के दिनों में ज़ोर की हवा चलाई ताके उनको दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही ज़लील करने वाला है, और उनको कोई मदद नहीं मिलेगी। और जो समूद थे तो उनको हमने रस्ता दिखा दिया, मगर उन्होंने हिदायत के बदले में गुमराही को पसंद किया, तो उनको सरापा ज़िल्लत के अज़ाब ने पकड़ लिया उनकी बदआमालियों की वजह से। और हमने उनको बचा लिया जो ईमान लाये, और (अल्लाह से) डरते थे। (41:13-18)

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ
بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ

और क़ौमे आद के भाई हूद का ज़िक्र कीजिये, जब उन्होंने अपनी क़ौम से एहक़ाफ़ की सरज़मीन में हिदायत

يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ
اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾
قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ٘ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ
اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ
اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ
هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا
فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ
فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا
وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ٘ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ
سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ
شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ
اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا
الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ
بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

की और उनसे पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुज़र चुके थे के अल्लाह के सिवा किसी की इबादत ना करो, मुझे तो तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का डर है। क़ौम ने कहा क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो के हम को हमारे माबूदों से छुड़ा दो, अगर तुम सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो उसे हम पर वाक़े कर दो। हूद ने कहा के उसका इल्म तो ख़ुदा ही को है और मैं तुम को वही पैग़ाम पहुंचा रहा हूँ, जो मुझे देकर भेजा गया है, लेकिन मैं देख रहा हूँ के तुम जहालत में फ़ंसे हुए हो। फ़िर जब क़ौम ने अज़ाब को देखा बादल की शक्ल में उन वादियों की तरफ़ आ रहा है तो (हूद ने) कहा ये बादल है जो हम पर बरसेगा नहीं, बल्के ये वो है जिसके लिये तुम जल्दी करते थे, ये एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है। ये हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से तबाह कर देती है, फ़िर वो ऐसे हो गए के उनके घरों के सिवा कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी, गुनाहगारों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। और हमने उनको ऐसे मक़दूर दिये थे, जो तुम लोगों को नहीं दिये, और हमने उनको कान, आंख और दिल दिये थे, चूंके वो अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे तो ना तो उनके कान और ना आंखें और ना उनके दिल उनके ज़रा काम आये, और जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते थे उसी ने उनको आ घेरा। और हमने तुम्हारे इर्द गिर्द बस्तियों को हलाक कर डाला, और हमने बार बार अपनी निशानियां बयान कर दी ताके वो रूजू करें। तो जिन को उन्होंने अल्लाह के तक़र्रूब हासिल करने के लिये अपना माबूद बना रखा था उन्होंने उनकी क्यों मदद ना की, बल्के वो सब उनके सामने से ग़ायब हो गए, और ये उनका झूट था और घड़ी हुई बात थी। (46:21-28)

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَأَمَّا
ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَأَمَّا عَادٌ
فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا
عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَانِيَةَ أَيَّامٍ
حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ
كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرَىٰ
لَهُم مِّن بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

उस खड़खड़ाने वाली चीज़ जिसको समूद व आद ने झुटलाया था। सो समूद तो एक सख़्त आवाज़ (कड़क) से हलाक किये गए। और जो आद थे उनको एक तेज़ तुन्द हवा से ही ख़त्म कर दिया गया। मसल्लत कर दिया था अल्लाह ने उसको उन पर मुतवातिर सात रात और आठ दिन तू देखता उस क़ौम को उसमें इस तरह गिरा हुआ के गोया वो गिरी हुई खजूरों के तने हैं। भला तो उनमें से किसी को भी बाक़ी देखता है। (69:4-8)

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ أَلَمْ تَرَ
كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٧﴾ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ
مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا
الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾
الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾ فَأَكْثَرُوا فِيهَا
الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ
عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾

क्या तमु ने नहीं देखा के तुम्हारे रब के आद के साथ क्या किया। यानी क़ौमे इरम के साथ जिनके सुतून जैसे क़दोक़ामत थे। जिनकी तरह शहरों में कोई शख़्स नहीं पैदा किया गया। और समूद के साथ क्या किया, जो वादी-ए-क़ुरा में पत्थर तराश कर घर बनाते थे। और फ़िरऔन मेख़ों वाले के साथ क्या किया। जो मुल्क में सरकश हो रहे थे। और उनमें बहुत सी ख़राबियां करते थे। तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा नाज़िल किया। बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है। (89:6-14)

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ﴿١١﴾ إِذِ انْبَعَثَ
أَشْقَاهَا ﴿١٢﴾ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ
اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا
فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْبِهِمْ
فَسَوَّاهَا ﴿١٤﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ﴿١٥﴾

समूद ने अपनी सरकशी से (सालेह को) झूटा कहा। और जब उनमें एक निहायत बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। तो फ़िर अल्लाह के रसूल (सालेह) ने क़ौम से कहा के अल्लाह की ऊँटनी का और इसके पानी का ख़्याल रखना। तो उन्होंने रसूल को झुटलाया, फ़िर ऊँटनी को मार डाला, और उनके रब ने उनके गुनाहों के सबब तबाही डालकर वो बस्ती बराबर कर दी। और उस के अंजाम का उसे कोई ख़ौफ़ नहीं। (91:11-15)

हज़रत शुऐब और मदयन के लोग

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾ وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

और हमने मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब (अ.स.) को भेजा, शुऐब ने अपनी क़ौम से कहा के ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की बन्दगी किया करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानी आ चुकी है तो तुम नाप तोल पूरी पूरी किया करो और लोगों का नुक़सान उनकी चीज़ों में मत किया करो, और ज़मीन में फ़साद मत फ़ैलाया करो जबके उसकी दुरूस्ती की जा चुकी, ये तुम्हारे ही लिये मुफ़ीद है, अगर तुम ईमान रखते हो। और तुम सड़कों पर मत बैठा करो, इस ग़र्ज़ से के तुम मोमिनीन को धमकियां दिया करो और अल्लाह की राह से उनको रोका करो, और उसमें कजी तलाश किया करो, और याद किया करो उसे वक़्त को जब तुम कम थे, तो अल्लाह ने तुम को .ज्यादा कर दिया और देखा करो के फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। अगर तुम में से एक जमात मेरी रिसालत पर ईमान ले आई है, और दूसरी जमात नहीं लाई, तो सब्र किये रहो, यहां तक के अल्लाह हमारे दरमियान फ़ैसला कर दे और वो सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (7:85-87)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

उनकी क़ौम के मग़रूर सरदारों ने कहा ऐ शुऐब! हम तुम को और तुम्हारे साथी मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या ये हो के तुम हमारे मज़हब में फ़िर वापस आ जाओ तो शऐब ने कहा, क्या हम तुम्हारे मज़हब में आ जाये गो हम तुम्हारे दीन से कितने ही बेज़ार हों। हम तो अल्लाह पर झूटी तोहमत लगाने वाले हो जायें, अगर हम तुम्हारे मज़हब में आ जायें बाद इसके के अल्लाह ने हमको उससे निजात बख़्शी हो, ये मुमकिन ही नहीं है हमारे लिये के हम फ़िर तुम्हारे मज़हब में लौट

जायें मगर ये के अल्लाह चाहे जो हमारा मालिक है, तो दूसरी बात है, हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत है, हम अल्लाह पर भरोसा रखते हैं, ऐ हमारे रब! हम में और हमारी क़ौम में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दे, और तू सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। और उनकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने कहा अगर तुम शुऐब की राह पर चलोगे तो तुम बेशक बड़े नुक़सान उठाने वाले होगे। पस उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा, सो वो अपने घरों में औन्धे के औन्धे पड़े रह गए। जिन्होंने शुऐब (अ.स.) की तकज़ीब की थी उनकी ये हालत हो गई के गोया यहां कभी वो बसे ही नहीं थे, जिन्होंने शुऐब (अ.स.) की तकज़ीब की थी, वही नुक़सान में रहे। फ़िर शुऐब उनसे मुंह मोड़ कर चले, और फ़रमाया के ऐ मेरी क़ौम! मैंने तुमको अपने रब के अहकाम पहुंचा दिये थे और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, फ़िर मैं उन काफ़िरों पर क्यों रंज करूं। और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा के वहां के लोगों को हमने मोहताजी और बीमारी में ना पकड़ा हो, ताके वो ढीले पड़ जायें। फ़िर हमने बदहाली की जगह ख़ुशहाली दी, यहां तक के उनको ख़ूब तरक़्क़ी हुई और कहने लगे हमारे बाप दादों को भी तकलीफ़ और राहत पेश आईं थीं, तो हमने उनको अचानक पकड़ लिया और उनको कोई एहसास ना हुआ। और अगर उन बस्तियों के बाशिन्दे ईमान ले आते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों (के दरवाज़े) खोल देते, लेकिन उन्होंने तकज़ीब की, तो हमने भी उनके आमाल (बद के) सबब उनको पकड़ लिया। क्या फ़िर भी ये बस्तियों वाले बेफ़िक्र हैं के उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आए जबके वो सो रहे हों। और क्या बस्तियों वाले बेख़ौफ़ हैं के उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े ही आ पड़े जब वो अपने लहव लअब में मशग़ूल हों। और क्या ये अल्लाह के दाव से बे फ़िक्र

شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ
بَيْنَنَا وَ بَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَيْرُ
الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا
لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا
فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا
كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ
يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ
نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ
كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ
اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ
السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّ قَالُوْا قَدْ
مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَ السَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ
بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ
الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ
مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا
فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ
اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّ
هُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ
يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَوَ
اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا
ضُحًى وَّ هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَوَ لَمْ يَهْدِ
لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ

اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝١٠٠

हो गए तो .ख़ुदा के दाव से बेफ़िक्र नहीं होते मगर वो जो के .ख़सारे में पड़ने वाले हैं। और क्या अहले ज़मीन के बाद वारिसीन ज़मीन को वाक़ेयाते ज़मीन से हिदायत नहीं मिली के अगर हम चाहें तो उनके गुनहों के सबब उन पर मुसीबत डाल दें, और उनके दिलों पर मोहर लगा दें के कुछ सुन भी ना सकें। (7:88-100)

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَ
لَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا
كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠١ وَ
مَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَ اِنْ
وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ۝١٠٢

ये बस्तियां हैं जिनके कुछ कुछ हालात हम तुम पर बयान करते हैं, उनके रसूल अपनी निशानियां लेकर उनके पास आए थे, मगर वो ऐसे नहीं थे के उन बातों पर ईमान ले आते जिनको वो पहले ही झुटला चुके थे इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मोहर लगा देता है। और हमने उनमें से अक्सर में अहेद का पूरा ना करना ही पाया और हमने उनमें अक्सर को ना फ़रमान ही पाया। (7:101-102)

وَ اِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۝٧٨
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَ اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ
مُّبِيْنٍ ۝٧٩

और जिनके रहने वाले बड़े गुनहगार थे। तो हमने उनसे बदला लिया, और ये दोनों शहर के खुले रस्ते पर वाक़े हैं। (15:78-79)

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧٦ اِذْ قَالَ
لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٧٧ اِنِّيْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٧٨ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝١٧٩
وَ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٠ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَ لَا
تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ۝١٨١ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ
الْمُسْتَقِيْمِ ۝١٨٢ وَ لَا تَبْخَسُوا النَّاسَ
اَشْيَآءَهُمْ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ

बन के बाशिन्दों ने (भी अपने) रसूलों को झुटलाया। जब उनको शुऐब ने कहा के क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारा अमानत दार रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। मैं तुम से इस पर कोई सिला नहीं मांगता, मेरा सिला तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है। और पूरा नाप कर दिया करो और (किसी का) नुक़सान ना किया करो। और तराज़ू सीधी रख कर तोला करो। और लोगों को उनकी चीज़ें कम ना दिया करो, और मुल्क में फ़साद ना किया करो। और उसी से डरा करो जिसने तुम को और पहली .ख़लक़त को पैदा किया।

مُفْسِدِيْنَ ﴿۱۸۳﴾ وَ اتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَ الْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۸۴﴾ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ اِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۱۸۶﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۷﴾ قَالَ رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾

क़ौम ने (शुऐब से) कहा के तुम जादू ज़दा हो। और तुम तो हम ही जैसे आदमी हो, और हमारा .ख्याल ये है के तुम झूटे हो। अगर तुम सच्चे हो तो आसमान से हम पर कोई टुकड़ा गिरा दो। शुऐब ने कहा के मेरा रब .खूब जानता है तुम जो काम भी करते हो। तो उनकी क़ौम ने उनको झुटलाया तो सायबान के अज़ाब ने उनको आ घेरा, बिला शुबह वो स.ख्त दिन का अज़ाब था। उसमें यक़ीनन एक निशानी है, लेकिन अक्सर उनमें ईमान लाने वाले नहीं थे। और बिला शुबह तुम्हारा रब बड़ा ज़बरदस्त और रहम वाला है। (26:176-191)

क़ुरआन में प्राचीन अरब में आने वाले पैग़म्बरों का ज़िक्र भी मिलता है। इन पैग़म्बरों का ज़िक्र बाइबिल में भी है। अरब की प्राचीन वंशावलियों में अरबवासियों के दो वर्ग है। एक ‘‘अरब बायदा’’ जिसमें आद व समूद के क़बीले शामिल हैं जिनका जिक्र क़ुरआन में कई जगह आया है, उनके अलावा ‘‘तस्म’’ और ‘‘जादी’’ भी हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन में नहीं है, और दूसरा वर्ग ‘‘अरब बाक़िया’’ है। आद क़बीला जिसमें हज़रत हूद को पैग़म्बर बनाया गया था उस विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र में आबाद था जिसे क़ुरआन में अहक़ाफ़ कहा गया है, यह यमन और हज़रमौत के बीच में स्थित था और फ़ारस की खाड़ी, लालसागर और हिन्द महासागर के क़रीब था। ये लोग बहुत वैभवशाली थे जिसका अंदाज़ा उनके बचे खुचे खण्डरों की महानता से होता है। मशहूर पश्चिमी स्कॉलर मुहम्मद असद अपनी तफ़सीर दि मैसेज आफ दि क़ुरआन में लिखते हैं कि हूद बाइबिल में उल्लिखित ईबर (म्इमत) के समान हो सकते हैं जो इस्राईली लोक कथाओं के अनुसार इब्रीम (I'brim) के पूर्वज थे (जेनेसिस 10:24-25, 11:14..)। उनका मानना है कि प्राचीन अरब नाम ‘हूद’ जेकब (याक़ूब) के बेटे ‘जूदह’ (इब्रानी में यहूदा) का पर्यायवाची हो सकता है। वह इस बिन्दु को उजागर करते हैं कि इब्रानी भाषा के नाम ईबर और उसके अरबी रुपान्तर अबीर का अर्थ है पार कर जाने वाले, और यह बाइबिल के वर्णन में उस क़बीले के लिए हो सकता है जो इब्राहीम पूर्व युग में अरब से निकल कर मेसोपोटामिया चला गया था (आयत 7:65 का नोट)। यह बात उल्लेखनीय है कि लगभग दो वर्ष पहले आधुनिक तकनीक और दूर तर पहुंचने वाली लहरों के माध्यम से पुरातनविदों ने दक्षिण अरब

की प्राचीन सभ्यता का पता लगाया है जो रेगिस्तान में दफ़न थी, और यह समझा गया है कि एक ज़ोरदार रेगिस्तानी तूफ़ान से यह सभ्यता लुप्त हो गयी थी, यह खोज और जानकारी आद क़ौम के बारे में क़ुरआन के इस बयान के अनुसार है।

जहाँ तक समूद की बात है तो उनका ज़िक्र आशूरी शासक सरगोन द्वतीय (722-705 ई.पू.) के शिलापट इतिहास (cuneiform annals) में मिलता है और पिलनी जैसे प्राचीन लेखकों ने उसे 'तमूदाई' के नाम से जाना है, जैसा कि फ़िलिप हिट्टी ने हिस्ट्री आफ़ दि अरब्स (संस्करण 10, मेकमिलने, लन्दन 1970, पेज 30) में लिखा हे। इस क़बीले ने 'आद' क़बीले पर विजय प्राप्त की थी और इसी लिए उन्हें प्राचीन अरबी स्रोतों में कहीं कहीं "आद द्वतीय" भी कहा गया है। लेकिन आद के विपरीत जो कि अरब द्वीप के दक्षिण में रहते थे, 'समूद' उत्तरी क्षेत्र में बसे थे। सरगोन के एक कुतबे में जो 715 ई.पू. का है, समूद को पूर्वी और मध्य अरब के लोगों के साथ ज़िक्र किया गया है जो आशूरियों के अन्तर्गत था। मुहम्मद असद ने एन्साइक्लोपीडिया अ०फ इस्लाम के हवाले से लिखा है कि " 'थमूदासी', 'थमूदियन' का ज़िक्र अरस्तू, बतलीमूस, और पिलनी ने किया है"। इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में "समूद 'हिजाज़' के दूरस्थ उत्तर में सीरिया की सीमाओं के पास आबाद थे। चट्टानों में खुदी उनकी यादगारें 'अल-हिज्र' क्षेत्र में अभी भी मौजूद हैं" (दि मैसेज अ०फ क़ुरआन, आयत 7:73 पर टिप्पणी), और देखें मूसिल, उत्तरी हिजाज़, अरबी अनुवादःअब्दुल मोहसिन अलहुसैनी, स्कन्द्रिया, दुस्सोद, "अरब्स इन सीरिया बिफोर इस्लाम", और इसका अरबी अनुवादःअब्दुल हमीद अलदवाख़िले और मुहम्मद मुस्तफ़ा .ज्यादा, क़ाहिरा)।

मदयन जहाँ हज़रत शुऐब ने अल्लाह का पैगाम लोगों को दिया, अरब द्वीप के उत्तर में सीरिया के मरुस्थल के क़रीब स्थित था जो कि भौगोलिक रूप से अरब मरुस्थल का ही एक अंग माना गया है, और अक़बा की खाड़ी व लाल सागर के पास है। बाइबिल के अनुसार यह बात साफ है कि यहाँ के लोग अरब मूल के थे। मदयन वालों को बाइबिल में कहीं कहीं इस्माईली भी कहा गया है (उदाहरण के तौर पर देखें जजिज़ः8:24)। इब्राहीम या अब्राहम जिन्हें इस्राईल का परम पूर्वज समझा जाता है इस्माईल के भी पिता थे (जेनेसिसे 21:20-21; 25:1-6,12-18), और इस तरह मदयन के इस्माईलियों और उत्तरी अरब में रहने वाले अन्य बहुत से क़बीलों, और शीबा क़बीले के लोगों जो सम्भवतःदक्षिण अरब की प्राचीन साम्राज्य शीबा से सम्बंध रखते हें, के भी परम पूर्वज थे (एसडी गोरटीन, जीव्ज एण्ड अरब्स, न्यू यार्क, 1965, पेज 31-32)। बाइबिल के मुताबिक़ मदयन के लोग इब्राहीम की दूसरी पत्नि केतूरह (क़तूरह) के माध्यम से उनके वंशज थे (जेनेसिस 25:1-6, 37:28; जजिज़ 6:8; एक्सोडस 2:16...,3:1)।

हज़रत शुऐब के द्वारा मदयन को लोगों को तौहीद का संदेश 'आद' में हज़रत हूद और 'समूद' में हज़रत स्वालेह की दावत के बाद पहुंचा। क़ुरआन का बयान है कि मिस्र में जब हज़रत मूसा ने एक मिस्री को ग़लती से मार डाला तो वह मिस्र से भाग कर मदयन पहुंचे थे और वहाँ एक नेक व्यक्ति ने अपनी बेटी से उनकी शादी कर दी थी (20:40; 28:22-28,45)। अतःयह सवाल उठता है कि वह नेक व्यक्ति क्या हज़रत शुऐब ही थे? क्योंकि हज़रत शुऐब को मदयन में पैग़म्बर बना कर भेजा गयाँ क्या यह शुऐब ही बाइबिल के जेथरू हैं? जिन्हें बाइबिल में हज़रत मूसा का ससुर बताया गया है, जिन्हें रियूइल भी कहा गया है (एक्सोडस 2:18), इस नाम का अर्थ है "अल्लाह का भक्त"। वास्तव में क़ुरआन में इस बात को स्पष्ट नहीं किया गया है कि मदयन में हज़रत मूसा की मुलाक़ात जिन सज्जन से हुई थी और जिनकी बेटी से उनका निकाह हुआ था वह हज़रत शुऐब ही हैं, इसलिए हम क़ुरआन के हवाले से यह नहीं कह सकते कि हज़रत शुऐब हज़रत मूसा के समकालीन पैग़म्बर थे। क़ुरआन के आधार पर हम बस यही समझ सकते हैं कि हज़रत शुऐब मदयन में पैग़म्बर बना कर भेजे गए थे और हजरत मूसा भी मदयन गए थे।

ऐसा लगता है कि इन तीनों समुदायों यानी आद,समूद और मदयन वालों की बस्तियाँ उन प्राचीन व्यापारिक राजमार्गों पर स्थित थीं जो दक्षिणी और दक्षिण पूर्वी ऐशिया, पूर्वी अरीक़ा, पूर्वी ऐशिया को मिलाती थीं और भूमध्यसागर व यूरोप से जा कर मिलती थीं (15:79) उन्हें आर्थिक सम्पन्ना और सैनिक शक्ति प्राप्त थी और बड़ी बड़ी बिल्डिंगे बनाने में वो दक्ष थे। (आद के लिए 26:128-130, 89 6-8; समूद के लिए 7:74, 26:146-149, 89:9; मदयन वालों के लिए 7:85-86, 26:181-183)। क़ुरआन से यह भी मालूम होता है कि समूद .षि प्रधान लोग थे और सम्पन्न व ख़ुशहाल थे (26:147-148)। उनके पैग़म्बर हज़रत स्वालेह ने उन्हें जिस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया वह तमाम इंसानों के लिए सीखने वाली बात है:"उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और फिर उसमें तुम्हें बसाया है (ताकि तुम उसको विक्सित करो) अतःउससे मआफ़ी मांगो ...."(11:61)। उन सभी समुदायों के लिए अल्लाह का पैग़ाम एक ही था यानि यह कि केवल एक अल्लाह की इबादत करो (7:65; 11:50,61,84), अपनी इच्छाओं की या उन लोगों की बन्दगी न करो जो शक्ति और बर्चस्व के घमण्ड में पड़े हुए हैं।

हर पैगम्बर के माध्यम से अल्लाह ने उनकी क़ौमों को कुछ ख़ास आदेश दिए, कुछ ख़ास परीक्षाओं में उन्हें डाला और कुछ ख़ास चमत्कार उनके लिए निर्धारित किए। समूद क़ौम को एक ऊंटनी के माध्यम से परखा गया जो अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर दी (छोड़ दी) गयी थी और जिसे क़ुरआन ने "नाक़तुल्लाह" (अल्लाह की ऊंटनी) कहा है (7:73; 11:64; 91:13)। यह एक ऐसी शब्दावली है जिसका अर्थ निश्चित रूप से यही नहीं है कि उसकी पैदाइश अप्रा.तिक ढंग से हुई या वह कोई ख़ास तरह की ऊंटनी थी। मदयन के लोगों को हज़रत शुऐब

ने ख़ास तौर से कारोबार में और लेनदेन में पूरा नापने और ठीक तरह से तौलने का हुक्म दिया, और अपनी क़ौम को ख़बरदार किया कि लोगों को उनके जायज़ अधिकारों सें वंचित न किया करें और धरती में उत्पात न मचाएं (7:85; 11:85; 26:181-183)। लेकिन हज़रत शुऐब के आग्रह और संदेश के जवाब में उनका जोर इसी बात पर रहा कि जो कुछ पूर्वजों से होता चला आया है उसी पर रहेंगे और वही कुछ करते रहेंगे, उनकी ही आस्थाओं पर जमे रहेंगे और कमाने व ख़र्च करने में अपनी आज़ादी को बनाए रखेंगे और अपनी ख़ुशी व मर्जी से अपनी चीजों को जैसा चाहेंगे स्तेमाल करेंगे और जो अच्छा लगेगा वही करेंगे (11:87)। हज़रत शुऐब ने उन्हें याद याद दिलाया कि जब वो यहाँ आए थे तो उनकी संख्या बहुत थोड़ी सी थी लेकिन अल्लाह की .पा से अब उनकी संख्या ख़ूब बढ़ गयी है (7:86)। हज़रत शुऐब अपने .ष्टिकोण पर जमे रहे और उसी व्यवहार को अपनाए रहे जिसका निर्देश वह लोगों को देते थे, उनका उद्देश्य चीज़ों को दुरूस्त करना था और अल्लाह की मंशा को पूरा करने के लिए वह उसी तरह जी जान से लगे रहे जिस तरह उनकी क़ौम के लोग अपने स्वार्थ पूरा करने और अपने बर्चस्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील थे।

क़ुरआन के इन क़िस्सों का मक़सद घमण्ड और अहंकार में सत्य का इंकार करने वाली क़ौमों पर अल्लाह के अज़ाब को बयान करना ही नहीं है, न इन क़िस्सों के संदर्भ में क़ुरआन अल्लाह के पैग़म्बरों को इंसानी स्वभाव और इंसान की आज़ाद मर्ज़ी को बदलने या इंसानों पर उनकी इच्छा के विपरीत किसी भी तरह से अल्लाह के दीन को थोपने का ज़िम्मेदार बना कर पेश करता है (7:75-79, 88-93; 11:59,64-65,88-93; 26:128-130,151-157), बल्कि यह क़िस्से इस बात को रेखांकित करते हैं कि यह अल्लाह का क़ानून है कि वह व्यक्तियों और क़ौमों को राहत व आराम और कठिनाइयों में डाल कर परखता है (7:94-96)। इसके अतिरिक्त, क़ुरआन यह याद दिलाता है कि व्यक्तिगत स्थिरता और सामाजिक सहयोग जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान से प्राप्त होता है, इस दुनिया में भी फ़ायदा पहुंचाने वाली चीज़ है और आख़िरत में भी इसका भरपूर बदला मिलेगा (7:96)। अल्लाह और आख़िरत पर ईमान किसी भी तरह से इस दुनिया में इंसान की सक्रियता और निर्माणकारी गतिविधियों को कम न करे, क्योंकि यह ईमान को सही ढंग से न समझने का नतीजा ही हो सकता है, बल्कि इसके बजाए इस ईमान के नतीजे में इंसानी क्षमता बढ़नी चाहिए, क्योंकि ईमान मोमिन की ढाल है और जीवन में सफ़लता व असफ़लता के उतार चढ़ाव में उसकी ऊर्जाओं को बनाए रखने का माध्यम है। इस ईमान की बदौलत मोमिन कामयाबी की स्थिति में अल्लाह का शुक्रगुज़ार (आभारी) होता है और नाकामी की हालत में सब्र करता है। यह इंसान की अध यात्मिक और नैतिक कमज़ोरी होती है और जीवन के मज़े लूटने में मगन रहने की लत होती है जिसकी वजह से कोई व्यक्ति या समाज ज़ाहिरी कामयाबी या नाकामी से इतना अधिक

प्रभावित होता है कि कभी कभी पूरी तरह शिथिल या अपंग हो कर रह जाता है।

पिछली क़ौमों के बयान और उनके पास बहुंचने वाले अल्लाह के संदेश का बयान क़ुरआन में क़िस्सों से मज़ा लेने के लिए नहीं है, बल्कि सीख और सबक़ लेने के लिए है कि लोगों को अल्लाह के प्राकृतिक नियमों की जानकारी हो और समाज में इन क़ानूनों की ज़रूरत का अहसास हो (7:101-102; 22:45; 29:38)। इन क़िस्सों में इंसानों के कुकर्मों की सज़ा के रूप में अल्लाह के अज़ाब (प्रकोप) का जो ज़िक्र है (7:72,78,91; 11:58,60,66-68,94-95; 26:139,158,189; 29:40), तो अल्लाह के पैग़ामों के क़ुरआनी इतिहास से यह ज़ाहिर है कि बाद की क़ौमों को इस तरह के अज़ाब देकर फ़ना नहीं किया गयाँ अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम को उस आग से बचा लिया जिसमें उनकी क़ौम के लोगों ने उन्हें फेंका था, और जिन लोगों ने यह भयानक अपराध किया था उन को इस दुनिया में सीधे तौर से कोई अज़ाब नहीं दियाँ पैग़म्बरों को क़त्ल करने के सफ़ल और असफ़ल प्रयास भी बहुत से हुए लेकिन क़ुरआन कहीं यह नहीं बताता कि इन अपराधों के दोषियों को इस दुनिया में अप्राकृतिक ढंग से हिलाक कर दिया गया हो (2:61,87,91; 3:21,112; 5:70; 8:30; 12:9-10; 29:24)।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बंध में क़ुरआन इस बात को बार बार दोहराता है कि मोमिनों और उनके दुशमनों को एक दूसरे के द्वारा परखा गया, और इस दुनिया में अल्लाह के निर्धारित नियम ("सुन्नतुल्लाह") पर ही उनका मामला छोड़ा गया:"अगर तुम्हें (पराजय का) का घाव लगा है तो उन लोगों को भी ऐसा घाव लग चुका है और ये दिन हैं कि हम उनको लोगों में बदलते रहते हैं और इससे यह भी मक़सद था कि अल्लाह ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और अल्लाह तआला बे-इंसाफ़ों को पसन्द नहीं करता। और यह भी मक़सद था कि अल्लाह ईमान वालों को ख़ालिस (शुद्ध) करे और इंकारियों को विलुप्त कर दे। क्या तुम यह समझते हो कि (बे परखे) जन्नत में जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह जाना ही नहीं और (यह भी मंशा है कि) वह अडिग रहने वालों को मालूम करे" (3:140-142), "जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उनकी गर्दनें उड़ा दो यहाँ तक जब उनको ख़ूब क़त्ल कर चुको तो (जो ज़िन्दा पकड़े जाएं उनको) मज़बूती से क़ैद कर लो फिर उसके बाद या तो अहसान रख कर छोड़ देना चाहिए या कुछ माल लेकर, यहाँ तक कि (दूसरा पक्ष) लड़ाई (के) हथियार (हाथ से) रख दे यह (आदेश याद रखो) और अगर अल्लाह चाहता तो (और तरह) इनसे इन्तेक़ाम ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी जांच एक (को) दूसरे से (लड़वाकर) करे और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उनके कामों को अल्लाह हर गज व्यर्थ नहीं करेगा।"(47:4)।

وَ اِذۡ قَالَ اِبۡرٰهِيۡمُ لِاَبِيۡهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ
اَصۡنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّیۡۤ اَرٰىكَ وَ قَوۡمَكَ فِیۡ
ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۷۴﴾ وَ كَذٰلِكَ نُرِیۡۤ اِبۡرٰهِيۡمَ
مَلَكُوۡتَ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ لِيَكُوۡنَ مِنَ
الۡمُوۡقِنِيۡنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيۡهِ الَّيۡلُ رَاٰ
كَوۡكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیۡ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ
اُحِبُّ الۡاٰفِلِيۡنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الۡقَمَرَ بَازِغًا قَالَ
هٰذَا رَبِّیۡ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَئِنۡ لَّمۡ
يَهۡدِنِیۡ رَبِّیۡ لَاَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡقَوۡمِ
الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمۡسَ بَازِغَةً قَالَ
هٰذَا رَبِّیۡ هٰذَاۤ اَكۡبَرُ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَتۡ قَالَ
يٰقَوۡمِ اِنِّیۡ بَرِیۡٓءٌ مِّمَّا تُشۡرِكُوۡنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّیۡ
وَجَّهۡتُ وَجۡهِیَ لِلَّذِیۡ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضَ حَنِيۡفًا وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ ﴿۷۹﴾ وَ
حَآجَّهٗ قَوۡمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوۡٓنِّیۡ فِی اللّٰهِ وَ قَدۡ
هَدٰىنِ ؕ وَ لَاۤ اَخَافُ مَا تُشۡرِكُوۡنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ
اَنۡ يَّشَآءَ رَبِّیۡ شَيۡــًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّیۡ كُلَّ شَیۡءٍ
عِلۡمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۸۰﴾ وَ كَيۡفَ اَخَافُ
مَاۤ اَشۡرَكۡتُمۡ وَ لَا تَخَافُوۡنَ اَنَّكُمۡ اَشۡرَكۡتُمۡ
بِاللّٰهِ مَا لَمۡ يُنَزِّلۡ بِهٖ عَلَيۡكُمۡ سُلۡطٰنًا ؕ
فَاَیُّ الۡفَرِيۡقَيۡنِ اَحَقُّ بِالۡاَمۡنِ ۚ اِنۡ كُنۡتُمۡ
تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۱﴾ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ لَمۡ يَلۡبِسُوۡۤا
اِيۡمَانَهُمۡ بِظُلۡمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الۡاَمۡنُ وَ هُمۡ
مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۸۲﴾ وَ تِلۡكَ حُجَّتُنَاۤ اٰتَيۡنٰهَاۤ
اِبۡرٰهِيۡمَ عَلٰى قَوۡمِهٖ ؕ نَرۡفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنۡ

और जब इब्राहीम (अ.स.) ने अपने बाप आज़र से कहा के तुम बूतों को माबूद बनाते हो, बेशक मैं तुझ को और तेरी क़ौम को सरीह गुमराही में देखता हूँ। और हम इसी तरह इब्राहीम (अ.स.) को आसमानों और ज़मीन की मख़लूक़ात दिखाने लगे ताके वो आरिफ़ हो जायें (यानी अल्लाह को पहचानने वाला) और कामिल यक़ीन रखने वाला हो जाये। फ़िर जब रात की तारकी उन पर छा गई तो उन्होंने एक सितारा देखा, आप ने कहा के ये मेरा रब है, सो जब वो ग़ुरूब हो गया तो कहा मैं ग़ुरूब होने वाले को पसंद नहीं करता। फ़िर जब चांद को देखा चमकता हुआ तो कहा मेरा रब तो ये है, सो जब वो भी गुरूब हो गया, आपने कहा अगर मुझको मेरा रब हिदायत ना करता रहे तो मैं गुमराही में हो जाऊं। फ़िर जब आफ़्ताब को देखा चमकता हुआ, तो कहा ये मेरा रब है, ये सबमें बड़ा है, सो जब वो ग़ुरूब हो गया, तो आपने कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बेज़ार हूँ। मैं अपना रूख उसकी तरफ़ करता हूँ जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया, तो ख़ालिस मुसलमान हूँ, और मैं मुशरिक़ों में से नहीं हूँ। इब्राहीम की क़ौम उनसे बहस करने लगी, उन्होंने कहा क्या तुम अल्लाह के बारे में मुझसे बहस करते हो, जिसने मुझे सीधा रास्ता बताया है, मैं उन चीज़ों से नहीं डरता जिनको तुमने शरीक बना लिया है मगर मेरा रब जो चाहे, वो तो हर चीज़ को अपने इल्म में घेरे हुए है, क्या तुम ख़्याल नहीं करते। और मैं उन चीज़ों से कैसे डरूं जिनको तुमने शरीक बनाया है जबके तुम इससे नहीं डरते के तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक बनाया है जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं नाज़िल की, सो उन दो जमातों में से अमन का ज़्यादा मुसतहिक़ कौन है, अगर तुम ख़बर रखते हो। जो मोमिनीन अपने ईमान को शिर्क में मख़लूत नहीं करते उन्हीं के लिए अमन है और

نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝٨٣

वो ही राह पर चल रहे हैं। और ये हमारी इज़्ज़त थी, वो हमने इब्राहीम को दी थी उनकी क़ौम के मुक़ाबले में और हम मरतबों में बढ़ा देते हैं जिसे हम चाहते हैं, बेशक आपका रब बड़ी बड़ी हिकमतों वाला और बड़ा इल्म वाला है। (6:74-83)

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ
وَ لَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٢٠ شَاكِرًا
لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰهُ وَ هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٢١ وَ اٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَ
اِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٢٢

बेशक इब्राहीम (अ.स.) बड़े मुक़्तदा थे अल्लाह के बड़े फ़रमांबर्दार, बिलकुल एक तरफ़ के हो रहे थे, और वो शिर्क करने वालों में से ना थे। वो अल्लाह की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे, अल्लाह ने उनको मुंतख़िब कर लिया था, और उनको सीधे रास्ते पर डाल दिया था। और हमने इब्राहीम को दुनिया में खूबियां दीं और आख़िरत में भी अच्छे लोगों में होंगे। (16:120-122)

इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ और लूत

हजरत इब्राहीम इराक़ में

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا بِهٖ
عٰلِمِيْنَ ۝٥١ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ
الَّتِىْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۝٥٢ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا
عٰبِدِيْنَ ۝٥٣ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ فِىْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٥٤ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ
لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَ اهْجُرْنِىْ مَلِيًّا ۝٤٦ قَالَ سَلٰمٌ
عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِىْ حَفِيًّا ۝٤٧ وَ
اَعْتَزِلُكُمْ وَ مَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ اَدْعُوْا رَبِّىْ ۖؗ
عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّىْ شَقِيًّا ۝٤٨ فَلَمَّا

और हमने इब्राहीम को इससे पहले समझ दी थी, और हम उनसे .खूब वाक़िफ़ थे। जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, ये कैसी मूरतें हैं जिनकी पूजा पर तुम जमे हो। वो कहने लगे, हमने अपने बाप दादा को इन की इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा, बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा गुमराही में मुब्तला रहे। वो लोग कहने लगे क्या तुम वाक़ई कोई हक़ बात लाये हो हमारे पास, या हमसे खेल की बातें कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा, नहीं बल्के तुम्हारा रब वो है जो आसमानों और ज़मीन का भी रब है, जिसने उनको पैदा किया है और मैं इस बात

اعْتَزَلَهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ
اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾ وَ وَهَبْنَا
لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَ جَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ
عَلِيًّا ﴿٥٠﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا
بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ
التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْۤ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَاۤ
اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ
اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَ اَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ
تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ
لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا
بِاٰلِهَتِنَاۤ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى
يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗۤ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ؕ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰۤى
اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالُوْۤا ءَاَنْتَ
فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾ؕ قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖۗ
كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾
فَرَجَعُوْۤا اِلٰۤى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْۤا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ۙ
ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰۤؤُلَآءِ
يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾ؕ اُفٍّ لَّكُمْ وَ لِمَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا
حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾
قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ۙ وَ

का गवाह हूँ। और अल्लाह की क़सम में तुम्हारे बुतों से एक चाल चलूंगा जब तुम पीठ फ़ेर कर चले जाओगे। फ़िर इब्राहीम (अ.स.) ने बुतों को तोड़ कर रेज़ा कर डाला, मगर उने एक बड़े बुत को ना तोड़ा ताके वो उसकी तरफ़ रूजू करें। क़ौम के लोगों ने कहा के ये हरकत हमारे माबूदों के साथ किस ने की है, बेशक वो बड़ा ज़ालिम है। लोगों ने कहा के हमने सुना है के एक नौजवान जो इन बुतों का अक्सर ज़िक्र करता रहता हैं उसको इब्राहीम कहते हैं। सबने कहा उसे लोगों के सामने लायें ताके वो गवाह हो जायें। (जब इब्राहीम (अ.स.) आए) तो लोगों ने कहा, के इब्राहीम! या हमारे माबूदों के साथ ये हरकत तुमने की है। इब्राहीम ने कहा, नहीं बल्के उनके इस बड़े ने किया होगा, उनसे पूछो अगर वो बोलते हों। उन्होंने अपने दिल में ग़ौर किया, तो आपस में कहा, बेशक तुम ही ज़ालिम हो। फ़िर (शर्मिंदा होकर) अपने सर ख़म कर दिये (और इब्राहीम से कहा) तुम जानते हो ये बोलते नहीं हैं। इब्राहीम ने कहा, के फ़िर तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की पूजा करते हो जो तुमको ना तो नफ़ा पहुंचा सके और ना कोई नुक़सान। तुफ है तुम पर, और इन पर, जिनको तुम पूजा करते हो अल्लाह को छोड़ कर, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते हो। उन्होंने कहा, इसको जला डालो, और अपने माबूदों की मदद करो, अगर तुम को कुछ करना है। हमने कहा, ऐ आग तू इब्राहीम (अ.स.) पर ठंडी हो जा और सलामती का सबब बन जा। उन लोगों ने उनके साथ बुरा चाहा था, तो हमने उनको नाकाम बना दिया। और हमने इब्राहीम (अ.स.) को और

اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝٧٠ وَ نَجَّيْنٰهُ
وَ لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٧١ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ؕ وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا
صٰلِحِيْنَ ۝٧٢ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ
اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝٧٣

लूत (अ.स.) को उस सरज़मीन की तरफ़ भेज कर बचा लिया, जिसमे हमने सारे जहां वालों के लिये बरकत रखी है। और हमने इब्राहीम (अ.स.) को इसहाक़ (अ.स.) अता किया, मज़ीद बराँ याक़ूब (अ.स.) पोता, और हमने उन सब को नेक किया। और हमने उनको पेश्वा बनाया (और) हमारे हुक्म के मुताबिक़ हिदायत करते थे, और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म दिया, और वो हमारी इबादत करते थे। (21:51-73)

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝٦٩ اِذْ قَالَ
لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٧٠ قَالُوْا نَعْبُدُ
اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝٧١ قَالَ هَلْ
يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝٧٢ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ
اَوْ يَضُرُّوْنَ ۝٧٣ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا
كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝٧٤ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا
كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝٧٥ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمُ
الْاَقْدَمُوْنَ ۝٧٦ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝٧٧ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۝٧٨ وَ
الَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَ يَسْقِيْنِ ۝٧٩ وَ اِذَا
مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝٨٠ وَ الَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ
يُحْيِيْنِ ۝٨١ وَ الَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ
خَطِيْٓئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ۝٨٢ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا
وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝٨٣ وَ اجْعَلْ لِّيْ
لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝٨٤ وَ اجْعَلْنِيْ مِنْ
وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۝٨٥ وَ اغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ

और आप उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुना दीजिये। जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, तुम किस चीज़ को पूजते हो। उन्होंने कहा के हम बुतों को पूजते हैं, और उन ही की पूजा पर क़ायम हैं। इब्राहीम ने कहा क्या वो तुहारी आवाज़ सुनते हैं जब तुम उनको पुकारते हो। क्या वो तुमको कोई नफ़ा पहुंचा सकते हैं या तुम को नुक़सान दे सकते हैं। उन्होंने कहा, नहीं बल्के हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते देखा है। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ने उनको देखा भी है जिनको तुम पूजते हो। तुम भी और तुम्हारे अगले बाप दादा भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं, मगर हां रब्बुलआलमीन मेरा दोस्त है। जिसने मुझे पैदा किया है, और वही मुझे रास्ता दिखाता है। और वो ही मुझे खिलाता और पिलाता है। और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा अता करता है। वही मुझे मारेगा, वही मुझे ज़िन्दा करेगा। और उससे मैं उम्मीद करता हूँ के वही क़यामत के दिन मेरी ख़ताओं को माफ़ करेगा। ऐ मेरे रब! तू मुझे हिकमत अता फ़रमा, और मुझे नेक लोगों में शामिल फ़रमा। और आने वाले लोगों में मेरा ज़िक्र जारी रख। और मुझे जन्नते नईम के मुस्तहक़ीन में से बना। और मेरे बाप को

كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾ وَ لَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ
يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا
بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

बख़्शिश अता फ़रमा, क्योंके वो गुमराहों में था। और जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे मुझे रूसवा ना करना। जिस रोज़ ना माल काम आएगा, और ना बेटे। मगर जो शख़्स अल्लाह के पास पाक दिल लेकर आया हो (वो बच जायेगा)। (26:69-89)

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ
مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ
عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ
حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

और इब्राहीम का अपने बाप के लिये बख़्शिश की दुआ मांगना वो महज़ वादा का पूरा करना था जो वो उससे कर चुके थे, लेकिन जब उनको मालूम हो गया के वो अल्लाह का दुश्मन था तो वो उससे बेज़ार हो गए, यक़ीनन इब्राहीम नर्म दिल और बुर्दबार थे। (9:114)

وَ اِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ
اتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ
رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ وَ
اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ اِنْ تُكَذِّبُوْا
فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَ مَا عَلَى
الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

16. और इब्राहीम को भेजा, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, अल्लाह की इबादत किया करो, और उसी से डरा करो, यही तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम समझदार हो। तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर बुतों को पूजते हो, और झूटी बातें बनाते हो जिन लोगों को तुम .ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वो तुम को रिज़्क़ देने का इख़्तियार नहीं रखते, पस .ख़ुदा ही से रिज़्क़ तलब करो और उसी की इबादत करो, और उसी का शुक्र अदा करो, और तुम को उसी की तरफ़ लौटना है। अगर तुम मेरी तकज़ीब करो तो तुमसे पहले भी उम्मतें अपने रसूलों को झुटला चुकी हैं, रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ सुनाना और साफ़ तौर पर पहुंचा देना है। (29:16-18)

وَ اِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ
بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا
ذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ
تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

और इब्राहीम (अ.स.) भी उन ही के तरीक़ पर चलने वालों में से थे। जब वो अपने रब के पास पाक दिल लेकर आये। जब उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा के तुम किन चीज़ों को पूजते हो। क्या अल्लाह के सिवा झूट मूट माबूद को चाहते हो। तो रब्बुलआलमीन

के बारे में तुम्हारा क्या .ख्याल है। तो इब्राहीम (अ.स.) ने सितारों की तरफ़ एक नज़र डाली। तो उन्होंने कहा के मैं तो बीमार हूँ। तो फ़िर वो उनसे पीठ फ़ेर कर चले गए। फ़िर इब्राहीम (अ.स.) उनके माबूदों की तरफ़ मुतवज्जह हुए, और कहने लगे, तुम खाते क्यों नहीं। तुमको क्या हो गया है, तुम बोलते क्यों नहीं हो। फ़िर इब्राहीम (अ.स.) ने उनको दाहिने हाथ से मारना शुरू कर दिया। फ़िर तो लोग उनके पास दौड़ते हुए आए। इब्राहीम (अ.स.) ने कहा के तुम ऐसी चीज़ों को पूजते हो जिनको तुम .ख़ुद तराश्ते हो। हालांके तुमको और उन चीज़ों को जो तुमने बनाई हैं सबको अल्लाह ही ने पैदा किया है। वो लोग कहने लगे के इब्राहीम (अ.स.) के लिए एक आतिश.ख़ाना तामीर करो, और उसको उसको दहकती आग में डाल दो। उन लोगों ने इब्राहीम (अ.स.) के साथ एक चाल चलनी चाही सो हमने इन्हीं के ज़ेर कर दिया। और इब्राहीम (अ.स.) ने कहा के मैं अपने रब के पास जाता हूँ, वो मुझे रास्ता दिखा देगा। ऐ मेरे रब! तू मुझे एक औलाद अता फ़रमा, जो नेकों में से एक हो। तो हमने उनको एक नर्म दिल लड़के की खुश.ख़बरी दी। (37:83-101)

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ إِنِّي
سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ
إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ
لَا تَنطِقُونَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا
بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ﴿٩٤﴾ قَالَ
أَتَعْبُدُونَ مَا تَنْحِتُونَ ﴿٩٥﴾ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ
وَمَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ﴿٩٧﴾ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا
فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾ وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ
إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ
الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾

क्या उसको .ख़बर नहीं है जो मूसा के सहीफ़ों में हैं। और नीज़ इब्राहीम के जिन्होंने (हक़े इताअत और हक़े रिसालत दोनों को) पूरा किया। वो ये के कोई दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। और ये के इन्सान को उतना ही मिलता है जितनी के वो कोशिश करता है। और बहुत जल्द उसकी कोशिश को देखा जायेगा। फ़िर उसको पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। और ये के तुम्हारे परवरदिगार के पास पहुंचना है। (53:36-42)

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَ
إِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ
﴿٣٩﴾ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ
الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾ وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ
الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾

اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰی ﴿۱۸﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰی ﴿۱۹﴾

जिस दिन सूर फूंका जायेगा तो तुम गिरोह दर गिरोह आओगे। और आसमान खुल जायेगा तो दरवाज़े ही दरवाज़े होंगे। (78:18-19)

وَ اِذِ ابْتَلٰۤی اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ عَهْدِی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۲۴﴾

और जब इब्राहीम की चन्द बातो में उसके रब ने आज़माईश की तो वो उन सब में पूरे उतरे। अल्लाह ने कहा के मैं तुम को लोगों का इममा बनाऊँगा तो कहा मेरी औलाद में से भी बनाईये, ये फ़रमाया, मेरे अहेद ज़ालिमों के लिए नहीं होता। (2:124)

اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِیْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَ اُمِیْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِیْ كَفَرَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۵۸﴾

क्या आपने नहीं देखा उसको जो इब्राहीम से उनके रब के बारे में झगड़ा करने लगा। वो ग़ुरूर में था के अल्लाह ने उसको सल्तनत बख़्शी थी। जब इब्राहीम ने कहा के मेरा रब तो वो है जो जिलाता है और मारता है, वो बोला के जिला और मार तो मैं भी सकता हूँ, इब्राहीम ने कहा, मेरा अल्लाह तो मशरिक़ से सूरज को निकालता है तू उसको मग़रिब से निकाल दे, काफ़िर लाजवाब और मबहूत रह गया। और अल्लाह ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता। (2:258)

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَ لٰكِنْ لِّیَطْمَىِٕنَّ قَلْبِیْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۶۰﴾

और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा, अल्लाह ने कहा क्या तुम इस पर यक़ीन नहीं रखते। कहा क्यों नहीं, लेकिन मैं अपने दिल को इतमिनान दिलाना चाहता हूँ। अल्लाह ने कहा अच्छा चार परिन्दे लो फ़िर उनको अपने साथ हिला लो (और फिर टुकड़े टुकड़े कर दो) फ़िर एक एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रख दो, फ़िर उनको बुलाओ वो दौड़ते हुए तुम्हारे पास चले आयेंगे। और ये खूब जान लो कि अल्लाह ज़बरदस्त है और बड़ी ही हिकमत वाला है। (2:260)

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ
وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ﴿١٢٥﴾

और उससे अच्छा और किस का दीन होगा जो अपना रूख अल्लाह की तरफ़ करे, और वो मुख़्लिस भी हो, और वो मिल्लते इब्राहीम (अ.स.) का इत्तेबा करे जिसमें कजी का नाम ना हो, और अल्लाह ने इब्राहीम को ख़ालिस दोस्त बनाया था। (4:125)

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَ
الَّذِينَ مَعَهُ ۚ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ
مِنكُمْ وَ مِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ
وَ الْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ
لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِن شَيْءٍ ۖ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ إِلَيْكَ
أَنَبْنَا وَ إِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٤﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَ اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ
إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥﴾ لَقَدْ كَانَ
لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو
اللَّهَ وَ الْيَوْمَ الْآخِرَ ۚ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٦﴾

तुम्हारे लिये इब्राहीम (अ.स.) और उनके साथियों में अच्छा नमूना है, जबके उन्होंने अपनी क़ौम से कहा के हम तुम से और उन बुतों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो बे ताल्लुक़ हैं और हम तुम्हारे माबूदों के कभी क़ायल नहीं हो सकते, और जब तक तुम ख़ुदाये वाहिद पर ईमान ना लाओ, हममें और तुम में हमेशा खुल्लम खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी, अलबत्ता इब्राहीम (अ.स.) ने अपने बाप से ये ज़रूर कहा के में आपके लिये मग़फ़िरत मांगूंगा, और मैं अल्लाह के सामने आपके बारे में कोई इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी तरफ़ रूजू होते हैं, और तेरे ही पास लौट कर आना है। ऐ हमारे रब! तू हमको काफ़िरों के हाथ से अज़ाब ना दिलाना, और ये हमारे रब! तू हमको काफ़िरों के हाथ से अज़ाब ना दिलाना, और ऐ हमारे रब! तू हमें माफ़ फ़रमा, बिला शुबह तू बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है। बेशक तुम्हारे लिये उन लोगों में एक उम्दा नमूना है (यानी) उस शख़्स के लिये जो अल्लाह (के सामने जाने) और यौमे आख़िरत पर अक़ीदा रखता है, और जो रूगर्दानी करेगा तो अल्लाह बेनियाज़ हैं हम्दो सना का सज़ावार है। (60:4-6)

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ
السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ

तो हमने उनको एक नर्म दिल लड़के की खुशख़बरी दी। फ़िर जब वो उनके साथ दौड़ने की उम्र को पहुंचा, तो

اِنِّیْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَا ذَا تَرٰى ؕ قَالَ
يٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ٞ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَ تَلَّهٗ
لِلْجَبِيْنِ ﴿۱۰۳﴾ وَ نَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰۤاِبْرٰهِيْمُ ﴿۱۰۴﴾ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۰۵﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا
الْمُبِيْنُ ﴿۱۰۶﴾ وَ فَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۰۷﴾ وَ
تَرَكْنَا عَلَيْهِ فِی الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤى
اِبْرٰهِيْمَ ﴿۱۰۹﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۰﴾
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَ بَشَّرْنٰهُ
بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ بٰرَكْنَا
عَلَيْهِ وَ عَلٰۤى اِسْحٰقَ ؕ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ
وَّ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿۱۱۳﴾

इब्राहीम (अ.स.) ने कहा, बेटा! मैं .ख्वाब में देखता हूँ के मैं तुम को ज़िबह कर रहा हूँ, तो तुम ज़रा ग़ौर करो तुम्हारी क्या राय है, उन्होंने कहा, अब्बा जान! जो आपको हुक्म हुआ वही कर डालिये, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे साबिरों में पाईयेगा। जब दोनों बाप बेटे ने हुक्म मान लिया, और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया। तो हमने उनको पुकारा के एक इब्राहीम! तुमने .ख्वाब को सच्चा कर दिखाया, हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। बेशक, ये बड़ा इम्तिहान था। और हमने एक बड़ी क़ुरबानी का उनको फ़िदया दिया। और हमने आख़िर में आने वालों में उनके लिये ये बात रखी। के इब्राहीम पर सलाम हो। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। बिला शुबह इब्राहीम हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और हमने उनको इसहाक़ की बशारत दी के वो नबी और नेक लोगों में से होंगे। और हमने उन पर और इसहाक़ पर बरकतें उतारी थीं और उन दोनों की औलाद में बाज़े नेक भी हैं और बाज़ ऐसे हैं जो सरीह अपना नुक़सान कर रहे हैं।

(37:101-113)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ وَهَبَ لِیْ عَلَى الْكِبَرِ
اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِيْعُ
الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾

अल्लाह का बड़ा शुक्र है के उसने मुझे बड़ी उम्र में इसमाईल और इसहाक़ अता किये, बिला शुबह मेरा रब मेरी दुआ का सुनने वाला है। (14:39)

وَ اذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ٞ اِنَّهٗ كَانَ
صَادِقَ الْوَعْدِ وَ كَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ﴿۵۴﴾ وَ
كَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ ۪ وَ
كَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿۵۵﴾

ये लोग आप से अज़ाब के लिये जल्दी करते हैं, और दोज़ख तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। जिस दिन अज़ाब उनको उनके ऊपर से और नीचे से घेर लेगा, और अल्लाह फ़रमायेगा, के जो काम तुम करते थे, अब उनका मज़ा चखो। (19:54-55)

وَ نَجَّيْنٰهُ وَ لُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا
فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَ
يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَ كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَ
جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَ
اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ
الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ كَانُوْا لَنَا
عٰبِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَ لُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ
نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ
الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿۷۴﴾
وَ اَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾

71. और हमने इब्राहीम (अ.स.) को और लूत (अ.स.) को उस सरज़मीन की तरफ़ भेज कर बचा लिया, जिसमे हमने सारे जहां वालों के लिये बरकत रखी है। और हमने इब्राहीम (अ.स.) को इसहाक़ (अ.स.) अता किया, मज़ीद बराँ याक़ूब (अ.स.) पोता, और हमने उन सब को नेक किया। और हमने उनको पेश्वा बनाया (और) हमारे हुक्म के मुताबिक़ हिदायत करते थे, और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म दिया, और वो हमारी इबादत करते थे। और हम ने लूत (अ.स.) को हिकमत बख़्शी और इल्म दिया, और हमने उनको उस बस्ती से नितजा दी, जिसके रहने वाले गंदे काम करते थे, बिला शुबह वो बड़े बदकिरदार थे। और हमने लूत (अ.स.) को अपनी रहमत में दाख़िल किया, यक़ीनन वो नेक किरदारों में से थे। (21:71-75)

وَ وَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا
وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾

और इब्राहीम ने अपने बेटों को इस बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी, ऐ बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसंद किया है, तो तुम मरना नहीं मगर मुसलमान ही मरना। (2:132)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ
كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۲۶﴾

और हमने नूह (अ.स.) और इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा, और हमने उनकी औलाद में नबूव्वत और किताब का सिलसिला जारी रखा और बाज़ तो उनमें से हिदायत पर आ गए और अक्सर उनमें नाफ़रमान रहे। (57:26)

وَ اذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَ الْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾ اِنَّاۤ
اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿۴۶﴾ وَ
اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۷﴾

और हमारे बन्दों में इब्राहीम, इसहाक़, और याक़ूब (अ.स.) को भी याद कीजिये, जो हाथों और आंखों वाले थे। हमने उनको एक .ख़ास बात के साथ म.ख़्सूस किया था, के वो आख़िरत की याद है। और वो हज़रात हमारे नज़दीक मुंतख़िब और सबसे अच्छे लोगों में से थे। और

وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ وَ
كُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۸﴾

याद कीजिये, इसमाईल (अ.स.), अलयसा (अ.स.), ज़ुलकिफ्ल (अ.स.) को के ये सब भी सब से अच्छे लोगों में से थे। (38:45-48)

وَ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى
قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ
بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿۶۹﴾ فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا
تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَ اَوْجَسَ مِنْهُمْ
خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى
قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۰﴾ وَ امْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ
فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ
يَعْقُوْبَ ﴿۷۱﴾ قَالَتْ يٰوَيْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَ اَنَا
عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ
عَجِيْبٌ ﴿۷۲﴾ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ
اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿۷۳﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ
اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَ جَآءَتْهُ الْبُشْرٰى
يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ
لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿۷۵﴾ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ
اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ
وَ اِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿۷۶﴾ وَ
لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِىْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ
بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿۷۷﴾ وَ
جَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَ مِنْ قَبْلُ
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰۤؤُلَآءِ

और बतहक़ीक़ हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम (अ.स.) के पास .ख़ुश.ख़बरी लेकर पहुंचे तो सलाम किया, इब्राहीम ने भी सलाम किया, फ़ौरन एक बछड़ा तला हुआ लाये। सो जब इब्राहीम ने देखा के उनके हाथ उस खाने तक नहीं बढ़ते, तो ज़रा परेशान हुए, और उन से दिल ही दिल में डरे, फ़रिश्ते बोले डरो मत, हम क़ौमे लूत की तरफ़ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, पस हंसी, सो हमने बशारत दी उनको इसहाक़ की, और इसहाक़ के बाद याक़ूब की। तो बोलीं हाय खाक पड़े, अब मैं बच्चा जनूंगी, मैं तो बुढ़िया हूँ, और ये मेरे शौहर बूढ़े निरे, वाक़ई ये बात भी अजीब ही है। फ़रिश्तों ने कहा क्या आप अल्लाह के कामों में ताज्जुब करती हैं, इस .ख़ानदान के लोगों पर तो .ख़ुदा की रहमतें और बरकतें हैं, बेशक अल्लाह तारीफ़ के लायक़ बड़ी शान वाला है। फ़िर जब इब्राहीम में वो .ख़ौफ़ जाता रहा और उनको .ख़ुशी की खबर मिली तो उन्होंने हमनसे क़ौमे लूत के बारे में लड़ना शुरू कर दिया। बेशक इब्राहीम बड़े बर्दुबार और रक़ीक़ुल क़ल्ब और रूजू करने वाले थे। ऐ इब्राहीम उस बात को छोड़ो, तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुंचा है, और उन पर ना टलने वाला अज़ाब आने वाला है। और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये, तो लूत उनकी वजह से मग़मूम हुए, और उनके सबब तंगदिल हुए और कहा आज का दिन बहुत भारी है। और उनकी क़ौम उनके पास दौड़ती हुई आई, और वो पहले ही से ना मुनासिब हरकतें करती रहती थी, लूत ने कहा ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी बेटियां हैं, ये तुम्हारे लिये बहुत अच्छी हैं, सो अल्लाह से डरो, और मेरे महमानों में मुझे ज़लील ना

قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِىْٓ اِلٰى رُكْنٍ
شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ
يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ
الَّيْلِ وَ لَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا
امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ
اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ
بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا
سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ
سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَ
مَا هِىَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾

करो, क्या तुम में कोई भी माक़ूल आदमी नहीं है। वो कहने लगे, आपको मालूम है हमको तुम्हारी बेटियों की ज़रूरत नहीं, और आपको तो मालूम है जो हमारा मतलब है। लूत (अ.स.) ने फ़रमाया, काश! मैं तुम पर ग़ालिब और ज़ोरआवर होता या किसी मज़बूत पाये की पनाह लेता। फ़रिश्ते कहने लगे, ऐ लूत! हम तो आपके रब के भेजे हुए हैं, ये आप तक नहीं आ सकेंगे, सो आप रात के किसी हिस्से में अपने अहले ख़ाना को लेकर चलिये, और तुम में से कोई पीछे की तरफ़ मुड़ कर ना देखे, मगर आपकी बीवी ना जाएगी, इस पर भी वही आफ़त आने वाली है, जो दूसरों पर आने वाली है, उनके वादे का वक़्त सुबह का वक़्त है, क्या सुबह क़रीब नहीं है। सो जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, तो हमने ज़मीन को उलट कर ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया, और उस सरज़मीन पर खनखर के पत्थर बरसाना शुरू कर दिये जो लगातार गिर रहे थे। जिन पर आपके रब के पास ख़ास निशान भी था, और ये बस्तियां उन ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं हैं। (11:69-83)

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً
مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ
مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ
اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ
اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗٓ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَ
اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

और हमने लूत को भेजा, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा के क्या तुम ऐसा फहश काम करते हो, जिसको दुनिया जहान वालों में से तुम से पहले किसी ने भी नहीं किया था। यानी तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों के साथ शहवत रानी करते हो, बल्के तुम तो (हदे इन्सानियत) से ही आगे बढ़ गए हो। और उनकी क़ौम से कोई जवाब ना बन पड़ा बजुज़ इसके के वो आपस में कहने लगे के इनको तुम अपनी बस्ती ही से निकाल दो, ये लोग अपने आपको बड़ा पाक और साफ़ सुथरा समझते हैं। सो हमने लूत को और उनके अहलो अयाल को बजुज़ उनकी बीवी के बचा लिया के वा अज़ाब में रहने वालों में रह गई। और हमने क़ौमे लूत (अ.स.) पर एक नए

عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

तरीक़ा का मेंह बरसाया, ज़रा देखो तो सही के मुर्जीमों को अंजाम किस तरह हुआ। (7:80-84)

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ
وَ الْحِكْمَةَ وَ اٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ
عَنْهُ ؕ وَ كَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

क्या वो दूसरे आदमियों से उस चीज़ पर हसद करते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उनको अता की है सो हमने इब्राहीम (अ.स.) के ख़ानदान को किताब दी, और हिकमत दी, और बाज़ ने रूगर्दानी की, (और जो उनको ना माने उनके लिए) सो उनमें से बाज़ तो उस पर ईमान लाये, और बाज़ ने रूगर्दानी की, (और जो उनको ना माने उनके लिये) दोज़ख की दहकती हुई आग काफ़ी है। (4:54-55)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ
كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾

और हमने नूह (अ.स.) और इब्राहीम को रसूल बना कर भेजा, और हमने उनकी औलाद में नबूव्वत और किताब का सिलसिला जारी रखा और बाज़ तो उनमें से हिदायत पर आ गए और अक्सर उनमें नाफ़रमान रहे। (57:26)

وَ اِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ
قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَ
مِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي
الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً
لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ
اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ
اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ
الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾

और जब इब्राहीम की चन्द बातो में उसके रब ने आज़माईश की तो वो उन सब में पूरे उतरे। अल्लाह ने कहा के मैं तुम को लोगों का इममा बनाऊँगा तो कहा मेरी औलाद में से भी बनाईये, ये फ़रमाया, मेरे अहेद ज़ालिमों के लिए नहीं होता। और जब हमने ख़ाना-ए-काबा को लोगों के लिए जमा होने और अमन पाने की जगह बनाया, और हुक्म दिया के तुम मुक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो। और इब्राहीम और इसमाईल से हम ने अहेद लिया के मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और एतेकाफ़ करने वालों, रूकू करने वालों और सज्दा करने वालों के लिए साफ़ रखा करो। (2:125)

وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ
اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ
لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَ
اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِيْهِمْ
رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ يُزَكِّيْهِمْ ؕ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ
عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَ
لَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِى
الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ
اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَ
وَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا
وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ ؕ

127. और जब इब्राहीम और इसमाईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊँची कर रहे थे तो ये दुआ भी करते जाते थे के ऐ हमारे रब! ये हमारी खिदमत मंज़ूर फ़रमा, बिलाशुबह तू ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है। ऐ हमारे रब! तु हमको फ़रमाँबरदार बनाए रख! और हमारी औलाद में से भी एक जमाअत को अपना मतीअ बना। और हमें अपनी इबादत के तरीक़े सिखा दे, और हमारी तरफ़ अपनी रहमत से तवज्जह फ़रमा, बिलाशुबहःतू अपने बन्दों पर तवज्जोह फ़रमाता है और अपनी रहमतों से नवाज़ता है। ऐ हमारे रब! और उन ही में से एक रसूल मबऊस फ़रमा जो उनको आपकी आयात पढ़ पढ़कर सुनाए, और किताब और दानाई की बातें सिखाया करे, और उनके दिलों को पाकीज़ा कर दिया करे। बिलाशुबह तू बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब और बड़ी-बड़ी हिकमतों वाला है। और इब्राहीम के दीन से कौन रूगर्दानी कर सकता है। मगर जो बड़ा ही बेवक़ूफ़ और नादान है, और हमने ही उनको दुनिया में भी चुना और आख़िरत में भी उन को सुलहा की जमाअत में शुमार किया। जब उनके रब ने उनसे फ़रमाया के इस्लाम ले आओ, तो कहा दुनिया जहान के रब के आगे अपना सर ख़म करता हूँ। और इब्राहीम ने अपने बेटों को इस बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी, ऐ बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसंद किया है, तो तुम मरना नहीं मगर मुसलमान ही मरना। (2:127-132)

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ؕ وَ مَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ
اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ
مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾ ۚ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ
بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ۬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ

आप कह दीजिये, अल्लाह ने सच कह दिया, सो तुम मिल्लते इब्राहीम की पैरवी करो, जिस में ज़रा भी कजी नहीं और वो मुशरिक भी नहीं थे। बेशक जो मकान लोगों के लिए सबसे पहले बनाया गया जो मक्का में है, वो बड़ा बाबर्कत और दुनिया जहान के लोगों के लिए मोजिबे हिदायत है। उसमें (हमारी) खुली निशानियां हैं,

اٰمِنًا ؕ وَ لِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ
اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۷﴾

एक मुक़ामे इब्राहीम है जो उसमें दाख़िल हो जाए, अमन पाए, और अल्लाह के लिए उस घर का लोगों के ज़िम्मे हज है जो वहां तक पहुंच जाने की ताक़त व सकत रखता हो, और जो इन्कार करे, तो अल्लाह बे परवाह है, दुनिया जहान वालों से। (3:95-97)

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ
اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ
الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾ رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَ مَنْ
عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۶﴾ رَبَّنَاۤ اِنِّيْۤ
اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ
عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْۤ اِلَيْهِمْ
وَ ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَشْكُرُوْنَ ﴿۳۷﴾ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَ
مَا نُعْلِنُ ؕ وَ مَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي
الْاَرْضِ وَ لَا فِي السَّمَآءِ ﴿۳۸﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ
وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ ؕ
اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾ رَبِّ اجْعَلْنِيْ
مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ
دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيَّ وَ
لِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾

और जब इब्राहीम ने दुआ की के ऐ मेरे रब! इस शहर को अमन की जगह बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को बुतों की पूजा करने से बचा दे। ऐ मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया है सो जिसने मेरा कहा माना वो मेरा है, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो तू बड़ा बख़्शन वाला है और बड़ा ही मेहरबान है। ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद को मैदान में जहां खेती नहीं होती तेरे मुक़द्दर घर के पास ला बसाया है, ऐ हमारे रब! ताके ये नमाज़ क़ायम करें, पस आप तो कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायल कर दें, और मेवे खाने को अता फ़रमा दें ताके शुक्र करें। ऐ हमारे रब! तू तो सब जानता है जो बात हम दिल में रखें वो भी, और जो ज़ाहिर कर दें, वो भी, और अल्लाह से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं है, ना ज़मीन में और ना आसमान में। अल्लाह का बड़ा शुक्र है के उसने मुझे बड़ी उम्र में इसमाईल और इसहाक़ अता किये, बिला शुबह मेरा रब मेरी दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब! तू मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला बना, और मेरी औलाद में भी बाज़ को, ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ क़बूल फ़रमा। ऐ हमारे रब! हिसाब के दिन मुझ को और मेरे मां बाप को और कुल मोमिनों को बख़्श दे। (14:35-41)

وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا
تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّ طَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ

और जब हमने बतला दी इब्राहीम (अ.स.) को बैतुल्लाह की जगह के मेरे साथ किसी को शरीक ना करना, और

وَ الْقَآئِمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ وَ اَذِّنْ فِي
النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ
ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾
لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ يَذْكُرُوا اسْمَ
اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ
مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ
اَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوْا
تَفَثَهُمْ وَ لْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَ لْيَطَّوَّفُوْا
بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

मेरे घर को पाक रखना तवाफ़ करने वालों के लिये, और रूकू व सजूद करने वालों के लिये। और लोगों में हज का एलान कर दो, तुम्हारी तरफ़ लोग पैदल भी और दुबले पतले ऊँटों पर दूर व दराज़ रस्तों से चले आयेंगे। ताके वो अपने फ़ायदों के लिये हाज़िर हों, और ताके मुक़र्ररा अय्याम में उन ख़ास चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उनको अता फ़रमाये हैं तो उन चौपायों में से ख़ुद भी खाओ, और मोहताजों और मुसीबत ज़दा (लोगों) को भी खिलाओ। फ़िर चाहिये के अपना मैल कुचैल दूर करें, और अपनी नज़रें पूरी करें, और मेहफ़ूज़ घर का तवाफ़ करें। (22:26-29)

हज़रत इब्राहीम पैग़म्बरी के इतिहास में एक मील का पत्थर हैं। जवानी के दिनों में वह लगातार लोगों को एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलाते रहे। हालात के तक़ाजों के चलते वह जहाँ कहीं भी गए वहाँ उन्होंने लोगों की इसी की दावत दी। मेसोपाटामिया (इराक़) में जहाँ वह पैदा हुए थे लोग आम तौर से सितारों और ग्रहों की की पूजा किया करते थे, चुनांचि उन्होंने सितारों और ग्रहों की पूजा को रद करने के लिए इंसान की अवलोकन शक्ति, अक़्ल और तर्क का सहारा लिया (6:74-83)। उन्होंने सितारे को देखा तो कहा कि यह ख़ुदा है, लेकिन फिर सितारे से ज़्यादा चमकने वाले चांद क देखा तो कहा कि यह ख़ुदा है, फिर सूरज की तरफ़ ध्यान किया तो कहा कि यह सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा प्रकाश देने वाला है, इसलिए यही ख़ुदा है। लेकिन जब सूरज को अस्त होते देख लिया तो लोगों का ध्यान इस तरफ़ दिलाया कि ख़ुदा तो वास्तव में वह है जो इन सब को पैदा करने वाला है, जो इन्हें निकालता है और इन्हें डुबा देता है और सारे बृह्माण्ड का जनक व स्वामी है।

हज़रत इब्राहीम को अल्लाह ने अल्लाह के बारे में तर्कपूर्ण तरीक़े से बात करने की ख़ास योग्यता दी थी। उन्होंने तर्क वितर्क की इस योग्यता को निर्भीक और निडर हो कर स्तेमाल किया और ऐसे दुष्ट शासक के सामने भी तर्क के साथ अपने अक़ीदे की घोषणा की जो ख़ुद इस बात का दावेदार था कि "मैं मारता हूँ और मैं जिलाता हूँ"। उस मूर्ख के इस दावे को रद करने के लिए हज़रत इब्राहीम ने समझदारी से काम लेते हुए सीधे इस बात के रद में कोई तर्क नहीं दिया बल्कि उसे एक ऐसी चुनौती दी जिसे पूरा करना उसके बस की बात नहीं थी। उससे कहा कि अगर तू लोगों का रब है तो सूरज पर अपने अधिकार को साबित कर और उसे पूरब के बजाए पश्चिम से निकाल कर दिखा, कि सूरज ही वह देवता था जिसकी वहाँ के लोग ख़ास

तौर से पूजा करते थे। इस चुनौती को सुन कर वह मूर्ख दंग रह गया जो जीवन और मृत्यू पर अधिकार का होना इस बात को समझता था कि वह किसी को मौत की सज़ा दे सकता है और किसी को मौत की सजा मआफ़ कर सकता है। जबकि यह चुनौती इस बात के लिए थी कि सौर मण्डल की व्यवस्था को बदलना तक तेरे बस की बात नहीं, और इसका कोई जवाब उसको नहीं सूझा (2:258)।

सत्य की जिज्ञासा में हज़रत इब्राहीम की गम्भीरता का एक और संदर्भ यह है कि उन्होंने अल्लाह से यह अनुरोध किया कि अल्लाह पाक उन्हें यह दिखाएं कि वह किस तरह मृत को जीवित करेंगे ताकि उनका मन संतुष्ट हो जाए (2:260)। अल्लाह अपने सभी जीवों पर क़ुदरत रखता है और कोई भी जीव चाहे ज़िन्दा हो या मुर्दा, हर हालत में उसके आदेश को पूरा करने का पाबन्द है:"उसकी शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे फ़रमा देता है कि 'हो जा' तो वह हो जाती है (36:82)।

फिर जब हज़रत इब्राहीम ने मूर्तियों को तोड़ डालने का इरादा किया तो उन्होंने इस काम को भी अपनी आस्था के सुबूत में एक तर्क के रूप में स्तेमाल कियाँ निश्चित रूप से उन्होंने यह नहीं सोच लिया था कि इस काम से उनकी क़ौम में मूर्तियों की पूजा ख़त्म हो जाएगी बल्कि इसके विपरीत उन जैसी ज़हीन हस्ती को यह विश्वास रहा होगा कि इन मूर्तियों की जगह नई मूर्तियाँ रख दी जाएंगी और ख़ुद उनकी हत्या कर दी जाएगी। और अगर अल्लाह ने उन्हें न बचा लिया होता और आग ढण्डी हो जाने का आदेश न दिया होता तो हज़रत इब्राहीम उस आग में जल कर फ़ना हो जाते (21:51-75; 37:83-99)।

यह एक दिलचस्प और महत्वपूर्ण बात है कि 'उन्दुलूस' (स्पेन) के मशहूर फक़ीह (विधि शास्त्र विशेषज्ञ) इब्ने हज़म (मृ. 456 हिजरी/1064 ई.) ने जो कि तर्कपूर्ण .ष्टिकोण रखने के लिए मशहूर हैं, हज़रत इब्राहीम के उदाहरणों का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि मुसलमानों को उनके अक़ीदे और तरीक़े को अपनाने का निर्देश मिला है (2:153; 3:95; 4:125; 16:123) और हजरत इब्राहीम के अकीदे में "तर्क को बुनियादी महत्व है"। हज़रत इब्राहीम का पैग़ाम भी वही था जो अल्लाह के दूसरे सभी पैग़म्बरों का रहा है कि एक अल्लाह की इबादत करो, "अल्लाह रब्बुल आलमीन जिसने मुझे पैदा किया और वही मुझे रास्ता दिखाता है। और वही मुझे खिलाता पिलाता है और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मुझे शिफ़ा (सुख) देता है। और वही है जो मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा" (26:77-81)।

हज़रत इब्राहीम ने आख़िरत को मानने पर ज़ोर दिया जहाँ हर इंसान को इंसाफ़ और बदला मिलेगा। आख़िरत पर उनका अक़ीदा कभी भी डगमगाया नहीं, उस समय भी उन्हें कोई शक नहीं था जब उन्होंने अल्लाह से यह जानने की इच्छा की वह किस तरह मुर्दों को जीवन देंगे बल्कि इसलिए कि "दिल को पूरी तरह इतमिनान हासिल हो जाए" (2:260)। उन्हें यह पूरी

उम्मीद थी की अल्लाह उन्हें हिसाब के दिन मआफ़ कर देंगे (26:82), और सभी ईमान वालों के लिए भी उन्होंने बख़्शिश की दुआ की (14:41)। उन्होंने तो उन लोगों के लिए भी अल्लाह से .पा व करम की उम्मीद की जो उनका अनुसरण नहीं कर रहे थेः''ऐ अल्लाह इन बुतों ने बहुत से लोगों को भटकाया है सो जो कोई मेरा कहना माने वह मेरा है और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो आप बख़्शने वाले महरबान हैं'' (36:14)। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी इंसाफ के लिए व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी ज़रूरी है (53:36-42)।

सच्चाई की रोशनी को फैलाने के लिए हालांकि वह पूरी तरह आतुर थे और ख़ास तौर से अपनी संतानों को इस रास्ते पर अग्रसर रखना चाहते थे लेकिन फिर भी वह इस बात पर ज़ोर देते थे कि अल्लाह का दीन हर ज़माने और हर जगह के लिए है और उनकी औलादों को ख़ास तौर से तौहीद पर जमे रहना चाहिए (2:124,132; 3:33,96; 4:54)। बाईबिल के अनुसार वह इराक़ से चल कर कुनआन व मिस्र गए और क़ुरआन के मुताबिक़ अरब गए। वह जहाँ कहीं भी गए हर जगह उन्होंने लोगों को एक अल्लाह की इबादत की तरफ़ बुलायाँ जब वह अपनी पत्नि 'हाजरा' (उन पर सलाम हो) और बेटे इस्माईल (उन पर भी सलाम) को मक्का की चटयल घाटी में बसाने के लिए ले गए तो वहाँ उन्होंने अल्लाह की इबादत का पवित्र घर बनाया और अल्लाह से दुआ की कि लोगों के दिल इस बस्ती की तरफ लग जाएं और उन के बच्चे व उसकी मां की तरफ़ कुछ लोगों का ध्यान हो जाए। अल्लाह ने उनकी दुआ क़ुबूल की और वह जगह अरब में एक बहुत बड़ा व्यापारिक और धार्मिक स्थल बन गयी और हज़रत इब्राहीम के संदेश के प्रभाव वहाँ 25 सदियों बाद हज़रत मुहम्मद सल्ल० के आगमन तक किसी न किसी तरह बाक़ी रहे। इस तरह अल्लाह के पैग़म्बरों के इतिहास में हज़रत इब्राहीम एक सरदार थे (2:142), और एक ऐसी हस्ती थे जिनसे उत्तम संस्कारों की रोशनी फूटी और जिन्होंने अपने संदेश से आस्था और नैतिकता की जोत जगाई, और उनकी संतानों के माध्यम से हिदायत की यह रोशनी इंसानियत के एक बड़े हिस्से तक पहुंची (16:120), क्योंकि उनके संदेश और उनकी दावत को यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम के अनुयायियों ने स्वीकार किया, ''और उस व्यक्ति से किसका धर्म अच्छा हो सकता है जिसने अल्लाह के आदेश को स्वीकार किया और वह नेक काम करने वाला भी है और इब्राहीम के धर्म का अनुयायि है जो एकाग्र (रूप से अल्लाह के बन्दे) थे। और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र बनाया था'' (4:125)। इस तरह करोड़ें और अरबों लोग हज़रत इब्राहीम से श्रद्धा रखते हैं और प्रेम करते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी सच्चाई की गवाही देते आ रहे हैं, और इस तरह उनकी दुआ क़ुबूल हुई (26:84), और इस इंसानी प्रेम से भी ऊंची बात यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र बनाया (4:125)।

मुसलमान हज़रत इब्राहीम के अनुयायि होने पर गर्व करते हैं (2:135; 3:68,95; 6:161; 16:123; 22:78)। दिन में पांच बार अनिवार्य रूप से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में और इसके अतिरिक्त स्वेच्छा से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में से हर नमाज़ में एक या दो बार मुसलमान यह दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह जिस तरह आप ने इब्राहीम और इब्राहीम की औलाद पर .पा और करम किया इसी तरह हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनकी आल पर रहमत और बरकत नाजिल कीजिए। "कह दो कि मुझे मेरे रब ने सीधा रस्ता दिखा दिया है (यानी सत्य धर्म) इब्राहीम के धर्म का जो एक अल्लाह (ही) की तरफ़ थे और शिर्क करने वालों में से न थे। (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे जगतों का पालनहार है जिसका कोई साझी नहीं और मुझे इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सबसे पहले हुक्म मानने वालों में से हूँ" (6:161-163)।

याक़ूब (इस्राईल), यूसुफ़ और उनके भाई, बनी इस्राईल (क़बीले, अलअस्बात))

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ۭيٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝۱۳۲ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ۭ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَاۗىِٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰــهًا وَّاحِدًا ښ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝۱۳۳ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔــلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۳۴

और इब्राहीम ने अपने बेटों को इस बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी, ऐ बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसंद किया है, तो तुम मरना नहीं मगर मुसलमान ही मरना। क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब याक़ूब वफ़ात पाने लगे, जब याक़ूब ने अपने बेटों से कहा तुम मरे बाद किस की बंदगी किया करोगे? तो सब ने यही कहा के आपके माबूद की, और आप के बाप दादा इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के माबूद की बंदगी करेंगे जो माबूद यकता है, और हम उसी के हुक्म की इताअत करेंगे। (2:132-134)

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِىْٓ اِ سْرَاۗءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَاۗءِيْلُ عَلٰي نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ

नुज़ूले तौरात से पहले बनी इस्राईल पर खाने की सब चीज़ें हलाल थीं सिवाए उन चीज़ों के जो इस्राईल यानी याक़ूब (अ.स.) ने अपने ऊपर .ख़ुद हराम कर ली थीं।

आप फ़रमा दीजिये के फ़िर तौरात लाओ, फिर उसको पढो, अगर तुम सच्चे हो। सो जो इसके बाद भी अल्लाह पर झूट जड़े तो ये लोग बड़े बेइन्साफ़ हैं। (3:93-94)

فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٩٣ فَمَنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩٤

हमने आपकी तरफ़ वही की जैसे नूह की तरफ़ की थी, और उनके बाद दूसरे नबियों की तरफ़ की थी, और हमने वही की थी इब्राहीम की तरफ़, इसमाईल की तरफ़, इसहाक़ की तरफ़, याक़ूब की तरफ़, और औलादे याक़ूब की तरफ़, और ईसा की तरफ़, अय्युब की तरफ़, यूनुस की तरफ़, हारून की तरफ़ और सुलेमान की तरफ़, और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी। और हमने ऐसे लोगों को रसूल बनाया जिनका हाल हम आपको पहले बात चुके हैं और ऐसे रसूल पैदा किये जिनका हाल हमने आपको नहीं बताया, और अल्लाह ने मूसा से ख़ास तौर पर कलाम किया। (4:163-164)

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّ
النَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ
الْاَسْبَاطِ وَ عِيْسٰى وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَ
هٰرُوْنَ وَ سُلَيْمٰنَ ۚ وَ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۝١٦٣ وَ
رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ
رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ
مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۝١٦٤

और हमने इब्राहीम (अ.स.) को इसहाक़ (अ.स.) अता किया, मज़ीद बराँ याक़ूब (अ.स.) पोता, और हमने उन सब को नेक किया। और हमने उनको पेश्वा बनाया (और) हमारे हुक्म के मुताबिक़ हिदायत करते थे, और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म दिया, और वो हमारी इबादत करते थे। (21:72-73)

وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَ يَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَ
كُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝٧٢ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً
يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ
الْخَيْرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَ
كَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۝٧٣

और हमने इब्राहीम को इसहाक़ दिया, याक़ूब दिया, और हमने उनकी औलाद में नबुव्वत और किताब को क़ायम रखा, और उनको दुनिया में भी उनका सिला अता किया, और आख़िरत में भी वो नेक लोगों में शुमार होंगे। (29:27)

وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَ جَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ وَ اٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى
الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٧

وَ اذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝٤٥

और हमारे बन्दों में इब्राहीम, इसहाक़, और याक़ूब (अ.स.) को भी याद कीजिये, जो हाथों और आंखों वाले थे। (38:45)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَ اِنْ كُنْتَ
مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٣ اِذْ قَالَ يُوْسُفُ
لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤
قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى
اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ
يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَ يُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ وَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَ عَلٰٓى اٰلِ
يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ
اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ۝٦ لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَ اِخْوَتِهٖٓ
اٰيٰتٌ لِّلسَّآىِٕلِيْنَ ۝٧ اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَ
اَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۭ
اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٨ اقْتُلُوْا
يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ
اَبِيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا
صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآىِٕلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا
يُوْسُفَ وَ اَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَ

(ऐ नबी! (स.अ.स.) हमने जो ये क़ुरआन तुम पर नाज़िल किया है इसके ज़रिये से हम तुम से एक बड़ा उम्दा क़िस्सा बयान करते हैं और तुम इससे पहले बेख़बर थे। जब यूसुफ़ (अ.स.) ने अपने बाप से कहा के अब्बा जान! मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारों, सूरज और चांद को देखा है देखता क्या हूँ के मुझे सज्दा कर रहे हैं। बाप ने कहा बेटा! अपने ख़्वाब का ज़िक्र अपने भाईयों से ना करना, नहीं तो वो तुम्हारे हक़ में कोई फ़रेब करेंगे, कोई शक नहीं है के शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। और इस तरह तुम्हारा रब तुमको बरगज़ीदा और मुमताज़ करेगा और ख़्वाबों की ताबीर का इल्म सिखायेगा, और पूरा करेगा तुम पर और याक़ूब के ख़ानदान पर अपना ईनाम जैसा के इससे पहले तुम्हारे दादा पर दादा यानी इब्राहीम (अ.स.) और इसहाक़ (अ.स.) पर अपना ईनाम पूरा कर चुका है, बेशक तुम्हारा रब सब कुछ जानने वाला बड़ी हिकमतों वाला है। बेशक यूसुफ़ और उसके भाईयों के क़िस्सा में दरयाफ़्त करने वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं। जब यूसुफ़ के भाई बोले के अब्बा को यूसुफ़ और उसका भाई हमसे ज़्यादा प्यारे हैं हालांके हम एक जमात की जमात हैं, बेशक हमारे बाप सरीह ग़लती पर हैं। यूसुफ़ को या तो जान से मार डालो या उसको किसी मुल्क में फ़ेंक आओ तो अब्बा की तवज्जह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जायेगी, इसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे। उनमें से एक कहने वाले ने कहा यूसुफ़ को जान से ना मारो, किसी गहरे कुएं में डाल दो, कोई राहगीर उसको निकाल ले जायेगा, अगर तुम को करना है। उन्होंने कहा के अब्बा जान क्या वजह है के आप

إِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝١١ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَ
يَلْعَبْ وَ إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝١٢ قَالَ إِنِّي
لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ
الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝١٣

यूसुफ़ के बार में हमारा एतबार नहीं करते, हालांक हम इसके ख़ैर ख़्वाह हैं। आप इसको कल हमारे साथ भेज दीजिये के ज़रा वो खायें खेलें, और हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे। उन्होंने कहा ये बात मुझे रंज देती है के तुम इसको ले जाओ, और मुझे ये भी डर है के इससे ग़ाफ़िल हो जाओ और इसको भेड़िया खा जाये। (12:3-13)

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ
إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝١٤ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَ
أَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَ
أَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَ
هُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝١٥ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً
يَبْكُونَ ۝١٦ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ
وَ تَرَكْنَا يُوسُفَ عِندَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ
الذِّئْبُ ۚ وَمَا أَنتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا
صَادِقِينَ ۝١٧ وَ جَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ
كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ
أَمْرًا ۚ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۚ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ
مَا تَصِفُونَ ۝١٨ وَ جَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا
وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۚ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا
غُلَامٌ ۚ وَ أَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِمَا يَعْمَلُونَ ۝١٩ وَ شَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ
دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ ۚ وَ كَانُوا فِيهِ مِنَ
الزَّاهِدِينَ ۝٢٠ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِن
مِّصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَن
يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا

उन्होंने कहा अगर इसको भेड़िया खा जाये और हम एक ताक़तवर जमात हैं तो हम बड़े नुक़सान में पड़ जायेंगे। जब वो उसको ले गए और इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया के उस को गहरे कुएं में डाल दें तो हमने वही की यूसुफ़ को के एक वक़्त ऐसा आएगा के तुम उनको उनके इस सुलूक से आगाह करोगे और वो तुम को पहचानेंगे भी नहीं। और वो रात को रोते हुए, अपने बाप के पास पहुंचे। और कहा अब्बा जान! हम तो आपस में दौड़ने में लग गए और यूसुफ़ को अपने असबाब के पास छोड़ दिय तो उस को भेड़िया खा गया और आप हमारी बात का यक़ीन नहीं करेंगे गो हम सच कहते हैं। और उनके कुर्ते पर झूटमूट का ख़ून लगा लाये, तो याक़ूब ने कहा (हक़ीक़त ये नहीं है) बल्के तुम एक बात अपने दिल से बना लाये हो, तो सब्र ही करूंगा जिसमें शिकायत ना होगी, और जो तुम कर आये हो उस पर अल्लाह ही से मदद मतलूब है। और एक क़ाफ़ला और वारिद हुआ, उन्होंने अपना सक्काह पानी के लिए भेजा, उसने कुएं में डोल लटकाया (तो यूसुफ़ उससे लटक गए) वो बोला ज़हे नसीब, ये तो हसीन लड़का है, उसको क़ीमती सरमाया समझ कर छुपा लिया और वो जो कर रहे थे अल्लाह को सब मालूम था। और उससे थोड़ी सी क़ीमत पर यानी मादूदे चन्द दिरहम पर बेच डाला, और उनको इस बारे में कोई लालच भी ना था। और मिस्र के जिस शख़्स ने यूसुफ़ को ख़रीदा था

لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۫ وَ لِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ لَمَّا بَلَغَ
اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَ رَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ
بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَ غَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَ
قَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْۤ
اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَ لَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَ هَمَّ بِهَا لَوْ لَاۤ اَنْ رَّاٰ
بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ
وَ الْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾

उसने अपनी बीवी से कहा इसको इज़्ज़त और एहत्राम से रखो शायद के वो हमें नफ़ा बख़्शे या हम इसको अपना लड़का बना लें, और इस तरह हम ने यूसुफ़ को सर ज़मीन मिस्र में जगह दी, और ताके हम उसको ख़्वाबों की ताबीर का इल्म सिखायें, और अल्लाह तो अपने काम में ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वो अपनी जवानी को पहुंचे, तो हमने उनको दानाई और इल्म अता फ़रमाया, और हम नेकों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। और जिस औरत के घर में वो रहते थे, उसने अपनी तरफ़ मायल करना चाहा, उनसे अपना मतलब हासिल करने के लिये सारे दरवाज़े बन्द कर दिये और कहा यूसुफ़ जल्द आओ तुम ही से कहती हूँ, उसने कहा अल्लाह की पनाह! वो मेरे आक़ा हैं, उन्होंने मुझे अच्छा मुक़ाम दिया है (मैं ये ज़ुल्म नहीं कर सकता) क्यों के ज़ालिमों को फ़लाह नहीं मिलती। और उस औरत ने उसका क़सद किया, और उन्होंने उसका क़स्द किया, अगर वो अपने रब की निशानी ना देखते, इसी तरह हमने उनको इल्म दिया के हम उनसे बुराई और बेहयाई को रोक दें, बेशक वो हमारे ख़ालिस बन्दों में से थे। (12:14-24)

وَ اسْتَبَقَا الْبَابَ وَ قَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّ
اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ
مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّاۤ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ
نَّفْسِيْ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ
كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَ هُوَ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ
مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَ هُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾

वो दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे (आगे यूसुफ़ पीछे ज़ुलेखा) और उस औरत ने उसका कुर्ता पीछे से फ़ाड़ा दोनों को दरवाज़े के पास औरत का शौहर मिल गया, तो औरत बोली जो शख़्स तुम्हारी बीवी के साथ बुरा इरादा करे इसके सिवा क्या सज़ा है के या तो क़ैद किया जाए या और कोई दर्दनाक सज़ा हो। यूसुफ़ ने कहा के इसी ने मुझ को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा था और इसके क़बीले में से एक शहादत देने वाले ने शहादत दी के इसका कुर्ता अगर आगे से फ़टा है तो ये सच्ची है और यूसुफ़ झूटा। और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा

है, तो ये झूटी है और वो सच्चा है। तो जब उसका कुर्ता देखा तो पीछे से फ़टा था, तब उसने कहा के ये तुम औरतों का फ़रेब है, बेशक तुम औरतों के फ़रेब बड़े भारी होते हैं। यूसुफ़! तू इस बात का .ख्याल ना कर, और ऐ औरत तू अपने गुनाह की बख़्शिश मांग, बेशक .खता तेरी है। और चन्द औरतों ने जो शहर में रहती थीं ये बात कही के अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम की तरफ़ मायल है और उसकी मोहब्बत इसके दिल में घर कर गई है, हम इसको गुमराही में देखते हैं। जब उस औरत ने उनकी बदगोई सुनी तो उनके पास दावत का पैग़ाम भेजा, और उनके लिये एक महफ़िल मुरत्तब की, और (फ़ल तराशने के लिलये) हर एक को एक एक छुरी दी, और यूसुफ़ से कहा के इनके सामने बाहर आओ, जब औरतों ने उनको देखा तो हैरान रह गईं और (फ़ल काटते काटते) अपने हाथ काट लिये, और (बेसा.ख्ता) कहने लगीं हाशा अल्लाह ये आदमी नहीं है ये तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। उस औरत ने कहा के ये तो वही है जिसके बारे में तुम मुझे तान करती थीं, और बेशक मैंने उसको अपनी तरफ़ मायल करना चाहा मगर उसने परहेज़ किया, और अगर वो आईंदा मेरा कहना ना ना करेगा, तो वो जेल भेज दिया जायेगा, और ज़लील भी होगा। यूसुफ़ ने दुआ की के ऐ मेरे रब! जिस काम की तरफ़ ये औरतें मुझे बुला रही हैं इससे अच्छा मुझे क़ैद है और अगर तू इनका फ़रेब मुझ से दूर ना करेगा तो मैं इनकी तरफ़ मायल हो जाऊँगा, और मैं नादानों में शामिल हो जाऊँगा। तो अल्लाह तआला ने उनकी दुआ क़बूल कर ली, और उनका मकर उनसे दूर कर दिया, बेशक वो सुनने वाला और जानने वाला है। फ़िर उनको ये मसलेहत मालूम हुई मुख़्तलिफ़ निशानियां देखने के बाद के कुछ मुद्दत के लिये उनको क़ैद कर दें।

(12:25-35)

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ
كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يُوْسُفُ
اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِىْ لِذَنْۢبِكِ ۖۚ
اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿۲۹﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِى
الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ
نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِىْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ
اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ
اٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ قَالَتِ
اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ
قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا
بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿۳۱﴾ قَالَتْ
فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ
عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ
اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۳۲﴾
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْۤ
اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ
اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۳﴾
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ
كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۴﴾ ثُمَّ
بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ
حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۳۵﴾

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَآ
اِنِّیْٓ اَرٰىنِیْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّیْٓ
اَرٰىنِیْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِیْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّیْرُ
مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِیْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ
الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ لَا یَاْتِیْكُمَا طَعَامٌ
تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِیْلِهٖ قَبْلَ اَنْ
یَّاْتِیَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِیْ رَبِّیْ ؕ اِنِّیْ
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا یُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ
هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ اتَّبَعْتُ
مِلَّةَ اٰبَآءِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ یَعْقُوْبَ ؕ
مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ
ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَیْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۳۸﴾
یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَیْرٌ
اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۳۹﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّیْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَ
اٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ
اِیَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۰﴾ یٰصَاحِبَیِ السِّجْنِ اَمَّآ
اَحَدُكُمَا فَیَسْقِیْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَ اَمَّا الْاٰخَرُ
فَیُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّیْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِیَ
الْاَمْرُ الَّذِیْ فِیْهِ تَسْتَفْتِیٰنِ ﴿۴۱﴾ وَ قَالَ
لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ
رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ

और उनके साथ दो और नौजवान भी क़ैद हो गए, उन दोनों में से एक ने कहा के मैं ये ख़्वाब में देख रहा हूँ के शराब (के लिये अंगूर) निचौड़ रहा हूँ, दूसरे ने कहा के मैं अपने को इस तरह देखता हूँ के अपने सर पर रोटियां उठाये हुए हूँ, उसमें से परिन्दे खा रहे हैं, आप हमें इन ख़्वाबों की ताबीर बयान करें, हम आपको नेक लोगों में ख़्याल करते हैं। यूसुफ़ (अ.स.) ने कहा, जो खाना तुम को मिलने वाला है वो आने नहीं पायेगा के मैं उससे पहले तुमको इसकी ताबीर बता दूंगा, ये उन बातों में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं, जो लोग अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और आख़िरत का इन्कार करते हैं बेशक में इनका मज़हब छोड़े हुए हूँ। मैं अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब के मज़हब पर चलता हूँ, हमारी शान नहीं है के हम अल्लाह के साथ किसी दूसरे को शरीक करें, ये अल्लाह का फ़ज़्ल है हम पर और सारे इन्सानों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। ऐ मेरे क़ैदखाने के साथियों! क्या जुदा जुदा आक़ा अच्छे हैं, या एक अल्लाह जो सबसे ज़बरदस्त है, वो अच्छा है? जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो वो नाम ही नाम है, जो तुमको और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं, अल्लाह ने उसकी कोई सनद नहीं दी, सुन लो! के अल्लाह के सिवा किसी की हकूमत नहीं है, उसकी हुक्म है के उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत मत करो, यही सीधा (और मज़बूत) दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ऐ मेरे क़ैदखाने के रफ़ीक़ो! तुम में एक तो अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा, और जो दूसरा है वो सूली पाने वाला होगा और उसके सर को परिन्दे खा जायेंगे, जो तुम पूछते थे, वो इसी तरह फ़ैसला हो चुका है। और दोनों शख़्सों में से जिसकी निस्बत ख़्याल था के वो निजात पा जायेगा, उससे कहा के अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र कर देना, फ़िर

فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ﴿٤٢﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ
إِنِّي أَرَىٰ سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ
عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ
يَابِسَاتٍ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ
إِن كُنتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٤٣﴾ قَالُوا
أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ۖ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ
الْأَحْلَامِ بِعَالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِي نَجَا
مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُم
بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ﴿٤٥﴾

शैतान ने उनका अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया तो यूसुफ़ और चन्द साल जेल में रहे। और बादशाह ने कहा मैंने .ख्वाब में देखा के सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात .खोशे हरे हैं और सात .खुश्क, ऐ दरबार वालों! अगर तुम .ख्वाबों की ताबीर दे सकते हो तो मेरे .ख्वाब की ताबीर बताओ। तो उन्होंने कहा, ये तो परेशान से .ख्यालात हैं, और हमें .ख्वाबों की ताबीर का इल्म भी नहीं है। और वो बोल उठा जो दोनों क़ैदियों में से रिहाई पा गया था और मुद्दत के बाद उसको याद आ गया, मैं आपको इसकी ताबीर ला बताता हूँ, मुझे (जेलख़ाने) में जाने की इजाज़त दीजिये। (12:36-45)

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ
بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ
سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ
إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ قَالَ
تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدتُّمْ
فَذَرُوهُ فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا
تَأْكُلُونَ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ سَبْعٌ
شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا
مِّمَّا تُحْصِنُونَ ﴿٤٨﴾ ثُمَّ يَأْتِي مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ
عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ
يَعْصِرُونَ ﴿٤٩﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ ۖ فَلَمَّا
جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ
مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللَّاتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ
رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ

ऐ यूसुफ़! ऐ बड़े सच्चे! हमें (इस .ख्वाब की ताबीर) बता दीजिये के सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात खोशे हरे हैं और सात .खुश्क, ताके मैं लोगों के पास वापस जा कर (ताबीर बता दूं) ताके वो भी जानें। उन्होंने कहा के तुम सात बराबर खेती करते रहोगे, तो जो ग़ल्ला काटो तो थोड़े से ग़ल्ले के सिवा जो खाने में आए उसको .खोशें में रहने देना। फ़िर उसके बाद सात साल ऐसे स.ख्त आयेंगे के जो ग़ल्ला तुम ने जमा कर रखा है वो इसको सब खा जायेंगे सिर्फ़ वो थोड़ा सा रह जाएगा जो तुम एहतियात से रख छोड़ोगे। फ़िर उसके बाद एक साल आएगा के लोगों के लिये .खूब मेंह बरसेगा, और उसमें रस भी निचोड़ेंगे। और बादशाह ने कहा के उनको मेरे पास लाओ, जब उनके पास क़ासिद गया तो उन्होंने कहा, तुम अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उनसे पूछो उन औरतों का क्या हाल है, जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे, बेशक मेरा रब उनके मकर से वाक़िफ़ है। बादशाह ने पूछा तुम्हार क्या वाक़ेया हुआ था जब तुम ने यूसुफ़ को अपनी तरफ़

اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ
لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ
الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ٞ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ
عَنْ نَّفْسِهٖ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۵۱﴾ ذٰلِكَ
لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَ مَآ اُبَرِّئُ
نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا
مَا رَحِمَ رَبِّيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۳﴾ وَ
قَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖۤ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ
فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا
مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ
الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۵﴾ وَ كَذٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا
حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَ
لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾

मायल करना चाहा था, सब बोल उठीं, के हाशा लिल्लाह हमने उसमें कोई बुराई नहीं देखी, अज़ीज़ की बीवी ने कहा, अब सच्ची बात तो ज़ाहिर हो गई, असल यही है के मैंने उसको अपनी तरफ़ मायल किया था और वो बेशक सच्चा है। यूसुफ़ ने कहा के मैंने ये बात इसलिये पूछी है के अज़ीज़ को यक़ीन हो जाए के मैंने उसके पीठ पीछे उसकी अमानत में .ख्यानत नहीं की, और ये के अल्लाह .ख्यानत करने वालों को हिदायत नहीं देता। और मैं अपने आपको पाक साफ़ नहीं कहता क्योंके नफ़्स तो इन्सान को बुराई ही सिखाता है, मगर जिस पर मेरा रब रहम फ़रमा दे, बिला शुबह मेरा रब बड़ा बख़्शने वाला बड़ा रहम करने वाला है। और बादशाह ने कहा, उसे मेरे पास लाओ, मैं उसे अपना .ख़ास मसाहिब बनाऊँगा, फ़िर जब उनसे बात चीत की तो कहा के आज से तुम हमारे हां साहिबे मंज़िलत और साहिबे एतमाद हो। यूसुफ़ ने कहा के मुझे इस मुल्क के .ख़ज़ाने पर तैनात कर दीजिये, क्योंके मैं हिफ़ाज़त भी कर सकता हूँ और इस काम को जानता भी हूँ। और इस तरह हमने यूसुफ़ को सर ज़मीन मिस्र में जगह दी के उसमें जहां चाहें रहें, हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं करते हैं और हम नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाय नहीं करते। (12:46-56)

وَ لَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا
يَتَّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ جَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا
عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَ هُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَ لَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ
لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْۤ اُوْفِي
الْكَيْلَ وَ اَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنْ لَّمْ

और आख़िरत का अज्र कहीं .ज्यादा बेहतर है मोमिनीन मुत्ताक़ीन के लिये। और यूसुफ़ के भाई आए फ़िर यूसुफ़ के पास गए, तो यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया, और वो उसको ना पहचान सके। और यूसुफ़ ने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा के अपने बाप शरीक भाई को भी मेरे पास लाना, क्या तुम नहीं देखते के मैं पूरा नाप कर देता हूँ, और मेहमानदारी भी .ख़ूब करता हूँ। और अगर तुम उसको मेरे पास नहीं लाओगे तो ना तुम्हें मेरे

تَأْتُونِي بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا
تَقْرَبُوْنِ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا
لَفٰعِلُوْنَ ﴿٦١﴾ وَ قَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا
بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى
اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ
فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَ اِنَّا لَهٗ
لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا
كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ
خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّ هُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ
لَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ
رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ
هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا
وَ نَحْفَظُ اَخَانَا وَ نَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ
كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ
حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ
اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ
قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَ قَالَ
يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا
مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَ مَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ
مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَ عَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾

यहां से ग़ल्ला मिलेगा, और ना तुम मेरे पास आना। वो कहने लगे हम उसके बारे में उसके वालिद से कहेंगे और हम ये काम ज़रूर करेंगे। और यूसुफ़ ने अपने ख़ुद्दाम से कहा के ग़ल्ले की क़ीमत उनके थैलों में रख देना ताके जब वो अपने एहलो अयाल में जायें तो उसको पहचानें, शायद के फिर आयें। जब वो अपने बाप के पास वापस गए, तो उन्होंने कहा, अब्बा हमारे लिये ग़लले की बन्दिश कर दी गई है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिये ताके हम ग़ल्ला लायें और हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे। याक़ूब ने कहा मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करता हूँ जैसा पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार किया था तो अल्लाह ही बेहतर निगेहबान है, और वो सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है। और जब उन्होंने अपना असबाब खोला तो देखा के उन्हें क़ीमते ग़ल्ला वापस कर दी गई है, तो कहने लगे के अब्बा जान हमें और क्या जान हमें और क्या चाहिये ये हमारी पूंजी, वो भी वापस कर दी गई है और (अब) हम अपने अहलो अयाल के लिये (फ़िर) ग़ल्ला लायेंगे और अपने भाई की ख़ूब निगरानी करेंगे और एक बारेशुत्र और ज़्यादा ग़ल्ला लायेंगे, के ये ग़ल्ला (जो हम लाये हैं) थोड़ा है। याक़ूब (अ.स.) ने फ़रमाया के मैं इसको तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूंगा जब तक तुम अल्लाह की क़सम खाकर अहद ना करो के इसको मेरे पास ज़रूर (सही व सालिम) लाओगे, मगर ये दूसरी बात है के तुम घेर लिये जाओ तो मजबूरी है, जब उन्होंने क़सम खाकर अपने बाप को क़ौल दे दिया तो उन्होंने कहा के जो क़ौलो क़रार हम कर रहे हैं ये सब अल्लाह के सुपर्द है। और याक़ूब ने कहा, ऐ मेरे बेटों! तुम सब एक दरवाज़ा से ना जाना बल्के अलग अलग दरवाज़ों से जाना, और मैं अल्लाह के हुक्म को तुम पर से नहीं टाल सकता, हुक्म तो अल्लाह ही का चलता है, उसी पर भरोसा रखता हूँ, और भरोसा

करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

(12:57-67)

और जब वो उन मुक़ामात से दाख़िल हुए जहां से उनके बाप ने उनसे कहा था, उनके बाप का मक़सद अल्लाह के हुक्म को टालना ना था, लेकिन याक़ूब के दिल में एक .ख़्वाहिश थीं वो पूरी कर दी, बेशक वो साहिबे इल्म थे क्योंके हमने उनको इल्म दिया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वो यूसुफ़ के पास पहुंचे, तो यूसुफ़ ने अपने हक़ीक़ी भाई को अपने पास जगह दी, और कहा के मैं तेरा भाई हूँ, तो जो सुलूक ये हमारे साथ करते रहे हैं, उस पर अफ़सोस ना करना। फ़िर जब उनका असबाब तैयार कर दिया तो पानी पीने का बर्तन अपने भाई के थैले में रख दिया। फ़िर एक एलान करने वाले ने आवाज़ दी के ऐ काफ़ले वालों! तुम तो चोर हो। वो सब उनकी तरफ़ मुतावज्जह हो गए और पूछा तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है। वो बोले के बादशाह का पैमाना हमको नहीं मिलता, और जो उसको लेकर आये उसके लिये एक बारेशुत्र ईनाम है, और मैं इसका ज़ामिन हूँ। वो कहने लगे अल्लाह की क़सम तुम को मालूम है के हम इस मुल्क में .ख़राबी करने नहीं आये, और ना हम चोरी करने वाले हैं। बोले अगर तुम झूटे निकले तो इसकी क्या सज़ा हैं। उन्होंने कहा इसकी सज़ा ये है के जिसके थैले में वो चीज़ निकली वो ही उसका बदला क़रार दिया जाए, हम ज़ालिमों को यही सज़ा दिया करते हैं। फ़िर यूसुफ़ ने अपने भाई के थैले को देखने से पहले दूसरों के थैले को देखना शुरू किया, फ़िर (आख़िर में) अपने भाई के थैले में से उसको निकाल लिया, इस तरह हमने यूसुफ़ के लिये ये तदबीर की (वरना) बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ वो अपने भाई को नहीं ले सकते थे, मगर ये के अल्लाह को मेंज़ूर था, हम जिसे चाहते हैं दर्जे

وَ لَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا
كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا
حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَ اِنَّهٗ
لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَ لَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى
يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ
فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ
رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا
الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا وَ اَقْبَلُوْا
عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾ قَالُوْا نَفْقِدُ
صُوَاعَ الْمَلِكِ وَ لِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّ
اَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ
مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَ مَا كُنَّا
سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ
كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ
رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ
اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ
كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ
اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ
نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَ فَوْقَ كُلِّ ذِيْ

عِلۡمٍ عَلِيۡمٌ ﴿٧٦﴾ قَالُوۡۤا اِنۡ يَّسۡرِقۡ فَقَدۡ سَرَقَ
اَخٌ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ‌ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوۡسُفُ فِىۡ
نَفۡسِهٖ وَلَمۡ يُبۡدِهَا لَهُمۡ‌ ۚ قَالَ اَنۡتُمۡ شَرٌّ
مَّكَانًا‌ ۚ وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا تَصِفُوۡنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوۡا
يٰۤاَيُّهَا الۡعَزِيۡزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيۡخًا كَبِيۡرًا فَخُذۡ
اَحَدَنَا مَكَانَهٗ‌ ۚ اِنَّا نَرٰٮكَ مِنَ
الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنۡ نَّاۡخُذَ
اِلَّا مَنۡ وَّجَدۡنَا مَتَاعَنَا عِنۡدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا
لَّظٰلِمُوۡنَ ﴿٧٩﴾

बुलंद करते हैं, और हर इल्म वाले से एक बड़ा इल्म वाला है। यूसुफ़ के भाईयों ने कहा अगर इसने चोरी की तो (कोई ताज्जुब नहीं के) इसका एक भाई भी पहले चोरी कर चुका है यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में मख़फ़ी रखी और उन पर ज़ाहिर ना होने दिया, और कहा के तुम बड़े बदक़माश हो और जो तुम बयान करते हो अल्लाह उस को ख़ूब जानता है। वो कहने लगे के ऐ अज़ीज़! इसके एक बहुत बूढ़े बाप हैं, तो आप इसकी जगह हम में से किसी को रख लीजिये, हम आपको बड़े एहसान करने वाले देखते हैं। यूसुफ़ ने कहा ऐसी बात से अल्लाह अपनी पनाह में रखे के जिस शख़्स के पास हमने अपनी चीज़ पाई है, उसके सिवा किसी और को पकड़ लें ऐसा करें तो हम बड़े ज़ालिम हैं। (12:68-79)

فَلَمَّا اسۡتَيۡـَٔسُوۡا مِنۡهُ خَلَصُوۡا نَجِيًّا‌ ؕ قَالَ
كَبِيۡرُهُمۡ اَلَمۡ تَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اَبَاكُمۡ قَدۡ اَخَذَ
عَلَيۡكُمۡ مَّوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنۡ قَبۡلُ مَا
فَرَّطْتُّمۡ فِىۡ يُوۡسُفَ‌ ۚ فَلَنۡ اَبۡرَحَ الۡاَرۡضَ
حَتّٰى يَاۡذَنَ لِىۡۤ اَبِىۡۤ اَوۡ يَحۡكُمَ اللّٰهُ لِىۡ‌ ۚ وَ
هُوَ خَيۡرُ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿٨٠﴾ اِرۡجِعُوۡۤا اِلٰٓى اَبِيۡكُمۡ
فَقُوۡلُوۡا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابۡنَكَ سَرَقَ‌ ۚ وَمَا
شَهِدۡنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمۡنَا وَمَا كُنَّا لِلۡغَيۡبِ
حٰفِظِيۡنَ ﴿٨١﴾ وَسۡـَٔلِ الۡقَرۡيَةَ الَّتِىۡ كُنَّا فِيۡهَا
وَالۡعِيۡرَ الَّتِىۡۤ اَقۡبَلۡنَا فِيۡهَا‌ ؕ وَاِنَّا
لَصٰدِقُوۡنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلۡ سَوَّلَتۡ لَكُمۡ
اَنۡفُسُكُمۡ اَمۡرًا‌ ؕ فَصَبۡرٌ جَمِيۡلٌ‌ ؕ عَسَى اللّٰهُ
اَنۡ يَّاۡتِيَنِىۡ بِهِمۡ جَمِيۡعًا‌ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ

और जब वो यूसुफ़ से मायूस हो गए, तो अलेहदा होकर मशवरा करने लगे, सबसे बड़े ने कहा क्या तुम नहीं जानते के तुम्हारे बाप ने अल्लाह की क़सम देकर अहद लिया था, और इससे पहले तुमने यूसुफ़ के बारे मु किस क़द्र क़ुसूर किया था, तो जब तक वालिद साहब हुक्म ना दें मैं तो इस जगह से हिलता नहीं या अल्लाह इस मुश्किल को हल करी दे, और वो ही सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है। तुम वापस अपने वालिद साहब के पास जाओ, और कहा अब्बा! आप के साहबज़ादे ने चोरी की, और हम वही बयान करते हैं जो हमको मालूम हुआ है, और हम ग़ैब की बातों के तो हाफ़िज़ नहीं थे। और जिस बस्ती में हम ठहरे थे वहां से और जिस क़ाफ़ले में शामिल होकर आये हैं उनसे दरयाफ़्त कर लीजिये, और हम (इसमें) बिल्कुल सच्चे हैं। (और जब उन्होंने ये बात याक़ूब से आकर कही) तो उन्होंने कहा (हक़ीक़त यूं नहीं है) बल्के तुम ने ये बात अपने दिल से घड़ी है तो सब्र ही करूंगा जिसमें शिकायत का नाम तक ना होगा,

الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ يٰۤاَسَفٰى
عَلٰى يُوْسُفَ وَ ابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ
فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ
يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ
الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْۤ
اِلَى اللّٰهِ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾
يٰبَنِیَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَ
اَخِيْهِ وَ لَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا
يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا
الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَ اَهْلَنَا الضُّرُّ وَ جِئْنَا
بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَ
تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِی
الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا
فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَ اَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ
جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾ قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ
قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَ هٰذَاۤ اَخِیْ ؗ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا
يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

अल्लाह से उम्मीद है के उन सबको मेरे पास ले आयेगा, बेशक वो तो जानने वाला और बड़ी हिकमतों वाला है। और याक़ूब ने उनसे दूसरी तरफ़ रूख किया, और कहने लगे अफ़सोस! यूसुफ! और उनकी आंखें रंजो ग़म से सफ़ेद हो गईं और दिल में घुटा करते थे। बेटे कहने लगे, अल्लाह की क़सम अगर आप यूसुफ़ को इसी तरह याद करते रहेंगे तो या तो आप बीमार हो जायेंगे या बिलकुल ही मर जायेंगे। याक़ूब ने कहा के मैं तो अपने रंजो ग़म का इज़्हार अपने अल्लाह से कर रहा हूँ और अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। याक़ूब ने कहा, ऐ मेरे बेटो! जाओ, यूसुफ़ और उसके भाई को तलाश करो, और अल्लाह की रहमत से मायूस ना होना, बेशक अल्लाह की रहमत से वही लोग मायूस होते हैं तो काफ़िर हैं। पस जब यूसुफ़ के पास गए तो कहने लगे, ऐ अज़ीज़! हमें और हमारे अहलो अयाल को बड़ी तकलीफ़ पहुंच रही है, और हम थोड़ा सा निकम्मा सरमाया लाये हैं तो आप हमें (इसके बदले) पूरा ग़ल्ला दे दीजिये, और हमको .ख़ैरात दीजिये, और अल्लाह .ख़ैरात करने वाले को जज़ा देता है। यूसुफ़ ने कहा तुम्हें कुछ मालूम है के तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था, जब तुम को कुछ समझ ना थीं। वो बोले, क्या तुम ही यूसुफ़ हो? तो कहा (के हां) मैं ही यूसुफ़ हूं, और ये मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान किया है, वाक़ई जो अल्लाह से डरता है, और सब्र करता है तो अल्लाह किसी नेक काम करने वाले का अज्र ज़ाय नहीं करता। (12:80-90)

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا
لَخٰطِئِيْنَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ
الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ؗ وَ هُوَ اَرْحَمُ

वो बोले अल्लाह की क़सम, अल्लाह ने तुम को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है, और बेशक हम क़ुसूरवार थे। यूसुफ़ ने कहा के आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, अल्लाह तुम को माफ़ करे और वो सब मेहरबानों से .ज्यादा

मेरबान है। अब तुम मेरा ये कुर्ता ले जाओ और इसको अब्बा जान के चेहरे पर डाल देना, वो बीना हो जायेंगे और अपने तमाम अहलो अयाल को मेरे पास ले आओ। और जब (मिस्र से) क़ाफ़ला रवाना हुआ, तो उसके बाप कहने लगे, और मुझ को ये ना कहो के बूढ़ा बहक गया है तो मुझे तो यूसुफ़ की बू आती है। वो बोले के वल्लाह आप तो उसी क़दीम ग़लती में मुब्तला हैं। पस जब ख़ुशख़बरी देने वाला आ पहुंचा, तो उसने वो कुर्ता याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, तो वो झट बीना हो गए और कहने लगे मैं तुम से ना कहता था! के मैं अल्लाह की तरफ़ से वो बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। बेटों ने कहा अब्बा जान! आप हमारे लिये हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत की दुआ कीजिये, बेशक हम कुसूरवार थे। याक़ूब (अ.स.) ने कहा, मैं अंक़रीब अपने रब से तुम्हारे लिये माफ़ी की दुआ करूंगा, बिला शुबह वो बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है। फ़िर जब वो यूसुफ़ के पास पहुंचे, तो जगह दी अपने मां बाप को अपने पास, और कहा दाख़िल हो जाओ मिस्र में, अल्लाह ने चाहा तो आप अमन के साथ रहेंगे। और अपने मां बाप को ऊँचे तख़्त पर बैठाया, और सबके सब यूसुफ़ के सामने सज्दा में गिरे, और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप! ये है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले ज़माना में देखा था जिसको मेरे रब ने सच्च कर दिखाया, और अल्लाह ने मेरे ऊपर एहसान किया जिस वक़्त के उसने मुझे क़ैद से निकाला है, और ये के तुम सब को बाहर से यहां लाया और उसके बाद के शैतान ने मेरे और भाईयों के दरमियान फ़साद डलवा दिया था, बेशक मेरा रब जो चाहता है उसके लिये लतीफ़ तदबीर कर देता है, बेशक वो बड़ा जानने वाला और बड़ी हिकमतों वाला है। ऐ मेरे रब! तूने मुझे सल्तनत का बड़ा हिस्सा अता फ़रमाया, और मुझे ख़्वाबों की ताबीर देना सिखाई, और आसमानों

الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ
عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَ اْتُوْنِيْ
بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَ لَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ
قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْ لَآ
اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ
ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ
اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ
اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ
اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى
اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَ قَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾ وَ رَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَ
خَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ
رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَ
قَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَ
جَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ
الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَ بَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ
لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَ
عَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَ
الْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ
بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ

نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَ مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

और ज़मीन का पैदा करने वाला तू ही मेरा कारसाज़ है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, तू मुझे अपनी फ़रमांबरदारी की हालत में मारना, और मुझे नेक बन्दों में शामिल फ़रमा। ये क़िस्सा ग़ैब की बातों में से है, हम तुम को वही के ज़रिये बता रहे हैं, और तुम उस ज़माने में मौजूद ना थे, जब उन लोगों ने अपने इरादों में पुख़्तगी कर ली, और वो तदबीरें कर रहे थे। (12:91-102)

हजरत याक़ूब ने जो कि हज़रत इस्हाक़ के बेटे और हज़रत इब्राहीम के पौते थे पूरा जीवन अल्लाह पर अटल ईमान का सुबूत दिया और विभिन्न प्रकार की गम्भीर स्थितियों में इस ईमान पर जमे रहे। अपने जीवन के आख़री दिनों में उन्होंने अपने दादा हज़रत इब्राहीम की तरह इस बात को सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि उनकी औलाद भी अल्लाह की बन्दगी की मान्यता और कर्म पर जमी रहे (2:132-133)। हज़रत इब्राहीम की औलाद के ईमान को क़ुरआन में एक परिवारिक ज़िम्मेदारी और प्रतिष्ठा के रूप में पेश किया गया है। यह एक ज़िम्मेदारी थी जो एक बहुमूल्य रूहानी विरासत के रूप में दी गयी और जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी मज़बूती के साथ थामे रखना था और परवान चढ़ाते रहना था, "हम आप के मअबूद और आपके दादा इब्राहीम और इस्माईल व इस्हाक़ के मअबूद की इबादत करेंगे जो अकेला मअबूद है औ हम उसी के आज्ञाकारी हैं" (2:133)। इसके साथ साथ क़ुरआन बार बार व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पर भी ज़ोर देता है , और इस तरह कोई व्यक्ति अपनी पैतृक सम्बंध की वजह से अपने कर्मों की जवाबदेही से बचने का अवसर नहीं पा सकता:"यह जमाअत आगे जा चुकी उनको उनके कर्मों (का बदला) मिलेगा और तुम्हें तुम्हारे कर्मों (का) और जो कर्म वो करते थे उनकी पूछगछ तुम से नहीं होगी" (2:134)।

हजरत याक़ूब को जब उनके बेटे हज़रत यूसुफ के मामले में परखा गया तो वह इस परीक्षा में खरे उतरे और अल्लाह पर अपने पक्के ईमान का सुबूत उन्होंने दियाँ हज़रत यूसुफ़ उन्हें बहुत प्रिय थे और यह हक़ीक़त उनके लिए बड़ी दुखदायी थी कि ख़ुद हजरत याक़ूब के बेटों ने, जो यूसुफ के सौतेले भाई थे, गुम कर दिया था। लेकिन इस लम्बी परीक्षा में उनका ईमान नहीं लड़खड़ाया, इस हालत में भी कि यूसुफ के छोटे भाई भी उनसे छिन गए थे, हालांकि यह एक अस्थाई जुदाई थी; "बल्कि तुम अपने दिल से (जो) बात बना लाए हो उस पर (मुझे) अच्छा सब्र (करने दो कि यही) अच्छी बात है और जो तुम बयान करते हो उसके बारे में अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ" (12:18; और देखें 12:83)। इस तरह हज़रत याक़ूब ने अपने दुख पर नियंत्रण पाने के लिए अल्लाह से दुआ मांगी और उसी से यह उम्मीद रखी कि "मैं

तो अपने दुख का इजहार अल्लाह ही से करता हूँ और अल्लाह की तरफ से वो बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते" (12:86), "और अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद न हो कि अल्लाह की रहमत से बे ईमान लोग ना उम्मीद हुआ करते हुए हैं" (12:87)।

अपने चहीते बेटे यूसुफ के ख़िलाफ़ अपने ही दूसरे बेटों का छल-कपट हज़रत याक़ूब के लिए बहुत कष्टदायक था लेकिन इसके बावजूद अपने बेटों के प्रति उनकी पैतृक भावनाएं बनी रहीं। उन्होंने बेटों को सलाह दी कि शहर में अलग अलग दरवाजों से प्रवेश करना ताकि परदेसी होने की वजह से उन्हें एक साथ देख कर कोई शक या आशंका किसी को न हो और बेटे सुरक्षित रूप से वापस आ जाएं (12:67-68)। इसी के साथ उन्होंने अपने बेटों को यह भी समझाया कि इस सावधानी के बावजूद कि "मैं अल्लाह के लिखे भाग्य को तो तुम से नहीं रोक सकता, हुक्म उसी का चलता है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा रखना चाहिए ... बेशक वह ज्ञान रखने वाले थे क्योंकि हम ने उनको ज्ञान दिया था" (12:67-68)।

हजरत याक़ूब के ज़माने में जो कि इस्राईल के नाम से भी मशहूर हैं, अल्लाह के एक होने पर ईमान और नैतिक मर्यादायों व आख़िरत की जवाबदेही का पैगाम लोगों को दिया गया, लेकिन ऐसा लगता है कि हलाल व हराम को स्पष्ट नहीं किया गया था:"बनी इस्राईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने से) पहले खाने की सब चीज़ें हलाल थीं सिवाय उन (चीज़ों) के जो याक़ूब (अलैहिस्सलाम) ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं" (3:93)। बाद में उसका विवरण तौरात में दिया गया, जिन में कुछ वह प्रतिबंध भी थे जो सही रास्ते से हटने की सज़ा में बनी इस्लाईल पर लगाए गए थे:"यहूदियों के ज़ुल्मों (गुनाहों) के कारण (बहुत सी) पाकीज़ा चीजें जो उनको हलाल थीं उन पर हमने हराम कर दीं और इस वजह से भी कि वो अक्सर अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते थे" (4:160), "और यहूदियों पर हम ने सब नाख़ुन वाले जानवर हराम कर दिए थे और गायों व बकरियों से उनकी चरबी हराम कर दी थी सिवाय उसके जो उनकी पीठ पर लगी हो या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो। यह सज़ा हमने उनको उनकी शरारत के चलते दी थी" (6:146; और देखें स्मअपजपबने टप्प्य 2) । दूसरी तरफ़ हजरत मसीह की शिक्षा का एक उद्देश्य यह था कि "कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम थीं उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूं" (3:50)। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शरीअत में जो मुसलमानों के अक़ीदे के अनुसार आख़री शरीअत है, हराम व हलाल का निर्धारण तथ्यात्मक ढंग से किया गया है कि वह एक स्थायी नियम है, समय की ज़रूरत और अवसर के हिसाब से नहीं किया गया है:"पाक चीज़ें उन पर हलाल करते हैं और नापाक चीजों को उन पर हराम करते हैं और उन पर से वो बोझ और बंधन जो उन (के सर) पर (और गले में) थे उतारते हैं" (7:157)। अतःआसमानी हिदायत को विभिन्न सामाजिक, मानसिक और धार्मिक हालात

के लिहाज़ से क्रमवार समझा जा सकता है और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

हज़रत यूसुफ की कहानी कई लिहाज़ से बहुत जानकारी भरी और सीख देने वाली है, ऐतिहासिक, सामाजिक, मानसिक और साहित्यिक रूप से इस कहानी से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। यह कहानी हज़रत यूसुफ के सपने से शुरू होती है जो उन्होंने अपने बचपन में देखा था (12:4), यह सपना पूरा का पूरा क़ुरआन में बयान हुआ है। कहानी बयान करने की यह ऐसी शैली है जो अरबी साहित्य में इससे पहले स्तेमाल नहीं होती थी, और इसी लिए इसे अरबी साहित्य में कहानी लेखन के विकास की वजह बनना चाहिए था, लेकिन वास्तव में अगली कई शताब्दियों तक ऐसा नहीं हुआ। एक के बाद एक लगातार घटनाएं और उनका ड्रामाई ढंग से अन्त तक पहुंचना, हज़रत याक़ूब का अपने दो जवान बेटों से वंचित हो जाना, और फिर कहानी का आनन्दायक अन्त, परिवार वालों का फिर से आपस में मिल जाना, मेल मिलाप और मिस्र में शान्तिपूर्वक जीवन शुरू हो जाना, ये सब एक बढ़िया कहानी के दिलचस्प और आनन्दित करने वाले उतार चढ़ाव हैं। इसके अतिरिक्त यह कि इस कहानी में धार्मिक और नैतिक रूप से प्रेरणा और सीख का सामान है जो किसी रूखे फीके ढंग से और सीधे रूप से दिए जाने वाले उपदेश के बगैर स्वभाविक और हलके फुलके ढंग में बहुत सहज रूप से दिल व दिमाग को प्रभावित करते चले जाते हैं।

कहानी के शुरू में हमें आपसी जलन के मामलों और घटनाओं से भी रूबरू होना होता है जो किसी बड़े परिवार के बहुत से सदस्यों के बीच एक साधारण सी बात है और यहाँ तो सौतेले भाई का ही मामला था:"निश्चित रूप से यूसुफ और उसका भाई पिता जी को हम से.ज्यादा प्रिय हैं हालांकि हम तो पूरा एक जत्था हैं ..." (12:8)। यह भावना एक बुरे इरादे में बदल गयी जिसके लिए बहुत से झूठ घड़ना उनके लिए ज़रूरी हो गया था (12:9-18) और जो उन्हें एक अपराधिक साज़िश तक ले गयी कि भाइयों ने युसूफ से पीछा छुड़ाने की ठान ली। लेकिन उनके इस काम का प्रभाव पिता के दिल पर इतना ज़्यादा हुआ कि यूसुफ के भाइयों का यह मक़सद ही पूरा नहीं हुआ कि पिता जी यूसुफ़ को भूल जाएं और उसकी जगह इन बेटों पर ध्यान देने लगें, क्योंकि यूसुफ़ अपने पिता के दिल में बसते थे और उनकी याद उनके दिमाग़ को उनकी ही तरफ़ लगाए रखती थी।

हज़रत यूसुफ को रस्ते से गुज़रने वाले एक दल ने कुंवे से निकाल लिया और फिर वह मिस्र के बाज़ार में बिक कर मिस्र के एक सरकारी उच्च अधिकारी के घर पहुंच गए जहाँ उन्हें मान सम्मान का जीवन मिला, हालांकि उस आदमी ने उन्हें बहुत कम मूल्य पर ख़रीदा था (12:20-21)। लेकिन फिर यह हुआ कि उसी घर में यूसुफ एक नई चुनौती से घिर गए। वह जवान होते होते बहुत ही सुन्दर और वैभव शाली व्यक्तित्व वाले पुरूष बन गए और साथ ही

साथ उन्हें ज्ञान व सूझबूझ भी बहुत मिली (12:22)। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर उस घर की माल्किन उन पर लट्टू हो गयी और उन्हें अपनी तरफ़ आकर्षित करने के लिए उसने हर सम्भव प्रयास कर डाले। लेकिन उन्हें फुसलाने का हर प्रयास जब विफल हो गया तो उसने यूसुफ़ पर झूटा आरोप लगाकर उन पर दबाव बनाने की कोशिश की। यूसुफ़ के निर्दोष और मासूम होने के सुबूत का बयान इस कहानी की घटनाओं में बड़ी सुन्दरता से पिरोया गया है (12:25-29), एक निर्दोष पर झूटे आरोप से पाठकों के मन पर पड़ने वाले तनाव को हलका करते हुए और अल्लाह की मदद का भरोसा दिलाते हुए। मिस्र के राजमहल के जीवन का एक दूसरा नज़ारा यह सामने लाया गया कि महिलाओं के लिए पार्टी का आयोजन हुआ और यूसुफ़ को देखते ही उन सब के होश ऐसे उड़े कि उन्होंने बे-ख़बरी में अपनी उंगलियाँ ही काट लीं, इस तरह जवान यूसुफ़ की सुन्दरता और दिलकशी का अंदाजा पाठकों को कराया गया है (12:30-34)।

यूसुफ़ को फुसलाने की सारी चालें जब विफल हो गयीं तो उनका उत्पीड़न शुरू कर दिया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया (12:35)। जेल में भी यूसुफ़ ने अपने ईमान को बचाए रखा और अल्लाह के आज्ञापालन पर डटे रहे, और यही नहीं बल्कि अपने साथ दूसरे क़ैदियों को उन्होंने अल्लाह की बन्दगी में आने की दावत भी दी (12:36-42) और उनके सपनों का मतलब भी उनको बतायाँ अल्लाह की वह योजना जो यूसुफ़ को कुंवें से निकाल कर, जिसमें उनके भाइयों ने उन्हें डाला था, मिस्र के एक महल के वैभवशाली जीवन में ले आई थी और उन्हें एक उच्च अधिकारी बना दिया था वही योजना फिर सामने आई। महाराजा ने एक सपना देखा और उसका अर्थ समझने वाला उसके दरबार में कोई न निकला, तो हज़रत यूसुफ़ के साथ जेल में समय बिता चुके एक व्यक्ति ने महाराजा को यूसुफ के ज्ञान और बुद्धिमानी के बारे में बताया कि यूसुफ को सपनों का अर्थ बताना आता है, और फिर यूसुफ़ ने वास्तव में महाराजा के सपने का अर्थ उसे बता दियाँ उन्होंने महाराजा को बताया कि सात साल तक चलने वाले सूखे का ज़माना आएगा, फिर उसके बाद सात वर्ष तक बहार और फलदार पेड़ों व फसलों के लहलहाने का दौर रहेगा। इस अर्थ के साथ उन्होंने महाराजा को यह सलाह भी दी कि सूखे की स्थिति से निपटने के लिए क्या उपाय किया जाए (12:43-49)। बादशाह को उसके सपने का मतलब बताने से पहले और उसकी बेचैनी दूर करने से पहले हज़रत यूसुफ़ ने अपने निर्दोष होने को स्वीकार कराने का काम किया और यह याद दिहानी कराई कि उन्हें झूटे आरोप में जेल में डाला हुआ है। चुनाँचि उन औरतों ने जो महारानी की दावत पर यूसुफ को देखने आई थीं और उस महारानी ने भी मामले की सच्चाई को स्वीकार कर लिया और इस तरह यूसुफ़ निर्दोष साबित हुए (12:50-52)।

बादशाह का विश्वास प्राप्त करने के बाद यूसुफ ने अपनी तरफ़ से यह प्रस्ताव रखा कि

उन्हें अनाज के भण्डारों की जिम्मेदारी दे दी जाए ताकि वह उसका संतुलित रूप से प्रबंध करें, और इसके लिए उन्होंने अपनी योग्यता और क्षमता का हवाला दिया (22:55)। यह इस बात के लिए एक नज़ीर है कि कोई योग्यता व क्षमता रखने वाला व्यक्ति किसी पद के लिए खुद को पेश कर सकता है, और किसी पद के लिए कोई उम्मीदवार अपनी योग्यता व क्षमता को जता सकता है। यह इस बात की भी एक मिसाल है कि वक़्त के एक पैग़म्बर ने सार्वजनिक हित में मिस्र के फ़िरऔन के यहाँ एक पद स्वीकार किया, इसके बावजूद कि मिस्र के बादशाह और वक़्त के पैग़म्बर के बीच गम्भीर धार्मिक मतभेद था। यह पूरी स्थिति इस बात को उजागर करती है कि एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले किसी व्यक्ति को प्राकृतिक रूप से कुछ दिक़्क़तों का सामना हो सकता है और जनता की बहतरी के लिए उसकी उमंगों के संदर्भ में उसकी नैतिकता की परीक्षा हो सकती है, लेकिन इंसानी ज़हन को इन चुनौतियों के स्तर तक ख़ुद को उठाने और किसी समस्या के हल या किसी सम्भव सुधार को व्यवहार में लाने के लिए विभिन्न तरीक़ों को अपनाने की ज़रूरत है।

हज़रत यूसुफ का अपने सभी भाइयों को मिस्र बुला लेना इस कहानी का एक नाटकीय अन्त है। यूसुफ़ के भाई अनाज लेने के लिए मिस्र आए थे, और हज़रत यूसुफ ने उन्हें देखा और पहचाना जबकि वह ख़ुद उस अनाज भण्डार के प्रभारी थे और अपनी योजना के अनुसार अनाज वितरित कर रहे थे। उन्होंने अपने भाइयों से कहा कि अगली बार अपने सौतेले भाई को भी साथ लेकर आएं और ख़बरदार किया कि अगर वह ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें अनाज नहीं मिलेगा। इसलिए उन भाइयों ने अगली बार पिता को समझा बुझाकर इस बात के लिए राज़ी किया कि छोटे भाई को साथ में भेज दें और उनसे यह वायदा किया कि उसकी पूरी हिफाज़त करेंगे (12‘58-66)। इसी छोटे भाई के ऊंट पर लदे सामान में से वह प्याला निकाल आया जो वहाँ खो गया था और उसकी ढूंढ पड़ रही थी, इस आधार पर यूसुफ ने उस भाई को अपने पास रोक लिया (12:70-76)।

क्या यह प्याला हज़रत यूसुफ ने अपने भाई को भेण्ट किया था जिसकी जानकारी निगरानी करने वाले व्यक्तियों कां नहीं थीं, और हज़रत यूसुफ को अपने भाई को अपने पास रोक लेने का एक बहाना मिल गया था? या कि यह ख़ुद उनकी स्कीम थी कि प्याला यूसुफ़ के सामान में रख दिया और इस बहाने से भाई को रोक लिया? क्या यूसुफ़ को चोर होने के आधार पर अपने पास रोक लेने का फैसला मिस्री क़ानून के अनुसार चोरों के साथ किया जाने वाला मामला था, या प्राचीन इब्रानी शरीअत (नियमावली) के अनुसार (Exodus XXII:3) यह चोरों को दी जाने वाली सज़ा थी ? आयत के ये शब्द कि ‘‘हम ज़ालिमों को यही सजा दिया करते हैं’’ (12:75) में ‘हम’ का इशारा किसी की तरफ है? क्या ‘हम’ से अभिप्राय मिस्र के वो लोग हैं जो खोया हुआ प्याला खोज रहे थे? या यूसुफ के भाई हैं जिन्होंने चोरों के बारे में अपना नियम

वहाँ के लोगों को बताया? ये ऐसे दिलचस्प सवाल हैं जो अपराधों की जांच और विभिन्न क़ानूनों के आपसी टकराव के संदर्भ में इस कहानी से सामने आते हैं।

क़ुरआन का बयान यह है कि "इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए योजना बनाई (वरना) वह बादशाह के क़ानून के अनुसार अपने भाई को नहीं सकते थे" (12:76)। क्या इसका मतलब यह है कि यह सब कुछ अल्लाह की योजना का नतीजा था कि महल के सुरक्षा दस्ते ने संयोग से जांच शुरू कर दी और यह यूसुफ़ का अपना मंसूबा नहीं था या उन्होंनें ऐसा कुछ सोचा भी नहीं था और उन्होंने भाई होने की भावना से भाई के सामान में उपहार के तौर पर वह प्याला सुरक्षा दल को बताए बिना रख दिया था? या अल्लाह की स्कीम थी कि युसूफ़ ने सोच समझकर एक उपाय किया ? अलराज़ी ने आयत 12:70 की तफ़सीर में लिखा है:"क़ुरआन में यह कहीं नहीं लिखा है कि सुरक्षा कर्मियों ने यूसुफ के आदेश पर उनके भाइयों पर चोरी का आरोप लगाया, यह क़ुरआन का बहुत ही खुला हुआ सुबूत है कि ऐसा ख़ुद उन्होंने अपने तौर पर किया, और उनके अपने शक के आधार पर किया, बाइबिल के बयान के विपरीत"। इस तफ़सीर के अनुसार और आयत 12:76 "इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की ..." के मुताबिक़ मुहम्मद असद ने निम्नलिखित नज़रिया ज़ाहिर किया है:"यूसुफ अपने भाई को अपने साथ रखना चाहते थे लेकिन मिस्र के क़ानून के मुताबिक़ अपने सौतेले भाइयों की रज़ामन्दी के बग़ैर वह ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि वो भाई ही वहाँ पर इस छोटे भाई के क़ानूनी संरक्षक थे, और अपने पिता से किए हुए वायदे के पाबन्द थे, और इसलिए वह हरगिज़ इस बात पर राज़ी नहीं हो सकते थे कि युसूफ़ के भाई को वहाँ पर छोड़ कर चल दें"। असद आगे लिखते हैं कि:"एक ही विकल्प यूसुफ़ के पास था कि उन पर अपनी पहचान ज़ाहिर कर दें लेकिन वह उस समय ऐसा करने के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए वह अपने भाई को विदा करने पर मजबूर थे। लेकिन संयोग से उनका उपहार बरामद हो जाने से, जिसकी उम्मीद यूसुफ को बिल्कुल नहीं थी, सारा मामला बदल गया:अब यूसुफ का भाई चोरी का आरोपी बन गया, और देश के क़ानून के मुताबिक़ यूसुफ को अपने भाई को रोकने का आधार मिल गयाँ यह शब्द कि इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की.... इस घटना की तरफ इशारा करते हैं कि इस अंजाम की न तो योजना बनाई गयी थी और न यूसुफ़ को यह अंजाम पता था" (मैसेज आफ क़ुरआन, आयत 12:72 की व्याख्या में नोट नम्बर 77; और देखें:नोट 72, आयत 12:70)।

घटनाओं के नाटकीय क्रम का एक मोड़ यह आया कि हज़रत याक़ूब को अब अपने तीन बेटों से जुदाई झेलनी पड़ी, सबसे पहले दो सगे भाई जो अब मिस्र में ही थे और फिर सबसे बड़ा बेटा जिसने यह कह कर वहीं रुक जाने का फ़ैसला किया कि "जब तक पिता जी मुझे हुक्म नहीं देंगे मैं इस जगह से टलने वाला नहीं या अल्लाह मेरे लिए कोई और तदबीर करे" (12:80)। हज़रत याक़ूब की आँखों की रोशनी जाती रही थी और उनका दिल टुकड़े टुकड़े हो

चुका था, और उनके बेटों ने जो कि उस समय तक यूसुफ़ की वास्तविकता से अवगत नहीं हुए थे यूसुफ़ से कहा कि "हम और हमारे घर वाले बहुत तकलीफ़ में हैं" (12:88)। लेकिन कहानी जब अपने नाटकीय अंत तक पहुंचती है तो सारी पीड़ा और कष्ट सुख और आनन्द में बदल जाता है। यूसुफ़ अपनी पहचान ज़ाहिर कर देते हैं और फिर भाई उनसे मआफी मांगते हैं जिसे हज़रत यूसुफ़ स्वीकार कर लेते हैं, "आज के दिन (से) तुम पर कुछ लानत (मलामत) नहीं है अल्लाह तुम्हें मआफ करे और वह बहुत रहम करने वाला है" (12:92)। यह ख़ुशख़बरी पिता तक पहुंची जिनका दिल तो ग़म से भरा हुआ था लेकिन जिन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी थी। जब यूसुफ का कुरता उनके ऊपर डाला गया तो उनकी आंख़ों की रोशनी लोट आई और सारे परिवार को मिस्र बुलाया गया जहाँ वो सुख समृ़ि के साथ रहने लगे (12:93-96)।

कहानी का अन्तिम घटनाक्रम यह है कि हज़रत यूसुफ ने अपने बचपन में जो सपना देखा था आज उसका अर्थ साकार हो रहा था (12:100)। इस सुखद अंजाम पर यूसुफ ने अल्लाह की वन्दना की और शुक्र अदा किया:"और उस (अल्लाह) ने मुझ पर (बहुत से) उपकार किए हैं कि मुझे जेल ख़ाने से निकाला और इसके बाद कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में झगड़ा डाल दिया था, आप (सब) को गांव से यहाँ (मेरे पास) लायाँ बेशक मेरा रब जो चाहता है तदबीर से करता है। वह दानाई और हिकमत वाला है, ऐ मेरे रब तूने मुझे हुकूमत दी और सपनों को समझने की बूझ दी, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले तू ही दुनिया में और आख़िरत में मेरा काम बनाने बनाने वाला है तू मुझे (दुनिया से) अपने अनुपालन (की स्थिति) में उठाना और (आख़िरत में) अपने नेक बन्दों में दाख़िल करना" (12:100-101)।

हज़रत यूसुफ़ की पूरी कहानी में अपने पिता की तरह हज़रत यूसुफ का नैतिक आदर्श भी बहुत बुलन्द है। उन्होंने महल की माल्किन के बहकावे और फुसलावे का जम कर मुक़ाबला किया जबकि उनकी हैसियत वहाँ दास की थी अगरचे उनके साथ उसका बर्ताव आदर वाला था। जमख़शरी ने बिल्कुल सही लिखा है कि "नैतिक प्रतिष्ठा का मतलब बुरी इच्छाओं पर काबू रखना है, ना कि इन इच्छाओं का न होना" (आयत 12:34 की व्याख्या)। बुख़ारी और मुस्लिम ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस नक़ल की है कि 'मोमिन के दिल में अगर किसी बुराई का विचार आता है लेकिन वह अल्लाह के डर से उस बुराई को अंजाम नहीं देता है तो उसके लिए इसके बदले में नेकी लिखी जाती है क्योंकि उसने ख़ुद को अल्लाह की ख़ातिर बुराई से दूर रखा'।

यूसुफ़ ने हमैशा इस बात का प्रयास किया कि वह अपने मालिक की नज़र में बे-भरोसा न बनें और उसके पीछे कोई उसके मान सम्मान की चोरी न करें। इस कहानी में यूसुफ़ का यह जुमला तो बहुत ही महत्वपूर्ण है कि:"मैं अपने आप को पाक साफ नहीं कहता क्योंकि ऩस अम्मारा (इंसान) को बुराई ही सिखाता रहता है मगर यह कि मेरा रब रहम करे, बेशक मेरा

रब बख़्शने वाला महरबान है" (12:53)। कुछ मुफस्सिरों ने यह समझा है कि यह जुमला यूसुफ़ के मालिक की पत्नि का है कि उसने यूसुफ़ के निर्दोष होने को स्वीकार करते हुए अपने नस की कमज़ोरी को व्यक्त किया, जबकि दूसरे मुफ़स्सिरों ने इसे ख़ुद यूसुफ़ का ही जुमला माना है। इस जुमले से पहले यह जुमला भी है कि अज़ीज़ को विश्वास हो जाए कि मैं ने उसकी पीठ पीछे उसकी (अमानत में) ख़यानत (चोरी) नहीं की। पहली व्याख्या के अनुसार महाराजा की पत्नि यहाँ यह कह रही है कि उसने यूसुफ़ को नहीं बहकायाँ जबकि ऐसा अर्थ निकालना सही नहीं है क्योंकि उसी ने उन पर झूटा आरोप लगाया और आरोप लगा कर उन्हें जेल भिजवाया, जहाँ से वह अल्लाह की मदद के बग़ैर निकल ही नहीं सकते थे। इसलिए समझ में आने वाली बाती यही है कि यह जुमला हज़रत यूसुफ़ का है इस बात को जताने के लिए उन्होंने अपने मालिक के साथ कभी धोखा नहीं कियाँ बाद का यह जुमला कि यूसुफ अपने आप को पाक साफ नहीं कहता क्योंकि नस अम्मारा (इंसान को) बुराई ही सिखाता रहता है एक नबी के रूप में हज़रत यूसुफ़ की प्रतिष्ठा को किसी भी तरह कम नहीं करता, जिस तरह कि आयत 12:24 से उनके व्यक्तित्व को कोई नुक़सान नहीं पहुंचता। हर नस, पैग़म्बर सहित जो कि एक इंसान ही होते हैं जिन पर वही उतरती है (18:110), किसी बुराई की तरफ़ आकर्षित हो सकता है, लेकिन पैग़म्बर की प्रतिष्ठा यह होती है कि वह हमैशा ऐसी किसी भी उक्साहट पर क़ाबू पा लेते हैं (22:52)। जबकि आयत 12:53 यह बताती है कि "नस अम्मारा" इंसान को बुराई की तरफ उकसाता है और एक दूसरी क़ुरआनी आयत "नस लव्वामा" का पता देती है जो इंसान को सावधान करता है (75:2) और इंसानी नस के ये दो विपरीत बल इंसान के अंदर संतुलन बनाते हैं और इंसान को "नफ़्स मुतमइन्ना" (आत्म संतोष) (89:27) की तरफ़ ले जाते हैं।

यूसुफ़ की नैतिक प्रतिष्ठा और ज्ञान व युक्ति (12:22) के अलावा इस क़ुरआनी क़िस्से में सपनो को समझने की उनकी प्रतिभा का ज़िक्र भी कई बार हुआ है (12:6,21,101)। हज़रत यूसुफ ने जेल में अपने साथी क़ैदियों को उनके अजीब व ग़रीब सपनों का अर्थ बताया, बादशाह के सपने का अर्थ बताया, और ख़ुद उनका अपना सपना जो उन्होंने बचपन में देखा था पूरा हुआ (12:36-49,100)। सपनों को समझने की यह प्रतिभा क्या केवल सपनों के ही मामलों में थी या घटनाओं के नतीजों को समझने या यह कि आगे क्या होने वाला है इसका बोध भी यहाँ मुराद है ? क्योंकि यहाँ "तावीलिलअहादीस" शब्द स्तेमाल हुआ है और 'हदीस' का मूल 'हदस' है जिसका अर्थ होता है होना या हुआ, ज़ाहिर होना, सामने आना वग़ैरह। मैं राज़ी और असद की तरह इसका व्यापक अर्थ लेने के पक्ष में हूँ जिसके मुताबिक़ मैं यह समझता हूँ कि इसका सीमित अर्थ भी हो सकता है। हज़रत यूसुफ ने जिस तरीक़े से बादशाह के सपनों की व्याख्या करते हुए सम्भावित सूखे से निपटने के लिए योजनाब) उपाय किया उससे यह साबित होता है उनकी योग्या केवल सपनों के प्रतीकों को समझने तक की सीमित

नहीं थी बल्कि स्थितियों को संभालने के लिए प्रभावपूर्ण ढंग से योजना बनाने की क्षमता भी इसमें शामिल थी। उन्होंने बादशाह को सात साल बाद आने वाले और सात साल तक जारी रहने वाले संकट को देखते हुए अपने हाथ में कन्ट्रोल लेने के लिए अपनी नैतिक प्रतिष्ठा यानी ईमानदारी और प्रबंधन प्रतिभा का हवाला दियाँ इसके अलावा, उनके ज्ञान व युक्ति (12:22) से भी इस बात का समर्थन होता है कि यूसुफ़ की भविष्यवाणी की प्रतिभा का अर्थ व्यापक है।

शब्द तावीलिलहअहादीस को अगर उसके व्यापक अर्थ में लिया जाए तब भी सपने का अर्थ हज़रत यूसुफ़ ने जो भी बताया वह पूरी तरह सही निकला। हज़रत यूसुफ के क़ुरआनी क़िस्से से यह बात मालूम होती है कि किसी व्यक्ति की अध्यात्मिक शक्ति उसे इस स्थान तक पहुंचा सकती है कि वह आगे होने वाली घटनाओं के संकेतों को समझ सके। और मुहम्मद सल्ल० के सपनों के बारे में जो कुछ हदीस में बयान हुआ है जो पैग़म्बर बनने से पहले उन्होंने देखे और पूरे हुए उनसे भी यह बात साबित होती है। और राइड ने जो यह कहा है कि सपने इंसान के पूर्व के अनुभवों और घटनाओं के प्रतिबिम्ब होते हैं और किसी इंसान की दबी हुई इच्छाएं होती हैं जो उसके ''सब कान्शेयस'' (अवचेतन) में मौजूद होती हैं, तो इस फ़िलासफ़ी से भी इसका कोई टकराव नहीं है। इंसान के सपनों में ये दोनों तरह के कारक जमा हो सकते हैं। परम्परावादी आलिम भी 'वीज़न' (अरबी में 'रोया') और 'ड्रीम' (अरबी में 'हिल्म') में अन्तर करते हैं। सोते में दोनों तरह के सपने इंसान को दिखाई देते हैं पहला रोया या 'वीज़न' एक वास्तविक चीज़ है जो आगे होने वाली घटनाओं को दिखाती है, जबकि 'ड्रीम' या हिल्म एक दूसरी चीज़ है। हज़रत यूसुफ़ के क़ुरआनी क़िस्से में बादशाह ने अपने 'रोया' के बारे में ज़िक्र किया था (12:43), लेकिन दरबार में कुछ लोगों ने उनकी बातों को ''परेशा सा सपना'' समझा और उसका अर्थ बताने में अक्षम रहे (12:44)।

हज़रत यूसुफ़ के क़िस्से का सुखद अंजाम यह हुआ कि उनका पूरा परिवार मिस्र में आकर बस गया जहाँ उन्हें एक परदेसी के रूप में स्वीकार कर लिया गया और फिर बगैर किसी रोक टोक के वो वहाँ लम्बे समय तक रहे। समझा जाता है कि यह घटना 18 सदी ईसा पूर्व के ''हक्सोस'' परिवार के शासन (भीवे क्लदेंजल) में हुई थी, क्योंकि ''हक्सोस'' ऐशियाई सामी मूल के लोग थे जिन्होंने 1720 से 1710 ई.पू. के बीच मिस्र पर हमला किया था और उनका शासन काल 1550 ई.पू. तक जारी रहाँ बाद में स्थिति बदल गयी और इस्राइलियों ने बहुत उत्पीड़न का जीवन बिताया और सम्भवतःफ़िरऔन 'रामिस द्वतीय' (1279-1213 ई.पू.) के युग में यह उत्पीड़न अपने चरम पर पहुंच गया था और उन्हें मुक्ति दिलाने के लिए अल्लाह ने हज़रत मूसा को भेजा था।

हज़रत यूसुफ़ हज़रत याक़ूब के ऐसे अकेले पुत्र हैं जिनका जिक्र क़ुरआन में बहुत विस्तार से हुआ है, हालांकि उनके भाइयों के संक्षिप्त वर्णन भी क़ुरआन में आए हैं। लेकिन क़ुरआन में कुछ दूसरे स्थानों पर उन पैग़म्बरों के लिए "अलअस्बात" (संतान) का ज़िक्र है जिन पर मुसलमानों को ईमान रखना चाहिए (2:136,140; 3:84; 4:163)। क्या अलअसबात से अभिप्राय हज़रत याक़ूब की वास्तविक (पहली पीढ़ी की) संतान और उनसे निकले 12 क़बीले हैं?:"और हमने उनको (बनी इस्राईल को) अलग अलग करके बारह क़बीले (और) बड़े बड़े समूह बना दिया" (7:160)। क्या यूसुफ़ के उन भाइयों को जिन्होंने उनके ख़िलाफ़ साज़िश रची थी और उनमें से एक ने उन्हें मार डालने का मशौरा दिया था (12:9) पैग़म्बरों में गिना जा सकता है? याक़ूब की औलादों (अल-असबात) के माध्यम से पैग़म्बरी का सिलसिला अनिवार्य रूप से सभी भाइयों पर फैला हुआ नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम की औलादों में से "ज़ालिमों" को अपने वायदे से अलग रखा था:"और जब अल्लाह ने कुछ बातों में इब्राहीम की परीक्षा ली तो वह उनमें खरे उतरे तो अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम बनाउंगा। उन्होंने कहा कि (ऐ अल्लाह) मेरी औलाद में से भी (इमाम बनाना तो अल्लाह ने) फ़रमाया कि हमारा वचन ज़ालिमों के लिए नहीं होता" (2:124)। चुनांचि यह समझना ज़्यादा सही होगा कि शब्द अलअसबात का मतलब वो लोग हैं जो हज़रत याक़ूब की औलादों में किसी भी पीढ़ी में पैग़म्बरी के लिए चुने गए ना कि उनकी 12 संतानें। दूसरी तरफ़ यूसुफ़ के सौतेले भाइयों ने आख़िर में अपने दोष स्वीकार किए थे और अपने पिता से विनती की थी कि अल्लाह से उनके लिए बख़्शिश की दुआ करें, और यूसुफ ने ख़ुद भी उन्हें मआफ़ कर दिया था (12:91-92, 97-98)।

सूरत की शुरूआत इस बात से होती है कि हम तुम्हें इस क़ुरआन से एक "अहसनुल क़सस" (बेहतरीन क़िस्सा) सुनाते हैं, और सूरत का अन्त इस क़िस्से के पैग़ाम या सबक़ को याद दिलाते हुए होता है। इस क़िस्से के बयान का उद्देश्य किसी ऐतिहासिक घटना की जानकारी देना नहीं है, यह केवल एक कहानी कला का प्रदर्शन या केवल मनोरंजन भी नहीं है, बल्कि इस बात को उजागर करना है कि इंसानी नस्ल और इंसानी चरित्र के लिए मार्गदर्शन का बहुत महत्व है और यह हर जगह और समय के लिए है:"इन (बीते हुए लोगों) के क़िस्से में अक़ल रखने वालों के लिए सीख है। यह (क़ुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने दिल से) बना ली गयी हो बल्कि जो (ग्रन्थ) इससे पहले (उतरे) हैं उनका अनुमोदन (करने वाला) है और हर चीज़ का विवरण (देने वाला) और ईमान वालों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) और रहमत (कृपा व दया) है।" (12:111)।

हज़रत अय्यूब

पैग़म्बरों में उनके नाम का ज़िक्र देखने के लिए देखें आयतें 4:163; 6:84

وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَ
اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ
فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّ اٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ
مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى
لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

और अय्युब (अ.स.) को याद कीजिये जब उन्होंने अपने रब को पुकारा के मुझे तकलीफ़ पहुंच रही है, और तू सबसे.ज्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल करली, और वो तकलीफ़ दूर कर दी तो उनको लाहक़ थी, और उनको उनके बाल बच्चे अता किये, और उनके साथ उतने और दिये अपनी मेहरबानी के सबब, और आबदीन के लिये ये नसीहत है।

(21:83-84)

وَ اذْكُرْ عَبْدَنَاۤ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ
مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّ عَذَابٍ ﴿٤١﴾ اُرْكُضْ
بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّ شَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَ
وَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً
مِّنَّا وَ ذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَ خُذْ
بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا
وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

और आप हमारे बन्दे अय्यूब (अ.स.) को भी याद कीजिये, जब उन्होंने अपने रब को पुकारा के शैतान ने मुझे रंज और तकलीफ़ दी है। (अल्लाह ने उनसे फ़रमाया) तुम अपना पाऊँ मारो, ये नहाने का और पीने ठंडा पानी है। और हमने उनको कुन्बा अता किया, और उनके साथ उनके बराबर और भी अपनी रहमते.ख़ास से अता किये और अक़्ल वालों के लिये यादगार के तौर पर। और तुम अपने हाथ में एक झाड़ू लो और उससे मारो और क़सम ना तोड़ो, हमने बिला शुबह उनको साबिर पाया, वो अच्छे बन्दे थे के वो रूजू करने वाले थे।

(38:41-44)

हज़रत अय्यूब का ज़िक्र क़ुरआन में पैग़म्बरों के साथ आया है (4:163; 6:84), और आयत 6:84 से यह पता चलता है कि वह हज़रत इब्राहीम की संतान में थे। बाइबिल की एक किताब में भी उनका क़िस्सा बयान हुआ है। स्मिथ की बाइबिल डिक्शनरी में लिखा है कि 'जाब' (अय्यूब) का निवास 'उज़' की धरती पर है जिसका नाम 'आराम' के एक बेटे के नाम पर है (जेनेसिस ग्रू 23), या नहोर है (जेनेसिस ग्प्प्रू21) जिससे यह मालूम होता है कि आरमीनयाई नस्ल के किसी क़बीले से थे जो इराक़ के निचले क्षेत्र में (सम्भवत:फ़लस्तीन के दक्षिण या

दक्षिण पूर्व में) आकर आबाद हो गया था। बाइबिल की यह रिवायत हेब्रीव भाषा में सम्भवतःप्राचीन 'नबातियन' साहित्य के किसी अंश से नक़ल हुई है जो फिलिप हिट्टी के अनुसार सामी दुनिया के काव्य साहित्य का सर्वोत्तम उदाहरण है, और अय्यूब एक अरब थे जैसा कि उनके नाम की संरचना और उनकी किताब के परदृिश्य से इशारा मिलता है (हिस्ट्री अ०फ दि अरब्स, 1970, पेज 42-43)। स्मिथ की बाइबिल डिक्शनरी में 'अय्यूब के ग्रन्थ' को ''इब्राहीम के वंश के बाहर पैतृक धर्म पर चलने का एक दर्शन'' माना गया है। हालांकि क़ुरआन में हज़रत अय्यूब का ज़िक्र हज़रत याक़ूब की संतानों में किया गया है (6:84)।

हज़रत अय्यूब की कहानी में उनकी पीड़ा और कष्ट का बयान हुआ है जो उन्हें एक नेक इंसान के रूप में अल्लाह की तरफ़ से उनकी परख या परीक्षा के लिए उन्हें झेला पड़े, ना कि उनके किसी गुनाह के कारण उन्हें सज़ा के रूप में ये कष्ट हुए। उनके पास धन दौलत और संतान की बहुतात थी जो उनके पास से जाती रही, उस पर और दिक़्क़त यह हुई कि उनका स्वास्थ ख़राब हो गया और उन्हें रोग लग गयाँ इस लम्बी और कष्ट दायक परीक्षा के दौरान वह सब्र, संयम और अल्लाह पर ईमान की बदौलत सच्चाई पर क़ायम रहे और सीधे रास्ते से भटके नहीं। बल्कि उनकी पत्नि ने एक बार जब निराशा और जल्दबाज़ी से घबराकर यह कह दिया कि आप के जिस ईमान की वजह से आप को इतने कष्ट झेलने पड़ रहे हैं उस आस्था को छोड़ ही क्यों नहीं देते तो उन्होंने पत्नि को सौ कोड़े लगाने की क़सम खा ली। लेकिन हज़रत अय्यूब ने शैतान की तरफ़ से उन्हें पहुंचने वाली तकलीफ़ों की शिकायत अल्लाह से नहीं की और संयम के साथ अल्लाह से शान्ति और सुख की दुआ करते रहे तब अल्लाह की तरफ़ से उन्हें यह इशारा मिला कि अपना पांव धरती पर मारें। पांव धरती पर मारने से वहाँ पानी का एक स्रोत फूट निकला जिसके पानी से उन्होंने स्नान किया और उस पानी को पिया तो उसके द्वारा अल्लाह ने उन्हें रोग से मुक्ति दी और उनकी पीड़ा समाप्त हो गयी। जब हज़रत अय्यूब को रोग से मुक्ति मिली और उनका स्वास्थ अच्छा हो गया तो उन्हें याद आया कि उन्होंने अपनी पत्नि को सज़ा देने की क़सम खाने में जल्दी की। उनकी पत्नि ने तो कठिन हालत में व्याकुल हो कर एक बात कह दी थी, उनकी सोच या आस्था में कोई कमी नहीं थी। जब वह अपनी क़सम पर पछता रहे थे तो अल्लाह की तरफ़ से उन्हें यह संदेश मिला कि अपनी क़सम पूरी करने के लिए घास की सौ पत्तियों का गुच्छा बना कर उस गुच्छे को एक बार अपनी पत्नि को मारें तो उनकी क़सम पूरी हो जाएगी। फिर उन्हें अल्लाह ने दोबारा से धन और संतान की नेअमतें प्रदान कर दीं और उनके धीरज व संयम के बदले में उनकी ये नेअमतें पहले की अपेक्षा दो गुणी हो गयीं।

हज़रत मूसा और हज़रत हारून

मूसाःजन्म से लेकर पैग़म्बर बनने तक

तॉ सीन मी। ये रौशन किताब की आयात हैं। (ऐ नबी) हम आपको मूसा और फ़िरऔन के कुछ हालात मोमिन लोगों के वास्ते ठीक ठीक से सुनाते हैं। के फ़िरऔन ने मुल्क में सर उठा रखा था, और उसने वहां के बाशिंदों को मुख़्तलिफ़ गिरोह बना रखा था के उनमें से एक गिरोह (इस क़द्र) कमज़ोर कर दिया था (के) उनके बेटों को ज़िबह कर डालता था, और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने देता था, बिला शुबह बड़ा मुफ़्सिद था। और हम चाहते थे के उन लोगों पर एहसान करें, जिनको उसने कमज़ोर कर दिया था, उनको पेश्वा बनायें, और उनको मुल्क का वारिस बनायें। और मुल्क में उनको हुकूमत दें, और हम फ़िरऔन, हामान, और उनके लश्कर को वो चीज़ उनकी जानिब से दिखायें जिनसे वो डरते थे। और हम ने मूसा की मां को वही की के उनको दूध पिलाओ, फ़िर जब तुमको उसके बारे में कोई .ख़ौफ़ लाहक़ हो तो तुम उसको दरया में डाल देना, और तुम ना कोई .ख़ौफ़ करना और ना कोई रंज करना, हम उसको तुम्हारे पास वापस कर देंगे, और उसको रसूल बनायेंगे। तो फ़िरऔन के लोगों ने उसको उठा लिया, ताके वो उनका दुश्मन और मौजिबे रंज हो, बेशक फ़िरऔन और हामान और उनका लश्कर चूक गए। और फ़िरऔन की बीवी ने कहा के ये मेरी और तुम्हारी आंखों की ठंडक है, इसको क़त्ल ना करना, शायद ये हमें फ़ायदा पहुंचाये, या हम इसे बेटा बना लें, वो (अंजाम से) बेख़बर थे। और मूसा की मां का दिल बेचैन होने लगा, अगर हम उनके दिल को मज़बूत ना कर देते क़रीब था के वो उस क़िस्से को ज़ाहिर कर दें (ग़र्ज़ ये

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢
نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ
لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٣ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي
الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ
طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ يَسْتَحْيٖ
نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٤ وَ
نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي
الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝٥ وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَ
نُرِيَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ
مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ
فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَ لَا تَخَافِيْ وَ لَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا
رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧
فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ
حَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا
كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝٨ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ
قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَ لَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ
يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّ هُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝٩ وَ اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ
اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْ لَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى

قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠ وَ قَالَتْ
لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ
هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١ وَ حَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ
مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ
بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝١٢
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا
تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣ وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ
وَ اسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤ وَ دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى
حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ
يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَ هٰذَا مِنْ
عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى
الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى
عَلَيْهِ ۫ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ
عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٥ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ
ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝١٦ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ
عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ۝١٧
فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا
الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ
قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٨ فَلَمَّآ
اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ
قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ
نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ

थी) के मोमिनों में रहें। और उन्होंने मूसा की बहन से कहा, के इसके पीछे चली जा, तो वो उसको दूर से देखती रही, और उनको कोई .ख़बर ना थी। हमने पहले ही उस पर दाईयों (के दूध) को हराम कर दिया था, तो मूसा की बहन ने कहा के मैं तुमको ऐसे घर वालों को बता दूं के तुम्हारे लिये इस बच्चे को पालें, और वो इसकी .ख़ैर .ख़्वाही से परवरिश करें। तो हमने (इस तरह) मूसा को उनकी मां के पा पहुंचा दिया, ताके उनकी आंखें ठंडी रहें, और वो ग़म ना करें, और उसको ये मालूम हो जाए के अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा भरपूर जवानी को पहुंच गए और मुसतेहकम हो गए, तो हमने उनको हिकमत और इल्म अता किया, और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। और वो शहर में उस वक़्त दाख़िल हुए, जब शहर के बाशिंदे बेख़बर हो रहे थे, तो देखा के वहां दो शख़्स आपस में लड़ रहे थे, एक तो क़ौमे मूसा से था, दूसरा उनके दुश्मन की क़ौम से था, तो जो मूसा की क़ौम में से था, उस ने मदद मांगी मूसा से, उस शख़्स के मुक़ाबले में उनके मुखालफ़ीन मं से था, तो मूसा ने उसको मक्का रसीद किया तो उसका काम ही तमाम किया, मूसा ने कहा, ये काम तो शैतानी काम हुआ, बेशक वो इन्सान का खुला दुश्मन और बहकाने वाला है। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, तो तू मुझे बख़्श दे, अल्लाह ने उसको बख़्श दिया, बेशक अल्लाह तो बख़्शने वाला है, रहम वाला है। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब! तूने चूंके मुझ पर मेहरबानी की है तो मैं कभी मुजरिम की मदद नहीं करूंगा। फ़िर मूसा ने खौफ़ और दहशत की हालत में शहर में सुबह की, तो नागहां वही शख़्स जिसने गुज़िश्ता रोज़ उनसे मदद तलब की थी फ़िर उनको पुकार रहा है, मूसा ने उससे कहा के तू सरीह सरकश है। जब मूसा ने

جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ
الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾ وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا
الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ
يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ
مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا
يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ
عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٢٢﴾ وَ
لَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ
النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ
امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا
لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ وَأَبُونَا
شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى
الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ
خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي
عَلَى اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ
لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا فَلَمَّا جَاءَهُ وَ
قَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ
نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَتْ
إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ
اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ﴿٢٦﴾ قَالَ إِنِّي
أُرِيدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هَاتَيْنِ
عَلَىٰ أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَانِيَ حِجَجٍ فَإِنْ أَتْمَمْتَ
عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ
عَلَيْكَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ

इरादा किया के उस शख़्स को जो उन दोनों का दुश्मन है पकड़ लें तो वो जो इस्राईली था, बोला, जैसे कल तुम ने एक शख़्स को मार डाला था, इसी तरह चाहते हो के मुझे मार डालो, तुम तो यही चाहते हो के मुल्क में ज़ुल्मों सितम करते फ़िरो, और ये नहीं चाहते के सुलह करवाने वालों में से हो जाओ। और एक शख़्स शहर की तरफ़ से दौड़ता हुआ आया, और बोला के ऐ मूसा! शहर के रईस मशवरा कर रहे हैं के तुमको मार डालें, पस यहां से चले जाओ, मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूँ। पस मूसा वहां से डरते डरते निकल पड़े के देखें क्या होता है, और दुआ करने लगे, ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिमों से निजात दे। और जब मूसा ने मदियन की तरफ़ रूख किया तो कहने लगे उम्मीद है के मेरा रब मुझे सीधा रास्ता बता दे। और जब मदियन के पानी के मुक़ाम पर पहुंचे तो देखा के वहां लोग जमा हैं और चौपायों को पानी पिला रहे हैं, और उनके एक तरफ़ दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं, मूसा ने उनसे कहा, तुम्हारा क्या काम है, वो बोलीं हम पानी नहीं पिला सकते जब तक ये चरवाहे अपने जानवरों को पानी पिला कर ना ले जायें, और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं। तो मूसा ने उनके लिये बकरियों को पानी पिला दिया, फ़िर साये की तरफ़ चले गए, और कहने लगे के परवरदिगार मैं इसका मोहताज हूँ के तू मुझ पर अपनी नेमत नाज़िल फ़रमाये। (थोड़ी देर के बाद) उनमें से एक औरत शर्माती हुई लज्जाती हुई मूसा के पास आई और कहा, तुम को मेरे वालिद बुला रहे हैं, ताके जो पानी तुम ने हमारी ख़ातिर पिलाया था, उसकी उज्रत तुम को दें, जब वो उनके पास पहुंचे और उनसे अपना क़िस्सा बयान कर दिया, तो उन्होंने कहा, ख़ौफ़ ना करो, तुम ज़ालिमों से तो बच कर आ गए हो। एक लड़की ने कहा के अब्बा इनको नौकर रख लीजिये, क्योंके अच्छा नौकर जो आप रखें वो वो शख़्स

है जो मज़बूत और अजानतदार हो। उनके बाप ने (मूसा से) कहा के मैं चाहता हूँ के इन दो बेटियों में से एक का तुम से निकाह कर दूं, इस शर्त पर के तुम आठ साल मेरी ख़िदमत करोगे, फ़िर अगर दस पूरे कर दो तो तुम्हारा एहसान है, और मैं तुम पर कोई तकलीफ़ डालना नहीं चाहता तुम मुझे इंशाअल्लाह नेक लोगों में पाओगे। मूसा ने कहा के मुझ में और आप में ये अहद हुआ मैं इन दोनों मुद्दतों में से जो भी पूरा करूंगा तो मुझ पर कोई जब्र ना होगा, और हम जो मुआहेदा कर रहे हैं अल्लाह इसका गवाह है। पस जब मूसा ने उस मुद्दत को पूरा किया और अपने घर वालों को लेकर चले तो तूर की तरफ़ एक आग नज़र आई तो अपन घर वालों से कहा, तुम (यहां) ठहरो मुझे आग नज़र आई है, शायद मैं वहां से रस्ते का कुछ पता लाऊँ, या आग का अंगारा ले आऊँ, ताके तुम ताप लो। जब वो उस आग के पास पहुंचे तो मैदान के दाहिनी तरफ़ से उस मुबारक जगह में एक दरख़्त से आवाज़ आई, ऐ मूसा मैं तो रब्बुलआलमीन हूँ। और ये तुम अपनी लाठी डाल दो, जब देखा के वो हरकत कर रही है गोया सांप है तो पुश्त फ़ेर कर चल दिये और (पीछे) मुड़कर भी ना देखा (हमने कहा) ऐ मूसा आगे आओ, और डरो नहीं, तुम अमन पाने वालों में से हो। अपना हाथ अपने ग्रेबान में डालो बग़ैर किसी ऐब के सफ़ेद निकल आयेगा, ख़ौफ़ की वजह से अपने बाज़ू को अपने साथ मिला लो, ये निशानियां हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से (इनको लेकर) फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास आओ, ये नाफ़रमान लोग हैं। मूसा ने कहा, के ऐ मेरे रब! मैं उनके एक फ़र्द को क़त्ल कर चुका हूँ तो मुझे ख़ौफ़ है के वो लोग मुझे मार डालेंगे। और हारून जो मेरा भाई है उसकी ज़बान मुझसे ज़्यादा फ़सीह है तू उसको मेरे साथ मेरा मददगार बनाकर भेज के वो मेरी तसदीक़ करे, मुझे ख़ौफ़ है के वो लोग मेरी

الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٧ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا
الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝٢٨ فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى
الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ
نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ
لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٢٩ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ
شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ
مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٠ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا
تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ
يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَ لَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ
مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝٣١ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ
تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّ اضْمُمْ اِلَيْكَ
جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ
رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٣٢ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ
مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٣ وَ اَخِيْ
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ
رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْۤ ۫ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ
يُّكَذِّبُوْنِ ۝٣٤ قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ
بِاَخِيْكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ
اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَاۤ ۚۛ اَنْتُمَا وَ مَنِ اتَّبَعَكُمَا
الْغٰلِبُوْنَ ۝٣٥

तकज़ीब करेंगे। अल्लाह ने फ़रमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाज़ू मज़बूत कर देंगे, और तुम दोनों को ग़ल्बा देंगे तो हमारी निशानियों के सबब वो तुम तक ना पहुंच सकेंगे, तुम और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे, वो सब ग़ालिब रहेंगे। तो जब मूसा हमारी वाज़ेह निशानियां लेकर उन लोगों के पास गए, तो वो बोले के ये तो जादू है जो इसने बना कर खड़ा किया है, और ये बातें हमने अपने अगले बाप दादाओं से कभी नहीं सुनीं। (28:1-35)

وَهَلْ أَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ٩ إِذْ رَاٰ نَارًا
فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوْٓا إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ
اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ
هُدًى ١٠ فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ١١ إِنِّيْٓ
أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ إِنَّكَ بِالْوَادِ
الْمُقَدَّسِ طُوًى ١٢ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ
لِمَا يُوْحٰى ١٣ إِنَّنِيْٓ أَنَا اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا
فَاعْبُدْنِيْ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ١٤ إِنَّ
السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا تَسْعٰى ١٥ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ
لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ١٦ وَمَا
تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ١٧ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ
أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ
فِيْهَا مَاٰرِبُ أُخْرٰى ١٨ قَالَ أَلْقِهَا
يٰمُوْسٰى ١٩ فَأَلْقٰىهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ٢٠
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۫ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا
الْأُوْلٰى ٢١ وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ

क्या आपको मूसा (अ.स.) की ख़बर भी मिली है। जब उन्होंने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा, तुम ठहरो, मैंने आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिये थोड़ी सी अंगारी लाऊँ या आग के पास रस्ता मालूम कर सकूं। जब वो वहां पहुंचे तो आवाज़ दी गई के ऐ मूसा (अ.स.)! मैं तुम्हार रब हूँ, तो तुम अपने जूते उतार दो, तुम एक पाक मैदान तूवा में हो। और मैंने तुमको चुन लिया है, पस तुम सुनो जो तुम को वही की जा रही है। बिला शुबह मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं है तो तुम मेरी ही इबादत किया करो, मेरी ही याद के लिये नमाज़ पढ़ा करो। बेशक क़यामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ के उसके वक़्त को पोशीदा ही रखूं, ताके हर शख़्स को अपने किये का बदला मिले। तो तुम को रोक ना दे क़यामत से वो शख़्स जो उस पर यक़ीन नहीं रखता, और अपनी ख़्वाहिशात पर चलता है, और तुम हलाक हो जाओ। और ये तुम्हारे दाहने हाथ में क्या है ऐ मूसा (अ.स.)। मूसा (अ.स.) ने कहा, ये मेरी लाठी है, इस पर सहारा लगा लेता हूँ, और इससे अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ लेता हूँ और इसमें मेरे और भी फ़ायदे हैं। अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा (अ.स.) इसको डाल दो। तो मूसा (अ.स.) ने उसको डाल दिया, फ़िर वो अचानक सांप बन गया, दौड़ता हुआ। अल्लाह ने कहा, उसको

पकड़ लो, और डरो मत, हम अभी उसको पहली हालत में वापस ला देंगे। और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल में दे दो वो सफ़ेद चमकता हुआ निकलेगा, बग़ैर किसी ऐब के। ताके हम तुम को अपनी बड़ी निशानियों में से बाज़ निशानियां दिखा दें। तुम फ़िरऔन के पास जाओ, वो बड़ा सरकश हो गया है। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरा सीना खोल दीजिये। और मेरे काम को आसान कर दीजिये। और मेरी ज़बान से गिरोह खोल दीजिये। ताके वो मेरी बात समझ लें। और मेरे घर वालों में से एक मददगार बना दीजिये। यानी हारून को जो मेरा भाई है। उनके ज़रिये से मेरे बाज़ू मज़बूत कीजिये। और उनको मेरे काम में शरीक कर दीजिये। ताके हम दोनों .खूब तसबीह किया करें। और तेरी याद बहुत कसरत से किया करें। बेशक आप हमको .खूब देख रहे हैं। अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा (अ.स.)! तुम्हारी दुआ क़बूल की गई। और हमने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था। जब हमने तुम्हारी वालिदा को इल्हाम किया था जो कुछ इल्हाम किया जाना था। ये के मूसा को एक संदूक़ में रखो, फ़िर संदूक़ को दरया में डाल दो, फ़िर दरया उसको साहिल पर डाल देगा के मेरा और उसका दुश्मन उसको ले लेगा। और ऐ मूसा (अ.स.)! मैंने अपनी तरफ़ से तुम पर असरे मोहब्बत डाल दिया है, और इसलिये के तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जब तुम्हारी बहन चली आईं और कहा के मैं तुम को एक श़ख्स बताऊँ जो इसको पाले, फ़िर हमने तुम को तुम्हारी मां के पास पहुंचा दिया, के उनकी आंखें ठंडी हों और वो रंज ना करें, और तुम ने एक आदमी को मार डाला, फ़िर हमने तुम को ग़म से निजात दी, और हमने तुम्हारी .खूब आज़माइश की, फ़िर तुम चन्द साल अहले मदयन में रहे, फ़िर ऐ मूसा! तुम एक .खास वक़्त पर आए। और ऐ मूसा! मैंने तुमको अपने लिये मुंतखिब किया। तुम और

بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً اُخْرٰى ۙ﴿۲۲﴾ لِنُرِيَكَ
مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ۚ﴿۲۳﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ
اِنَّهٗ طَغٰى ۠﴿۲۴﴾ قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِىْ
صَدْرِىْ ۙ﴿۲۵﴾ وَ يَسِّرْ لِىْٓ اَمْرِىْ ۙ﴿۲۶﴾ وَ احْلُلْ
عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ ۙ﴿۲۷﴾ يَفْقَهُوْا قَوْلِىْ ۪﴿۲۸﴾ وَ
اجْعَلْ لِّىْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِىْ ۙ﴿۲۹﴾ هٰرُوْنَ
اَخِى ۙ﴿۳۰﴾ اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِىْ ۙ﴿۳۱﴾ وَ اَشْرِكْهُ فِىْٓ
اَمْرِىْ ۙ﴿۳۲﴾ كَىْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۙ﴿۳۳﴾ وَّ نَذْكُرَكَ
كَثِيْرًا ۭ﴿۳۴﴾ اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿۳۵﴾ قَالَ قَدْ
اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿۳۶﴾ وَ لَقَدْ مَنَنَّا
عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ۙ﴿۳۷﴾ اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ
مَا يُوْحٰٓى ۙ﴿۳۸﴾ اَنِ اقْذِفِيْهِ فِى التَّابُوْتِ
فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ
يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗ ۭ وَ اَلْقَيْتُ
عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّىْ ڬ وَ لِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِىْ ۘ﴿۳۹﴾
اِذْ تَمْشِىْٓ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى
مَنْ يَّكْفُلُهٗ ۭ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰٓى اُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ
عَيْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ ڛ وَ قَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ
مِنَ الْغَمِّ وَ فَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ڛ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ
فِىْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ ڏ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ
يّٰمُوْسٰى ﴿۴۰﴾ وَ اصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِىْ ۚ﴿۴۱﴾ اِذْهَبْ
اَنْتَ وَ اَخُوْكَ بِاٰيٰتِىْ وَ لَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِىْ ۚ﴿۴۲﴾
اِذْهَبَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ښ﴿۴۳﴾ فَقُوْلَا لَهٗ
قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ﴿۴۴﴾ قَالَا
رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ

يَطْغٰى ﴿٤٥﴾ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ اَسْمَعُ
وَ اَرٰى ﴿٤٦﴾ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ
فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ وَ لَا
تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَ
السَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾ اِنَّا قَدْ
اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَ
تَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियां लेकर जाओ, और मेरी याद में सुस्ती ना करना। तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, वो सरकश हो गया है। और उससे नर्मी से बात करना शायद वो ग़ौर करे और डर जाये। दोनों ने कहा, ऐ हमारे रब! हमको .ख़ौफ़ है के वो हम पर ज़ियादती करे या .ज्यादा सरकश हो जाए। अल्लाह ने कहा, तुम .ख़ौफ़ ना करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, सुनता हूँ और देखता हूँ। तो तुम उसके पास जाओ, और कहो के हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दे दें, और उनको अज़ाब ना दें, हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आये हैं, और उनके लिये सलामती है, जो हिदायत की बात क़ुबूल करें। हमको ये वही हुई है के अज़ाब उसको होगा, जो झुटलायेगा और मुंह मोड़ेगा।

(20:9-48) (और देखें 26:10-17)

وَ رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ
رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ
مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾ ۚ

और हमने ऐसे लोगों को रसूल बनाया जिनका हाल हम आपको पहले बात चुके हैं और ऐसे रसूल पैदा किये जिनका हाल हमने आपको नहीं बताया, और अल्लाह ने मूसा से .ख़ास तौर पर कलाम किया। (4:164)

हज़रत मूसा और हज़रत और हजरत ईसा ही दो ऐसे पैग़म्बर हैं जिनके जन्म का ज़िक्र क़ुरआन में कुछ विस्तार से हुआ है। हज़रत मूसा के बारे में यह ज़िक्र मिस्र में इस्राईल की औलादों (बनी इस्राईल) पर फ़िरऔन के अत्याचार और दमन के बयान के संदर्भ में आया है:"कि फिरऔन ने देश में सर उठा रखा था और वहाँ के निवासियों को गुटों में विभाजित कर दिया था और एक गुट को इतना कमज़ोर कर दिया था कि उनके बेटों को क़त्ल कर डालता और उनकी बेटियों को जीवित रहने देता, बेशक वह उत्पात मचाने वालों में था" (28:4)। हज़रत मूसा व ईसा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे पैग़म्बर हैं जिनके बारे में क़ुरआन उनके संदेश और उद्देश्य की मुख्य बातों पर रोशनी डालता है। हज़रत मूसा व हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मामले में उनके व्यक्तित्व पर कुछ रोशनी डालता है जिससे उनको समझने में हमें मदद मिलती है। लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जन्म के बारे में क़ुरआन में

कोई ज़िक्र नहीं है, क्योंकि उनके साथ न तो हज़रत मूसा के जन्म के नाटकीय वातावरण जैसा कोई मामला था जो फ़िरऔन के दमनचक्र की वजह से बना हुआ था, और न हज़रत ईसा के चमत्कारी जन्म की तरह कोई मामला था जो बग़ैर पिता के कुंवारी मरियम के पेट से पैदा हुए थे।

क़ुरआन की 28वीं सूरत अलक़सस बनी इस्राईल पर फ़िरऔन के अत्याचार के बयान से शुरू होती है और हज़रत मूसा के जन्म और बचपन व जवानी की कुछ घटनाएं इसमें बयान हुई हैं, और फिर कुछ आयतों में मूसा व फ़िरऔन के बीच कशमकश का वर्णन है जो बनी इस्राईल को फ़िरऔन से मुक्ति मिलने की घटना पर पूरा होता है। हज़रत मूसा के बारे में कुछ और वर्णन मिस्र में उनके निवास और सीना मरुस्थल में उनके प्रवेश और वहाँ घटित होने वाली घटनाओं का बयान 400 से अधिक आयतों में हुआ है जो पूरे क़ुरआन में अलग अलग सूरतों में हैं। सूरत क़सस की कुल 88 आयतों में 46 आयतें तो हज़रत मूसा के ज़िक्र पर ही आधारित हैं, और अन्य 9 आयतों में 'क़ारून' का ज़िक्र हुआ है जो फ़िरऔन का एक दरबारी था और जिसे बाइबिल में कोरह (Korah) कहा गया है।

यह सूरत अरबी के तीन अलग अलग अक्षरों (मुक़त्ता हुरूफ़) से शुरू होती है:'ता' 'सीन' 'मीम'। यह मुक़त्तआत या मफ़ातेह हुरूफ़ जो 27 सूरतों के शुरू में आए हैं अरबी अक्षरों में हैं, इनका कोई निर्धारित अर्थ नहीं बताया जा सकता, न उनके महत्व या उनकी सांकेतिक परिभाषा निश्चित रूप से बताई जा सकती है। सामूहिक रूप से यह अक्षर कुछ सूरतों के शुरू मे आए अरबी अक्षरों की आधी संख्या में हैं। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० से इसका कोई स्पष्ट और निर्धारित मतलब हम तक नहीं पहुंचा है। बाद में इस रहस्य को समझने के लिए जो प्रयास किए गए हैं उसमें जो सबसे अधिक समझ में आने वाली बात है वह यह कि ये अक्षर इस बात को रेखांकित करते हैं कि क़ुरआन, जिसकी शैली का कोई दूसरा उदाहरण नहीं है, अरबी शब्दों पर आधारित है और यह शब्द अरबी के अक्षरों से बने हैं जिन्हें हर अरब जानता और समझता है। इस विचार को इस बात से भी बल मिलता है कि जिन सूरतों में यह मुकत्ता हुरूफ़ (अलग अलग पढ़े जाने वाले अक्षर) आए हैं वो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अलकिताब या वह्यि का ही हवाला हैं (प्रत्यक्ष सूरत 2,3,7,10-15,20,26-28,31,32, 36, 38, 40-46, 50; परोक्ष रूप में सूरत 17, 29, 30, 68)। इसी बात का समर्थन कुछ प्राचीन और नवीन भाषाविदों, क़ुरआन के व्याख्याकारों और इस्लामी शरीअत के विधि शास्त्रियों (फक़ीहों) ने भी किया है जैसे अलमुबरिद, इब्नुल हज़म, अलज़मख़शरी, अलराज़ी, अलबेज़ावी, इब्ने तीमिया, इब्ने कसीर और अन्य (मिसाल के तौर पर देखें जमख़शरी की तफ़सीर आयत 2:1, खण्ड 1 तफ़सीर इब्ने कसीर, तफसीरुलमनार (मुहम्मद अब्दुहू और मुहम्मद रशीद रज़ा) इसी आयत की व्याख्या; और अंग्रेज़ी में देखें मुहम्मद असद की दि मैसेज आफ क़ुरआन, 2, पेज 992-993)।

बनी इस्राईल को बाद में मिस्र के अन्दर फ़िरऔन के उत्पीड़न से जब मुक्ति मिली तो वह केवल अल्लाह की हिदायत से ही मिली जो अल्लाह के पैग़म्बर ने लोगों तक पहुंचाई और पैग़म्बर ने ही अपनी क़ौम का नैतृत्व कियाँ यह पूरी योजना उस बच्चे की मां को इलहाम (अल्लाह की तरफ से भावनात्मक रूप में मिलने वाला संदेश) होने से शुरू होती है जिसे बड़े हो कर क़ौम का नैतृत्व करना था और जिसे पैग़म्बरी के लिए चुना जाना था। उस मां को यह इलहाम हुआ कि बच्चे को एक ताबूत में रख दें और ताबूत को दरिया में छोड़ दें (28:7; 20:38-39)। क़ुरआन में केवल दो महिलाओं का ज़िक्र है जिन्हें अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम हुआ, एक हज़रत मूसा की मां और दूसरी हज़रत ईसा की मां, और इन दोनों महिलाओं को यह इलहाम उनके बच्चों के बारे में हुआ जिन्हें पैग़म्बर होना था (हज़रत मूसा की मां के हवाले के लिए देखें 20:38-39; 28:7 और हज़रत ईसा की मां के लिए 3:42,45-51; 9:16-21)। इसका मतलब यह नहीं है कि इन महिलाओँ को पैग़म्बर बनाया गया था, लेकिन उनके बच्चे पैगम्बर बने।

ये केवल अल्लाह की .पा और निगरानी थी कि जिस बच्चे को दरिया में बहा दिया गया वह न केवल डूबने से बच गया बल्कि फिर उसका पालन पोषण उस दुशमन के घर में हुआ जिसके डर से उसे बहाया गया था, और फिर भी निगरानी उसकी मां को ही मिली (28:8-13; 20:37-40)। यह बात दिलचस्प है कि इब्रानी शब्द 'मोसिस' मसहीह से है और मसहीह का मूल मसह है (अर्थात बाहर निकालना), क्योंकि उन्हें पानी से बाहर निकाला गया था। विलियम स्मिथ ने अपनी बाइबिल डिक्शनरी में लिखा है कि यह सम्भवतःएक बाहरी शब्द का इब्रानी रूप है। कोपटिक में 'मू' का अर्थ है पानी और 'उशू' का अर्थ है बचाया गयाँ यह स्पष्टीकरण यहूदी इतिहासकार जोज़िफस (37-100 ई.) ने किया है। स्मिथ आगे लिखते हैं कि चूंकि बच्चे को शहजादी ने गोद लिया था इसलिए कई वर्षों तक उन्हें मिस्री समझा जाता रहा होगा। वह लिखते हैं कि "ख़मसा मूसा" (इंजील की पांच किताबें) में यह अवधि ख़ाली है लेकिन नीव टेस्टामेण्ट में उन्हें तमाम मिस्रियों में सबसे .ज्यादा बुद्धिमान और करनी व कथनी में मज़बूत बताया गया है (।बजे टप्प्रू22)। अल्लाह ने भविष्य में बनी इस्राईल को मुक्ति दिलाने के लिए मूसा को तैयार किया और उन पर अपना संदेश उतारा। अल्लाह ने अपनी निगरानी और मार्गदर्शन में उन्हें कुछ ख़ास हालात से गुज़ारा (20:39) और अपने काम के लिए उन्हें चुना (20‘41)। हालांकि मूसा उस जगह रहे जो इस्राईलियों के लिए सबसे अधिक असुरक्षित थी यानि ख़ुद अत्याचारी राजा के महल में (28:8-20,39)। जिस तरह हज़रत इब्राहीम को आग में फैंका गया था और अल्लाह ने अपनी .पा से उन्हें आग से सही सलामत बाहर निकाल लिया (21:69-70; 37:97-98), यहाँ मूसा को नदी में फैंका गया और दुशमनों के बीच में ही उन्हें पाला गया और वहीं रह कर उनका शरीरिक, अध्यात्मिक और बौद्धिक विकास हुआ:"और जब

मूसा जवानी को पहुंचे और भरपूर (जवान) हो गए तो हमने उनको हिकमत और ज्ञान दिया और हम नेक काम करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं'' (28:14)। फिर एक घटना से मजबूर होकर हज़रत मूसा उस कवच से बाहर निकल आए जिसमें अभी तक वह सीमित थे। घटना यह हुई कि उन्होंने एक जगह दो व्यक्तियों को लड़ते हुए देखा जिनमें से एक ख़ुद उनकी कौम का था और दूसरा ''क़िब्ती'' था यानि फ़िरऔन की क़ौम का जिसने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा था। उनकी क़ौम के आदमी ने मदद के लिए आवाज़ लगाई तो मूसा दौड़ कर पहुंचे और एक घूंसा क़िब्ती के मारा, घूंसा ऐसा पड़ा कि उसकी मृत्यू हो गयी, हालांकि मूसा का इरादा उसे मार देने का नहीं था। उत्तेजना में ऐसी ही प्रतिक्रिया अगले दिन फिर उन से होने वाली थी कि झगड़ा करने वाला क़िब्ती क़ौम का आदमी चीख़ पड़ा कि क्या मुझे भी ऐसे ही मार डालोगे जैसा उस दूसरे आदमी को कल तुमने मारा है, यह सुन कर वह रुक गए। ऐसा लगता है कि उनके अन्दर ज़ालिम और अत्याचारी क़ौम के प्रति स्वभाविक रूप से ग़ुस्से की भावनाएँ जागृत थीं जिनपर क़ाबू पाना उनके लिए आसान नहीं था। लेकिन अचानक वह चौंक गए और उन्हें यह अहसास हो गया कि कल उनसे जो हत्या हो गयी है उसका चर्चा आम हो गया है और उसके बदले उन्हें मार दिया जाएगा। क़ुरआन के बयान से यह मालूम होता है कि हज़रत मूसा के अन्दर शक्ति बहुत थी और उनकी एक चोट ने वह काम कर दिया जिसका इरादा उन्होंने नहीं किया था, और वह झगड़ालू क़िब्ती इस अंजाम का पात्र नहीं था और न इस झगड़े में मदद को पुकारने वाले इस्राईली को ऐसी कोई उम्मीद थी। हज़रत मूसा को अपनी ग़लती का अहसास हुआ और यह कि भावनाओं में बह कर वह ज़्यादती कर बैठे हैं। इसलिए उन्होंने अल्लाह से मआफ़ी मांगी (28:15-16; 20:40)। इस पर और यह कि अपने उसी इस्राईली भाई को जब उन्होंने एक दूसरे क़िब्ती से झगड़ते देखा तो उन्हें भी विश्वास हो गया कि वास्तव में तो झगड़ालू वही था (28:18)। प्रताड़ना और उत्पीड़न झेलने वाले व्यक्तियों और समुदायों को जब ताक़त मिल जाए तो उन्हें ख़ुद को ज़ालिम और अत्याचारी बनने से रोकने के लिए ख़ुद पर नियंत्र पाना चाहिए, जबकि मूसा को अल्लाह की आज़माइशों (परीक्षाओं) से गुज़रना था (20:40) और शैतान के फण्दों का अनुभव होना था (28:15) और यह जानना था कि शैतान की चालों का प्रतिरोध कैसे करना है (28:15-16)। यह घटना मूसा के लिए आँखें खोल देने वाली बनी। उन्होंने वर्षों तक फ़िरऔन के दरबार में रहने के बावजूद अपनी इस्राईली पहचान को याद रखा और वह इस बात से अवगत थे कि उनकी क़ौम फ़िरऔन के उत्पीड़न और शोषण का शिकार है, लेकिन इस घटना से उन्होंने यह जाना कि आत्म रक्षा में हमला करने वाला भी अगर जायज़ हदों से आगे बढ़ कर हमला करे तो वह ख़ुद आक्रामक बन जाता है और जो वास्तव में आक्रामक व अत्याचारी होता है वह पीड़ित बन जाता है।

हज़रत मूसा को बनी इस्राईल के एक मुक्तिदाता के रूप में अपने मिशन को और अल्लाह के पैग़म्बर के रूप में अपने दावती काम को अंजाम देने के लिए तैयार करने के लिए यह ज़रूरी था कि हज़रत मूसा अपनी इस्राईली पहचान से अवगत हों, और जायज़ व ज़रूरी आत्म रक्षा और हद से निकल जाने के बीच जो महीन लकीर होती है उसे समझें। वह डरते डरते मिस्र से निकल गए (28:21), लेकिन इस बात का निश्चय कर लिया कि कभी किसी दोषी का समर्थन नहीं करेंगे चाहे वह किसी भी क़ौम से हो (28:17)। मदयन में उन्हें एक आम आदमी का सा जीवन बिताने, ज़रूतमंदों को अपनी ताक़त से मदद पहुंचाने और अपनी रोज़ी कमाने का मौक़ा मिला। उन्होंने वहाँ रहने वाले एक नेक आदमी की बेटियों की मदद की ताकि कुंवे से पानी निकालने के लिए उन्हें बहुत देर तक वहाँ रुकना न पड़े। क़ुरआन में स्पष्ट रूप से ऐसा कोई इशारा नहीं है कि यह नेक बुज़ुर्ग हज़रत शुऐब थे। दूसरी आयत से यह बात मालूम होती है कि मदयन के लोगों में हज़रत शुऐब को पैग़म्बर बनाया गया था (7:85; 11:84; 29:36), लेकिन क्या हज़रत शुऐब हज़रत मूसा के समकालीन थे, जिनसे हज़रत मूसा की मुलाक़ात हुई और जिनकी बेटी से उनका विवाह हुआ ? क़ुरआन में इसका कोई स्पष्ट सुबूत नहीं मिलता, बाइबिल में हज़रत मूसा को जेथरू और रेवयेल बताया गया है (एक्सोडसः11:18), और रेवयेल का मतलब है अल्लाह का वफ़ादार।

अब हज़रत मूसा महल से दूर एक दूसरी बस्ती में रहने लगे जहाँ वह खेती करते और पशु चराते थे और अपने घर वालों की देखरेख करते थे। मदयन में उन्होंने लगभग आठ वर्ष तक निवास किया (28:27-29) और इस अवधि में अल्लाह की यह योजना पूरी हुई कि उनके अन्दर पक्कापन आ गया, इंसानों के बारे में उन्हें ज्ञान मिला और मामलों में ठीक ठीक फ़ैसला करने की क्षमता अर्थात 'हिकमत' (युक्ति) प्राप्त हुई, और नेक बुज़ुर्ग के अनुभवों से उन्होंने फ़ायदा उठायाँ मालूम होता है कि हज़रत मूसा ने नेक बुज़ुर्ग की शर्त के अनुसार आठ वर्ष तक उनके साथ रह कर काम करने की अवधि जब पूरी कर ली तो वापस मिस्र जाने की इच्छा की, जैसा कि सीना पहाड़ पर उनके निवास से पता चलता है। क्या मिस्र वापस जाने की यह इच्छा मूसा के अन्दर अपनी क़ौम से प्रेम की भावना से हुई और उस जगह वापस जाने की चाहत से हुई जहाँ उनके जीवन का बड़ा भाग बीता था ? या अल्लाह की तरफ़ से उन्हें यह आदेश हुआ था कि वापस जाएं ? जो बात भी हो बहरहाल, मिस्र वापसी के इसी सफ़र में 'तूर' पहाड़ पर हज़रत मूसा के पास अल्लाह की वह्यि आई और कहा गया कि "... फिर तुम कई साल मदयन वालों में ठहरे रहे और अब तुम आए हो (यहां) जैसा कि (मैं ने) तय किया ऐ मूसा" (20:40)।

तूर पहाड़ पर मूसा पर जो पहली वह्यि आई उसमें अल्लाह पर ईमान और आख़िरत में हर इंसान की जवाबदेही पर ज़ोर दिया गया है (20:14-16), और फ़िरऔन के लिए हज़रत मूसा

के पैगाम का ज़िक्र है (28:31-35; 20:42-47)। यह मिस्र में बनी इस्राईल को फ़िरऔन से मुक्ति दिलाने का संदेश है:"(अच्छा) तो उसके पास जाओ और कहो कि हम आपके रब के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की अनुमति दीजिए और उन्हें कष्ट न दीजिए, हम आपके पास आप के रब की तरफ़ से निशानी लेकर आए हैं और जो हिदायत की बात माने उसको सलामती हो" (20:47; और देखें 26:16-17)। अल्लाह ने मूसा को फ़िरऔन के सामने अपनी सच्चाई के सुबूत में कुछ मोअजिज़े (चमत्कार) दिए:"कि उनकी लाठी सांप बन जाती थी, और उनका हाथ बग़ल से निकालने पर सफ़ेद हो जाता था" (28:31-32; 20:17-24)।

हज़रत मूसा चूंकि फ़िरऔन के अहंकार और दुष्ट व्यवहार से अवगत थे इसलिए स्वभाविक रूप से उन्हें यह डर हुआ कि वह उनके साथ दुर्व्यवहार करेगा और उन पर अत्याचार करेगा (20:45), अत:उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि "रब्बिशरह ली सदरी व यस्सिरली अमरी वहलुल उक़दतम मिंल्लिसानी यफ़क़हु क़ौली" यानी 'ऐ मेरे रब मेरा सीना खोल दीजिए, मेरा काम मेरा लिए आसान कर दीजिए और मेरी ज़बान की गांठ खोल दीजिए (ताकि फ़िरऔन और उसके दरबारी) मेरी बात समझ सकें' (20:25-28)। इसके अलावा हज़रत मूसा ने अल्लाह से यह निवेदन भी किया कि उनके भाई को इस मिशन में उनकी मदद के लिए उनके साथ शरीक कर दिया जाए (28:34-35; 20:29-37)। यह कितने संतोष और हिम्मत की बात थी कि मूसा ने डरावनी स्थिति में इस महान और भारी भरकम ज़िम्मेदारी को अंजाम देने के लिए अल्लाह से अपने भाई को भी इस ज़िम्मेदारी में साथ देने के लिए नियुक्त करने की प्रार्थना की, और यह अल्लाह की कितनी .पा थी कि अल्लाह ने यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। अल्लाह ने इसके अलावा यह मार्गदर्शन भी किया कि उन्हें फ़िरऔन को किस तरह सम्बोधित करना है और उससे कैसे बात करना है:"और उससे नर्मी से बात करना शायद वह (इन निशानियों पर) ग़ौर करे या (चमत्कार देख कर) डर जाए" (20:44)। अल्लाह ने मूसा को यह तसल्ली भी दी कि अल्लाह सर्वशक्तिमान तुम्हारे साथ है:"अल्लाह ने फ़रमाया कि डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूँ (और) सुनता व देखता हूँ" (20:46), और मूसा को यह विश्वास दिलाया कि "तुम और जिन्होंने तुम्हारा अनुपालन किया विजयी होंगे" (28:35)। यह उन दो लोगों के बीच एक वास्तविक चुनौती थी जिनमें एक निरीह अत्याचारी था और जिसे अपने ऊपर घमण्ड था और दूसरी तरफ़ पीड़ितों के मुक्तिदाता थे जिन्हें अल्लाह सर्वशक्तिमान का समर्थन प्राप्त था।

मिस्र में हज़रत मूसा की वापसीःफ़िरऔन को संदेश

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوسٰى بِاٰيٰتِنَآ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٠٣ وَ قَالَ مُوسٰى يٰفِرْعَوْنُ
اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٤ حَقِيْقٌ
عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٠٥ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ
بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝١٠٦ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ
ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝١٠٧ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ
بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٠٨ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٩
يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا
تَاْمُرُوْنَ ۝١١٠ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ
اَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝١١١ يَاْتُوْكَ
بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝١١٢ وَ جَآءَ السَّحَرَةُ
فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ
الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٣ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ لَمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ۝١١٤ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ
تُلْقِيَ وَ اِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝١١٥
قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ
النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَ جَآءُوْ بِسِحْرٍ
عَظِيْمٍ ۝١١٦ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ

फ़िर हमने उनके बाद मूसा को अपनी निशानियां देकर फ़िरऔर और उसके अराकीने सल्तनत के पास भेजा तो उन्होंने उनके साथ ज़ुल्म किया, फ़िर देख लीजिये के मुफ्सिद लोगों का अंजाम क्या हुआ। और मूसा ने कहा के ऐ फ़िरऔन! मैं रसूल हूँ सारे जहानों के मालिक की तरफ़ से। मुझ पर ज़रूरी है के बजुज़ सच के कोई बात अल्लाह की तरफ़ मनसूब ना करूं मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलील लेकर आया हूँ, सो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने की इजाज़त दे दीजिये। फ़िरऔन ने कहा के अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो पेश करो अगर तुम सच्चे हो। मूसा ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी, तो वो फ़िर साफ़ अज़दहा हो गया। और अपना हाथ निकाला तो उसी दम देखने वालों को सफ़ेद नज़र आने लगा। क़ौमे फ़िरऔन के सरदारों ने कहा के वाक़ई ये बड़ा माहिर जादूगर है। ये चाहता है के तुमको तुम्हारी सरज़मीन से निकाल बाहर करे तो तुम लोग क्या मशवरा देते हो। उन्होंने कहा के आप उनको और उनके भाई को चन्दे मोहलत दे दें, और चप्रासियों को शहरों से भेज दें। के वो तमाम माहिर जादूगरों को आपके पास ले आयें। और जादूगर फ़िरऔन के पास आ पहुंचे, कहा हमारे लिये कोई सिला है अगर हम जीत गए। फ़िरऔन ने कहा हाँ (ज़रूर) इसके अलावा तुम मुक़र्रबीने दरबार होंगे। सबने कहा के ऐ मूसा! या तुम जादू की चीज़ डालो या हम डालते हैं। मूसा ने कहा तुम ही डालो, जब उन्होंने जादू की चीज़ें डाल दीं, तो उन्होंने लोगों की आंखों पर जादू कर दिया (यानी नज़रबन्दी कर दी) और उनको डराया, और बहुत बड़ा जादू दिखाया। और हमने मूसा की तरफ़ वही की थी तुम भी अपनी लाठी डाल दो, तो असा का डालना था के वो उनके बने बनाए खेल

أَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا
يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوا
صَاغِرِينَ ﴿١١٩﴾ وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿١٢٠﴾
قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾ رَبِّ مُوسَىٰ
وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ آمَنْتُمْ بِهِ
قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ
مَكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا
أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾ لَأُقَطِّعَنَّ
أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ
لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٤﴾ قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ
رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا
أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۚ رَبَّنَا
أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا
مُسْلِمِينَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ
فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ ۚ قَالَ
سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ
وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا ۖ إِنَّ
الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوا
أُوذِينَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ
مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ
عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ

को निगलने लगी। पस हक़ साबित हो गया और जो कुछ उन्होंने किया था सब बातिल हो गया। फ़िर फ़िरऔन मग़लूब हो गए और ज़लीलो ख़्वार होकर लौट गए। और जादूगर सजदे में गिर पड़े। उन्होंने ऐलान कर दिया के हम सारे जहानों के रब पर ईमान लाते हैं। जो रब है मूसा और हारून का। फ़िरऔन ने कहा, तुम ईमान ले आए इस पर क़ब्ल इसके के मैं तुम को इजाज़त दूं, बेशक ये फ़रेब है जो तुम ने मिलकर शहर में किया है ताके अहले शहर को निकाल दो, सो अन्क़रीब इसका नतीजा मालूम कर लोगे। मैं तुम्हारा एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाऊँ काट दूंगा, फ़िर तुम सबको सूली पर लटका दूंगा। वो बोले, हम तो अपने रब की तरफ़ लौट कर ही जाने वाले हैं। और तुम को हमसे कौन सी बात बुरी लगी है सिवाये इसके के हम ईमान ले आए अपने रब की निशानियों पर जब वो हमारे पास आ पहुंचीं, ऐ हमारे रब तू हम पर सब्रो इसतक़लाल के दरवाज़े खोल दे और तू हमें मुसलमान ही मारियों। और क़ौमे फ़िरऔन के सरदारों ने कहा क्या आप मूसा (अ.स.) और उनकी क़ौम को यूंही छोड़ देंगे के वो मुल्क में फ़साद करते फ़िरें और आप को और आप के माबूदों को छोड़े रखें, फ़िरऔन ने कहा के अभी उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को ज़िन्दा रहने देंगे और हमको उन पर हर तरह का ज़ोर है। मूसा ने अपनी क़ौम से कहा के अल्लाह से मदद मांगो, और बरदाश्त करो, ये सारी ज़मीन अल्लाह ही की है वो अपने बन्दों में से जिसे चाहे मालिक बना दे, और आख़री कामयाबी उन्हीं के लिए है जो अल्लाह से डरते हैं। क़ौमे मूसा ने कहा, के हम तो हमेशा मुसीबत में ही रहे, आपके आने से पहले भी और आपके आने के बाद भी मूसा ने कहा, बहुत जल्द तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देगा, और तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देगा फ़िर वो तुम्हारा

तर्ज़े अमल देखेगा। और हमने आले फ़िरऔन को क़हेतसाली (1) में मुबतला कर दिया और फलों की पैदावार (2) में कमी कर दी ताके वो हक़ (का रास्ता) समझ जायें। सो जब उन पर .ख़ुशहाली आ जाती तो कहते के ये तो हमारे लिये होना चाहिये, अगर बदहाली आती तो कहते के ये तो मूसा (अ.स.) और उने साथियों की नहूसत है, याद रखो के उनकी नहूसत अल्लाह के इल्म में है, लेकिन उनमें अक्सर जानते ना थे। और वो कहते के तुम कैसी ही अजीब बात लाओ के उसके ज़रिये हम पर जादू चलाओ मगर हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे। फ़िर हमने उन पर तूफ़ान (3) भेजा और टिडियों (4) घुन का कीड़ा और (5) मेंडक (6) .खून (7) ये सब खुले खुले मोजज़े थे, मगर वो तकब्बुर ही करते रहे, और वो लोग कुछ थे ही जराईम पेशा। और जब उन पर कोई अज़ाब आता तो कहने के ऐ मूसा! हमारे लिये अपने रब से इस बात की दुआ कीजिये के जिसका उसने आप से अहद कर रखा है, अगर आप इस अज़ाब को हमसे हटा दें तो हम ज़रूर बज़रूर आपके कहने पर ईमान ले आयेंगे और हम बनी इस्राईल को भी रिहा कर के आपके हमराह कर देंगे। फ़िर जब हम उनसे इस अज़ाब को एक .खास वक़्त तक हटा देते के उस तक उनको पहुंचाना था तो वो फ़ौरन अहद शिकनी करने लगते। फ़िर हमने उनसे बदल लिया, यानी हमने उनको दरिया में ग़र्क़ कर दिया, इस वजह से के वो हमारी आयात को झुटलाते थे, और ज़रा भी तवज्जह ना करते थे। और हमने बहुत ही कमज़ोर क़ौम को उस सरज़मीन के पूरब, पश्चिम का मालिक बना दिया, जिसमें हमने बरकत रखी है, और आपके रब का वादा नेक बनी इस्राईल के हक़ में पूरा हुआ क्योंकि उन्होंने बड़ा सब्र किया था, और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम के बनाए हुए कारखान और ऊंची ऊंची

فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ وَ لَقَدْ اَخَذْنَآ
اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَ نَقْصٍ مِّنَ
الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاِذَا
جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَ
اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَ
مَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ
اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَ
قَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَ الْجَرَادَ وَ
الْقُمَّلَ وَ الضَّفَادِعَ وَ الدَّمَ اٰيٰتٍ
مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا
مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾ وَ لَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ
الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ
لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ
اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ
يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ وَ
اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا
يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَ
مَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ تَمَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۬

بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ دَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَ قَوْمُهٗ وَ مَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝١٣٧

इमारतें जो वो बनाते थे सबको बरबाद (और नेस्तो नाबूद) कर दिया। (7:103-137)

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي
الْاَرْضِ ؕ وَ مَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٨ وَ
قَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝٧٩
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى
اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠ فَلَمَّآ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝٨١ وَ يُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢ فَمَآ
اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى
خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهِمْ اَنْ
يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي
الْاَرْضِ ۚ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٨٣ وَ
قَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ
بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٥ وَ نَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى
وَ اَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ
بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا

फ़िर उन पैग़म्बरों के बाद हमने मूसा और हारून को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा अपनी निशानियां देकर तो उन्होंने तकब्बुर किया और वो बड़े मुजरिम लोग थे। फ़िर जब उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ पहुंचा, तो वो कहने लगे के यक़ीनन ये तो खुला जादू है। मूसा (अ.स.) ने कहा के क्या तुम हक़ के बारे में जब वो तुम्हारे पास पहुंचा ये कहते हो के जादू है, हालांकि जादूगर फ़लाह नहीं पाते। वो बोले, क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो के जिस राह पर हमने अपने बाप दादा को पाया है उससे हमको फ़ेर दो, और तुम दोनों इस मुल्क में सरदार बनकर रहो, हम तुम दोनों पर ईमान नहीं लायेंगे। और फ़िरऔन ने कहा के तुम मेरे पास सारे माहिर जादूगरों को लाओ। तो जब जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे कहा, डाल दो जा तुम को डालना है। जब उन्होंने (अपनी रस्सी, लाठी) डाल दिया, तो मूसा (अ.स.) ने कहा के जो कुछ तुम लाये हो वो तो जादू है, यक़ीनन अल्लाह इसको अभी नाबूद कर देगा, बेशक अल्लाह फ़साद करने वालों के काम की इस्लाह नहीं करता। और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच करके दिखा देगा, अगरचे मुजरिम बुरा ही मानें। पस मूसा पर कोई ईमान ना लाया मगर चन्द लड़के उनकी क़ौम के वो भी फ़िरऔन और अपने हुक्काम से डरते हुए के कहीं मुसीबत में ना डाल दें, और बेशक फ़िरऔन मुल्क में ताक़त रखता था, और (किब्रो कुफ़्र) में हद से बढ़ा हुआ था। और मूसा (अ.स.) ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आए हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम फ़रमांबर्दार हो। तो वो बोले के हम तो अल्लाह ही पर भरोसा रखते हैं, ऐ हमारे रब! तू

इन ज़ालिमों के हाथ से हमको ना आज़माना। और हमको अपनी रहमत के तुफ़ैल इस क़ौमे कुफ़्फ़ार से निजात अता फ़रमा। और हमने मूसा और उसके भाई को व ही की के तुम अपने लोगों के लिये मिस्र में घर बनाओ, और अपने घरों को नमाज़ की जगह बनाओ, और नमाज़ पढ़ते रहो और मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दें। और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में सामाने ज़ीनत और तरह तरह का माल दे रखा है, ऐ हमारे रब ये इसलिये दिया है के तेरे रास्ते से गुमराह करें, ऐ हमारे रब! उनका माल बर्बाद कर दे, और उनके दिलों को सख़्त कर दे के ये ईमान ना लायें जब तक दर्दनाक अज़ाब ना देख लें। अल्लाह ने फ़रमाया तुम्हारी दुआ क़बूल हो गई, तुम साबित क़दम रहना, और उनके रास्ते पर ना चलना जो इल्म नहीं रखते। और हमने बनी इस्राईल को दरया से पार कर दिया, फ़िर फ़िरऔन और उसके लश्कर ने उनका तआक़ुब किया, सरकशी और ज़ुल्म के इरादे से यहां तक के ग़र्क़ होने लगा तो कहने लगा के मैं ईमान ले आया के सिवाये उसके जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं कोई माबूद नहीं! और मैं फ़रमांबर्दारी में हूँ। जवाब मिला, अब ईमान लाता है पहले नाफ़रमान था, और मुफ़्सिद बना रहा। तो आज हम तेरे बदन को दरया से निकाल लेंगे, ताके बाद के लोगों के लिये मौजिबे इब्रत हो, और ये हक़ीक़त है के बहुत से लोग हमारी आयात से बेख़बर हैं। और हमने बनी इस्राईल को बहुत उम्दा जगह दी और खाने को पाकीज़ा चीज़ें दीं, तो उन्होंने इख़्तिलाफ़ नहीं किया जहां तक के उनको इल्म पहुंच गया, बेशक क़यामत के दिन तुम्हारा रब उनमें उन बातों का फ़ैसला कर देगा जिनमें वो इख़्तिलाफ़ करते थे। (10:75-93)

الصَّلٰوةَ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قَالَ
مُوْسٰی رَبَّنَاۤ اِنَّكَ اٰتَیْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ
زِیْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ رَبَّنَا
لِیُضِلُّوْا عَنْ سَبِیْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ
عَلٰۤی اَمْوَالِهِمْ وَ اشْدُدْ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ
فَلَا یُؤْمِنُوْا حَتّٰی یَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِیْمَ ﴿۸۸﴾ قَالَ قَدْ اُجِیْبَتْ
دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِیْمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ
سَبِیْلَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَ جٰوَزْنَا
بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَ جُنُوْدُهٗ بَغْیًا وَّ عَدْوًا ؕ حَتّٰۤی
اِذَاۤ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْۤ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْۤا
اِسْرَآءِیْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۰﴾ آٰلْـٰٔنَ
وَ قَدْ عَصَیْتَ قَبْلُ وَ كُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۹۱﴾ فَالْیَوْمَ نُنَجِّیْكَ
بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰیَةً ؕ وَ
اِنَّ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰیٰتِنَا
لَغٰفِلُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ لَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ
مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ۚ
فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰی جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا
كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۳﴾

अल्लाह ने कहा, तुम ख़ौफ़ ना करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, सुनता हूँ और देखता हूँ। तो तुम उसके पास जाओ, और कहो के हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दे दें, और उनको अज़ाब ना दें, हम तेरे पास तेरे रब की तरफ़ से निशानी लेकर आये हैं, और उनके लिये सलामती है, जो हिदायत की बात क़ुबूल करें। हमको ये वही हुई है के अज़ाब उसको होगा, जो झुटलायेगा और मुंह मोड़ेगा। उसने कहा, ऐ मूसा! तुम्हारा रब कौन है। मूसा ने कहा, हमारा रब वो है जिसने हर चीज़ को उसकी शक्लों सूरत अता की फ़िर रास्ता दिखाया। फ़िरऔन ने कहा पहले लोगों का हाल क्या है। मूसा ने कहा, उन लोगों का इल्म मेरे रब को है, किताब में मेरा रब ना तो चूकता है ना भूलता है। वो ऐसा है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे ही लिये इसमें रस्ते बनाये, और आसमान से मेंह बरसाया, फ़िर हमने उससे तरह तरह के मेवे पैदा किया। ख़ुद भी खाओ और अपने चौपयों को भी चराओ, बिलाशुबह इन बातों में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया, और इसी में तुम को लौटायेंगे, और इसी से दूसरी बार निकालेंगे। और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाईं, मगर वो तकज़ीब ही करता रहा, और इन्कार करता रहा। फ़िरऔन ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो के अपने जादू के ज़रिये हमको हमारी ज़मीन से निकाल दो, ऐ मूसा! तो हम भी तुम्हारे सामने ऐसा ही जादू लायेंगे, तो तुम हमारे और अपने दरमियान एक मुआहेदा कर लो ना तो हम उसके ख़िलाफ़ करें और ना तुम, किसी हमवार मैदान में। मूसा ने कहा, तुम्हारे लिये तेहवार के दिन वादा है, और ये के चाश्त के वक़्त सब लोग जमा हो जाते हैं। तो ग़र्ज़ फ़िरऔन लौट गया, और अपना सामाने मकर जमा करना शुरू किया और फ़िर

قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِي مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ
﴿٤٦﴾ فَأْتِيَاهُ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ
جِئْنَٰكَ بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَالسَّلَٰمُ عَلَىٰ
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰٓ ﴿٤٧﴾ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَآ
أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٤٨﴾
قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَٰمُوسَىٰ ﴿٤٩﴾ قَالَ رَبُّنَا
الَّذِيٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ
﴿٥٠﴾ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿٥١﴾ قَالَ
عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي فِي كِتَٰبٍ ۖ لَّا يَضِلُّ
رَبِّي وَلَا يَنسَى ﴿٥٢﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ
الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَ
أَنزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِۦٓ
أَزْوَٰجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿٥٣﴾ كُلُوا وَارْعَوْا
أَنْعَٰمَكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَـَٔايَٰتٍ لِّأُولِي
النُّهَىٰ ﴿٥٤﴾ مِنْهَا خَلَقْنَٰكُمْ وَفِيهَا
نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
أُخْرَىٰ ﴿٥٥﴾ وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا
فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ﴿٥٦﴾ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿٥٧﴾
فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِۦ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَ
بَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُۥ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ
مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾ قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ
الزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ﴿٥٩﴾
فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُۥ ثُمَّ أَتَىٰ ﴿٦٠﴾

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى
اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَ قَدْ
خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾ فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ
بَيْنَهُمْ وَ اَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

आया। मूसा ने उनसे कहा, हाय कम्बख़्त! अल्लाह पर झूट मत बांधों, वरना अज़ाब से फ़ना कर देगा, और जिसने झूट बांधा वो नामुराद हुआ। पस वो अपनी राय में इख़्तिलाफ़ करने लगे, और .खुफ़िया बातें करने लगे (20:46-62)

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ
يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَ
يَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾
فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَ قَدْ
اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا
يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَ اِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ
اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا
حِبَالُهُمْ وَ عِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ
سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ
نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾ وَ اَلْقِ مَا فِيْ
يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۗ اِنَّمَا صَنَعُوْا
كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى
﴿٦٩﴾ فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ
هٰرُوْنَ وَ مُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ
اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۗ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ
اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ
جُذُوْعِ النَّخْلِ ۡ وَ لَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ
عَذَابًا وَّ اَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ

वो सब कहने लगे, बेशक ये दोनों जादूगर हैं के अपने जादू के ज़रिये से तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे शाईस्ता मज़हब को बर्बाद करें। जो तुम अपने जादू का सामान इकटठा कर लो, और फ़िर क़तारें बांध कर आओ, आज जो ग़ालिब रहा, वही कामयाब है। उन्होंने कहा, ऐ मूसा! या तो तुम अपनी चीज़ें डालो और या हम अपनी चीज़ें पहले डालते हैं। मूसा ने कहा, नहीं तुम ही पहले डालो, पस अचानक उनकी रस्सियां और लाठियां मूसा के .ख्याल में उनकी, नज़रबंदी से ऐसी मालूम हुईं, के मैदान में दौड़ रही हैं। तो मूसा के दिल में .खौफ़ पैदा हुआ। हमने कहा के .खौफ़ ना करो, बिला शुबह तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो चीज़ तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसको डाल दो, वो सब कुछ निगल जाएगी जो उन्होंने बनाई हैं, जो चीज़ें उन्होंने बनाई हैं जादूगरी के ढोंग हैं, और जादूगर फ़लाह ना पायेगा। तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहा के हम ईमान लाये मूसा (अ.स.) और हारून के रब पर। फ़िरऔन ने कहा, इससे पहले के मैं तुम को इजाज़त दूं, तुम मूसा (अ.स.) पर ईमान ले आये, बिलाशुबह वो तुम्हारे बड़े हैं के तुमको जादू सिखाया है, सो मैं तुम्हारे हाथ पाऊँ कटवाता हूँ, एक तरफ़ का हाथ, और एक तरफ़ का पाऊं, और तुम सबको खजूर के तनों से लटका दूंगा, और तुम मान लो के हम दोनों में किस का अज़ाब .ज्यादा स.ख्त और देरपा है। उन्होंने कहा के हम तुम को हरगिज़ फ़ौक़ियत नहीं देंगे, उन दलायल के मुक़ाबले में जो हमारे पास आये हैं,

عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الَّذِىْ
فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا
تَقْضِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ﴿۷۲﴾ اِنَّآ اٰمَنَّا
بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَ مَآ اَكْرَهْتَنَا
عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۷۳﴾
اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ
جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَ لَا يَحْيٰى ﴿۷۴﴾ وَ
مَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ
فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۙ﴿۷۵﴾ جَنّٰتُ
عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى
﴿۷۶﴾ وَ لَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ
بِعِبَادِىْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى
الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّ لَا
تَخْشٰى ﴿۷۷﴾ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ
فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ؕ﴿۷۸﴾ وَ
اَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿۷۹﴾

और उस ज़ात के मुक़ाबले में जिस ने हमको पैदा किया है, तो जो चाहे सो कर लो, तुम तो सिर्फ़ इस दुनिया में कुछ कर सकते हो। बस अब तो हम अपने रब पर ईमान ला चुके, ताके वो हमारे गुनाहों को बख़्श दे, और जो तुम ने हम पर ज़बरदस्ती की जादू में, वो भी माफ़ कर दे, और अल्लाह बेहतर है, और बाक़ी रहने वाला है। जो बन्दा अपने रब के पास गुनाहगार बन कर आएगा तो उसके लिये दोज़ख़ है, जिसमें ना मरेगा और ना जियेगा। और जो बन्दा उसके पास मोमिन आएगा, और अच्छे काम किये होंगे, तो उनके लिये बड़े बड़े दर्जात होंगे। यानी हमेशा की जन्नत होगी, जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी, वो हमेशा उनमें रहेंगे, और ये बदला उस का है जो पाक हुआ। और हमने मूसा की तरफ़ वही की के हमारे बन्दों की रातों रात निकाल ले जाओ, फ़िर उनके लिये दरया में (लाठी मारकर) ख़ुश्क़ रस्ता बना देना, फ़िर तुम को ना तो किसी के तआक्कब का ख़ौफ़ होगा, और ना किसी क़िस्म का अंदेशा रहेगा। फ़िर फ़िरऔन ने अपने लश्कर को लेकर उनका तआक्कब किया तो दरया ने उनको जैसा ढांपना था ढांप लिया। और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया, और सीधे रास्ते पर ना डाला। (20:63-79)

فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱۶﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿۱۷﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا
وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ
سِنِيْنَ ۙ﴿۱۸﴾ وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِىْ
فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾ قَالَ
فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ﴿۲۰﴾

तो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, और कहो, हम तमाम जहानों के मालिक के भेजे हुए हैं। और इसलिये आए हैं के आप बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दे दें। फ़िरऔन ने मूसा से कहा, क्या हमने तुम को के जभी तुम बच्चे थे परवरिश नहीं किया, और क्या तुम ने बरसों हमारे हां उम्र बसर नहीं की? और तुमने एक और काम किया था, जो किया, और तुम नाशुक्रे मालूम होते हो। मूसा ने कहा, हां वो हरकत मुझसे (नागहां) सरज़द हो गई थी और मैं ख़ता कारों में था।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ
رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَ
تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۲﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ وَ مَا رَبُّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿۲۴﴾
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَ
رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۶﴾ قَالَ
اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ
لَمَجْنُوْنٌ ﴿۲۷﴾ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ
وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾
قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ
لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿۲۹﴾ قَالَ اَوَ لَوْ
جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿۳۰﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَلْقٰى
عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۳۲﴾ وَّ نَزَعَ
يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۳۳﴾ قَالَ
لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۳۴﴾
يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ
فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿۳۵﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ
ابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۳۶﴾ يَاْتُوْكَ
بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿۳۷﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ
لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۳۸﴾ وَّ قِيْلَ
لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿۳۹﴾ لَعَلَّنَا
نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۰﴾

तो जब मुझे तुम से डर लगा तो मैं तुम में से भाग गया, फ़िर ख़ुदा ने मुझ को नबुव्वत और इल्म बख़्शा, और मुझे अपना रसूल बनाया। और क्या ही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं के आपने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है। फ़िरऔन ने कहा, के तमाम जहान का मालिक क्या? मूसा ने कहा के वो आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है इन सबका मालिक है, अगर तुम यक़ीन रखो। फ़िरऔन ने अपने अहाली मवाली से कहा, क्या तुम सुनते नहीं? मूसा ने कहा, वो तुम्हारा भी रब और तुम्हारे पहले बाप दादा का भी रब है। फ़िरऔन ने कहा, ये तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बावला है। मूसा ने कहा, वो मशरिक़ और मग़रिब और जो कुछ उन दोनों में है सबका रब है अगर तुम अक़्ल रखते हो। फ़िरऔन ने कहा, अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को माबूद बनाया तो मैं तुम को क़ैद कर दूंगा। मूसा ने कहा, ख़्वाह मैं आपके पास रौशन चीज़ लाऊँ (यानी मोजज़ा)। फ़िरऔन ने कहा, अगर तुम सच्चे हो तो उसे लाओ और दिखाओ। तो मूसा ने अपना असा डाल दिया तो वो उसी वक़्त अज़दहा बन कर ज़ाहिर हो गया। और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी वक़्त देखने वालों को चमकता हुआ दिखाई देने लगा। फ़िरऔन ने अपने इर्दगिर्द के सरदारों से कहा, ये तो कामिल जादूगर हैं। ये चाहता है के तुम को तुम्हारे मुल्क से निकालदे, अपने जादू के ज़ोर से, तो तुम्हारे क्या ख़्याल है। सरदारों ने कहा, मूसा और इसके भाई हारून के बारे में ज़रा ठहर जाईये, और शहरों में नक़ीब भेज दीजिये। के वो सब जादूगरों को जमा कर के आप के पास ले आयें। तो सब जादूगर एक मोईय्यन दिन के एक ख़ास वक़्त पर जमा हो गए। और लोगों से कह दिया गया के तुम सब एक जगह जमा हो जाओ। ताके अगर जादूगर ग़ालिब आ जायें तो हम उन ही के पैरव

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ
لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۴۱﴾
قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ
الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۲﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَآ
اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَ
عِصِيَّهُمْ وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا
هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۴۵﴾ فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ
سٰجِدِيْنَ ﴿۴۶﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قَالَ
اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ
لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَ
اَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۹﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا
مُنْقَلِبُوْنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا
رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۱﴾
وَ اَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ
بِعِبَادِىْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۵۲﴾ فَاَرْسَلَ
فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ اِنَّ
هٰۤؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَ اِنَّهُمْ
لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ
حٰذِرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ﴿۵۷﴾ وَّ كُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۵۸﴾
كَذٰلِكَ ؕ وَ اَوْرَثْنٰهَا بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۵۹﴾

बन जायें (एलान हो गया)। फ़िर जब फ़िरऔन के जादूगर सब आ गए तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा के अगर हम ग़ालिब रहें तो हमें सिला भी अता होगा? फ़िरऔन ने कहा, हां! और तुम (हमारे) मुक़र्रबीन में दाख़िल हो जाओगे। मूसा ने उनसे कहा, डालो जो चीज़ तुम डालना चाहते हो। तो जादूगरों ने अपनी रस्सियां, लाठियां डाल दीं, और कहने लगे फ़िरऔन के इक़्बाल की क़सम हम ज़रूर जीत जायेंगे। फ़िर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वो उन चीज़ों को निगलने लगी, जो जादूगरों ने बनाई थी। फ़िर सारे जादूगर सज्दे में गिर पड़े। और कहने लगे के हम सारे जहान के मालिक अल्लाह पर ईमान लाये। मूसा और हारून के रब पर। फ़िरऔन ने कहा, तुम मेरी इजाज़त हासिल करने से पहले ही इस पर ईमान ले आये, बेशक ये तुम्हारा बड़ा जादूगर है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो तुम को जल्द सिखाया है, सो तुम को जल्द मालूम हो जाएगा, मैं तुम्हारे एक तरफ़ का हाथ और दूसरी तरफ़ का पाऊँ काट डालूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा के हमारा कोई नुक़सान नहीं होगा, हम अपने रब के पास पहुंच जायेंगे। हम उम्मीद करते हैं के हमारा रब हमारे गुनाह माफ़ कर देगा, क्योंके हम सबसे पहले ईमान ले आये। और हमने मूसा को वही की के हमारे बन्दों को रातों रात लेकर निकल जाओ क्योंके तुम्हारा तआक्कब किया जायेगा। तो फ़िरऔन ने शहरों में नक़ीब रवाना किये। और कहा के ये लोग एक छोटी सी जमात हैं। और उन्होंने हमको ग़ुस्सा दिलाया है। और हम सब उनसे ख़तरा रखते हैं। तो हमने उनको बाग़ों और चश्मों से निकाल दिया है। और ख़ज़ानों और नफ़ीस मकानात से निकाल बाहर किया। उनके साथ हमने इस तरह किया के बनी इस्राईल को उनका वारिस बना दिया। सूरज निकलते ही फ़िरऔन ने मूसा और

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠ فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ
قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١ قَالَ
كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢ فَاَوْحَيْنَآ
اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ
فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ
الْعَظِيْمِ ۝٦٣ وَ اَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٤ وَ
اَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝٦٥ ثُمَّ
اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝٦٦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٦٧ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦٨

उनके साथियों का तआक्कब किया। फ़िर जब दोनों जमातें आमने सामने एक दूसरे को नज़र आने लगीं तो मूसा के साथियों ने कहा के हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा, हरगिज़ नहीं, मेरा रब मेरे साथ है, और मझे रस्ता बताएगा। फ़िर हमने मूसा को वही की, के तुम अपनी लाठी दरया में मारों, तो दरया फट गया, फ़िर हर टुकड़ा बड़े पहाड़ की मानिंद हो गया। और हमने दूसरे फ़रीक़ को फ़िर वहां क़रीब तर कर दिया। और हमने मूसा और उनके साथ वालों को बचा लिया। फ़िर हमने दूसरों को (यानी फ़िरऔन और उसकी जमात) को ग़र्क़ कर दिया। बिला शुबह इस क़िस्से में बड़ी इबरत है, और उनमें अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक आपका रब बड़ा ज़बरदस्त है बड़ा ही रहम वाला है। (26:16-68)

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا
مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
فِيْٓ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٦ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ
اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ
تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٧ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ
مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ
يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ
اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَ اِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٨ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ جُنُوْدُهٗ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا
يُرْجَعُوْنَ ۝٣٩ فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ
فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ

तो जब मूसा हमारी वाज़ेह निशानियां लेकर उन लोगों के पास गए, तो वो बोले के ये तो जादू है जो इसने बना कर खड़ा किया है, और ये बातें हमने अपने अगले बाप दादाओं से कभी नहीं सुनीं। और मूसा ने कहा के मेरा रब ख़ूब जानता है उस शख़्स को जो उसकी तरफ़ से हक़ लेकर आया है जिस के लिये आक़बत का घर (यानी बहिश्त) है, बेशक ज़ालिम लोग निजात ना पायेंगे। और फ़िरऔन ने कहा, ऐ दरबारियों! मैं तुम्हारा अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता, तो ऐ हामान तुम मेरे लिये गारे को आग लगा कर ईटें पका दो, फ़िर मेरे लिये एक ऊंचा महल बना दो ताके मैं मूसा के ख़ुदा की तरफ़ चढ़ जाऊँ, और मैं तो उसे झूटा समझता हूँ। और फ़िरऔन और उसके लश्कर ने मुल्क में नाहक़ तकब्बुर इख़्तियार कर रखा था, और ख़्याल करते थे के वो हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आयेंगे। तो हमने उनको और उनके लश्कर को पकड़ लिया, और दरया में डाल दिया, सो देख लो ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। और हमने

إِلَى النَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ وَ
أَتْبَعْنَاهُمْ فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ
الْقِيَامَةِ هُم مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

उनको ऐसा पेशवा बना दिया था जो लोगों को दोज़ख की तरफ़ बुलाते थे, और क़यामत के दिन उनकी कोई मदद नहीं की जायेगी। और हमने इस दुनिया में भी उनके पीछे लानत लगा दी, और वो क़यामत के दिन भी बदहालों में होंगे। (28:36-42)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ
مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ
فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم
بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ
الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ
وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ
رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ
أَن يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ
مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن
كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾
وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ
يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ
رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ مِن
رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ
وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي
يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ
الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रौशन दलील देकर भेजा। फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्होंने कहा ये जादूगर झूटा है। फ़िर जब वो हमारी तरफ़ से हक़ लेकर उनके पास आये तो उन्होंने कहा के जो लोग उनके साथ ईमान लाये हैं उनके बेटों को क़त्ल कर दो और बेटियों को ज़िन्दा छोड़ दो और काफ़िरों की तदबीरें गुमराहकुन होती हैं। और फ़िरऔन ने कहा, मुझे छोड़ दो के मूसा को क़त्ल कर दूं, और इसको चाहिये के अपने रब को बुलाले, मुझे डर है के कहीं वो तुम्हारे दीन को ना बदल दे, या मुल्क में फ़साद ना पैदा कर दे। और मूसा ने कहा मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूँ हर मुतकब्बिर से जो आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाता। और एक मर्दे मोमिन ने कहा तो आले फ़िरऔन में से था जो अपने ईमान को पोशीदा रखता था के तुम एक शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो सिर्फ़ इसलिये के वो कहता है मेरा रब अल्लाह है, हालांके वो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलायल लेकर आया है, अगर वो झूटा है तो उसका झूट उसी पर पड़ेगा, और अगर वो सच्चा है तो कोई सा अज़ाब तुम पर होगा जिसका वो वादा कर रहा है, बिला शुबह अल्लाह उस शख़्स को हिदायत नहीं करता जो हद से गुज़ारने वाला बहुत झूट बोलने वाला है। ऐ क़ौम! आज तुम्हारी बादशाहत है के तुम हीइस मुल्क में ग़ालिब हो, तो फ़िर कौन तुम्हारी मदद करेगा अगर हम पर अल्लाह का अज़ाब आ गया, फ़िरऔन ने कहा मैं तुम को वही बात सुझाता हूँ जो मुझे

सूझी है और मैं तुम को वही रास्ता दिखाता हूँ जिसमें भलाई है। और उस मोमिन ने कहा, ऐ क़ौम! मैं तुम्हारे बारे में डरता हूँ के कहीं तुम पर दूसरी क़ौमों की तरह कोई अज़ाब का दिन आ जाये। जैसा क़ौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों का हाल हुआ, और अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ क़ौम! मुझे तुम्हारी निसबत अंदेशा है उस दिन का जिस में बहुत पुकारें होंगी। उस रोज़ तुम पीठ फ़ेर कर भागोगे तो तुम को अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला कोई नहीं होगा, और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे तो उसको कोई हिदायत करने वाला नहीं। और इससे पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास निशानियां लेकर आये थे तो तुम हमेशा उन उमूर में शक में रहे जो वो अपने साथ लाये थे, यहां तक जब वो फ़ौत हो गए, तो तुम ने कहा के अल्लाह उसके बाद अभी कोई रसूल नहीं भेजेगा, इस तरह अल्लाह उसको गुमराह कर देता है जो हद से निकलने वाला और शक करने वाला हो। जो अल्लाह की आयात में झगड़ने लगते हैं बग़ैर इसके के कोई सनद उनके पास हो, अल्लाह को और अहले ईमान को इससे बड़ी नफ़रत है, इसी तरह अल्लाह हर मुतकब्बिर, सरकश के दिल पर मोहर लगा देता है। और फ़िरऔन ने कहा, ऐ हामान! मेरे लिये एक महल बनाओ ताके मैं (उस पर चढ़ कर) रस्तों पर पहुंच जाऊँ। यानी आसमान के रस्तों पर, फ़िर मैं मूसा के ख़ुदा को देख लूं, और मैं तो उसे झूटा समझता हूँ, और इस तरह फ़िरऔन को उसके आमाले बद अच्छे मालूम होते थे, और वो रस्ते से रोक दिया गया था, और फ़िरऔन की तदबीर तो नाकारा ही थी। और उस मोमिन ने कहा, ऐ क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम को भलाई का रास्ता बताता हूँ। ऐ मेरी क़ौम! ये दुनिया की ज़िन्दगी तो चन्द रोज़ फ़ायदा उठाने की चीज़ है, और आख़िरत ही तो ठहरने का मुक़ाम है।

مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ
مَاۤ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰى وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا
سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝٢٩ وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ
الْاَحْزَابِ ۝٣٠ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ
وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ
يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝٣١ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْۤ
اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝٣٢ يَوْمَ
تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ
هَادٍ ۝٣٣ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ
بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا
جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ
يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ ۝٣٤
اِۨلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ
سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَ
عِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝٣٥ وَقَالَ
فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ
اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝٣٦ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ
كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ
عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ
فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝٣٧ وَقَالَ الَّذِيْۤ

اٰمَنَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوۡنِ اَهۡدِكُمۡ سَبِيۡلَ
الرَّشَادِ ۚ﴿۳۸﴾ يٰقَوۡمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الۡحَيٰوةُ
الدُّنۡيَا مَتَاعٌ وَّ اِنَّ الۡاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ
الۡقَرَارِ ﴿۳۹﴾ مَنۡ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجۡزٰٓى
اِلَّا مِثۡلَهَا ۚ وَمَنۡ عَمِلَ صَالِحًا مِّنۡ
ذَكَرٍ اَوۡ اُنۡثٰى وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَـنَّةَ يُرۡزَقُوۡنَ فِيۡهَا بِغَيۡرِ
حِسَابٍ ﴿۴۰﴾ وَيٰقَوۡمِ مَا لِىۡۤ اَدۡعُوۡكُمۡ اِلَى
النَّجٰوةِ وَتَدۡعُوۡنَنِىۡۤ اِلَى النَّارِ ؕ﴿۴۱﴾
تَدۡعُوۡنَنِىۡ لِاَكۡفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشۡرِكَ بِهٖ مَا
لَيۡسَ لِىۡ بِهٖ عِلۡمٌ وَّاَنَا اَدۡعُوۡكُمۡ اِلَى
الۡعَزِيۡزِ الۡغَفَّارِ ﴿۴۲﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا
تَدۡعُوۡنَنِىۡۤ اِلَيۡهِ لَيۡسَ لَهٗ دَعۡوَةٌ فِى
الدُّنۡيَا وَلَا فِى الۡاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى
اللّٰهِ وَاَنَّ الۡمُسۡرِفِيۡنَ هُمۡ اَصۡحٰبُ
النَّارِ ﴿۴۳﴾ فَسَتَذۡكُرُوۡنَ مَاۤ اَقُوۡلُ لَـكُمۡ ؕ وَ
اُفَوِّضُ اَمۡرِىۡۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيۡرٌۢ
بِالۡعِبَادِ ﴿۴۴﴾ فَوَقٰٮهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوۡا
وَحَاقَ بِاٰلِ فِرۡعَوۡنَ سُوۡٓءُ الۡعَذَابِ ۚ﴿۴۵﴾
اَلنَّارُ يُعۡرَضُوۡنَ عَلَيۡهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَ
يَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ ࣞ اَدۡخِلُوۡۤا اٰلَ
فِرۡعَوۡنَ اَشَدَّ الۡعَذَابِ ﴿۴۶﴾

जो बुरा काम करता है उसको बराबर सराबर बदला मिलता है, और जो नेक काम करेगा मर्द हो या औरत, बशर्त ये के मोमिन हो ता ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे, वहां उनको बेहिसाब रिज़्क़ मिलेगा। और ऐ मेरी क़ौम! मेरा क्या है मैं तो तुम को निजात की तरफ़ बुलाता हूँ, और तुम मुझे दोज़ख की तरफ़ बुलाते हो। तुम मुझे उस तरफ़ बुलाते हो के मैं अल्लाह को ना मानूं, और उस चीज़ को उसका शरीक करूं, जिसकी मेरे पास कोई दलील नहीं और मैं तुमको अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूँ, जो बड़ा ज़बरदस्त और बड़ा बख़्शने वाला है। यक़ीनी बात है, तुम जिस चीज़ की तरफ़ मुझे बुलाते हो, वो ना तो दुनिया में और ना ही आख़िरत में पुकारे जाने के लायक़ है, और हम सबको अल्लाह की तरफ़ लौटना है, और हद से आगे जाने वाले सब दोज़ख़ी हैं। तो जो बात मैं तुम से कहता हूँ उसको तुम जल्द याद करोगे, और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपूर्द करता हूँ, बिला शुबह अल्लाह अपने बन्दों को ख़ूब देख रहा है। आख़िर अल्लाह ने (मूसा) को उनकी मुज़िर तदबीरों से बचा लिया, और फ़िरऔन वालों पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ। वो लोग सुबह व शाम आग पर पेश किये जाते हैं और जिस रोज़ क़यामत क़ायम होगी (तो हुक्म होगा) फ़िरऔन वालों को सख़्त अज़ाब में दाख़िल कर दो।

(40:23-46)

وَنَادٰى فِرۡعَوۡنُ فِىۡ قَوۡمِهٖ قَالَ يٰقَوۡمِ اَلَيۡسَ
لِىۡ مُلۡكُ مِصۡرَ وَهٰذِهِ الۡاَنۡهٰرُ تَجۡرِىۡ مِنۡ

और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम से पुकार कर कहा, के ऐ क़ौम! क्या मिस्र की हुकूमत मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं क्या तुम देखते नहीं हो। बल्के

मैं तो इस श़ख्स से कहीं बेहतर हूँ जो कोई इज्ज़त नहीं रखता और ना ही वो अच्छी तरह गुफ्तगू कर सकता है। तो फ़िर उस पर सोने के कंगन क्यों ना उतारे गए या इसके साथ फ़रिश्ते जमा होकर आते। ग़र्ज़ फ़िरऔन ने अपनी क़ौम की अक़्ल मार दी, और उन्होंने उस की बात मान ली, बिला शुबह नाफ़रमान लोग थे। फ़िर जब उन्होंने हमको नाराज़ किया, तो हमने उनसे बदला लिया, और उन सब को दरया में ग़र्क़ कर दिया। और हमने उनको गए गुज़रे कर दिया, और आख़रीन के लिये इबरत (का मुक़ाम) बना दिया। (43:51-56)

تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٥١ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ
هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝٥٢
فَلَوْلَآ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ
جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝٥٣ فَاسْتَخَفَّ
قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝٥٤ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٥ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّ
مَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝٥٦

और उन से पहले हमने क़ौमे फ़िरऔन की आज़माईश की, और उनके पास एक मौजिज़ रसूल आये। उन्होंने कहा अल्लाह के इन बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानत दार रसूल हूँ। और ये के अल्लाह के सामने सरकशी ना करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील लेकर आया हूँ। और मैं इस बात से पनाह मांगता हूँ अपने और तुम्हारे रब की के तुम मुझे संगसार करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग हो जाओ। फ़िर मूसा ने अपने रब से दुआ की के ये लोग नाफ़रमान हैं। तो अब आप मेरे बन्दों को रातों रात लेकर चले जाओ, और फ़िरऔन वाले ज़रूर तुम्हारा पीछा करेंगे। और दरिया से जो .ख़ुश्क़ हो रहा होगा पार हो जाना (तुम्हारे बाद) उनका तमाम लश्कर डुबो दिया जायेगा। वो लोग बहुत से बाग़ात और चश्मे छोड़ गए। और खेतियां, और अच्छे मकानात। और आराम की चीज़ें जिन में वो ऐश किया करते थे छोड़ गए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरे लोगों को उनका मालिक बना दिया। तो फ़िर उन पर ना तो आसमान व ज़मीन को रोना आया और ना उसको मोहलत ही दी गई। और हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ۝١٧ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ
اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٨ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا
عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١٩ وَ
اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ۝٢٠ وَ
اِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ۝٢١ فَدَعَا
رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ۝٢٢ فَاَسْرِ
بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝٢٣ وَاتْرُكِ
الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٤ كَمْ
تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٢٥ وَّزُرُوْعٍ وَّ
مَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝٢٦ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا
فٰكِهِيْنَ ۝٢٧ كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا
اٰخَرِيْنَ ۝٢٨ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝٢٩ وَلَقَدْ
نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ۝٣٠ مِنْ فِرْعَوْنَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا

مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى
عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ
مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾

अता की। यानी फ़िरऔन से, बिला शुबह वो बड़ा सरकश और हद से निकलने वाला था। और हमने बनी इस्राईल को दुनिया जहान वालों पर इल्म की रू से फ़ौक़ियत बख़्शी। और उनको ऐसी निशानियां दीं, जिनसे वाज़ेह तौर पर (उनकी) आज़माईश थी।

(44:17-33) (और देखें 2:49-50; 11:96-99; 23:45-48; 29:39; 37:115-122; 43:46-50; 73:15-16; 85:17-18)

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ
وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١١﴾

और अल्लाह ने एक मिसाल मोमिनीन के लिये बयान फ़रमाई, वो फ़िरऔन की बीवी है, उसने दुआ की के ऐ मेरे रब! मेरे लिये बहिश्त में एक घर बना दे, और मुझे फ़िरऔन और इसके आमाल से बचा, और ज़ालिमों के हाथ से निजात अता फ़रमा। (66:11)

यह स्थिति मूसा और फ़िरऔन दोनों के लिए बड़ी जटिल थी। मूसा का पालन पोषण फ़िरऔन के महल में हुआ था और उनके हाथ से उनके अपने समुदाय के एक आदमी को बचाने के लिए फ़िरऔन के समुदाय के एक आदमी की हत्या भी हो गयी थी, और दूसरी तरफ़ फ़िरऔन हताशा में था कि मूसा उसके बर्चस्व को चुनौती देने चले आए थे और उसे एक अल्लाह की बन्दगी की दावत दे रहे थे और साथ ही साथ बनी इस्राईल को उनके साथ मिस्र से जाने देने की मांग भी कर रहे थे। इस टकराव की क़ुरआन ने जो कहानी बयान की है उसमें इन दोनों का व्यक्तित्व खुल कर सामने आ गया है। क़ुरआन ने फ़िरऔन का ज़िक्र उसके शाही नाम से किया है उसके व्यक्तिगत नाम से नहीं किया है क्योंकि क़ुरआन का मक़सद कोई इतिहास बताना नहीं है बल्कि नैतिक सीख देना है। आधुनिक अध्यनों के अनुसार यह बात आम तौर से मानी जाती रही है कि प्राचीन मिस्र के राजवंशों में से क्रमवार 18वें या 19वें राजवंश से उसका सम्बंध था। बहुत से शोधकर्ताओं ने उसकी पहचान फ़िरऔन रामीस द्वतीय (1279-1213 ई. पू.) के रूप में की है, क्योंकि रामीस द्वतीय के कुतबों में एक वर्ग 'अपीरू' (।चपतन) का ज़िक्र है। इस शब्द से अभिप्राय ऐसे लोग हैं जिनके पास अपना कोई देश या अपने "खबीरे" (ड्ढीइपतम) की कोई सम्पत्ति नहीं थी। ख़बीरे बाबुली भाषा में ऐसे पत्थर के लिए बोला जाता है जो "मेमफिस" (डमउचीपे) के महलों में लगता था और हिलता रहता था। इन अपीरों में इस्राईली शामिल थे (दि लाइन ऐन्साइक्लोपेडिया आफ दि बाइबिल, एड. पेट एलेग्जेण्डर)। लेकिन वो "ज़ालिम फ़िरऔन" जिन के ज़माने में इस्राईलियों पर होने वाले

अत्याचार चरम पर पहुंच गए थे वो मूसा के जन्म से पहले राज करते थे और यह उस व्यक्ति से अलग व्यक्ति हो सकता है जिसे चेंतंवी वजी म्गवकने कहा जाता है जो मूसा का समकालीन था (स्मिथ बाइबिल डिक्शनरी)। फ़िरऔन के जिन अत्याचारों का जिक्र क़ुरआन में है वह केवल बनी-इस्राईल तक ही सीमित नहीं थे बल्कि यह उसके शासन की एक आम रीति थी, ख़ास तौर से यदि कोई उसके अधिकारों को या सत्ता को चुनौती देता था तो उसके लिए वह बहुत निर्शंस और अत्याचारी था। जब जादूगरों ने मूसा के पैगम्बर होने पर विश्वास कर लिया और अपने ईमान का इज़हार किया तो वह दुष्ट तैश में आ गया और कहने लगा कि मुझ से पूछे बिना तुम ने मूसा को पैगम्बर मान लिया, और उसने घोषणा की वह उन जादूगरों के हाथ और पांव अलग अलग तरफ़ से काट डालेगा और पेड़ों पर उन्हें सूली पर लटका देगा (7:124; 20:71; 26:49)। वह मिस्रियों के ख़ुदा का अवतार थाः"मै अपने सिवा किसी को तुम्हारा मअबूद (पूज्य) नहीं जानता" (28:38)। वह ऐसा घमण्डी था कि आख़िरत में अपनी किसी जवाबदेही को मानता ही नहीं था, अतःमूसा ने कहा "मैं हर अहंकारी से जो हिसाब के दिन (यानि क़ियामत) पर ईमान नहीं लाता अपने और अपने पालनहार की शरण ले चुका हूँ" (40:27)।

फ़िरऔन के पास उसके दरबारी हर समय मौजूद रहते थे। फ़िरऔन की सत्ता से फ़ायदा उठाने वाले ये लोग जो सत्ता में उसके भागीदार थे हर मामले में फ़िरऔन का समर्थन करते थे और उसे वही बात सुझाते थे जो उसके हितों की रक्षा करने वाली और उसके दुशमनों को पराजित करने वाली हो। अतः"फिरऔन की क़ौम में जो सरदार थे वो (आपस में ';कहने लगे कि यह बड़ा माहिर जादूगर है। इसका इरादा यह है कि तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे, तो अब क्या कहते हो? फिर उन्होंने (फिरऔन से) कहा कि फ़िलहाल मूसा और उसके भाई को रोक लीजिए और शहरों में ढिंढोरा पीटने वालों को भेजिए कि तमाम माहिर जादूगरों को आपके पास ले आएं" (7:109-112), "और फ़िरऔन की क़ौम को जो सरदार थे कहने लगे क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देंगे कि देश में उत्पात मचाएं और आपको व आपकी पूज्य हस्तियों को त्याग दें? वह बोला कि हम उनके लड़कों को तो क़त्ल कर डालेंगे और लड़कियों को जीवित रहने देंगे और बेशक हम इन पर नियंत्रण रखते हैं" (7:127)। लेकिन ये सरदार लोग फ़िरऔन से अलग कोई दूसरी राय देने के पात्र भी नहीं थेः"और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली दलील दे कर भेजा फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ तो वो फिरऔन ही के कहने पर चले और फ़िरऔन का आदेश ठीक नहीं था" (11:96-97), "फ़िरऔन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात सुझाता हूँ जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूँ जिसमें फ़ायदा है" (40:29), "और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ दरबारियों में अपने सिवा किसी को तुम्हारा पूज्य नहीं जानता, तो हामान मेरे लिए गारे को आग लगवा (कर ईंटे पकवा) दे फिर एक (ऊंचा) महल बनवादे ताकि मैं मूसा के रब की तरफ़ चढ़ जाऊं और मैं तो इसे झूटा समझता हूँ" (28:38)। लेकिन उस ज़ालिम ने, तमाम ज़ालिमों की तरह, उन्हें यह भरोसा दिलाने का प्रयास किया कि वह तो

अपनी जनता का भला चाहने वाला है:“मुझे डर है कि वह कहीं तुम्हारे धर्म को (न) बदल दे या देश में उत्पात (न) पैदा कर दे” (40:26), “उसका इरादा यह है कि तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दे” (7:110,123)।

क़ुरआन के बयानों के अनुसार ‘हामान’ फ़िरऔन का एक मंत्री मालूम होता है, वह उन लोगों में से था जिन्हें महत्वपूर्ण निर्देश दिए जाते थे और हज़रत मूसा ने फ़िरऔन के साथ उसे भी सम्बोधित किया था और ख़ुद अल्लाह की तरफ़ से उस पर भी लानत की गयी थी (28:6,8,38; 29:39; 40:24,36)। ज़ाहिर में यह हामान फ़ारस के उस हामान से अलग व्यक्ति है जिसका ज़िक्र बाइबिल में है (Book of Esther 111) जो राजा आशूरी का वज़ीर था जिसने फ़ारस के साम्राज्य में सभी यहूदियों को क़त्ल करने का असफ़ल प्रयास किया था (स्मिथ बाइबिल डिक्शनरी)। मुहम्मद असद ने यह विचार व्यक्त किया है कि क़ुरआन में हामान का जो नाम आया है यह ‘हामीन’ (आमोन) का अरबी उच्चारण है जो मिस्र में सबसे बड़े पुजारी को कहा जाता था और फ़िरऔन के बाद उसी का पद सबसे ऊंचा था। असद आगे लिखते हैं कि “इस अवधारणा को कि क़ुरआन में हामान के नाम से ज़िक्र किया गया व्यक्ति आमोन का सबसे बड़ा पुजारी था फ़िरऔन के इस आदेश से बल मिलता है कि “हामान मेरे लिए एक ऊंचा कलश बना जिस पर चढ़ कर मैं मूसा के ख़ुदा को देखूं”, फ़िरऔन का यही विचार मिस्र के ऊंचे ऊंचे अहरामों (पिरमिडों) के निर्माण का आधार हो सकता है, और उसी ऊंची छत पर बैठ कर यह प्रधान पुजारी अपना काम अंजाम देता होगा ..... फ़िरऔन का यह आदेश भी ख़ुदा के बारे में मूसा की धारणा का उपहास उड़ाने और उसका अपमान करने का एक अंदाज़ था कि कोई ख़ुदा ऐसा भी है जो हर चीज़ पर नियंत्रण रखता है और सबसे ऊंचा व महान है” (दि मैसेज आफ क़ुरआन, आयत 28:6 पर व्याख्यात्मक टिप्पणी नम्बर 6, और आयत 28:38 पर व्याख्यात्मक टिप्पणी नम्बर 37)।

फ़िरऔन के कुतर्क का जवाब देते हुए हज़रत मूसा एक ज़बरदस्त और प्रभावी वक्ता और प्रतिवादी लगते हैं हालांकि क़ुरआन के अनुसार ही उनके अन्दर बोलने में तुतलाने की समस्या थी। जब फ़िरऔन ने मूसा को यह व्यंग किया कि वह उसके आधीन ही पल बढ़ कर जवान हुए हैं तो मूसा ने यूं जवाब दिया:“और (क्या) यही तेरा अहसान है कि जो तू मुझ पर रखता है कि तू ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है” (22:26)। और जब फ़िरऔन ने यह पूछा कि “समस्त जगत के मालिक होन का क्या मतलब है” ? तो मूसा की ज़बान सो जो कुछ निकला उसे सुन कर उनका दुशमन सटपटा कर रह गयाँ “मूसा ने कहा कि आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ इन दोनों में है सब का मालिक अगर तुम लोगों को विश्वास हो”। फ़िरऔन ने अपने दरबारियों से कहा क्या तुम सुनते नहीं , मूसा ने कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का मालिक”। मूसा के इस बयान को समझने के लिए यह ज़हन में रखना होगा कि हमैशा से ही बहुत से लोगों का यह बहाना रहा है कि वो तो अपने बाप दादा की आस्था का

अनुसरण करते हें, और मिस्र में तो ख़ास तौर से पूर्वजों की पूजा होती थी। जब फिरऔन ने अपने दरबारियों से कहा कि "यह पैगम्बर जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है बावला है" तो मूसा ने तुरन्त उत्तर दिया कि "पूरब और पश्चिम और जो कुछ इन दोनों में है सब का मालिक अगर तुम्हारे पास समझ हो" (26:23-28)। बनी इस्राईल को फ़िरऔन के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए मूसा ने बहुत ही प्रभावपूर्ण शब्दों में अपना संदेश साफ़ साफ़ दिया कि "बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दीजिए और उन्हें कष्ट न दीजिए" (20:47; 7:105), और "अल्लाह के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो" (44:18)। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि हज़रत मूसा ने अल्लाह का जो पैग़ाम फ़िरऔन को दिया उसमें न केवल एक अल्लाह की इबादत करने का निर्देश था बल्कि अल्लाह के बन्दों को उत्पीड़न से मुक्त देने का भी आदेश था।

इस पूरी परिचर्चा में हमें हारून की कोई भूमिका नज़र नहीं आती, जिन्हें अपनी मदद के लिए उन्होंने अल्लाह से इस वजह से मांगा था कि हारून बातचीत में.ज्यादा दक्ष थे (16:13; 28:34)। लेकिन फिर भी क़ुरआन ने हज़रत मूसा के जो तर्क और जवाब नक़ल किए हैं उसके हिसाब से मूसा बड़े सफ़ल वार्ताकार और वाक्यपटुता वाले दिखाई देते हैं इसके बावजूद कि इस सम्बंध में उन्हें अपनी कमज़ोरी का अहसास था और इसके बावजूद कि फ़िरऔन बहुत निर्शंस और दमनकारी था और मूसा को अपनी बात स्पष्ट तरीक़े से न कह पाने की आशंका थी (34:52)। क्या हारून ने इस बातचीत और परिचर्चा में भाग लिया था और क्या क़ुरआन में हज़रत मूसा के लिए समझा जाने वाला शब्द "वह" हारून के लिए है और यह शब्द हारून के हैं जो क़ुरआन में नक़ल किए गए हैं ? या क़ुरआन ने दोनों के दावे नकल किए हैं ? कि इन दावों को नक़ल करने का मक़सद एक तरफ़ अल्लाह के पैगम्बरों के तर्क बयान करना है और दूसरी तरफ़ फिरऔन के तर्कों को सामने लाना है ताकि दोनों के तर्कों का अन्तर सामने आ जाए और यह मालूम हो जाए कि किसने क्या कहाँ या यह कि इस आमने सामने के मुक़ाबले में हारून ने कोई भाग नहीं लिया ? या क़ुरआन में हारून के शब्द कहीं भी नक़ल नहीं किए गए हैं ?

मूसा ने मिस्र में फ़िरऔन के अत्याचार और उत्पीड़न के मुक़ाबले पर अपनी क़ौम का नैतृत्व अल्लाह के मार्गदर्शन में बहुत मज़बूती के साथ कियाँ अपनी क़ौम को उन्होंने अपने ईमान और अपने संस्कारों पर जमे रहने और उस बहुसंख्यक समाज में विलीन न होने का निर्देश दिया जिसकी फ़िरऔन ने "अक़ल मार दी थी और वो उसकी मानते (थे क्योंकि) बेशक वो नाफ़रमान लोग थे" (43:54)। जो ईमान वाले भयंकर उत्पीड़न के साए में जी रहे थे और उससे बच निकलने का कोई रास्ता उनके पास नहीं था उनको अल्लाह की तरफ़ से किया गया मार्गदर्शन उन सभी ईमान वालों के लिए एक सीख है जो ऐसी स्थितियों से कभी दोचार हो:"अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ और अपने घरों को क़िबला (अर्थात मस्जिदें) ठहराओं और नमाज़ पढ़ो और मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दो" (10:87)। मूसा का नैतृत्व

सीना के रेगिस्तान में और खुल कर सामने आया जब वो फ़िरऔन के उत्पीड़न से मुक्ति पा चुके थे और आज़ादी की समस्याओं तथा विपत्तियों से दोचार थे क्योंकि लम्बे समय तक बंधुआ और दास जीवन जीते रहने के बाद जब वो आज़ाद हुए तो नई स्थिति उनके लिए एक चुनौती बनी हुई थी। इन परिस्थितियों में हज़रत हारून को भी मूसा की मदद करने का .ज़्यादा मौक़ा मिला और जब मूसा तूर पर अल्लाह से बातचीत करने के लिए चले गए तो हारून को उनकी जगह लेने का मौक़ा मिला।

क़ुरआन का बयान है कि फ़िरऔन के डर की वजह से मूसा की दावत पर केवल थोड़े से नौजवान ही ईमान लाए थे (10:83)। यह बात .ज़्यादा समझ में आने वाली है कि ये नौजवान मिस्री नहीं थे बल्कि बनी इस्राईल के ही कुछ नौजवान थे जिन्होंने ख़ुद को मूसा की दावत के लिए समर्पित कर दिया था और मूसा के अनुयायि बन गए थे। लेकिन बाइबिल यह कहती है कि बहुत से मिस्री भी बनी इस्राईल के मिस्र से निकलते समय उनके साथ शामिल हो गए थे (एक्सोडसः12:38)। जो जादूगर मूसा के आग्रह पर ईमान ले आए थे वो निश्चित रूप से मिस्री (क़िब्ती) ही थे लेकिन क्या वो सब या उनमें से कुछ फ़िरऔन की सज़ा से बच निकले ? क्या इस सज़ा या धमकी का कोई प्रभाव मिस्रियों पर पड़ा ?

जहाँ तक बनी इस्राईल का मामला है तो जब मूसा उनके पास आ गए तो उनमें से अधिकतर लोग जल्दी से जल्दी नतीजा निकलने की उम्मीद करने लगे लेकिन उन्होंने देखा कि ज़ुल्म व सितम तो बराबर जारी हैं, और मूसा ने उन्हें पूरी .ढ़तो जवाब दिय और समझायः"मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद मांगो और जमे रहो, निश्चित रुप से ज़मीन तो अल्लाह की है और वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका मालिक बना देता है, और आख़िर में भला तो डरने वालों का है, वो बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम कष्ट झेलते रहे और आने के बाद भी। मूसा ने कहा कि क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुशमन को हिलाक कर दे और उसकी जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाए फिर देखे के तुम कैसे अमल करते हो" (7:128-129)।

मूसा के वो चमत्कार जिनके सामने मिस्र के माहिर जादूगर लाचार हो गए थे, तो इस बारे में क़ुरआन जादू और जादू क्रिया की कड़ी निन्दा करते हुए यह कहता है कि जादू एक भ्रम है जो लोगों की नज़र में अटक जाता है और उन्हें कुछ से कुछ दिखाने लगता है (7:116, और देखें 20:66) और उससे किसी चीज़ की प्राकृतिक वास्तविकता और वास्तविक स्थिति में कोई बदलाव नहीं होता (20:69)। क़ुरआन कहता है कि जादूगरों का कल्याण नहीं हो सकता (10:77; 20:69), और यह कि जादू का प्रभाव समाप्त हो जाएगा (10:81)। ख़ुद मिस्र के जादूगरों द्वारा यह बात सि) हो गयी कि जब वो मूसा से हार गए और उनके संदेश को मान लिया, और क़ुरआन में उनकी यह बात नक़ल की गयी कि वो तो केवल लाभ अर्जित करने के लिए अपने जादू दिखा रहे थे (7:113; 26:41)। जादू या "सहर" की निन्दा क़ुरआन में एक

और जगह भी की गयी है और यह बताया गया है कि यह एक शैतानी क्रिया है, इंसानों को नुक़सान पहुंचाने के लिए वह यह काम करता है और पति-पत्नि में दूरी पैदा कर देता है और उनके आपसी प्रेम व हमदर्दी को समाप्त कर देता है (2:102)।

जब जादू को क़ुरआन में मना किया गया है और इसकी बुराई बयान की गयी है तो फिर मूसा को जो चमत्कार दिए गए थे वो जादू क्यों लगते थे और फ़िरऔन व उसके दरबारियों ने मूसा और उनके भाई को जादूगर क्यों कहा था ? (7:109; 20:63; 26:34; 40:24; 43:49)। हज़रत मूसा के चमत्कारों को अल्लाह और आख़िरत पर ईमान से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए, उन्होंने अपने चमत्कारों का प्रदर्शन अपनी उन शक्तियों को साबित करने के लिए किया जो उन्हें अल्लाह ने अपना पैग़ाम देने के लिए प्रदान की थीं। उन्होंने इन चमत्कारों का प्रदर्शन कोई निजी फ़ायदा प्राप्त करने के लिए नहीं किया, बल्कि उल्टा यह हुआ कि जब उन्होंने जादूगरों पर अपना बर्चस्व सि) कर दिया तो उन पर और उनकी क़ौम पर फिरऔन ने और .ज्यादा अत्याचार करने शुरू कर दिए। अतःमूसा के चमत्कारों का मक़सद मिस्र वालों को सम्बोधित करना और अपने पैग़म्बर होने को जताना था और उनका ध्यान आकर्षित करने लिए उनके साथ वो चमत्कार थे जो .ज्यादा दिलचस्प और प्रभावी थे, और इन चमत्कारों से उन्होंने जादू का झूठ होना सि) कर दियाँ उनके चमत्कारों का प्रभाव फ़िरऔन और उसके दरबारियों के बजाए ख़ुद जादूगरों पर ख़ास तौर से हुआ। हम यह बात नहीं जान सकते कि लोगों ने जब जादूगरों पर मूसा और उनके चमत्कारों के बर्चस्व को देख लिया और अपने अपने घरों को लोट गए तो उन्होंने या उनमें से कुछ लोगों ने क्या प्रभाव लियाँ फ़िरऔन के आतंक की वजह से आम लोग हज़रत मूसा की बात नहीं मान सकते थे, और ख़ास तौर से उनका कोई गुट इकट्ठा हो कर हज़रत मूसा के साथ नहीं आ सकता था (10:83)। इस कहानी के अन्त में क़ुरआन फ़िरऔन की क़ौम के एक व्यक्ति का ज़िक्र करता है जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता था (40:28-34; 38:45)। यह व्यक्ति मिस्र में हज़रत यूसुफ़ के पैग़म्बर होने और उनके संदेश की जानकारी रखता था (40:34), बल्कि उनसे भी पहले हज़रत नूह और हज़रत हूद व हज़रत स्वालेह के संदेश से भी अवगत था (40:30-31)। क्या वह उन लोगों में से था जो फ़िरऔन के परिवार या दरबार में इतिहास और धर्म का ज्ञान रखने वाले थे? या वह कोई अरब था जिसे एक ज्ञानी होने की बदौलत फ़िरऔन के दरबार में उसकी संगत मिल गयी थी?

क़ुरआन एक महिला का भी उल्लेख करता है जो फ़िरऔन के परिवार से थी और ईमान रखती थीः"और मोमिनो के लिए (एक) मिसाल (तो) फ़िरऔन की पत्नि की दी कि उसने अल्लाह से प्रार्थना की कि ऐ पालनहार मेरे ले जन्नत में अपने पास एक घर बना और मुझे फ़िरऔन और उसके कर्मों से मुक्ति दे और ज़ालिम लोगों के हाथ से मुझको निकाल" (66:11)। क्या यह वही महिला थी जिसने मासूम बच्चे (मूसा) को दरिया में तैरते हुए ताबूत से निकलवाया था और फिर महल में ही उसके पालन पोषण की सलाह यह कह कर दी थी

कि इसको क़त्ल न करना शायद यह हमें फ़ायदा पहुंचाए या हम इसे बेटा ही बना लें (28:9)? या वह केवल एक दत्तक माता ही नहीं थी बल्कि मूसा की दावत पर ईमान भी ले आई थी? या इन दोनों आयतों में अलग अलग महिलाओं का हवाला है ? क़ुरआन चूंकि घटनाओँ का उल्लेख इतिहास को सुरक्षित करने के लिए नहीं करता बल्कि सीख और सबक़ के लिए करता है इसलिए ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जो सवाल हमारे मन में आते हैं उनका जवाब हमें क़ुरआन के बयानों में नहीं मिलता, हाँ सीख और सबक़ लेने का पूरा पूरा सामान इसमें हमैशा मौजूद रहता है।

ज़ालिमों पर एक के बाद एक अज़ाब आते रहे, उन्हें कठिन स्थितियों का सामना करना पड़ा, उनमें बीमारियाँ फैलीं, सूखाग्रस्त रहे, बाढ़ग्रस्त हुए, टिड्डियों के झुण्ड उन पर आए, जुऐं उनमं फैल गयीं और पानी ख़ून बन गया (7:130-133)। जिस तह हज़रत इब्राहीम ने हज़रत लूत की क़ौम पर अज़ाब की आमद को देखते हुए वहाँ के निर्दोषों या ईमान वालों के बारे में हुज्जत की थी इसी तरह यहाँ भी कहा जा सकता है कि उन निर्दोषों की ज़िम्मेदारी क्या थी जो कुकर्मियों के साथ इन प्रकोपों का शिकार हुए। यहं हम समाज के प्रति व्यक्तियों की ज़िम्मेदारी पर ध्यान दे सकते हैं और इस सच्चाई को आत्मसात कर सकते हैं कि निष्क्रियता और आत्मसंतोष से किसी समाज को यह मौक़ा नहीं मिलता कि ख़ुद को ठीक कर सके, इसलिए सामाजिक बुराइयाँ और सामाजिक भृष्टाचार पूरे समाज को नुक़सान पहुंचाता है और उसके नुक़सान से वो लोग भी दोचार होते हैं जो ख़ुद बुरे काम नहीं करते लेकिन बुराइयों को फैलने से रोकने के लिए भी कुछ नहीं करते। ‘‘और उस फ़ितने से डरो जो ख़ास तौर से उन्ही लोगों पर न आएगा जो तुम में पापी हैं और जान रखों कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला हे’’ (8:25), ‘‘और जो लोग जालिम हैं उनके साथ न लगो नहीं तो तुम्हें (नरक की) आग आ लपेटेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारे और मित्र नहीं है अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ लग गए तो फिर तुम को (कहीं से) मदद न मिल सकेगी’’ (11:113)। इसलिए अच्छी बातों व कामों का प्रचार करना और बुरे कामों व बातों से रोकना अल्लाह के दीन में अनिवार्य है (3:104,110), और जो लोग इस सामूहिक ज़िम्मेदारी से नज़र चुराते हैं उनकी क़ुरआन में कई जगह निन्दा की गयी है (5:78-80)।

इसके बावजूद कि मिस्र के लोगों में ताऊन की बीमारी फैली लेकिन ऐसा नहीं लगता कि इन प्रकोपों को देख कर भी ज़ालिम ज़ुल्म से रुके हों , ‘‘हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और जुएं और मैण्ढक और ख़ून; कितनी खुली हुई निशानियाँ भेजी मगर वो अहंकार में ही पड़े रहे, और वो लोग थे ही पापी गुनाहगार’’ (7:133)। उन्होंने मूसा से वायदा किया कि अगर वह अल्लाह से दुआ करें कि यह विपत्ति हम से टल जाए तो हम आपकी दावत पर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल को आपके साथ जाने देंगे ‘‘लेकिन जब हम एक निर्धारित समय के लिए जिस तक उनके पहुंचना था उनसे अज़ाब दूर कर देते तो वह अपना वचन तोड़ डाले

थे" (7:134-135)। उनसे पहले भी यह हो चुका है कि इस दुनिया में अल्लाह का अज़ाब उन लोगों पर आया जिन्होंने सत्य को अहंकार में झुटलाया और अल्लाह के पैग़म्बरों और उन पर ईमान लाने वालों को क़त्ल कर देने या बस्ती से निकाल देने की धमकियाँ दीः"तो हम ने उन सब को (जिन्होंन घमण्ड में हमारे पैग़ाम को झुटलाया) उनके पापों की वजह से पकड़ लिया, उनमें कुछ तो ऐसे थे जिन पर हम ने पत्थरों की बारिश की और कुछ ऐसे थे जिनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा और कुछ ऐसे थे जिनको हम ने धरती में धंसा दिया और कुछ ऐसे थे जिनको डुबो दिया और अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करने वाले थे" (29:40द्ध। बाद के युगों में भी हालांकि अल्लाह के पैग़म्बरों को झुटलाया गया और उन पर नैतिक रुप से या/और शरीरिक हमले किए गए लेकिन उन पर इस दुनयिा में अल्लाह की तरफ़ से सीधे सीधे कोई अज़ाब नहीं आयाँ हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद सल्ल० को झुटलाने वालों के मामले में यह बात ज़ाहिर है। अपने पैग़म्बरों की तरफ़दारी में अल्लाह के इस हस्तक्षेप को क़ुरआन में "जो कुछ पिछले लोगों के साथ हो चुका" कह कर ज़िक्र किया गया है (8:38; 15:13; 18:55; 35:43), "जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनमें भी अल्लाह का नियम यही रहा है" (33 38,62), "(यह) अल्लाह का नियम (है) जो उसके बन्दों के बारे में चला आता है" (40:85)। बाद के ज़माने में अल्लाह ने आम तौर से लोगों के लिए यह नियम रखा है कि या तो इस दुनिया में सक्रिय अल्लाह के बनाए प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत अपने बुरे कर्मों की सज़ा भुगतते रहते हैं और उनके अन्दर नैतिक या शरीरिक बीमारियाँ कुकर्मों के बुरे नतीजों के रूप में आती रहती हैं, और अल्लाह ने अन्तिम सज़ा आख़िरत के लिए रोक कर रखी है। क़ुरआन ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ये प्राकृतिक नियम मुसलमानों पर भी लागू होते हैं। वो जब सत्य व न्याय के दुशमनों के ख़िलाफ संघर्ष करते हैं तो उन्हें प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत कामयाबी या नाकामी मिलती हैः"अगर तुम्हें घाव लगा है तो उन लोगों को भी ऐसा घाव लग चुका है और ये दिन हैं कि उनको लोगों के बीच में बदलते रहते हैं और इससे यह भी मक़सद था कि अल्लाह ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और अल्लाह अन्याय करने वालों को पसन्द नहीं करता" (3:140), "यह आदेश (याद रखो) और अगर अल्लाह चाहता तो (और तरह) इनसे बदला ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी परख एक (को) दूसरे से (लड़वाकर) करे और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए उनके कर्मों को अल्लाह हरगिज़ व्यर्थ नहीं करेगा" (47:4)।

❁ ❁ ❁

हज़रत मूसा और बनी इस्राईल सीना के मरुस्थल में

और जब हमने तुम को आले फ़िरऔन से निजात दिलाई जो तुमको ईज़ा पहुँचाने में लगे रहते थे, तुम्हारे बेटों को ज़िबह कर डालते थे, और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ा इम्तिहान था तुम्हारे रब की तरफ़ से। और जब हमने (दरिया-ए-शौर) को तुम्हारे सबब फाड़ दिया, फिर हमने तुमको (डूबने से) बचा लिया, और फ़िरऔन के लोगों को (मअ फ़िरऔन) ग़र्क़ कर दिया, और तुम (उस वक़्त) देख रहे थे। और जब हमने मूसा से चालीस रात का वादा किया फिर तुमने बछड़े को (माबूद) बना लिया, जब मूसा चले गए तो तुम ये ज़ुल्म करने लगे। फिर (भी) हमने तुमसे दर-गुज़र कर दिया, इतनी बड़ी बात के बाद इस उम्मीद पर के एहसान मानोगे। और जब हमने मूसा (अ.स.) को किताब (तौरेत) अता की जो फ़ैसलाकुन चीज़ है, इस उम्मीद पर के तुम सीधे चलोगे। और जब मूसा (अ.स.) ने अपनी क़ौम से कहा के तुमने अपने ऊपर बड़ा ज़ुल्म किया है के तुमने बछड़े को (माबूद) बनाया तो तुम अपने ख़ालिक़ के सामने तौबा करो, और आपने आपको क़त्ल करो, तुम्हारे ख़ालिक़ के नज़दीक तुम्हारे लिए यही बेहतर है। फिर वो मुतवज्जह हुआ तुम पर, बिलाशुबहःवो तौबा क़ुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। और जब कहा तुमने ऐ मूसा! हम तुम्हारे कहने से ईमान लायेंगे ही नहीं जब तक हम ख़ुद अल्लाह को ऐलानिया तौर पर न

وَ اِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ
سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ
يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِیْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ
الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَ
اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى
اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا
عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ
الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذْ قَالَ
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْۤا اِلٰى
بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ
لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ
يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ
جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ

تَنْظُرُوْنَ ۝٥٥ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٥٦ وَ ظَلَّلْنَا
عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَ
السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ
وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ۝٥٧ وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ
الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا
وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ
نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَفْسُقُوْنَ ۝٥٩ وَ اِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا مِنْ
رِّزْقِ اللّٰهِ وَ لَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ۝٦٠ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ
نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا
وَ قِثَّآئِهَا وَ فُوْمِهَا وَ عَدَسِهَا وَ بَصَلِهَا ؕ
قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ
هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا
سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَ
الْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ

देखें (पस इस गुस्ताख़ी पर) एक बिजली की कड़क ने तुम को आ पकड़ा, और तुम देखते (ही) रहे। फिर हमने तुम्हारे मर जाने के बाद तुमको ज़िन्दा कर उठाया, ताके शायद तुम एहसान मानो। और हमने तुम पर बादलों का साया कर दिया, और (ग़ैब से) तुम पर तरनजबीन और बटेरें पहुंचाई, खाओ तुम नफ़ीस नफ़ीस चीज़ें जो हमने दी हैं, उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया बल्के अपना ही नुक़सान किया। और जब हमने कहा उस बस्ती में दाख़िल हो जाओ, फिर खाओ जहाँ से जी चाहे, और कोई तकल्लुफ़ न करो, और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो जाओ, ज़बान से कहते जाओ तौबा है, तौबा है, हम बख़्शेंगे तुम्हारे क़ुसूर (और ख़तायें) और अंक़रीब हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे। सो उन ज़ालिमों ने एक और कल्मा बदल डाला, जो ख़िलाफ़ था उस कल्मे के जिस के कहने की उनसे फ़रमाईश की गई थी, उस पर हमने उन ज़ालिमों पर एक और आफ़ते समावी नाज़िल की, इस वजह से के वो नाफ़रमानी किया करते थे। और जब मूसा (अ.स.) ने पानी की दुआ मांगी, अपनी क़ौम के वास्ते, उस पर हमने कहा के तुम अपने असा को पत्थर पर मारो, पस फ़ौरन ही उससे बारह चश्मे फूट निकले, हर गिरोह ने अपना अपना चश्मा मालूम कर लिया, खाओ और पियो अल्लाह के रिज़्क़ से, और फ़ितना व फ़साद ज़मीन में ने फैलाओ। ओर जब तुमने कहा के ऐ मूसा (अ.स.)! हम एक ही क़िस्म के खाने पर कभी भी क़नाअत नहीं करेंगे तो आप हमारे लिए अपने रब से दुआ करें के वो हमारे लिए ऐसी चीज़ें पैदा करें जो ज़मीन में उगती हैं। साग, ककड़ी, गैहूँ, मसूर, प्याज़, मूसा (अ.स.) ने कहा क्या तुम आला दर्जे की चीज़ों के बदले में अदना दर्जे की चीज़ें लेना चाहते हो। किसी शहर में चले जाओ। वहाँ तुम को वो चीज़ें मिल जायेगी जो तुम तलब कर रहे हो।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ
يَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَ النَّصٰرٰى وَ
الصّٰبِـِٔيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ
رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْ لَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ
الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ لَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ
اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ
كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٔيْنَ ﴿٦٥﴾ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَ مَا خَلْفَهَا وَ مَوْعِظَةً
لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ
اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْۤا
اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ
اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ
اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّ لَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ
بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ
قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ

और उन पर ज़िल्लत और पस्ती जम गई और वो ग़ज़बे इलाही के मुसतहिक़ हो गय। ये इसलिए हुआ के ये लोग अल्लाह की आयात को नहीं मानते थे। और रसूलों को नाहक़ मार डालते थे। दूसरा सबब ये है के ये (अल्लाह और रसूल की) इताअत नहीं करते थे, और हद से आगे बढ़ जाने वाले थे। बिलाशुबहःमुसलमान, यहूदी, नसारा और साबेईन में से जो भी अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर यक़ीन रखता हो और नेक काम करता हो वो अपने रब के पास बडे अज्र का हक़दार है। उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न रंगो ग़म। और जब हमने तुम से अहद ले लिया और तुम पर तूर को मोअल्लक़ रखा, तो तुम मज़बूत पकड़ लो इसको जो हमने तुम को दी है और उसको याद रखो जो इसमें है, ताके तुम मुत्तक़ी बन जाओ। फिर तुम उस क़ौलो क़रार के बाद (भी) फिर गए। अगर अल्लाह तम पर अपना फ़ज़्ल और अपनी रहमत न करता तो तुम ज़रूर तबाह और हलाक हो जाते। और तुम जानते ही हो के तुम में से जिसने शरीअत के हुक्मे मुतल्लिक़ा यौमे हफ़्ता की ख़िलाफ़वर्ज़ी की, सो हम ने उसने कह दिया के तुम बन्दर ज़लील बन जाओ। फिर हमने उसको एक इबरत अंगेज़ वाक़ेया बना दिया। उनके लिए भी जो उनके सामने थे, और उनके लिए भी जो उनके बाद में आते रहे। और मौजिबे नसीहत बनाया उनके लिए जो अल्लाह से डरने वाले हैं। और जब मूसा (अ.स.) ने अपनी क़ौम से कहा के (ऐ मेरी क़ौम)! अल्लाह तुम को हुक्म देता है के एक बैल ज़िब्ह करो तो उन्होंने कहा क्या आप हमको मसख़रा बनाते हैं। मूसा ने कहा मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ। के मैं जहालत वालों का सा काम करूं। तो उन्होंने कहा के आप अपने रब से दरख़्वास्त कीजिये के वो उस बैल के हमसे औसाफ़ बयान कर दें तो आपने कहा वो ऐसा बैल हो के न बूढा हो न बहुत

فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ۝٦٩ قَالُوا ادْعُ
لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ
تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ۭ وَ اِنَّآ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ
لَمُهْتَدُوْنَ ۝٧٠ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَ لَا تَسْقِي
الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ۭ قَالُوا
الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۭ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا
يَفْعَلُوْنَ ۝٧١ وَ اِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ
فِيْهَا ۭ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝٧٢
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ۭ كَذٰلِكَ يُحْيِ
اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝٧٣ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ۭ
وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ
الْاَنْهٰرُ ۭ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ
مِنْهُ الْمَاۗءُ ۭ وَ اِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ
خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ۝٧٤

बच्चा हो। बल्के दोनों उम्रों के बीच में हो, अब कर डालो जो तुमको हुक्म मिला है। अब कहने लगे आप दरख़्वास्त कीजिये अपने रब से के वो हमसे ये बयान करे के उसका रंग कैसा है। आपने कहा वो फ़रमाता है के वो ज़र्द रंग का बैल हो, .ख़ुश रंग हो के देखने वाले उससे फ़रहत हासिल करें। अब कहने लगे के आप हमारी .ख़ातिर अपने रब से दरयाफ़्त कीजिए के उसके औसाफ़ क्या क्या हैं क्योंकि हमें उसे बैल में क़द्रे इश्तबाह है। अगर .ख़ुदा ने चाहा हम इस मर्तबा ठीक समझ लेंगे। मूसा ने कहा के अल्लाह फ़रमाता है के वो न तो हल में चला हो जिससे ज़मीन जोती जाती है। और न उससे ज़राअत की आबपाशी की गई हो। सालिम हो, उसमें कोई दाग़ न हो। कहने लगे अब आपने पूरी बात बताई है, फिर उसको ज़बह किया (उनकी हुज्जतों से) बज़ाहिर करते हुए मालूम ना होते थे। और जब तुम में से किसी ने एक आदमी को क़त्ल कर डाला, तो तुम एक दूसरे पर उसको डालने लगे और अल्लाह को उसका ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो तुम छुपाना चाहते थे। फिर हमने कहा केइस मुर्दे को उस बैल के किसी टुकड़े से छुआ दो। इसी तरह अल्लाह क़यामत के दिन मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा और अल्लाह अपनी निशानियाँ तुमको दिखाता है। ताके तुम अपनी अक़्ल से काम लो। फिर तुम्हारे दिल उन वाक़ेयात के बाद भी सख़्त ही रहे। गोया के तुम्हारे दिल पत्थर के मानिंद हैं, बल्के पत्थर से भी .ज़्यादा सख़्त हैं। और बाज़ पत्थर तो ऐसे नर्म होते हैं के उनसे फूट फूटकर बड़ी बड़ी नहरें जारी होते हैं। और उन ही पत्थरों में बाज़ ऐसे हैं जो शक़ हो जाते हैं, फिर उनमें से पानी निकलने लगता है। और उन ही पत्थरों में बाज़ ऐसे भी है। जो अल्लाह के .ख़ौफ़ से ऊपर से नीचे गिरने लगते हैं। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेख़बर नहीं है। (2:49-74; और देखें 7:160-162)

وَ لَقَدۡ جَآءَکُمۡ مُّوۡسٰی بِالۡبَیِّنٰتِ ثُمَّ
اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِہٖ وَ اَنۡتُمۡ
ظٰلِمُوۡنَ ﴿۹۲﴾ وَ اِذۡ اَخَذۡنَا مِیۡثَاقَکُمۡ وَ
رَفَعۡنَا فَوۡقَکُمُ الطُّوۡرَ ؕ خُذُوۡا مَاۤ اٰتَیۡنٰکُمۡ
بِقُوَّۃٍ وَّ اسۡمَعُوۡا ؕ قَالُوۡا سَمِعۡنَا وَ عَصَیۡنَا ٭
وَ اُشۡرِبُوۡا فِیۡ قُلُوۡبِہِمُ الۡعِجۡلَ بِکُفۡرِہِمۡ ؕ
قُلۡ بِئۡسَمَا یَاۡمُرُکُمۡ بِہٖۤ اِیۡمَانُکُمۡ اِنۡ
کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ﴿۹۳﴾

और मूसा (अलैहिस्सलाम) तुम लोगों के पास साफ़ साफ़ दलीलें लाए। उस पर भी तुम ने गऊशाला को मूसा के तूर पर चले जाने के बाद माबूद मान लिया। और तुम सितम ढा रहे थे। और जब हमने तुम से एहद लिया और कोहि तून को तुम पर ला खड़ा किया। जो हुक्म हम तुमको देते हैं वो तुम हौसला और पुख़्तगी के साथ इख़्तियार किया करो। और सुन लिया करो। उस वक़्त तो कह दिया के हमने सुन लिया। और हमसे अमल न होगा, क्योंकि उनके दिल कुफ़्र के सबब गौशाला ही में फंसे हुए थे। आप कह दीजिए के वो आमाल बहुत बुरे हैं जिनकी तालीम तुम्हारा ईमान दे राह है। अगर तुम हक़ीक़तन ईमान वाले हो। (2:92-93)

وَ لَقَدۡ اَخَذَ اللّٰہُ مِیۡثَاقَ بَنِیۡۤ
اِسۡرَآءِیۡلَ ۚ وَ بَعَثۡنَا مِنۡہُمُ اثۡنَیۡ عَشَرَ
نَقِیۡبًا ؕ وَ قَالَ اللّٰہُ اِنِّیۡ مَعَکُمۡ ؕ لَئِنۡ
اَقَمۡتُمُ الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَیۡتُمُ الزَّکٰوۃَ وَ اٰمَنۡتُمۡ
بِرُسُلِیۡ وَ عَزَّرۡتُمُوۡہُمۡ وَ اَقۡرَضۡتُمُ اللّٰہَ
قَرۡضًا حَسَنًا لَّاُکَفِّرَنَّ عَنۡکُمۡ سَیِّاٰتِکُمۡ وَ
لَاُدۡخِلَنَّکُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِہَا
الۡاَنۡہٰرُ ۚ فَمَنۡ کَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِکَ مِنۡکُمۡ
فَقَدۡ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیۡلِ ﴿۱۲﴾ فَبِمَا
نَقۡضِہِمۡ مِّیۡثَاقَہُمۡ لَعَنّٰہُمۡ وَ جَعَلۡنَا
قُلُوۡبَہُمۡ قٰسِیَۃً ۚ یُحَرِّفُوۡنَ الۡکَلِمَ
عَنۡ مَّوَاضِعِہٖ ۙ وَ نَسُوۡا حَظًّا مِّمَّا ذُکِّرُوۡا
بِہٖ ۚ وَ لَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰی خَآئِنَۃٍ
مِّنۡہُمۡ اِلَّا قَلِیۡلًا مِّنۡہُمۡ فَاعۡفُ عَنۡہُمۡ وَ
اصۡفَحۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۱۳﴾

बेशक अल्लाह बनी इस्राईल से अहद ले चुका है, और उनमें से हमने बारह सरदार मुक़र्रर कर दिये, और अल्लाह ने कहा के मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुम नमाज़ पाबंदी के साथ अदा करते रहोगे और ज़कात देते रहोगे, और मेरे रसूलों पर यक़ीन कामिल रखोगे और उनकी मदद करते रहोगे, और अल्लाह को क़र्ज़े हसना देते रहा करोगे, तो मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर करता रहूँगा और तुमको यक़ीनन बाग़ात में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, फ़िर जो इसके बाद भी कुफ़्र करेगा तो वो सीधे रास्ते से बहुत ही दूर जा पड़ेगा। तो फ़िर उनकी अहद शिकनी की वजह से हमने उन पर लानत की और हमने उनके दिलों को सख़्त बना दिया, वो कलाम को अपनी जगह से हटा कर दूसरी जगह कर देते हैं, और जो उनको नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा तो बिल्कुल भूल चुके, और आप को बिला नाग़ा उनमें से किसी ना किसी की ख़्यानत की इत्तेला मिलती रहती है, सिवाय उनके जो उसमे बहुत कम हैं, सो आप तो उनको माफ़ कर दें और दरगुज़र फ़रमायें, बेशक अल्लाह नेकों को महबूब रखता है। (5:12-13)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरे क़ौम! तुम याद करो अल्लाह के ईनामात को जो तुम पर हुए जबकि अल्लाह ने तुम में से बहुत से नबी बनाए, और तुमको बहुत से मुल्क अता किये, और तुमको वो चीज़े दी जो तमाम जहान वालों में से किसी को नहीं दीं। ऐ मेरी क़ौम! इस मुतबर्रिक मुल्क में दाख़िल हो जाओ, इसको अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे वापस मत चलो के फ़िर तुम ख़सारे में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा, ऐ मूसा! वहां तो बड़े बड़े ज़बरदस्त आदमी हैं, हम तो हरगिज़ वहां नहीं जायेंगे जब तक वो वहां से निकल ना जायें, हां अगर वो वहां से कहीं और चले जायें तो हम बेशक वहां जाने के लिए तैयार हैं। उन दो आदमियों ने कहा जो डरने वालां में से थे जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया था के तुम उनके दरवाज़े तक चलो सो जब दरवाज़े में पहुंचोगे इसी वक़्त तुम ग़ालिब आ जाओग, और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान रखते हो। उन्होंने कहा ऐ मूसा! हम तो हरगिज़ भी वहां क़दम ना रखेंगे, जब तक वो लोग वहां मौजूद हैं तो आप और आप का रब वहां चले जाईये, फ़िर दोनों ही लड़ लीजिये, हम तो यहीं बैठे रहेंगे। मूसा (अ.स.) ने दुआ की, ऐ मेरे रब! मैं अपनी जान और अपने भाई पर इख़्तियार रखता हूँ, सो आप हम दोनों और इस नाफ़रमान क़ौम के दरमियान फ़ैसला कर दीजिये। इरशाद हुआ के ये मुल्क उनके हाथ चालीस बरस तक ना लगेगा, बेकार परेशान और हैरान फ़िरते रहेंगे, सो आप इस नाफ़रमान क़ौम पर ग़म ना कीजिये। (5:20-26)

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ
اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّ اٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ
يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٠ يٰقَوْمِ
ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ
اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَرْتَدُّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٢١ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّ
فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖۗ وَ اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا
حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ۝٢٢ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ
يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا
عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ
غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَ عَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْۤا اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢٣ قَالُوْا يٰمُوْسٰۤى اِنَّا لَنْ
نَّدْخُلَهَاۤ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ
اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا
قٰعِدُوْنَ ۝٢٤ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ اِلَّا
نَفْسِيْ وَ اَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ
الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٥ قَالَ فَاِنَّهَا
مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ
يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى
الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝٢٦

और हमने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतार दिया तो उनका गुज़र एक क़ौम पर से हुआ जो अपने चन्द बुतों को लिये बैठे थे, वो कहने लगे के ऐ मूसा (अ.स.)

لَا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَ اِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ
الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْۤ

आप हमारे लिये एक माबूद ऐसा तजवीज़ कर दीजिये जैसे के इनके ये माबूद हैं, आपने कहा वाक़ई तुम भी एक जाहिल क़ौम हो। बेशक जिस काम में ये लोग लगे हुए हैं वो तबाह व बर्बाद हो जाएगा, और इनका ये काम जो ये कर रहे हैं बातिल (यानी बे बुनियाद) है। मूसा (अ.स.) ने कहा क्या अल्लाह के सिवा और किसी को तुम्हारा माबूद तजवीज़ कर दूं, हालांके अल्लाह ने दुनिया जहाने वालों पर तुमको फ़ौक़ियत दी है। और वो वक़्त याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन वालो से बचा लिया जो तुमको बड़ी सख़्त तकलीफ़ पहुंचाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर डालते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माईश थी। और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया था, और दस रातें और उन तीस रातों का ततसा बनाया, तो पूरी हुई तेरे रब की मुद्दत चालिस रातें, और मूसा ने अपने भाई हारून से कह दिया था के मेरे पीछे मेरी क़ौम का इन्तिज़ाम रखना और इस्लाह करते रहना और मुफ़्सिदीन के रास्ते पर ना चलना। और जब मूसा हमारे मौऊद वक़्त पर आ गए, और उनके रब ने उनसे बातें कीं, मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब! आप अपने दीदार से मुझे मुशर्रफ़ फ़रमाइये, ताके एक नज़र देख लूं, इरशाद हुआ तुम मुझे नहीं देख सकते, लेकिन तुम उस पहाड़ की तरफ़ की तरफ़ देखते रहो, सो अगर ये अपनी जगह क़ायम रहा तो ख़ैर, तुम भी देख सकते हो, पस उसके रब ने जब उस पर तजल्ली फ़रमाई, तो (एक ही) जलवा ने उस पहाड़ के परखच्चे उड़ा दिये और मूसा (अ.स.) बेहोश होकर गिर पड़े, जब वो होश में आए तो कहा बेशक आपकी ज़ात मुनज़्ज़ह है मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ और मैं उस पर सबसे पहले यक़ीन करता हूँ। इरशाद हुआ, ऐ मूसा! मैंने अपनी रिसालत और हमकलामी से तुमको औरों पर इम्तियाज़ बख़्शा है, तो जो मैंने तुम को

إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ
يَعْكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوا
يَـٰمُوسَى اجْعَل لَّنَآ إِلَـٰهًا كَمَا لَهُمْ
ءَالِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾
إِنَّ هَـٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَـٰطِلٌ مَّا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ
أَبْغِيكُمْ إِلَـٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعَـٰلَمِينَ ﴿١٤٠﴾ وَإِذْ أَنجَيْنَـٰكُم مِّنْ ءَالِ
فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ ۚ
يُقَتِّلُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ
نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِى ذَٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ
عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾ وَوَٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَـٰثِينَ
لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَـٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَـٰتُ
رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ
لِأَخِيهِ هَـٰرُونَ اخْلُفْنِى فِى قَوْمِى وَ
أَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾
وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَـٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ
رَبُّهُۥ قَالَ رَبِّ أَرِنِىٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ
لَن تَرَىٰنِى وَلَـٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ
اسْتَقَرَّ مَكَانَهُۥ فَسَوْفَ تَرَىٰنِى ۚ فَلَمَّا
تَجَلَّىٰ رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا وَخَرَّ
مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحَـٰنَكَ
تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾
قَالَ يَـٰمُوسَىٰٓ إِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ
بِرِسَـٰلَـٰتِى وَبِكَلَـٰمِى فَخُذْ مَآ ءَاتَيْتُكَ وَ

كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾ وَ كَتَبْنَا لَهٗ فِي
الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ
تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّ
اْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ
سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾ سَاَصْرِفُ
عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَ اِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ سَبِيْلًا ۚ
وَ اِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا
غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ
لِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ
يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَ اتَّخَذَ
قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ
عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ
لَا يُكَلِّمُهُمْ وَ لَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ
اِتَّخَذُوْهُ وَ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَ لَمَّا سُقِطَ
فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَ رَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ
قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَ يَغْفِرْ لَنَا
لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ وَ لَمَّا رَجَعَ
مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ
بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ
اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَ اَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَ
اَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ
ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَ كَادُوْا
يَقْتُلُوْنَنِيْ ۫ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَ

दिया उसको लो, और शुक्र करो। और हमने चन्द तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील उनको लिख कर दी तो उनको ख़ुद भी कोशिश के साथ अमल में लाओ और अपनी क़ौम को हुक्म करो, के उनके अच्छे अच्छे अहकाम पर अमल करें, मैं बहुत जल्द तुम को उन नाफ़रमानों का मुक़ाम दिखलाऊंगा। मैं उनको जो दुनिया में तकब्बुर करते हैं जिसका उनको कोई हक़ नहीं अपने अहकाम से बरगश्ता ही रखूंगा और अगर वो तमाम निशानियां भी देख लें तो भी वो उन पर ईमान नहीं लायेंगे, और अगर वो हिदायत का रास्ता देखें तो उसको अपना तरीक़ा नहीं बताते और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको ज़रूर अपना तरीक़ा बना लेते हैं, ये इसलिये होता है के वो हमारी अयात को झुटलाते हैं और वो उनसे ग़फ़्लत बरतते हैं। और जो हमारी आयात को और आख़िरत के होने का झुटलाया करते हैं, उनके सारे आमाल बर्बाद हो गए, और उनको वही सज़ा दी जाएगी जो वा करते थे। और मूसा की क़ौम ने उनके पीछे अपने ज़ेवरों में एक बछड़ा बना लिया जो एक क़ालिब था उसमें एक आवाज़ थी, क्या उन्होंने ये ना देखा के वो उनसे बात ना करता था, और ना वो उनको कोई राह बताता था, उसको उन्होंने माबूद बना रखा था, और उन्होंने ये बहुत ही बेढंगा काम किया। और जब वो नादिम हुए और मालूम हुआ के वो वाक़ेयात गुमराही में पड़ गए, तो कहने लगे, के अगर हमारा रब हम पर रहम ना करे और हमारा गुनाह माफ़ ना करे तो हम तो फ़िर कहीं के भी नहीं रहेंगे। और जब मूसा (अ.स.) अपनी क़ौम के पास वापस आए तो ग़ुस्सा और रंज में भरे हुए तो फ़रमाया के तुमने मेरे पीछे ये बड़ी ना माक़ूल हरकत की, क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्द बाज़ी कर ली? जल्दी से तख़्तियां एक तरफ़ रखीं और अपने भाई (हारून) का सर पकड़

لَا تَجْعَلْنِیْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ
رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِاَخِیْ وَ اَدْخِلْنَا فِیْ
رَحْمَتِكَ ۖ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۱۵۱﴾ اِنَّ
الَّذِیْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَیَنَالُهُمْ
غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ ذِلَّةٌ فِی الْحَیٰوةِ
الدُّنْیَا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُفْتَرِیْنَ ﴿۱۵۲﴾ وَ
الَّذِیْنَ عَمِلُوا السَّیِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِهَا وَ اٰمَنُوْۤا ؗ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَمَّا سَكَتَ عَنْ
مُّوْسَی الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَ فِیْ
نُسْخَتِهَا هُدًی وَّ رَحْمَةٌ لِّلَّذِیْنَ هُمْ
لِرَبِّهِمْ یَرْهَبُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ اخْتَارَ مُوْسٰی
قَوْمَهٗ سَبْعِیْنَ رَجُلًا لِّمِیْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّاۤ
اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَ اِیَّایَ ؕ اَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِیَ اِلَّا
فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ
تَهْدِیْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِیُّنَا فَاغْفِرْ
لَنَا وَ ارْحَمْنَا وَ اَنْتَ خَیْرُ الْغٰفِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾ وَ
اكْتُبْ لَنَا فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی
الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَاۤ اِلَیْكَ ؕ قَالَ عَذَابِیْۤ
اُصِیْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَ رَحْمَتِیْ وَ
سِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ
یَتَّقُوْنَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الَّذِیْنَ هُمْ
بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾

कर उनको अपनी तरफ़ घसीटने लगे, हारून ने कहा ऐ मेरी मां जाए! बात ये है के क़ौम ने मुझे बे हक़ीक़त समझा था और क़रीब था के मुझे मार डाले, तो तुम मुझ पर (सख़्ती करके) दुश्मनों को मत हंसाओं, और मुझ को उन ज़ालिमों के साथ मत मिलाओ। मूसा (अ.स.) ने कहा ऐ मेरे रब! आप मेरी और मेरे भाई की ख़ता माफ़ फ़रमा और हम दोनों को अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमायें, और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं। बेशक जो लोग गौसाला परस्ती में पड़े उनके लिए बहुत जल्द उनके रब की तरफ़ से ग़ज़ब और ज़िल्लत इस दुनिया की ज़िन्दगी में आन पड़ेगी, और हम इफ्तरा परदाज़ों को ऐसी ही सज़ा देते हैं। और जो बुरे कामों के मुर्तकिब हुए, फ़िर उन्होंने उसके बाद तौबा कर ली और ईमान को पुख़्ता कर लिया, बेशक तुम्हारा रब उसके बाद बख़्शने वाला और रहम करने वाला है। और जब मूसा (अ.स.) का ग़ुस्सा कम हो गया, तो वो तख़्तियां उठा लीं, और जो कुछ उनमें लिखा हुआ था वो अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत और रहमत थी। और मूसा (अ.स.) ने हमारे वक़्त मोईय्यन के लिए अपनी क़ौम के सत्तर आदमी मुंतख़िब किये, सो जब ज़लज़ले ने उनको पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता तो उनको और मुझको पहले ही से हलाक कर देता, क्या तू उस फ़ेअल की सज़ा में जो हम में से बे अक़्ल लोगों ने किया है, हमें हलाक कर देगा, ये तो तेरी आज़माईश है उससे जिसको तू चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत बख़्शे, तू ही हमारा कारसाज़ है, पस तू हमें बख़्श दे। और हम पर रहम फ़रमा, और तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और हमारे लिये इस दुनिया में भी भलाई लिख दे, और आख़िरत में भी, हम तेरी तरफ़ रूजू हो चुके, इरशाद हुआ जो मेरा अज़ाब है उसे तो जिस पर मैं चाहता हूँ नाज़िल करता

हूँ, और जो मेरी रहमत है, वो हर चीज़ पर शामिल है तो मैं उसको परहेज़गारों, ज़कात देने वालों और हमारी आयात पर यक़ीन रखने वालों के लिए लिख दूंगा।

(7:138-156)

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ
اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ
شُرَّعًا وَّ يَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ
كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾
وَ اِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ
قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى
رَبِّكُمْ وَ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا
ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ
السُّوْٓءِ وَ اَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ
بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا
عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا
قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾

और आप उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिये जो दरिया के किनारे आबाद थी, जब ये लोग हफ़्ते के बारे में हदे शरई से आगे बढ़े जो रहे थे, जबके उनके हफ़्ते के दिन उनकी मछलियां उने सामने पानी के ऊपर आ जाती थीं और जब हफ़्ते का दिन नहीं होता था तो नहीं आती थीं, हम इसी तरह आज़माते थे इस सबब से के वो नाफ़रमानी करते थे। और जब उनकी एक जमात ने कहा तुम उनको क्यों नसीहत करते हो जिनको अल्लाह हलाक करने वाला है या सख़्त अज़ाब देने वाला है तो उन्होंने कहा, ताके तुम्हारे रब के सामने माज़रत कर सकें, और शायद वो अल्लाह से डर जायें। जब उन्होंने उन बातों को फ़रामोश कर दिया जिनकी उनको नसीहत की जाती थी तो हमने उनको बचा लिया जो उस बुरी बात से रोकते थे और जो ज़ियादतियां करते थे उनको एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया, इस सबब से के वो कोई हुक्म मानते ही नहीं थे। पस जिस चीज़ से उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से आगे बढ़ गए, तो हमने उनको कह दिया के बन्दर ज़लील बन जाओ।

(7:163-166)

وَ اِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّ ظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ
اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾

और जब हमने पहाड़ को उठा कर छत की तरह उनके ऊपर मोअल्लिक़ कर दिया, और उनको यक़ीन हो गया के अब उन पर गिरा और कहा क़बूल करो, जो किताब हमने तुमको दी है मज़बूती के साथ, और याद रखो जो अहकाम उसमें हैं ताके तुम मुत्तक़ी बन जाओ।

(7:171)

ऐ याक़ूब की औलाद! हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन से निजात दी, और हमने तुम से कोहे तूर की दाहिनी तरफ़ आने का वादा किया, और हमने तुम पर मन्न व सल्वा उतारा। पाकीज़ा चीज़ें जो हमने तुम को दी हैं खाया करो, और उसमें हद से तजावुज़ ना करना, वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा, और जिस पर मेरा ग़ज़ब हो गया वही तबाह हो गया। और जो तौबा कर ले और ईमान ले आए, और अच्छे काम करे, फ़िर सीधे रस्ते पर चले, तो मैं उसको बख़्श दूंगा। और ऐ मूसा! तुमने अपनी क़ौम से आगे चले आने में क्यों जल्दी की। मूसा (अ.स.) ने कहा, वो सब मेरे पीछे आ रहे हैं, और ऐ मेरे रब! आगे चला आने में इसलिये जल्दी की के आप ख़ुश हों। अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा! हमने तेरी क़ौम को आज़माईश में डाल दिया है, तुम्हारे बाद सामरी ने उनको गुमराह कर दिया है। तो मूसा ग़ुस्सा और ग़म में भरे हुए अपनी क़ौम के पास वापस गए, और कहा, ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे रब ने तुमसे अच्छा वादा नहीं किया था, क्या मेरी जुदाई तुम को बहुत लम्बी मालूम हुई, या तुमने चाहा के तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर ग़ज़ब नाज़िल किया जाए, इसलिये तुमने जो वादा मुझसे किया था उसके ख़िलाफ़ किया। क़ौम के लोगों ने कहा, हमने अपने इख़्तियार से तेरे वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया बल्के हम तो लोगों के ज़ेवरों का बोझ उठाये हुए थे, फ़िर उसको हमने (आग में) डाल दिया, फ़िर इसी तरह सामरी ने डाल दिया। तो सामरी ने उनके लिये बछड़ा बना दिया, जिसकी आवाज़ थी, तो लोग कहने लगे के तुम्हारा और मूसा का माबूद तो ये है, मूसा (अ.स.) ये तो भूल गए। क्या ये देखते नहीं, वो माबूद उनकी किसी बात का जवाब नहीं देता, और ना उनके नुक़सान और नफ़े का कोई इख़्तियार रखता है। और हारून ने उनसे पहले भी कहा था के ऐ मेरी क़ौम! तुम तो इसके सबब

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ
عَدُوِّكُمْ وَ وٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ
الْاَيْمَنَ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى
(٨٠) كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ لَا
تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَ
مَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى (٨١) وَ
اِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى (٨٢) وَ مَآ اَعْجَلَكَ عَنْ
قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى (٨٣) قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا
قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَ اَضَلَّهُمُ
السَّامِرِيُّ (٨٥) فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ
غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ
يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ
عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ
مَّوْعِدِيْ (٨٦) قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ
بِمَلْكِنَا وَ لٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ
زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ
اَلْقَى السَّامِرِيُّ ۙ (٨٧) فَاَخْرَجَ لَهُمْ
عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ
اِلٰهُكُمْ وَ اِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ۭ (٨٨) اَفَلَا
يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّ لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا (٨٩) وَ لَقَدْ
قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا
فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَ اِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ

فَاتَّبِعُوْنِيْ وَ اَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ۝۹۰ قَالُوْا لَنْ
نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا
مُوْسٰى ۝۹۱ قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ
رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۝۹۲ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ
اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ۝۹۳ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا
تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ
اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَ
لَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ۝۹۴ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ
يٰسَامِرِيُّ ۝۹۵ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ
يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ
الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ
نَفْسِيْ ۝۹۶ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي
الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۪ وَ اِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَ انْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ
الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ
ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝۹۷ اِنَّمَآ
اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝۹۸ كَذٰلِكَ نَقُصُّ
عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَ قَدْ
اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝۹۹

से गुमराही में पड़ गए हो, इससे तुम्हारी आज़माईश है, और तुम्हारा रब रहमान है, तो तुम मेरी पैरवी करो, और मेरा कहा मानो। क़ौमे मूसा ने कहा, जब तक मूसा हमारे पास वापस ना आयें हम तो इसकी पूजा पर क़ायम रहेंगे। फ़िर मूसा ने हारून से कहा, ऐ हारून! तुमको किस चीज़ ने रोका था उस वक़्त जब तुम ने देखा के वो गुमराह हो रहे हैं। इस बात से के तुम मेरे पास चले आते, क्या तुम ने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ किया? हारून ने कहा, मेरे भाई मेरी डाढ़ी और सर के बालों को ना पकड़िये, मैं तो इससे डरा के आप ये ना कहें के तुमने बनी इस्राईल में तफर्क़ा डाल दिया, और मेरी बात को मलहूज़ ना रखा। (फ़िर सामरी से कहा) सामरी तेरा क्या हाल है। उसने कहा, मैंने ऐसी चीज़ देखी जो औरों ने नहीं देखी, फ़िर मैंने फ़रिश्ते की नक़्शे पा कीएक मुटठी भर ली, फ़िर वो (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी, और मेरे जी ने उसको अच्छा बताया। मूसा ने कहा, जा! तुझ को दुनिया की ज़िन्दगी में ये सज़ा है के कहता रहे के मुझ को हाथ ना लगाना, और तेरे लिये एक और वादा है (अज़ाब का) जो तुझ से ना टल सकेगा और जिस माबूद की पूजा पर तू क़ायम था इसको देख ले, हम इसको जला देंगे, फ़िर उसकी राख को उड़ा कर दरया में बिखेर देंगे। तुम्हारा माबूद तो बस अल्लाह ही है, जिसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं, उसका इल्म हर चीज़ पर मूहीत है। इसी तरह हम तुम से गुज़रे हुए हालात बयान कर देते हैं, और हमने अपने पास से नसीहत नामा की किताब अता की है। (20:80-99)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ مَآ
اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَ
هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝۴۳ وَمَا

और हमने मूसा को पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद किताब दी, जो लोगों के लिये बसीरत, हिदायत, और रहमत है, ताके वो नसीहत पकड़ें। और आप उस वक़्त कोहे तूर की मग़रबी जानिब में ना था जब हमने

كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَآ إِلٰى
مُوْسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾
وَلٰكِنَّآ أَنْشَأْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ أَهْلِ مَدْيَنَ
تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ إِذْ
نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّآ أَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा था, और तुम उस वक़्त मौजूद लोगों मे से नहीं थे। लेकिन हमने (मूसा के बाद) कई उम्मतों को पैदा किया, फ़िर उन पर मुद्दते तवील गुज़र गई, और ना तुम मदियन वालों में रहने वाले थे के उनको हमारी आयात पढ़ पढ़ कर सुनाते थे, हां हम ही तो पैग़म्बर भेजने वाले थे। ना आप उस वक़्त के जब हमने मूसा को आवाज़ दी तूर के किनारे थे, आपका भेजा जाना आपके रब की रहमत है, ताके आप उन लोगों को जिनके पास आप से पहले कोई डराने वाला नहीं आया, डरायें ताके वो नसीहत पकड़ें। (28:43-46)

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا
مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ
اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

मोमिनों! तुम उन लोगों की तरह ना होना जिन्होंने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अज़ीयत दी थी तो अल्लाह ने उनको बेऐब साबित कर दिया, और मूसा अल्लाह के नज़दीक बड़ी वजाहत वाले थे। (33:69)

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ
تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ أَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
إِلَيْكُمْ ۭ فَلَمَّا زَاغُوْٓا أَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۭ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾

और जब मूसा (अ.स.) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा देते हो हालांकि तुम जानते हो के मैं तुम्हारे पास अल्लाह का रसूल हूँ, फ़िर जब वो टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उनके दिलों को और टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह नाफ़रमानों को हिदायत नहीं देता। (61:5)

बनी इस्राईल को सीना के रेगिस्तान में अनोखी स्थितियों का सामना करना पड़ा और उनको उस मानसिक ग़ुलामी से मुक्ति प्राप्त करने का प्रशिक्षण मिला जिसमें वो लम्बे समय से ग्रस्त थे और जिसका सिलसिला पीढ़ी दर पीढ़ी चलता आ रहा था। उन्हें इस प्रशिक्षण के द्वारा अपने मामलों और अपने भाग्य को स्वयं अपने हाथ में लेने और अपनी ज़मीन अपने क़ब्जे में लेने के लिए तैयार किया गया और इसी से बाद में वो इस योग्य हुए कि उन्होंने अपना साम्राज्य स्थापित कियाँ सीना में चालीस वर्षों तक निवास के दौरान उन्होंने मरुस्थल की गर्मी व ढण्डक को झेला और सारी दुनिया से कट कर रेगिस्तान में भटकते रहे, इसी दौरान उन्हें

अल्लाह की तरफ़ से हिदायत मिली, उनकी परीक्षाएं हुईं, सज़ा भी भुगती और इनाम भी मिला, उन पर अल्लाह की .पा भी हुई और कई चमत्कार उन्होंने देखे। उन्हें अपनी इंसानी कमज़ोरियों का भी सामना करना पड़ा और शैतान के उक्सावों में भी वो उलझे, और उन समस्त अनुभवों से उन्हें और .ज्यादा चरित्रवान बनने में मदद मिली।

इस्राईलियों को फ़िरऔन से मुक्ति मिली और उन्हें मरुस्थल में छाया और आहार (''मन'' व ''सलवा'') उपलब्ध हुआ। उन्हें पानी भी मिलाः''फिर चट्टान से पानी के 12 धारे बह निकले और हर गुट ने अपना जलस्रोत पहचान लिया'' (2:57,60; 7:61)। उन्होंने अल्लाह के चमत्कारों का अनुभव किया और उसकी तरफ़ से उन्हें मार्गदर्शक निर्देश मिलेः''और याद करो जब हम ने तुम से वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पहाड़ को हमने बुलन्द किया, उस चीज़ को मज़बूती से पकड़ो जो हमने तुम्हें प्रदान की है और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो'' (2:63; 17:17)। लेकिन इन समस्त स्थितियों के बावजूद बनी इस्राईल अल्लाह के उपकारों के आभारी न बने और उसकी हिदायत के पाबन्द न रहे। वास्तव में सीना के रेगिस्तान से निकलने बाद वो जैसे ही उन लोगों के सम्पर्क में आए जो बुत पूजा करते थे तो उन्होंने उन लोगों की ही तरह उन बुतों में ख़ुदा को देखना शुरू कर दिया और मूसा से वह इच्छा की जिससे मूसा को बहुत धचका लगा (7:138-140)।

बनी इस्राईल को क़ुर्बानी के लिए एक गाय काटने का आदेश हुआ लेकिन वो इस आदेश को मानने में बहुत दुविधा में पड़े रहे और अपनी नाफ़रमानी का बहाना बनाने के लिए एक के बाद एक सवाल मूसा के माध्यम से अल्लाह के सामने रखते रहे (2:64-71)। जब उनमें से एक व्यक्ति की हत्या हो गयी और कोई भी इस हत्या का आरोप अपने सर लेने को तैयार नहीं था तो अल्लाह की तरफ़ से उन्हें यह निर्देश मिला कि इस काटी गयी गाय के एक टुकड़े से उस मृत व्यक्ति के ऊपर चोट लगाएं। इस तरह वो व्यक्ति जी उठेगा और स्वयं यह बता देगा कि उसके साथ क्या मामला हुआ, इस तरह वो एक व्यक्ति के प्राण को भी बचा सकते हैं और प्राण लेने वाले को सज़ा दे कर प्राण लेने को वर्जित भी कर सकते हैं (2:72-73)।

बनी इस्राईल ने उस समय तो सभी सीमाएं लांघ दीं जब उन्होंने मूसा के सामने यह शर्त रख दी कि वह उनका अनुपालन तब ही करेंगे जब उन्हें अल्लाह की हस्ती को आँखों के सामने दिखा दिया जाए, इस मांग के नतीजे में उनक ऊपर आसमानी बिजली गिरी जिससे वो मर गए, लेकिन अल्लाह ने उन्हें फिर से उठा खड़ा किया (2:55-56)। उन्हें मरुस्थल में हालांकि मन व सलवा जैसे खाने मिले लेकिन उन्होंने इसका धन्यवाद नहीं किया बल्कि ज़मीन से उगने वाली वनस्पतियों की मांग करने लगे जो रेगिस्तान में उगती ही नहीं थीं (2:61)। यह बात ख़ास तौर से ध्यान देने की है कि बनी इस्राईल ने मूसा से जब भी कोई मांग की तो यह कह कर की कि 'अपने रब से कहो' कि ऐसा करे, यह नहीं कहा कि 'आप हमारे रब से दुआ कीजिए'

(2:61,68-70, 5:24, 7:134)।

बनी इस्राईल ने अल्लाह के आदेश का सबसे गम्भीर इंकार उस समय किया जब उन्होंने उस ज़मीन (देश) में प्रवेश करने से मना कर दिया जिसका उन से वायदा किया गया था और उसमें उन्हें प्रवेश करने का निर्देश दिया गया था। उनकी बहुसंख्या ने अल्लाह और पैग़म्बर के फ़रमान को यह कर ठुकरा दिया कि इस देश में बहुत शक्तिशाली लोग रहते हैं और हमारे पास उनसे लड़ने की शक्ति नहीं है, और उन्होंने बहुत ढिटाई से हज़रत मूसा से यह कहा कि "तुम जाओ और तुम्हारा ख़ुदा जाए और लड़े, और हम तो यहीं बैठे रहेंगे" (5:24)। केवल दो व्यक्ति इसके लिए राज़ी हुए थे और उन्होंने निर्देश का पालन करने की कोशिश की थी। हज़रत मूसा अपनी क़ौम के लोगों के इस व्यवहार से इतने दुखी हुए कि उन्होंने लाचारी के साथ अपने रब से यह विनती की कि मेरा बस तो अपने ऊपर और अपने भाई पर ही है, और अल्लाह से कहा कि हमारे और हमारी क़ौम के बीच दूरी पैदा कर दीजिए। तब अल्लाह की तरफ से हजरत मूसा के पास जो संदेश आय वह यह था कि:"यह धरती अब उन पर चालीस वर्ष तक हराम (निषेध ा) रहेगी और ये भटकते ही रहेंगे" (5:20-26)।

क़ुरआन में बनी इस्राईल दो और अपराध भी बताए गए हैं जो सम्भवतःहज़रत मूसा की मृत्यू के बाद बनी इस्राईल ने किए। एक अवसर पर बनी इस्राईल ने एक नगर में प्रवेश करने के आदेश को न माना जहाँ उन्हें खाना मिलता। उन्हें कहा गया था कि नगर में दरवाज़े से प्रवेश करें और यह दुआ करते जाएं कि ऐ अल्लाह हमारे पापों का बोझ हम पर से उतार दीजिए, तो उन्हें मआफ कर दिया जाएगा और उन्हें.ज्यादा अच्छा बदला मिलेगा, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि उलटे उन शब्दों को बदल डाला जो उन्हें बताए गए थे, उनके इस घमण्ड के कारण उन्हें सजा दी गयी (2:58-59; 7:161-162)। दूसरे अवसर पर इस्राईलियों के साथ यह मामला हुआ कि "सब्त" के दिन (शनिवार को) उन्हें मछलियों का शिकार करने से रोक दिया गया था जबकि शनिवार को मछलियाँ दरियाँ ऊपर ही ऊपर तैरती दिखाई देने लगी थीं। बाक़ी दिनों में जब वो शिकार कर सकते थे तो मछलिया नीचे चली जाती थीं और पकड़ में नहीं आती थीं। इस तरह उनकी परीक्षा की जा रही थी कि वो शनिवार को क़ानून का उल्लंघन करके शिकार करने की ललक को पूरा करते हैं या संयम और सहनशीलता से काम लेते हैं (7:163)। इन स्थितियों के लिए क़ुरान में बहुत महत्वपूर्ण सीख दी गयी है। यह कि नेक लोगों को हमैशा ग़लत काम करने वालों के सुधार में लगा रहना चाहिए और कभी इस काम से रुकना नहीं चाहिए, क्योंकि व्यक्ति को अल्लाह की तरफ से दी गयी ज़िम्मेदारी पूरा करते रहना है चाहे उसमें उसे सफ़लता मिले या न मिले, और सुधारकों को व्यक्ति और समाज के सुधार की तरफ़ से कभी निराश नहीं होना चाहिए। हज़रत मूसा के साथ जो घटनाएँ घटीं और जो स्थितियाँ उनके सामने आईं वो आज के मुसलमानों के लिए भी प्रासंगिकता रखती

हैं, क्योंकि इंसानी मनोवैज्ञानिक कमज़ोरियाँ हमैशा मौजूद रहती हैं। जिस तरह से हज़रत मूसा को उनकी क़ौम ने दुख दिया इसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्लत्र की क़ौम को भी अपने पैगम्बर को सताने के ख़िलाफ़ क़ुरआन में बार बार चेतावनी दी गयी है (3:69; 61:5)।

एक और गम्भीर बात उस दौरान हुई जब हज़रत मूसा अल्लाह से कलाम करने के लिए चालीस रातों तक तूर पहाड़ पर रहे। हज़रत मूसा ने अल्लाह से इच्छा की कि वो अपना जलवा उन्हें दिखाए और अल्लाह ने यह जवाब दिया कि तुम मुझे नहीं देख सकते, अलबत्ता सामने की पहाड़ी पर देखो, अगर वह अपनी जगह बाक़ी रह जाए तुम भी मुझे देख लोगे। और जैसे ही हज़रत मूसा के रब ने उस पहाड़ पर अपनी चमक डाली तो वह पहाड़ चूर चूर हो गया और हज़रत मूसा बेहोश हो कर गिर पड़े। फिर जब उन्हें होश आया तो उन्होंने कहा कि:''पाक है आपकी हस्ती और मैं आपके समक्ष तौबा करता हूँ'' (7:143)। इस बीच हज़रत मूसा अपनी क़ौम को जल्दबाज़ी में छोड़ कर चले गए थे क्योंकि उन्हें अल्लाह से मिलने और बातचीत करने की उत्सुकता थी और वह अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते थे। क़ुरआन के बयानों से ऐसा लगता है कि हज़रत मूसा की यह जल्दबाज़ी अपनी क़ौम के प्रति उनकी ज़िम्मेदारी से चूक हो जाने जैसी थी। उनके जाने के बाद वो लोग चुनौती में डाल दिए गए और सामरी ने उन्हें बहका दिये (20:85)। समारितन नाम का एक सम्प्रदाय है जो हजरत मूसा के समय तो नहीं था लेकिन बाद में सामने आया, इसलिए अरबी शब्द 'सामरी' का सम्बंध यहाँ हेब्रीव भाषा के शब्द ''शोमिरून'' से हो सकता है जिससे बाद में 'समारियोन' और 'समारितन' जैसे शब्द बने (स्मिथ बाइबिल डिक्शनरी)। यह डिक्शनरी इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि शब्द ''शोमिरोन'' का अर्थ होता है एक घड़ी से सम्बंधित । दि न्यू बेनटर्म मेगिडडो हेब्रीइ एण्ड इंगलिश डिक्शनरी में शीमर का अर्थ है:चोकीदार, निगरानी करने वाला, रखवाला। क्या यह व्यक्ति (सामरी) सीना के मरुस्थल में बनी इस्राईल के लिए चोकीदारी का काम अंजाम देता था जिसकी वजह से सब लोग उसे पहचानते थे और उसकी बात मानते थे ? या इस शब्द सामरी का सम्बंध प्राचीन मिस्री शब्द शीमर से है जिसका अर्थ परदेसी या अजनबी होता है ? यदि ऐसा है तो क्या सामरी हज़रत मूसा के अनुयायियों में कोई परदेसी व्यक्ति था जैसा कि इब्ने अब्बास का कथन अलराज़ी ने नक़ल किया है। यदि ऐसा ही है तो क्या उसके मिस्री साथियों ने उसे यह नाम दिया था हज़रत मूसा का अनुसरण करने की वजह से, इसलिए कि इस्राईलियों को परदेसी या अजनबी ही समझा जाता था ? या ख़ुद इस्राईली ही उसे अजनबी कहते थे इस वजह से कि वह प्राचीन मिस्री भाषा बोलता था ? मुहम्मद असद ने आयत 20:85 की व्याख्या में अपने नोट में लिखा है कि ''बनी इस्राईल के द्वारा सुनहरी बछड़े की पूजा शुरू कर दिए जाने की घटना से बाद वाले अर्थ की पुष्टि होती है, जो कि निस्संदेह मिस्र के अपीस समुदाय की एक धार्मिक क्रिया का अनुपालन है। वो लोग एक पवित्र बेल की पूजा करते थे जिसके बारे

में मिस्रियों की मान्यता यह थी कि वह ख़ुदा का अवतार है ...। वह हल्की सी आवाज (''ख़्वार'') जो इस बछड़े के मुंह से निकल रही थी, सम्भवतःहवा के निकलने से पैदा होती थी जैसा कि मिस्र के प्राचीन खोखली दीवार वाले मन्दिरों में खोखली मूर्तियों के अन्दर से निकलती थी'' (आयत 20'85 पर व्याख्यात्मक टिप्पणी नम्बर 113)।

इस्राईलियों ने यह बछड़ा बनाने के लिए यह बहाना बनाया कि उनके ऊपर सोने के आभूषणों का बोझ लदा हुआ था जिससे छुटकारा पाने के लिए उन्होंने सामरी के कहने पर उन्हें आग में डाल दिया जिन्हें पिघला कर सामरी ने एक बछड़े के रूप में ढाल दिया (क़ुरआन 20'87)। बाइबिल (एक्सोडस गपपरू 35) के अनुसार इस्राइलियों ने मिस्र से निकलने से पहले मिस्रियों से सोने और चांदी के आभूषण उधार लिए थे और उन्होंने मिस्रियों का माल हड़प कर लिया था। मुहम्मद असद लिखते है कि ''यह बात नोट करने वाली है कि ओल्ड टेस्टामेण्ट में यद्यपि इस्राईलियों के इस व्यवहार की निन्दा नहीं की गयी है लेकिन उसकी लानत उन पर छाती गयी और वे आभूषण साथ लेकर चलना उनके लिए मुसीबत बन गया, इसलिए उन्होंने ग़लत तरीक़े से प्राप्त इस सोने से पीछा छुड़ाने का फैसला किया (जमख़शरी, राज़ी)'' (आयत 20:87 पर व्याख्यात्मक नोट नम्बर 73)। यह सामरी जिसने बनी इस्राईल को अल्लाह के एक होने की उनकी आस्था के बारे में उनमें शक डाला जिसके कारण वो कई पीढ़ियों तक मुसीबत से ग्रस्त रहे, उसने यह दावा किया कि बछड़ा बनाने और उसे ख़ुदा बताने का काम उसने इसलिए किया कि उसे यह प्रेरणा उसके अन्दर से मिली और उसने वह कुछ देखा जो और लोग नहीं देख सकते थे इसलिए उसने अपने बल पर ऐसा किया (20'95-96)। फिर उसे यह सज़ा दी गयी कि वह अछूत बन कर रह गया या तो बीमारी लग जाने से शरीरिक रुप से अछूत या उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया, या दोनों ही मामले उसके साथ हुए। उसका सोने का बछड़ा आग में जला दिया गया और उसकी राख समुद्र में फैंक दी गयी (20:97)।

इसके बाद बनी इस्राईल के द्वारा तौबा करने के नतीजे में उन्हें मआफ कर दिया गया (2:82; 7:149)। क़ुरआन के अनुसार इस तौबा तलाफ़ी के लिए 70 लोगों को चुना गया थाः''और मूसा ने उस अवधि के लिए जो हम ने निर्धारित की थी अपनी क़ौम के 70 व्यक्ति (तूर पहाड़ पर लाने के लिए) चुने। जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ अल्लाह अगर आप चाहते तो इनको मुझ से पहले ही हिलाक कर देते, क्या आप उस काम की सज़ा में जो हम में से मूर्खों ने किया है हमें हिलाक कर देंगे। यह तो आपकी दी हुई आज़माइश (चुनौती) है ...'' (7:155)। अपनी तौबा क़ुबूल कराने के लिए बनी इस्राईल से हज़रात मूसा ने कहा कि अपने आप को मार डालो। आयत 2:54 की जो व्याख्या अलराज़ी ने की है वह बाइबिल के उस बयान के विपरीत है जिसमें एक दूसरे को मार देने की बात कही गयी है (एक्सोडस गगगपपरू26-28), और जिसका प्रभाव कुछ मुस्लिम मुफ़स्सिरों ने भी ले लिया है

हालांक यह क़ुरआन के उस बयान से टकराता है कि बनी इस्राईल ने नाफ़रमानी करने के बाद जब तौबा की तो अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली (2:52; 4:153; 7:149,153) आयत में ''फक़तुलू अनफुसकुम'' (अपनी जानों को क़त्ल करो) का इशारा या तो इस तरफ़ है कि अपने अन्दर की बुराई और अपराधिक प्रवृत्ति को मार दो या यह कि ''नस कुशी'' (इच्छाओं को मारना) का व्यवहार अपनाओ अर्थात अपनी भौतिक इच्छाओं को दबाओ, और ऐसी अध यात्मिक तपस्याएं करो जो शरीरिक परिश्रम में डालने वाली हों (सुनहरी बछड़े का क़िस्सा पढ़ने के लिए देखें 2:51; 7:148-152, 20:83-99)।

हज़रत मूसा निर्धारित समय पर अल्लाह से कलाम करने के लिए जब अपनी क़ौम को छोड़ कर गए और उनके जाते ही सारे लोग बिदक गए तो, इस मामले में हज़रत मूसा बहुत .ढ़ संकल्प दिखाई देते हैं हालांकि कुछ मामलों में बहुत जल्द उत्तेजित हो जाने वाले भी लगते हैं, यहाँ तक कि ख़ुद अपने भाई के ऊपर भड़क गए (7:150; 20:94)। क़ुरआन में हालांकि इस बात का कोई जिक्र नहीं है कि सामरी के मामले में हारून की भी कोई भूमिका है, लेकिन इसके विपरीत बाइबिल के बयान में है कि उन्होंने अपनी क़ौम को सावधान करने के लिए सारे जतन किए (एक्सोडस गगगपपरू 1-5) । ऐसा लगता है कि उनके अन्दर नैतृत्व की क्षमता, तत्परता और निर्णय लेने की शक्ति की कमी थी। हालांकि हारून से कड़ाई के साथ पेश आने के बाद हज़रत मूसा ने अल्लाह से अपने और अपने भाई दोनों के लिए बख़्शिश की दुआ की (7:142, 150-151; 20‘90-94)। क़ुरआन कहता है कि इस्राईलियों की बार बार नाफ़रमानियों और ज़ुल्म व पापों की वजह से अल्लाह ने बनी इस्राईल से कहा कि ''ज़लील अपमानित बन्दर बन जाओ'' (2:65; 5:60; 7:166)। मशहूर ताबिई (पैग़म्बर साहब के साथियों से दीन सीख कर उसकी शिक्षा देने वाले बुज़ुर्ग) ''मुजाहिद'' कहते हैं कि:उनके दिल बदल दिए गए थे नाकि उनके शरीर, और यह एक मनोवैज्ञानिक बदलाव था शरीरिक नहीं और यह ऐसा ही मुहावरा है जैसे अल्लाह ने बनी इस्राईल के पण्डितों के लिए यह कहा कि उनकी मिसाल गधे की सी है जिस पर बड़ी बड़ी किताबें लदी हों (62:5) (देखें इस आयत की तफ़सीर:इब्ने कसीर, तिबरी, और तफ़सीरुल मनार)। क्लासिकल अरबी साहित्य में बन्दर को ऐसे जानवर के रूप में देखा जाता था जो अपनी इच्छाओं और भूख से बाज़ नहीं रह सकता। आयत 5:60 में बन्दर के साथ ख़िन्ज़ीर (सुअर) भी कहा गया है और उसे भी मुहावरे में ही समझा गया है यानि एक मनोवैज्ञानिक बदलाव नाकि शरीरिक। ख़िन्ज़ीर भी ऐसा ही जानवर है जो अपनी वासना पूरी करने में लगा रहता है (देखें तफ़सीर अलमनार में आयत 5:60 की व्याख्या)।

❁ ❁ ❁

तौरातःनैतिक और क़ानूनी नियम

याद करो इसराईल की औलाद से हमने पक्का वादा लिया था कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना, माँ-बाप के साथ रिश्तेदारों के साथ, यतीमों, और मिस्कीनों के साथ नेक सुलूक करना, लोगों से भला बात कहना, नमाज़ क़ायम करना और ज़कात देना, मगर थोड़े आदमियों के सिवा तुम सब उस वादे से फिर गये और अब तक फिरे हुए हो। और जब हमने तुम से क़ौलो क़रार लिया के तुम आपस में .खूरेज़ी नहीं करोगे। और तुम एक दूसरे को अपने शहरों से नहीं निकालोगे (यानी तर्के वतन पर मजबूर नहीं करोगे) फिर तुमने इक़रार भी कर लिया। और तुम .खुद गवाह भी बने। फिर तुम .खुद मौजूद ही हो, अपनी आँखों के सामने क़त्लो क़ताल करते हो और अपने वतन से एक दूसरे को तर्के वतन भी कराते हो उन अपनों के मुक़ाबले में ग़ैरों की इमदाद करते हो गुनाह और ज ुल्म के साथ और अगर वही क़ैदी होकर तुम्हारे पास आ जाते हैं तो उसको कुछ दे दिला कर रिहा करा लेते हो, हालाँके तुमको मालूम है के तर्के वतन कराना भी तुम्हारे लिए हराम है। फिर क्या तुम तौरेत के बाज़ अहकाम को तो मानते हो और बाज़ अहकाम को नहीं। तो ऐसे श.ख्स की क्या सज़ा हो जो तुम ही में से ऐसी हरकत करता है सिवाए रुसवाई के इस दुनिया की ज़िन्दगी में और क़यामत के रोज़ स.ख्त अज़ाब में डाला जाएगा, और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बा.खबर नहीं है। ये वो लोग हैं के उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी की लज़्ज़त व इशरत आख़िरत की नजात के बदले में .खरीद लिए हैं। सो ना तो उनकी सज़ा में कोई कमी की जाएगी और न उनकी कोई मदद की जाएगी। (2:83-86)

وَ اِذۡ اَخَذۡنَا مِیۡثَاقَ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ لَا
تَعۡبُدُوۡنَ اِلَّا اللّٰهَ ۟ وَ بِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا وَّ
ذِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰکِیۡنِ وَ قُوۡلُوۡا
لِلنَّاسِ حُسۡنًا وَّ اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَ اٰتُوا
الزَّکٰوۃَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّیۡتُمۡ اِلَّا قَلِیۡلًا مِّنۡکُمۡ وَ
اَنۡتُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۸۳﴾ وَ اِذۡ اَخَذۡنَا مِیۡثَاقَکُمۡ
لَا تَسۡفِکُوۡنَ دِمَآءَکُمۡ وَ لَا تُخۡرِجُوۡنَ
اَنۡفُسَکُمۡ مِّنۡ دِیَارِکُمۡ ثُمَّ اَقۡرَرۡتُمۡ وَ
اَنۡتُمۡ تَشۡهَدُوۡنَ ﴿۸۴﴾ ثُمَّ اَنۡتُمۡ هٰۤؤُلَآءِ
تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡفُسَکُمۡ وَ تُخۡرِجُوۡنَ فَرِیۡقًا مِّنۡکُمۡ
مِّنۡ دِیَارِهِمۡ ۫ تَظٰهَرُوۡنَ عَلَیۡهِمۡ بِالۡاِثۡمِ وَ
الۡعُدۡوَانِ ؕ وَ اِنۡ یَّاۡتُوۡکُمۡ اُسٰرٰی تُفٰدُوۡهُمۡ
وَ هُوَ مُحَرَّمٌ عَلَیۡکُمۡ اِخۡرَاجُهُمۡ ؕ
اَفَتُؤۡمِنُوۡنَ بِبَعۡضِ الۡکِتٰبِ وَ تَکۡفُرُوۡنَ
بِبَعۡضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنۡ یَّفۡعَلُ ذٰلِکَ مِنۡکُمۡ
اِلَّا خِزۡیٌ فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚ وَ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ
یُرَدُّوۡنَ اِلٰۤی اَشَدِّ الۡعَذَابِ ؕ وَ مَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۸۵﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ
اشۡتَرَوُا الۡحَیٰوۃَ الدُّنۡیَا بِالۡاٰخِرَۃِ ۫ فَلَا یُخَفَّفُ
عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ وَ لَا هُمۡ یُنۡصَرُوۡنَ ﴿۸۶﴾

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ وَ اَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَ
الْاِنْجِيْلَ ۝٣ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ
اَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ
ذُو انْتِقَامٍ ۝٤ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ
شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝٥

अल्लाह ही ने आप के पास ये किताब क़ुरआन भेजा है, जो तसदीक़ करता है उन किताबों की जो इससे पहले नाज़िल हो चुकी हैं। और इसके क़ब्ल तौरात और इंजील को भेजा था लोगों की रहनुमाई के लिए, और अल्लाह ही ने मोजज़ात भेजे थे। बिलाशुबह जो अल्लाह की आयात को नहीं मानते उनके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है, और अल्लाह ग़ल्बा वाले और बदला लेने वाले हैं। (3:3-4)

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝١٦٠

इन ही बड़े बड़े जुर्मों की वजह से जो पाक चीज़ें हमने यहूदियों पर हलाल कर रखी थीं वो हराम कर दीं और इस वजह से भी के वो बहुत से लोगों को अल्लाह की राह पर आने से रोकते थे। (4:160)

وَ كَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ
فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٣ اِنَّاۤ
اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا
لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَ الْاَحْبَارُ
بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَ كَانُوْا
عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ۝٤٤ وَ كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَاۤ
اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَ الْعَيْنَ
بِالْعَيْنِ وَ الْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَ الْاُذُنَ

और ये आपसे कैसे फ़ैसला करायेंगे जबके उनके पास तौरात है, उसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है, फ़िर उस के बाद भी उससे फ़िरते जाते हैं, और ये लोग ईमान ही नहीं रखते। हमने तौरेत नाज़िल की थी, उसमें हिदायत और रौशनी थी, अंबिया जो अल्लाह के मतीअ और फ़रमांबरदार थे उसी के मुताबिक़ यहूद को हुक्म दिया करते थे, और अहले अल्लाह और उल्मा भी इस वजह से के उनको ये हुक्म था के वो अल्लाह की उस किताब की हिफ़ाज़त और निगरानी करेंगे, और वो उनके शाहिद थे सो तुम भी लोगों से ना डरा करो, और मुझ ही से डरो, और मेरे अहकाम के बदले में थोड़े फ़ायदे की चीज़ मत ख़रीदो, और जो अल्लाह के अहकाम के मवाफ़िक़ जो अल्लाह ने नाज़िल किये हैं हुक्म ना करेगा तो यही लोग काफ़िर हैं। और हमने उसमें ये फ़र्ज़ कर दिया था के जान के बदले जान, आंख के बदले आंख, नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दांत के बदले दांत,

और ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है, फ़िर जो उसको माफ़ कर दे तो वही उसका कफ़्फ़ारा है, और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए अहकाम के मुताबिक़ हुक्म ना करे तो वो ही ज़ालेमीन में शुमार होंगे। (5:43-45)

بِالْاُذُنِ وَ السِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَ الْجُرُوْحَ
قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ
لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾

और अगर ये लोग तौरेत, इंजील की और जो किताब उनके पास उनके रब की तरफ़ से भेजी गई है उसकी पूरी पाबंदी करते तो ऊपर से और नीचे से ख़ूब फ़राग़त से खाते, उनमें से एक जमात है जो सीधे रास्ते पर है, और उनमें अक्सर बद किरदार हैं। (5:66)

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ
اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ
فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ
مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۶۶﴾

आप कह दीजिये के ऐ अहले किताब! तुम किसी राह पर भी नहीं जब तक तुम तौरेत और इंजील की और जो किताब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से भेजी गई है, उसकी भी पूरी पाबंदी ना करोगे, और ज़रूर जो चीज़ आपकी तरफ़ आपके रब की तरफ़ से भेजी जाती है, वो उनमें से अक्सर लोगों की सर्कशी और कुफ़्र को और ज़्यादा कर देती है, तो आप उन काफ़िरों पर ग़म ना किया करें। (5:68)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى
تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ لَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا
مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّ
كُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾

और उन्होंने अल्लाह की क़द्र को उतना ना जाना जितना के जानना वाजिब और लाज़िम था, जब उन्होंने कहा के अल्लाह ने किसी बशर पर कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की, आप पूछिये, वो किताब किसने नाज़िल की जो मूसा लेकर आए थे, जो एक नूर है लोगों के लिए हिदायत है, जो तुम मुख़तलिफ़ अवराक़ में अपने पास रखे हुए हो, जिसको ज़ाहिर करते हो, और अक्सर बातों को छुपाते हो, और तुमको बहुत सी बातें तालीम की गई हैं जिनको तुम ना जानते थे और ना तुम्हारे बड़े ही जानते थे, आप कह दीजिये के ये किताब अल्लाह ने नाज़िल की है फ़िर छोड़ दें उनको के अपने ख़ुराफ़ात में खेलते रहें। (6:91)

وَ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ
اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ
هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا
وَ تُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْۤا
اَنْتُمْ وَ لَاۤ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ
خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾

وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ
وَ مِنَ الْبَقَرِ وَ الْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ
الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ
بِبَغْيِهِمْ ۖ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾

और हमने यहूदियों पर सब नाख़ूनों वाले जानवर हराम कर दिये थे, और गाय और बकरी की चर्बी हराम कर दी थी, सिवाए उसके जो उनकी पीठ पर लगी हुई हो या ओझड़ी में हो, या हडडी में हो, ये सज़ा हमने उनको उनकी शरारत के सबब दी थी और हम यक़ीनन सच्चे हैं। (6:146)

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ
اَحْسَنَ وَ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ
رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

फ़िर हम ने मूसा (अ.स.) को किताब दी थी जिससे अच्छा अमल करने वालों पर की तफ़सील हो जाए और रहनुमाई मिले और रहमत हासिल हो, ताके वो अपने रब के मिलने पर यक़ीन लावें। (6:154)

وَ كَتَبْنَا لَهٗ فِي الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْعِظَةً وَّ تَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّ اْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا
بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

और हमने चन्द तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील उनको लिख कर दी तो उनको ख़ुद भी कोशिश के साथ अमल में लाओ और अपनी क़ौम को हुक्म करो, के उनके अच्छे अच्छे अहकाम पर अमल करें, मैं बहुत जल्द तुम को उन नाफ़रमानों का मुक़ाम दिखलाऊंगा। (7:145)

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَ يَتْلُوْهُ
شَاهِدٌ مِّنْهُ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى
اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ
مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ
مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۷﴾

क्या जो अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हो और उसके साथ एक गवाह उसी में मौजूद है क़ुरआन का मुनकिर उसके बराबर हो सकता है और इससे पहले मूसा की किताब है जो पेश्वा और रहमत है, ऐसे लोग क़ुरआन पर ईमान लाते हैं और जो किसी दूसरे फ़िर्क़े में से इस क़ुरआन का इंकार करेगा, तो उसका ठिकाना दोज़ख है, तो क़ुरआन से शक में मत पड़ो, जो तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, लेकिन बहुत से लोग ईमान नहीं लाते। (11:17)

وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ١١٨

और सिर्फ़ यहूदियों पर हमने चन्द चीज़ें हराम कर दी थीं जिनका बयान हम इससे क़ब्ल आपसे कर चुके हैं और हमने उन पर कोई ज़्यादती नहीं की थी, लेकिन वो ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (16:118)

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ٢

और हमने मूसा को एक किताब दी और उसको हमने बनी इस्राईल के लिये हिदायत का ज़रिया बनाया, के तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ ना बनाना। (17:2)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَ
ضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ٤٨ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَ هُمْ مِّنَ السَّاعَةِ
مُشْفِقُوْنَ ٤٩

और हमने मूसा और हारून को फ़ैसले की एक रौशन, और परहेज़गारों के लिये नसीहत की किताब दी थी। जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं, और क़यामत से भी ख़ौफ़ खाते हैं। (21:48-49)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ ٤٩

और हमने मूसा को किताब दी थी ताके वो लोग हिदायत पायें। (23:49)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ
اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَ
هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ٤٣

और हमने मूसा को पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद किताब दी, जो लोगों के लिये बसीरत, हिदायत, और रहमत है, ताके वो नसीहत पकड़ें। (28:43)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ
مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ ٢٣ وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً
يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۗ وَ كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ٢٤

और हमने मूसा को किताब दी तो आप उसके मिलने से शक में ना पड़ना और हम ने उसको बनी इस्राईल के लिये ज़रिया हिदायत बनाया। और उनमें से हमने पेश्वा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जबके वो सब्र किये रहे और वो हमारी आयात पर यक़ीन रखते थे। (32:23-24)

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْهُدٰی وَ اَوْرَثْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ ۝ هُدًی وَّ ذِكْرٰی لِاُولِی الْاَلْبَابِ ۝

और हमने मूसा को हिदायत की किताब दी और बनी इस्राईल को किताब को वारिस बनाया। के वो अक़्ल वालों के लिये हिदायत और नसीहत है। (40:53-54)

اَمْ لَمْ یُنَبَّاْ بِمَا فِیْ صُحُفِ مُوْسٰی ۝

क्या उसको .ख़बर नहीं है जो मूसा के सहीफ़ों में हैं। (53:36)

मुसलमानों के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्ल्लम से पहले आए हुए पैग़म्बरों पर और आसमानी ग्रन्थों पर ईमान रखना ज़रूरी है (2:285; 4:136)। तौरात हज़रत मूसा पर उतरने वाले आसमानी निर्देश हैं जिनमें आस्था और नैतिक व्यवहार की शिक्षा दी गयी है और सही व ग़लत में फर्क़ करने की युक्ति सिखाई गयी है। अल्लाह की शिक्षा से एक ख़ास तरह की मानसिकता और अन्तः.ष्टि पैदा होती है और परिस्थितियों में निरन्तर बदलाव आते रहने से जो मामले सामने आते रहते हैं उनके बारे में फ़ैसला करने और विचार बनाने की योग्यता प्राप्त होती है। एक अल्लाह में विश्वास और आख़िरत के हिसाब किताब और सज़ा व इनाम पर ईमान मोमिन बन्दे को जीवन के उतार चढ़ाव में सहारा देता है। यदि मोमिन बन्दे को किसी मामले में कोई कामयाबी प्राप्त होती है तो वह इतराने और गर्व करने के बजाए अल्लाह का शुक्र अदा करता है और अगर किसी मामले में नाकामी का मुंह देखना पड़े तो वह संयम से काम लेता है और अडिगता के साथ अपने सही मक़सद और .ष्टिकोण पर जमे रहता है। अल्लाह पर ईमान रखने की बदौलत व्यक्ति के अन्दर .ज्यादा स्थिरता और संतुलन पैदा होता है क्योंकि उसे विश्वास होता है कि अल्लाह से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है और अल्लाह भरपाई करने की क़ुदरत रखता है। चूंकि अल्लाह की नज़र में सभी इंसान अपने अधिकारों और ज़िम्मेदारियों के लिहाज़ से समान हैं इसलिए यह ईमान समाज में एक दूसरे के साथ सहयोग करने और समाज को और अधिक स्थिर व मज़बूत करने का माध्यम बनता है।

सही और ग़लत में फ़र्क़ करने की योग्यता अल्लाह की शिक्षा और सीख से मोमिन के अन्दर पैदा होती है जो मोमिन के दिल व दिमाग़ में एक ख़ास तरह की संवेदनशीलता और सूझबूझ को परवान चढ़ाती है। इसी चीज़ को क़ुरआन में फुरक़ान कहा गया है, अर्थात चीज़ों में अन्तर करने की और सही को सही व ग़लत को ग़लत समझने की योग्यता (8:29)। इस योग्यता से इंसानी अक़्ल को जो कि अल्लाह का महान उपहार है विक्सित होने का मौक़ा मिलता है, जैसा कि मुहम्मद अब्दुहू और रशीद रजा मिस्री ने तफ़सीर अलमनार में लिखा है (खण्ड 3, पेज 60)। आसमानी शिक्षा और इंसानी दिमाग़ की सहक्रिया (इन्टरेक्शन) से इंसान को इस हर समय बदलती और विक्सित होती जटिल दुनिया में फैसला करने का पैमाना और कसौटी मिलती है।

इंसानी बुद्धि सीमित है और विचारों व भावनाओं से प्रभावित होती है जबकि सही और ग़लत के बारे में अल्लाह की शिक्षा व सीख एक मुस्तक़िल रोशनी है जिसकी मौजूदगी में इंसानी बुद्धि सही तरह से काम करती है और अल्लाह के इंसाफ को लागू करती है जोकि किसी भी व्यक्ति, लिंग, नस्ल या वर्ग के अधिकार के हनन पर आधारित नहीं होता। मिसाल के तौर पर क़ुरआन में तौरात को हिदायत, नूर, याद दिहानी और कसौटी के रूप में बयान किया गया है जो कि सही और ग़लत में अन्तर करना सिखाती है ; 2:53; 21:48, और देखें क़ुरआन को फुरक़ान के रूप में बताने वाली आयतें 2:184; 25:1)।

जो लोग अल्लाह के लिए समर्पित हो गए हैं और वो ज्ञान रखने वाले (रिब्बी) जो अल्लाह की शिक्षाओं से परिचित हैं उनकी यह ज़िम्मेदारी है कि वो अल्लाह की किताब पर ईमान रखने वालों के मस्तिष्क में और उनके व्यवहार व बर्ताव में इस किताब की शिक्षाओं को ज़िन्दा रखे। इसलिए ख़ास तौर से उन आलिमों से कहा गया कि अल्लाह से डरते रहें और अल्लाह के पैग़ाम व हिदायतों को तुच्छ संसारिक फ़ायदों के लिए बेचने से बचें (5:44)। उन्हें किताब का कोई भी हिस्सा छिपाना नहीं चाहिए, न इस तरह से उसे तोड़ मरोड़ कर पढ़ें कि उसके अर्थ ही बदल जाएं, न उसकी ग़लत व्याख्या करें। यदि ‘‘अहले किताब’’ (आसमानी किताब रखने वाले बनी इस्राईल) अपनी किताब की शिक्षाओं पर अमल करें चाहे वह तौरात हो या इंजील, तो उन्हें इस जीवन में भी अपने इस अमल का अच्छा बदला मिलेगा और आख़िरत में भी वो इसका अच्छा बदला पाएंगे (5:66)। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि क़ुरआन अहले किताब से यह कहता है कि वो अगर अपनी किताब से सम्बंध रखते हैं तो इस किताब की शिक्षाओं पर अमल करें (5:68)।

क़ुरआन बताता है कुछ यहूदी कुछ दूसरे यहूदियों से लड़ते थे, अर्थात ऐसा काम करते थे जिससे उन्हें कड़ाई से मना किया गया था। मिसाल को तौर पर बाइबिल में बेन्जामिन क़बीले का उल्लेख किया गया है कि वो लड़ने भिड़ने वाले लोग थे और दूसरे क़बीलों के लिए एक मुसीबत बने रहते थे जिसकी वजह से उनके बीच रक्तरंजित लड़ाइयाँ हुईं ; श्रनकहमे ग्प्.ग्ग्प्)। ‘‘यसरिब’’ (मदीना) के तीन यहूदी क़बीले बनू क़ैनक़ाअ, बनी नज़ीर और बनी क़ुरैज़ा भी इस्लाम से पहले ओस और ख़ज़रज के बीच लड़ाइयों में शामिल होते थे और इन दोनों क़बीलों की लड़ाई में बनी नजीर व बनू क़ैनकाअ तो ख़ज़रज के साथ थे और बनू क़ुरैजा ओस के समर्थक थे। इस तरह मुशरिकों (बहुदेववादियों) के समर्थन में यहूदियों ने यहूदियों को हिलाक कियाँ विडम्बना यह थी कि कभी कभी इन लोगों ने अपने ही सहधर्मियों को क़ैदी बनाया और उन्हें छोड़ेने के लिए उनसे मुआवज़ा लिया जबकि ऐसा करना उनके लिए मना था और वो इस नियम का उल्लंघन करते रहते थे। कुछ नियमों को मानना और कुछ की अनदेखी करना, कुछ बातों को बयान करना और कुछ को छुपाना और कुछ निर्देशों व शिक्षाओं में फेर बदल करना,

उनके इस व्यवहार की क़ुरआन में बार बार निन्दा की गयी (2:85-86; 5:41,43,86; 6:91)। बाइबिल में भी यहूदियों की बहुत से हरकतों का उल्लेख है जो उन्हें दिए गए निर्देशों के विपरीत थीं (Exosdus xxxiii:9; xxxiii:3; xxxiv:9; Deuteronomy ix:6-8, 23-24, 27)।

तौरात में बदले के क़ानून को 'आँख के बदले आँख', 'नाक के बदले नाक' का क़ानून (समग जंसपवदपे) क़रार दिया गया है लेकिन केवल जुर्माना देकर छूट जाने की भी गुंजाइश रखी गयी है (म्गवकने गगप, 22-30य स्मअपजपबने गगपअ, 19-20)। इसी तरह क़ुरआन में पीड़ित को यह भी प्रेरणा दी गयी है कि वह मआफ़ कर दे (5:45), और इस्लामी शरीअत में इसकी गुंजाइश रखी गयी है (2:178)। कुछ अपराध और दोषों की सज़ा के रूप में सामाजिक बहिष्कार का भी ज़िक्र है। इसके अलावा कुछ मामलों में पशुओं पर भी दण्ड और जुर्माना रखा गया था कि उनके किसी हमले से अगर किसी इंसान को चोट पहुंचती है तो उस पशु को सज़ा दी जाएगी (म्गवकने 21:28-29)। क़ुरआन बताता है कि बनी इस्लाईल पर कुछ कुकर्मों की सज़ा में कुछ पाबन्दियाँ लगाई गयी थीं (4:16; 6:46; 16:118 और देखें स्मअपजपबने अपपरू23) कि उनपर बेल या भेड़ व बकरी की चर्बी हराम कर दी गयी थी, और देखें (स्मअपजपबने अपपरू 24-25)। हज़रत ईसा ने अपनी शिक्षा में यह इशारा दिया कि वह यहूदियों के लिए कुछ ऐसी चीज़ों को हलाल कर देंगे जो पहले उनके लिए वर्जित थीं (3:50।

महत्वपूर्ण बात यह है कि हज़रत मूसा को तौरात सीना पहाड़ पर उस समय दी गयी जब बनी इस्राईल फ़िरऔन की ग़ुलामी और उत्पीड़न से निकल आए थे, और यह एक ऐसी स्थिति थी जिसकी मिसाल मदीना में उतरने वाले क़ुरआनी आदेशों से दी जा सकती है, अर्थात जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के उत्याचार और उत्पीड़न वाले वातावरण से निकल कर मदीना के आज़ाद माहौल में आ गए थे जहाँ मुसलमान सुरक्षित थे और अपने अक़ीदे व मर्यादाओं के अनुसार अपना सामाजिक जीवन बिता सकते थे। जिस तरह मक्का में उतरने वाली क़ुरआनी सूरतें केवल अक़ीदे और इबादत व धीरज और सहनशीलता की शिक्षा देती हैं और भविष्य के लिए आशावान रहना सिखाती हैं, उसी तरह हज़रत मूसा पर तौरात उतरने से पहले जो वह्यि आई उसमें, क़ुरआन के अनुसार, यही विशेषताएं थीं और ऐसे ही पहलुओं से सम्बंधित शिक्षा थी (7:128-129; 10:84-89)। स्मिथ की बाइबिल डिक्शनरी में ला ऑफ मोसिस के अन्तर्गत लिखा है कि वह्यि और निर्देश व नियम उतरने से पहले भी निश्चित रूप से कुछ सिद्धांत रहे होंगे जिनके अन्तर्गत बनी इस्राईल का पालन पोषण हुआ। लिहाज़ा, जहाँ तक यहूदी क़ानूनों के उद्देश्यों की निरन्तरता की बात है तो फ़लस्तीन के चलन और मिस्र के क़ानून हज़रत मूसा की शरीअत में देखे जा सकते हैं ... बहुत से मामलों में समय के प्रचलित नियमों को पूरी तरह मंज़ूर करने के बजाए उनमें संशोधन और बदलाव हुए होंगे और उनकी मौजूदगी को नज़र अंदाज़ करने से उनसे सम्बंधित ग़लत धारणाओं को रास्ता

मिलता है बल्कि उनके मतलब वास्तविक अर्थों के विपरीत लिए जा सकते हैं। यह बात भी ध्यान देने वाली है कि मूसा की शरीअत के हर भाग का महत्व उस युग के संदर्भ में है जिसमें यह क़ौम रही ....

हज़रत मूसा की हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात

और जब मूसा (अ.स.) ने अपने ख़ादिम से कहा के मैं बराबर चलता रहूँगा, जब तक मैं वहां ना पहुंच जाऊँ जहाँ दो दरया मिलते हैं या यूंही बरसों चलता रहूँगा। पस जब दोनों दरयाओं के जमा होने की जगह पहुंचे तो वो अपनी मछली भूल गए, और मछली ने दरया में सुरंग की तरह अपना रस्ता बना लिया। फ़िर जब दोनों (ज़रा) आगे बढ़े तो मूसा ने अपने ख़ादिम से कहा, हमारा खाना लाओ, इस सफ़र से हम को बहुत थकन हो गई है। ख़ादिम ने कहा के आपने देखा, जब हम पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया, और शैतान ही ने मुझे भुला दिया के मैं उसका ज़िक्र करता, और उस मछली ने अजीब तरीक़े से दरया में अपना रस्ता बना लिया। मूसा (अ.स.) ने कहा यही तो वो मुक़ाम है जिसकी हमको तलाश है, तो दोनों अपने पाऊँ के निशानात देखते हुए उल्टे लौट गए। तो उन दोनों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को देखा जिसको हमने अपनी ख़ास रहमत से नवाज़ा था, और उसको अपनी तरफ़ से एक ख़ास क़िस्म का इल्म अता किया था। मूसा (अ.स.) ने उनसे कहा क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त पर के जो रूश्दो हिदायत का इल्म आपको दिया गया है उसमें से आप मुझको भी सिखा दें। उन्होंने कहा, तुम मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकोगे। और तुम ऐसी बातों पर किस तरह सब्र करोगे जो के आप के अहाते इल्मी से बाहर हैं। मूसा (अ.स.) ने कहा, अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे साबिर

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى
اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ
حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا
حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ
سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا
غَدَآءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا
نَصَبًا ﴿٦٢﴾ قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى
الصَّخْرَةِ فَاِنِّيْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ۡ وَ مَآ
اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَ اتَّخَذَ
سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا
كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾
قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ
تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ
لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَ كَيْفَ تَصْبِرُ
عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾ قَالَ
سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّ لَآ اَعْصِيْ
لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا
تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ

पायेंगे, और मैं आपके हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करूंगा। उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने कहा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो मुझ से कोई बात ना पूछना जब तक मैं ख़ुद उसका ज़िक्र तुम से ना करूं। फ़िर दोनों चल पड़े, यहां तक के जब कश्ती में सवार हुए तो उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने उस कश्ती में सुराख़ कर डाला, मूसा ने कहा क्या आप ने इस कश्ती में इसलिये सुराख़ किया है के सवारियों को ग़र्क़ कर दें, ये तो आपने बड़ी अजीब बात की है। उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने कहा, क्या मैंने नहीं कहा था के तुम से मेरे साथ सब्र ना हो सकेगा। मूसा (अ.स.) ने कहा आप उस पर मेरा मवाख़िज़ा ना फ़रमाईये जो भूल मुझ से हो जाये और मेरे इस मामले में मुझ पर मुश्किल ना डालिये। फ़िर दोनों चले यहां तक एक लड़के से मिले, तो उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने उसको मार डाला, मूसा ने कहा आपने बेगुनाह जान को मार डाला बग़ैर बदले किसी जान के, बेशक आपने एक नामाकूल हरकत की। उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने कहा, क्या मैंने तुम से नहीं कहा था, के तुम मेरे साथ सब्र ना कर सकोगे? मूसा (अ.स.) ने कहा, अगर इस के बाद भी मैं आप से किसी चीज़ के मुताल्लिक़ सवाल करूं तो आप मुझे अपने साथ ना रखियेगा, के आप मेरी तरफ़ से उज़्र को पहुंच चुके हैं। फ़िर दोनों चल दिये। यहां तक के वो एक गांव वालों के पास पहुंचे तो दोनों उनसे खाना तलब किया, उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इन्कार कर दिया, उन्होंने वहां एक दीवार देखी जो गिरने वाली थी, तो उस बन्दा-ए-ख़ुदा ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ.स.) ने कहा अगर आप चाहते तो उन से इस पर कुछ मुआवज़ा तलब करते। इसने कहा, अब मुझ में और तुझ में अलेहदगी है, मगर जिन बातों पर तुम सब्र ना कर सके मैं तुम को उन का राज़ बता दूं। वो जो कश्ती थी तो चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दरया में

ذِكْرًا ۝٧٠ فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰىٓ اِذَا رَكِبَا فِي
السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا
لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
اِمْرًا ۝٧١ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۝٧٢ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا
نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ
عُسْرًا ۝٧٣ فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰىٓ اِذَا لَقِيَا
غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا
زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا
نُّكْرًا ۝٧٤ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ
تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝٧٥ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ
عَنْ شَيْءٍۢ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ
بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ۝٧٦ فَانْطَلَقَا ۗ
حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ِۨاسْتَطْعَمَآ
اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا
فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ
فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ
اَجْرًا ۝٧٧ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ
سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ
صَبْرًا ۝٧٨ اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا
وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ
سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ۝٧٩ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ
اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا
طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ ۝٨٠ فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا

رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّ اَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَ
اَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى
الْمَدِيْنَةِ وَ كَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَ كَانَ
اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ
اَشُدَّهُمَا وَ يَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖۗ رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۚ وَ مَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ
تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ؕ ﴿٨٢﴾

कश्ती चला कर गुज़र करते थे तो मैंने चाहा के कश्ती को ऐबदार कर दूं, क्योंके सामने ही एक बादशाह था जो ज़बरदस्ती हर (अच्छी) कश्ती को छीन लिया करता था। और वो जो लड़का था तो इसके मां बाप दोनों मोमिन थे तो हमें अंदेशा हुआ के वो सरकशी और कुफ्र में उनको ना गिरफ़्तार कर दे। तो हमने चाहा के उनका रब उसकी जगह और बच्चा अता फ़रमा दे जो पाकीज़गी में उससे बेहतर हो और मोहब्बत करने में उससे .ज़्यादा हो। और दीवार का मामला ये है के वो दो यतीम लड़कों की थी, जो इस शहर में हैं, और इस दीवार के नीचे उनका .ख़ज़ाना मदफ़ून था, और उनका बाप एक नेक आदमी था तो तुम्हारे रब ने चाहा के जब वो अपनी जवानी को पहुंच जायें और अपना .ख़ज़ाना निकाल लें, तुम्हारे रब की मेहरबानी से, और ये काम मैंने अपनी तरफ़ से नहीं किये, ये उन बातों की हक़ीक़त है जिन पर तुम सब्र ना कर सके। 18:60-82

यह दरअसल एक क़िस्सा है जिसमें बहुत सी सीखने वाली बातें निहित हैं। हमें मालूम है कि क़ुरआन के क़िस्सों में भौगोलिक या ऐतिहासिक विवरण विस्तार से नहीं होता है क्यंकि उनका असिल मक़सद नैतिक संदेश और सीख देना होता है। इसीलिए इस क़ुरआनी क़िस्से में भी जिन ज्ञानी बुज़ुर्ग से हज़रत मूसा की मुलाक़ात का ज़िक्र है उनके बारे में कोई विस्तृत विवरण मुख्य रूप से नहीं दिया गया है। इस क़िस्से का सामान्य और अनिवार्य संदेश यह है कि हर इंसानी ज्ञान अल्लाह के ज्ञान के मुक़ाबले तुच्छ है चाहे वह इंसान हज़रत मूसा जैसे कोई बड़े पैगम्बर ही क्यों न हों जिनका पालन पोषण अल्लाह की निगरानी में हुआ और जिन्हें अल्लाह ने अपने काम के लिए चुना (20:39,41), और जिनसे अल्लाह ने प्रत्यक्ष रूप से कलाम किया (बातचीत की) (4:164)। तथापि, इस क़िस्से में जो घटनाएं सामने आई हैं उनसे ग़ौर व फ़िक्र (चिंतन) के कई गम्भीर पहलू सामने आते हैं, ख़ास तौर से तब जब हम यह ज़हन में रखें कि इस क़िस्से को बुि के मुक़ाबले रहस्यात्मक मामलों के सर्मथन में या खुले के मुक़ाबले छुपे के समर्थन में स्तेमाल किया गया है। क्या किसी व्यक्ति की अन्त.र्ष्टि चाहे वह कितनी ही तेज हो किसी को नुक़सान पहुंचाने या मार देने की इजाजत दे सकती है ? चूंकि इस मामले में कुछ विस्तृत जानकारियाँ उपलब्ध नहीं हैं तो क्या हम यह मान सकते हैं कि यह केवल एक

प्रतीकात्मक उदाहरण है कोई वास्तविक क़िस्सा नहीं है, या यह एक वास्तव में घटिन होने वाली घटना है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस बुख़ारी व मुस्लिम ने हज़रत अबी इब्ने कअब के हवाले से बयान की है जिसे तिरमिजी ने भी नक़ल किया है, जिसमें उन बुज़ुर्ग का नाम अलख़ज़र या अलख़ाज़िर बताया गया है। हज़रत मूसा ने एक बार कहा था कि वो इंसानों में सबसे.ज्यादा ज्ञान वाले हैं, इस बात पर अल्लाह ने उन्हें वह्यि को द्वारा यह ख़बर दी कि हमारा एक बन्दा उस जगह रहता है जहाँ दो समुद्र आपस में मिलते हैं, उस बन्दे पर अल्लाह ने बहुत फ़ज़ल (.पा) किया है और उसे मूसा से.ज्यादा ज्ञान दिया गया है। उन्हें तलाश करो तो उस जगह मिलेंगे जहाँ एक मछली जो तुमने अपने खाने के लिए एक जार में रखी होगी, समन्दर में गायब हो जाएगी। उस जगह के बारे में जहाँ दो समुद्र मिलते हैं क़ुरआन के व्याख्याकारों ने अलग अलग विचार व्यक्त किए हैं, एक विचार के अनुसार यह फ़ारस की खाड़ी में वह जगह है जहाँ यह खाड़ी रोम के समुद्र में मिलती है और यह फ़ारस और बाज़नतीन के समुद्रों के बहुत ही क़रीब है। दूसरे विचार के अनुसार ये दो समुद्र ''डेड सी'' (मृत सागर) और ''रेड सी'' (लाल सागर) हैं। एक तीसरे विचार के मुताबिक़ यह जगह लाल सागर और और ख़ास तौर से इसका पूर्वी बाज़ू आयला की खाड़ी है। एक तीसरा मत यह है कि यह वह जगह है जो एक तरफ़ से लाल सागर और लाल सागर की खाड़ी के बीच में है और इसके दूसरी तरफ़ मेडिटरेनियन सी भूमध्य सागर है। कुछ लोगों का मत यह है कि यह दो दरियाओं अलकारा और अलरास के मिलने की जगह है जो पूरब में उत्तरी आरमीनिया का क्षेत्र है और मेडटरेनियन व अटलांटिक सागर के मिलने की जगह है, यह जबराल्टर का दामन है और यहाँ तंगीर नगर बसा हुआ है। यह सभी विचार और मत इस सच्चाई से मेल नहीं खाते कि मिस्र से निकलने के बाद हज़रत मूसा का पूरा जीवन सीना के मरुस्थल में बीता जहाँ से ये सभी स्थान बहुत दूर हैं। सबसे ज़्यादा समझ में आने वाली बात यूसुफ अली ने अपने अनुवाद में लिखी है जिसमें उन्होंने यह ख़्याल ज़ाहिर किया है कि यह लाल सागर के दो बाज़ुओं (अर्थात) बहरे क़ुलजुम जिसे अब सुईज़ खाड़ी कहते हैं और (2) आयला की खाड़ी के मिलने की जगह है, क्योंकि ये सीना के द्वीप से मिलते हैं जहाँ हज़रत मूसा और बनी इस्राईल ने अपने घुमंतू जीवन के बहुत से साल बिताए (आयत 18:60 की व्याख्या में नोट नम्बर 2405)।

कुछ मुफस्सिरों ने इन आयतों को प्रतीकात्मक रूप में लिया है। अलबेज़ावी ने अपनी तफ़सीर (आयत 18:60) में दो समुद्रों से मुराद दो तरह के ज्ञान लिया है, एक इन्द्रियों और इंसानी बु‌ि से प्राप्त होने वाला ज्ञान (''इल्मुल ज़ाहिर '') और दूसरा अध्यात्मिक अनुभव और अन्तर्.ष्टि से प्राप्त होने वाला ज्ञान (''इल्मुल बातिन'')। यही व्याख्या उन्होंने इस आयत की

भी की है कि दो समुद्र आपस में मिलते हैं लेकिन वो अलग अलग रहते हैं और एक दूसरे में विलीन नहीं होते (55:19-20)। यहाँ से एक और सवाल पैदा होता है:वह रहस्यमय बुज़ुर्ग कौन थे ? क्या वह पैग़म्बर थे या केवल एक ज्ञानी और बुद्धिमान ? मैं इस दूसरी बात को मानता हूँ। मुहम्मद असद के विचार में अलख़ाज़िर या अलख़ज़र जैसा कि हदीस में आया है, का मतलब है हरा, और यह नाम के बजाए एक लक़ब है और इससे मुराद यह है कि उनकी बुद्धिमानी या ज्ञान और युक्ति हरी भरी (तरोताज़ा) और सदा बहार (कभी समाप्त न होने वाली) थी। इससे यह मानने में आसानी होती है कि वह एक ंससमहवतपब पिहनतम थे जिनकी अन्त.र्ष्टि बहुत गहरी थी और जहाँ तक इंसान की पहुंच हो सकती है (नोट नम्बर 73, आयत 18:65 की व्याख्या)। असद यह भी लिखते हैं कि मछली एक प्राचीन धार्मिक प्रतीक है जिससे अभिप्राय सम्भवतःगुप्त ज्ञान (''इल्मे ग़ैब'') या अनन्त जीवन है। चुनांचि वह कहते हैं कि इसमें शक नहीं कि यह रिवायतें हमारे क़ुरआनी चंतंइसम में ंससमहवतपब पदजतव्र कनबजपवद की एक क़िस्म है (आयत 18:60 पर नोट नम्बर 67)। लेकिन जहाँ तक सूफ़ियों की मान्यता का सम्बंध है और जो यह समझते हैं कि यह रहस्यमय व्यक्तित्व जिन्हें अध्यात्मिक चमत्कार मिले हुए थे अमर जीवन रखते हैं, इसे अधिकतर आलिमों ने रद किया है। अलबुख़ारी, इब्ने अतिया, इब्नुल अरबी वग़ैरह लोग इनमें शामिल हैं।

अगर इस क़िस्से को एक वास्तविक घटना समझा जाए तो इससे एक अनिश्चित आन्तरिक अध्यात्मिक बोध और इन्द्रियों व अक़्ल से प्राप्त होने वाले निश्चित ज्ञान से उसके सम्बंध और उस पर उसके प्रभाव के बारे में महत्वपूर्ण सवाल खड़े होते हैं, तथा यह कि इस आसमानी संदेश से इसका सम्बंध क्या है जो ठोस शब्दों में दिया गया है और इंसानी ज़हन उसे समझता भी है। शरीअत के मुक़ाबले रूहानी हक़ीक़त (अलहक़ीक़त) की हैसियत क्या है? यह फ़क़ीहों और सूफ़ियों के बीच बहुत विवादित मुद्द रहा है। विख्यात मुफ़स्सिर अलक़ुरतुबी ने जो सूफ़ियत की तरफ रुजहान रखते थे और उनके चिंतन पर सूफियत का रंग चढ़ा हुआ है जो उनकी तफ़सीर से झलकता है, इस क़िस्से के कुछ निहतार्थों पर ध्यान दिया है और उन्हें ख़ारिज करने का प्रयास किया है। उन्होंने यह इशारा दिया है कि हज़रत खिज़र का अध्यात्मिक ज्ञान कुछ ख़ास घटनाओं और उनसे जुड़ी बातों तक सीमित था और उनके ज्ञान को हज़रत मूसा के ज्ञान से पूरी तरह बरतर नहीं समझना चाहिए। वह अपने गुरू अबुल अब्बास अलक़ुरतुबी का कथन नक़ल करते हैं जो उन लोगों को ''बिदअती'' और ''बदअक़ीदा'' कहते हैं जो यह मानते हैं कि अन्त.र्ष्टि रखने वाले सूफ़ियों का सम्बंध अल्लाह से प्रत्यक्ष होता है, उन पर सच्चाई खुली हुई होती है इसलिए उन्हें उन शिक्षाओं की पाबन्दी करने की ज़रूरत नहीं होती जो पैग़म्बर पर आम लोगों के लिए अवतरित होती हैं। वह लिखते हैं कि जो यह कहता है कि उसके दिल में अल्लाह जो बात डालते हैं वह उसी का अनुसरण करता है और उसे उन बातों की ज़रूरत नहीं जो

क़ुरआन व सुन्नत में बताई गयी हैं, ऐसा कहने वाला व्यक्ति ख़ुद को पैगम्बर के स्थान पर रखता है और यह एक बिदअत (दीन में अपनी तरफ से कोई बात शुरू करना) है क्योंकि मुसलमान का अक़ीदा तो यह है कि पैग़म्बरी का सिलसिला समाप्त् हो चुका है (खण्ड 11, आयत 18:79 पर व्याख्यात्मक नोट)। अगर पैग़म्बर और सूफ़ी में कोई फ़र्क़ किया भी जाए तो भी इस घटना से कुछ नए सवाल सामने आते हैं। अल्लाह के पैग़म्बर लोगों के सामने ज्ञान के एक निश्चित स्रोत के साथ आते हैं चाहे वह एक किताब हो या मौखिक कथन हों, और पैग़म्बर व उनका ज्ञान सबके लिए आम होता है, जबकि सूफ़ी ज्ञान के एक ऐसे स्रोत या माध यम की बात करता है जो बिल्कुल एक व्यक्तिगत अनुभव है और जिसे वह ख़ुद ही पाता और समझता है। सूफ़ी जिस चीज़ को हक़ीक़त कहता है जो कि उसे उसके दावे के अनुसार अल्लाह से ख़ास सम्बंध की बदौलत प्राप्त होती है और जिसके अनुसार वह अमल करता है, वह साफ़ तौर से इस क़िस्से में किसी दूसरे की सम्पत्ति या प्राण को नुक़सान पहुंचान वाला ज्ञान और कर्म है। यह बहुत ही गम्भीर मामला है और इस हत्या को अक़ल से समझने का यही एक रास्ता है कि दिमाग़ में कुछ बिन्दुओं को रखा जाए जो इस स्थिति को स्पष्ट कर सकें।

पहली बात अरबी में शब्द ''ग़ुलाम'' का अर्थ निश्चित रूप से केवल बच्चा या लड़का ही नहीं है, ख़ास तौर से अलकल्बी, अलसहेली और वहब के अनुसार (जिन्हें इब्ने अतिया ने अपनी तफ़सीर के खण्ड 10 और 11 में नक़ल किया है (आयत 18-74-76 पर क़ुरतुबी की तफ़सीर)। इस लिहाज़ से जिस व्यक्ति को उन्होंने जान से मार डाला वह कोई बालिग़ भी हो सकता है, दूसरी बात यह है कि हज़रत मूसा तो अपने माता पिता के साथ इस व्यक्ति के दुर्व्यवहार से अवगत नहीं थे क्योंकि वह इस क्षेत्र के रहने वाले नहीं थे, इसकी जानकारी उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को थी जिस तरह उन बुज़ुर्ग व्यक्ति को थी, जैसा कि कुछ बयानों से पता चलता है, और यह चीज इस बात को मानने पर ज़ोर देती है कि वह व्यक्ति बालिग़ था (इब्ने अतिया की तशरीह 10)। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उस कुकर्मी जवान आदमी को बचाने के लिए कोई आगे नहीं आयाँ अलक़ुरतुबी जैसे कुछ मुफ़स्सिरों ने यह बताने की कोशिश की है कि हज़रत ख़िज़र ने कश्ती को जो नुक़सान पहुंचाया और व्यक्ति को मार डाला तो यह सारा मंज़र केवल उन बुज़ुर्ग हस्ती, हज़रत मूसा और उस मृतक की ही नज़र में था उस चमत्कारी कमाल की वजह से जो हज़रत ख़िज़र को प्राप्त था। लेकिन क्या मृतक को चीख़ने चिल्लाने और मदद के लिए पुकारने से भी हज़रत ख़िज़र ने अपनी चमत्कारी शक्ति से रोक दिया था ? तीसरा बिन्दु यह है कि आयत 18:80 में शब्द ''ख़शीना'' प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ होता है हमें आशंका हुई, इसे आशंका का कारण भी लिया जा सकता है, और इसी तरह ''जानना'' (देखें डिक्शनरी ताजुलउरूस और अलसिहाह, इस आयत के संदर्भ में, और देखें अलकुरतुबी की तफ़सीर, खण्ड 11 में आयत 18:80 की व्याख्या, और इस बात को ज़हन में रखें कि आयत 2:229 में शब्द

'ख़ाफ़ा' स्तेमाल हुआ जो इस शब्द से क़रीब तरीन दूसरा शब्द है)।

इस सूरत में ख़िज़र के क़िस्से के अलावा कुछ और महत्वपूर्ण क़िस्से भी बयान हुए हैं जिनके पात्र, ज़माने और स्थान के बारे में ग़ौर व चिंतन की ज़रूरत हे। इन क़िस्सों के कुछ महत्वपूर्ण पहलू यहाँ बयान किए जाएंगे। यहाँ यह निश्चित करना मुश्किल है कि इन किस्सों की कुछ घटनाओं का क्या मतलब है लेकिन उनसे जो सीख मिलती है उसे समझा जा सकता है। इन घटनाओँ की और अधिक जानकारी के लिए प्राचीन मुफस्सिरों अलतिबरी, इब्ने कसीर, अलराज़ी, इब्ने अतिया, अलक़ुरतुबी आदि की तफसीरों को देखना होगा और यूसुफ़ अली, मुहम्मद असद जैसे अनुवादकों ने इन आयतों का जो अनुवाद किया है उस पर भी नज़र डालना होगी।

इस सूरत के पहले हिस्से में ग़ार (गुफ़ा) वालों का ज़िक्र है (9-26 आयतें), जिनके बारे में बताया गया है कि वो लम्बे समय तक पड़े सोते रहे। इस घटना से यह सवाल पैदा होते हैं कि क्या इतने लम्बे समय की नींद और फिर नींद से जाग उठना एक शरीरिक अवस्था थी या केवल आत्मिक। एक अलग थलग ग़ार में जा कर रहने और फिर वहाँ पड़े सोते रहने के इस बयान को कुछ सूफ़ी दुनिया को छोड़ने के अपने नज़रिए के पक्ष में एक तावील के रूप में पेश करते हैं कि दुनिया और समाज से कट कर अकेलेपन में साधना करने से व्यक्ति की आत्मा और अध्यात्मिकता को ताक़त मिलती हे, लेकिन यह बात क़ुरआन और सुन्नत की बहुत सी स्पष्ट शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण बात है अच्छे काम करने और बुरे कामों से रुकने का आदेश (3:104,110; 5:8-9; 9:71,112; 22:41; 31:17)। फिर इस सूरत में ज्ञान और शक्ति रखने वाले एक व्यक्ति (''जुलक़रनैन'' जिसका अर्थ है दो युगों में रहने वाला व्यक्ति, या दो सींगों वाला) का ज़िक्र है जिसने अज्ञात स्थानें की लम्बी लम्बी यात्राएं की थीं जिसके दौरान उसे असाधारण मामलों से दोचार होना पड़ा और अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरह के लोगों की उसने अपने ज्ञान और शक्ति से मदद की (18:83-98)। इस आदमी का क़िस्सा और ख़ास तौर से वह अंश जिसमें कुछ लोगों ने उससे एक दीवार बनाने की इच्छा ज़ाहिर की थी ताकि वो दो क़ौमों ''याजूज'' और ''माजूज'' के ख़तरों से सुरेक्षित हो जाएं, जिनकी पहचान और निवास स्थान का मामला आलिमों और मुफ़स्सिरों के बीच वाद विवाद और मतभेद का विषय रहा है, अर्थात यह कि क्या ये वो क़ौमें हैं जिन्हें बाइबिल में 'गोग' और 'मेगोग' कहा गया है (मदमेपे गरू2य 1 बीतवदपबसमे 1रू5य म्रमापमस गगअपपरू2ए गगगपगरू6य त्मअमसंजपवदेगगरू8), या ये मंगोल और तातार हैं। इस क़िस्से के ऐतिहासिक, भौगौलिक और नस्ली संरचना के पहलुओं के सम्बंध में भी ये सवाल ज़हन में आते हैं। इन सवालों के जवाब जो कुछ भी हों असिल चीज इन से मिलने वाली सीख है जो इस किस्से से अच्छी तरह समझ में आती है। ज़ुलक़रनैन ने अपने ज्ञान का उपयोग किया और दीवार बनाने के काम में लोगों

से मदद ली।

क़ुरआन में कहीं कहीं उसके क़िस्सों का ऐतिहासिक महत्व तय होता है जैसे मिस्र में हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा के क़िस्सों का बयान (12:111; 28:3-6)। कुछ जगहों पर क़ुरआन यह साफ तौर से बताता है कि वह एक मिसाल बयान करता है ताकि लोग उससे सबक़ लें (2:26; 6:76,112,259; 17:89; 18:32-45,54; 22:73; 24:35; 29:41,43; 39:27; 47:15; 59:21; 68:18-33)। ऐतिहासिक घटना और केवल एक मिसाल की इन दो अलग अलग श्रेणियों के बीच क़ुरआन में ऐसे क़िस्से भी हैं जो गहरे चिंतन और ग़ौर की मांग करते हैं और इंसानी ग़ौर व चिंतन के नतीजे में उनसे सम्बंधित अलग अलग विचार और व्याख्याएँ सामने आती हैं। इनसे मिलने वाली सीख और इनसे मिलने वाला संदेश भी अलग अलग तरह से समझा जा सकता है। लेकिन फिर भी हर व्याख्या के लिए यह ज़रूरी है कि वह टेक्स्ट, परिवेश और प्रमाणित हदीसों के आधार पर की गयी हो और जिस युग में क़ुरआन अवतरित हुआ उस युग में अरबी भाषा की जो शैली थी और जो भाषाई सिद्धांत उस युग में अपनाए जाते थे उसका ध्यान रखते हुए की जाए।

हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान का क़िस्सा

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَ
ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ وَ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ
إِبْرَٰهِيمَ وَ إِسْمَـٰعِيلَ وَ إِسْحَـٰقَ وَ يَعْقُوبَ وَ
ٱلْأَسْبَاطِ وَ عِيسَىٰ وَ أَيُّوبَ وَ يُونُسَ وَ
هَـٰرُونَ وَ سُلَيْمَـٰنَ ۚ وَءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾

हमने आपकी तरफ़ वही की जैसे नूह की तरफ़ की थी, और उनके बाद दूसरे नबियों की तरफ़ की थी, और हमने वही की थी इब्राहीम की तरफ़, इसमाईल की तरफ़, इसहाक़ की तरफ़, याक़ूब की तरफ़, और औलादे याक़ूब की तरफ़, और ईसा की तरफ़, अय्युब की तरफ़, यूनुस की तरफ़, हारून की तरफ़ और सुलेमान की तरफ़, और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी।
(4:163)

أَلَمْ تَرَ إِلَى ٱلْمَلَإِ مِنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنۢ
بَعْدِ مُوسَىٰٓ ۘ إِذْ قَالُوا۟ لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ٱبْعَثْ
لَنَا مَلِكًا نُّقَـٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ
عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ أَلَّا

क्या तुमने बनी इस्राईल की एक जमात को नहीं देखा जो मूसा के बाद हुई, जबके उन्होंने अपने रसूल से कहा के हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर फ़रमा दीजिये ताके अल्लाह की राह में हम जिहाद करें, रसूल ने कहा के अगर तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाए तो कोई तअज्जुब

تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَ مَا لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ قَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَ
اَبْنَاۗىِٕنَا ۭ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾ وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ
اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ۭ قَالُوْٓا
اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ
اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَ لَمْ يُؤْتَ سَعَةً
مِّنَ الْمَالِ ۭ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ
عَلَيْكُمْ وَ زَادَهٗ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَ
الْجِسْمِ ۭ وَ اللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ
وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَ قَالَ لَهُمْ
نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ
التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ
بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ هٰرُوْنَ
تَحْمِلُهُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ فَلَمَّا
فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ
مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ
فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَ مَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ
مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ
فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ فَلَمَّا
جَاوَزَهٗ هُوَ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا
طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَ جُنُوْدِهٖ ۭ
قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ

न होगा के तुम लड़ने से पहलू तही करो, वो बोले, हम अल्लाह के रास्ते में क्यों नहीं लड़ेंगे जबके हम अपने वतन से .खारिज और बाल बच्चों से जुदा कर दिये गए, लेकिन जब उनको जिहाद का हुक्म दिया गया तो चन्द लोगों के सिवा सब ही फिर गए। और अल्लाह ज़ालिमों से .खूब वाक़िफ़ है। और उनके नबी ने उनसे कहा के अल्लाह ने तुम पर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है, वो बोले के उसको हम पर बादशाही का हक़ क्यों कर है, और बादशाहत के तो हम हक़दार हैं बनिस्बत उनके और उसके पास तो कोई दौलत नहीं है, नबीने कहा के अल्लाह ने उसको तुमपर फ़ज़ीदत दी है (और बादशाहत के लिए उसको मुंत.खब किया है) और उसको इल्म भी बहुत सा अता किया है और तनो-तोश से .खूब नवाज़ा है और अल्लाह ही जिसे चाहता है बादशाहत इनायत कर देता है, और अल्लाह है बड़ी वुस्अत वाला और .खूब जानने वाला। और नबी ने उनसे कहा के उनकी बादशाहत की निशानी ये है के तुम्हारे पास एक संदूक़ आएगा जिसे फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तसल्ली ब.ख्श चीज़ होगी और दीगर अशिया भी होंगी जो मूसा (अ.स.) और हारून (अ.स.) छोड़ गए थे, तुम्हारे लिये ये एक बड़ी निशानी है अगर तुम यक़ीन रखते हो। .ग़र्ज़ जब तालूत फ़ौजें लेकर चला तो उसने कहा के अल्लाह तुम को एक नहर से आज़माएगा जो उसमें से पानी पी लेगा वो मेरा नहीं, और जो नहीं पियेगा वो मेरा है, मगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले तो .खैर (जब वो नहर पर पहुंचे) तो मादूदे चन्द के सिवा सब ने पानी पी लिया, और जब तालूत और उनके साथी मोमिनीन नहर के पार हो गए तो वो बोले के आज हम में जालूत और उस के लश्कर से मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं जो यक़ीन करते थे के अल्लाह के सामने हाज़िर होना है तो वो बोले के बसा औक़ात थोड़ी

كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾

सी जमात ने अल्लाह की मेहरबानी से बड़ी जमात पर फ़तेह हासिल की है। और अल्लाह इस्तक़लाल वालों के साथ रहता है। (2:246-249)

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا
رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا
وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ فَهَزَمُوْهُمْ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ
اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ
وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ
فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾

और जब जालूत और उसकी फ़ौजों के सामने मैदान में आए तो कहने लगे कि हमारे परवरदिगार हम पर इस्तक़लाल (ग़ैब से) नाज़िल फ़रमाइये और हमारे क़दम जमाए रखिए और हमको इस काफ़िर क़ौम पर ग़ालिब कीजिए। फिर उन्हों (तालूत वालों) ने उन (जालूत वालों) को अल्लाह तआला के हुक्म से शिकस्त दे दी और दाऊद (अलैहिस्लाम) ने जालूत को क़त्ल कर डाला और उनको (यानी दाऊद को) अल्लाह तआला ने सलतनत और हिक्मत अता फ़रमाई और भी जो जो मंज़ूर हुआ उनको तालीम फ़रमाया और अगर ये बात न होती कि अल्लाह तआला कुछ आदमियों को कुछ के ज़रिये दफ़ा करते रहा करते तो सरज़मीन (तमाम तर) फ़साद से भर जाती लेकिन अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं जहान वालों पर। (2:250-251)

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى
لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ كَانُوْا لَا
يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾

बनी इस्राईल में जो काफ़िर थे उन पर लानत की गई थी, दाऊद (अ.स.) और ईसा (अ.स.) इब्ने मरयम की ज़बान से, ये लानत इस सबब से हुई के उन्होंने मुखालफ़त की और हद से आगे निकल गए थे। और वो अपने नापसंदीदा कामों से बाज़ ना आते थे, बेशक उनका फ़ेअल बहुत ही बुरा था। (5:78-79)

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ
ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ
مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾ وَالطَّيْرَ

(ऐ नबी) जो ये कहते हैं आप उस पर सब्र करें, और याद कीजिये हमारे बन्दे दाऊद को जो साहिबे क़ुव्वत थे, बिला शुबह वो बहुत रूजू होने वाले थे। हमने पहाड़ों को हुक्म किया था के सुबह व शाम उनके साथ अल्लाह की

مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ
وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ
أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ ۘ إِذْ تَسَوَّرُوا
الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُودَ فَفَزِعَ
مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ بَغَىٰ بَعْضُنَا
عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ
وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

पाकी बयान किया करें। और परिन्दों को भी जो जमा रहते थे, सब उनकी वजह से ज़िक्र में मशग़ूल रहते थे। और हमने उनकी बादशाहत को मज़बूत किया था, और उनको हमने दानाई बख़्शी थी, और फ़ैसला करने वाला ख़िताब अता फ़रमाया था। और क्या आपके पास उन झगड़ने वालों की ख़बर आई, जब वो दीवार फ़ांद कर आये इबादतखाने की तरफ़। जब वो दाऊद के पास अन्दर दाख़िल हुए, तो वो उनसे घबरा गए, उन्होंने कहा, आप डरिये नहीं, हम दोनों का एक मुक़दमा है, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हम में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिये, और आप बेइन्साफ़ी ना कीजियेगा, और हम को सीधी राह दिखा दीजिये।

(8:17-22)

إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً
وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَ
عَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ
بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا
مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا
هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُودُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَ
خَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَ
إِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾
يَا دَاوُودُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ
فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ

ये मेरा भाई है, इसके पास निन्नावे दुंबियां हैं, और मेरे पास एक दूंबी है तो ये कहता है के ये भी मुझें दे दो, और गुफ़्तगू में मुझ को दबाता है। दाऊद ने कहा के बेशक वो तुम पर ज़ुल्म करता है जो तेरी दुंबी मांगता है के अपनी दुंबियों में मिलाले, और अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़्यादती करते हैं, मगर जो लोग ईमान लाये हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं, और दाऊद ने ख़्याल किया (इस वाक़ये से) हमने उनको आज़माया है तो उन्होंने अपने रब से मग़फ़िरत मांगी, और सज्दे में गिर पड़े, और अल्लाह की तरफ़ रूजू हुए। तो हमने उनको वो माफ़ कर दिया, और बिला शुबह उनके लिये हमारे पास कुर्ब और अच्छा अंजाम है। ऐ दाऊद! हमने तुम को ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया है, तो लोगों के दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया करो और ख़्वाहिशों की पैरवी ना किया करो के वो तुम को अल्लाह की राह से गुमराह कर देगी, जो लोग अल्लाह के रास्ते से गुमराह हो जाते हैं, उनके लिये अज़ाबे सख़्त

شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾

है, इसलिये के उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है। (38:23-26)

وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ
نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا
لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿۷۸﴾ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ
وَ كُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ
دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَ الطَّيْرَ ؕ وَ كُنَّا
فٰعِلِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ
لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ
شٰكِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً
تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ
وَ كُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَ مِنَ
الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ
عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿۸۲﴾

और दाऊद (अ.स.) और सुलेमान (अ.स.) को याद कीजिये जब दोनों एक खेती का मामला फ़ैसला करने लगे जिसमें कुछ लोगों की बकरियां रात को चर गई और हम उनके फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे। तो हमने सुलेमान को फ़ैसला की समझ दी, और हमने दोनों को हिकमत और इल्म दिया था, और हमने पहाड़ों को दाऊद का मुसख़िर कर दिया था के उनके साथ तसबीह करते थे, और परिन्दों को भी और हम ही ऐसा करने वाले थे। और हमने तुम्हारे दाऊद (अ.स.) को जिरह बनाने का हुनर सिखा दिया था ताके तुम को तुम्हारी लड़ाई के वक़्त मेहफ़ूज़ रखे, तो क्या तुम शुक्र करोगे। और हमने सुलेमान (अ.स.) के लिये तेज़ हवा को मुसख़िर किया के वो उनके हुक्म से उस सर ज़मीन पर चलती, जिस में हमने बरकत रखी है, और हम हर चीज़ से बाख़बर हैं। और बाज़े शैतान ऐसे थे जो उनके लिये ग़ोता लगाते थे, और इसके सिवा और काम भी करते थे, और हम उनके निगहबान थे। (21:78-82)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَ وَرِثَ سُلَيْمٰنُ
دَاوٗدَ وَ قَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ
الطَّيْرِ وَ اُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا
لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَ حُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ
جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ وَ الطَّيْرِ فَهُمْ

और हमने दाऊद आर सुलेमान को इल्म से नवाज़ा और उन दोनों ने कहा तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने हम को अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर फ़ज़ीलत दी। और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए, और सुलैमान ने कहा ऐ लोगों! हमें .ख़ुदा की तरफ़ से जानवरों की बोलिया सिखाई गई हैं, और हर चीज़ पर इनायत फ़रमाई गई है, बिलाशुबह ये उसका सरीह फ़ज़्ल है। और सुलेमान (अ.स.) के लिये जिन्नों और इन्सानों और परिन्दों के लश्कर जमा किये गए थे, और उनको क़िस्म

يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ
قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا
مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗ ۙ
وَ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾

वार तरतीब दिया जाता था। यहां तक के जब वो च्युंटियों के मैदान में पहुंचे तो एक च्यूंटी ने कहा, च्युंटियों! तुम अपने अपने बिलों में चली जाओ ऐसा ना हो के सुलैमान और उसके लश्कर तुम को कुचल डालें और उनको .ख़बर भी ना हो। (27:15-18)

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ قَالَ رَبِّ
اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا
تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾ وَ تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَاۤ
اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ
الْغَآئِبِيْنَ ﴿۲۰﴾ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ
لَاَاذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۱﴾
فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ
تُحِطْ بِهٖ وَ جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿۲۲﴾
اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَ اُوْتِيَتْ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۳﴾ وَجَدْتُّهَا
وَ قَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ
عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۲۴﴾ ۙ اَلَّا
يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَ يَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۲۵﴾
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۶﴾ السجدة
قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ﴿۲۷﴾ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ

सुलैमान च्यूंटी की इस बात पर हंस पड़े, और कहा, ऐ मेरे रब! तू मुझे तौफ़िक़ अता फ़रमा के मैं तेरा शुक्र अदा करूं उन नेमतों का जो तूने मुझे और मेरे मां बाप को अता की हैं, और ये के मं अच्छे अच्छे काम करूं जिससे तू .ख़ुश हो जाये और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा। और जब सुलैमान ने जानवरों का जायज़ा लिया तो कहा, क्या सबब है के हुदहुद नज़र नहीं आता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है? मैं उसे स.ख्त सज़ा दूंगा या उसको ज़िबह कर डालूंगा, या मेरे सामने अपनी बे क़सूरी की माक़ूल दलील पेश करे। थोड़ी ही देर बाद हुदहुद आ मौजूद हुआ और कहा के मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई है जिसकी आपको .ख़बर नहीं और मैं आपके पास शहर सबा से एक यक़ीनी .ख़बर लेकर आया हूँ। मैंने एक औरत को देखा जो उन लोगों पर हुकूमत करती है जहां उसको हर चीज़ मयस्सर है, और उसका एक बड़ा त.ख्त भी है। मैंने देखा के वो और उसकी क़ौम अल्लाह के सिवा सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनको उनके आमाल आरास्ता करके दिखाये हैं और उनको सीधे रासता से रोक रखा है, पस वो हिदायत नहीं पाते। और ये नहीं जानते के अल्लाह को सज्दा करें जो आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ों को ज़ाहिर कर देता है, और वो तुम्हारे पोशीदा और ज़ाहिर आमाल सब को जानता है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है, और वो ही अर्शे अज़ीम का मालिक है। सुलैमान ने कहा, अच्छा!

اِلَيۡهِمۡ ثُمَّ تَوَلَّ عَنۡهُمۡ فَانۡظُرۡ مَاذَا
يَرۡجِعُوۡنَ ﴿۲۸﴾ قَالَتۡ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَؤُا اِنِّىۡۤ
اُلۡقِىَ اِلَىَّ كِتٰبٌ كَرِيۡمٌ ﴿۲۹﴾ اِنَّهٗ مِنۡ
سُلَيۡمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ
الرَّحِيۡمِ ۙ﴿۳۰﴾ اَلَّا تَعۡلُوۡا عَلَىَّ وَاۡتُوۡنِىۡ
مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالَتۡ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَؤُا
اَفۡتُوۡنِىۡ فِىۡۤ اَمۡرِىۡ ۚ مَا كُنۡتُ قَاطِعَةً
اَمۡرًا حَتّٰى تَشۡهَدُوۡنِ ﴿۳۲﴾ قَالُوۡا نَحۡنُ
اُولُوۡا قُوَّةٍ وَّاُولُوۡا بَاۡسٍ شَدِيۡدٍ ۙ وَّ
الۡاَمۡرُ اِلَيۡكِ فَانۡظُرِىۡ مَاذَا تَاۡمُرِيۡنَ ﴿۳۳﴾
قَالَتۡ اِنَّ الۡمُلُوۡكَ اِذَا دَخَلُوۡا قَرۡيَةً
اَفۡسَدُوۡهَا وَجَعَلُوۡۤا اَعِزَّةَ اَهۡلِهَاۤ
اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۴﴾ وَاِنِّىۡ
مُرۡسِلَةٌ اِلَيۡهِمۡ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ ۢ بِمَ
يَرۡجِعُ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيۡمٰنَ
قَالَ اَتُمِدُّوۡنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰٮنِۦَ اللّٰهُ
خَيۡرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰٮكُمۡ ۚ بَلۡ اَنۡتُمۡ بِهَدِيَّتِكُمۡ
تَفۡرَحُوۡنَ ﴿۳۶﴾ اِرۡجِعۡ اِلَيۡهِمۡ فَلَنَاۡتِيَنَّهُمۡ
بِجُنُوۡدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمۡ بِهَا وَ
لَنُخۡرِجَنَّهُمۡ مِّنۡهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمۡ
صٰغِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الۡمَلَؤُا اَيُّكُمۡ
يَاۡتِيۡنِىۡ بِعَرۡشِهَا قَبۡلَ اَنۡ يَّاۡتُوۡنِىۡ
مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ عِفۡرِيۡتٌ مِّنَ الۡجِنِّ اَنَا
اٰتِيۡكَ بِهٖ قَبۡلَ اَنۡ تَقُوۡمَ مِنۡ مَّقَامِكَ ۚ
وَاِنِّىۡ عَلَيۡهِ لَقَوِىٌّ اَمِيۡنٌ ﴿۳۹﴾ قَالَ نَكِّرُوۡا

हम देखेंगे के तूने सच कहा है या तू झूटा है। ये मेरा ख़त लेजा! फिर उसको उसकी तरफ़ डाल देना, फ़िर उनके पास से वापस आ, और देख वो क्या जवाब देते हैं। मलिका ने कहा, ऐ दरबार वालो! मेरी तरफ़ एक ग्रामी नामा डाला गया है। वो सुलैमान की तरफ़ से है, उसमें लिखा है, (और मज़मून ये है) के मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। और ये के मुझसे सरकशी ना करना और फ़रमांबर्दार होकर चले आना। मलिका (ने ख़त सुनाकर) कहा ऐ अहले दरबार! तुम मेरे मामले में मशवरा दो जब तक तुम मौजूद ना हो मैं कोई क़तई फ़ैसला नहीं कर सकती। मलिका के दरबारियों ने कहा, हम क़ुव्वत वाले हैं, और सख़्त जंगजू हैं और हुक्म आपके इख़्तियार में है (अंजाम पर) ग़ौर कर लीजिये, जो हुक्म देना हो। मलिका ने कहा, बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं तो उसको तबाह कर देते हैं, और उनके बाशिंदों में जो मौअज़्ज़िज़ लोग होते हैं उनको ज़लील कर दिया करते हैं, और ये भी ऐसा ही करेंगे। और मैं एक तोहफ़ा उनके पास भेजती हूँ, और इंतिज़ार करती हूँ के क्या जवाब आता है। जब क़ासिद सुलैमान के पास पहुंचा तो उन्होंने कहा क्या तुम मेरी माली मदद करते हो, तो अल्लाह ने जो मुझे दिया है वो उससे कहीं बेहतर है जो तुमको दिया है, हां तुम ही अपने इस तोहफ़े से ख़ुश होते होंगे। तुम उनके पास वापस जाओ, हम उन पर ऐसा लश्कर भेजते हैं, जिसका मुक़ाबला उनसे ना हो सकेगा, हम उनको वहां से बेइज़्ज़त करके निकाल देंगे। सुलैमान ने कहा, ऐ दरबारियों! तुम में कोई ऐसा है जो क़ब्ल इसके के वो फ़रमांबरदार होकर मेर पास आयें मलिका का तख़्त मेरे पास हाज़िर कर दे। एक क़वी हैक़ल जिन्न ने कहा, मैं उसको लाता हूँ इससे पहले के आप अपनी जगह से उठें, और मुझे इस पर क़ुदरत है (और मैं)

لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِيٓ أَمْ تَكُوْنُ مِنَ
الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ
أَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَأَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ
أُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ؕ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾ قِيْلَ
لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً
وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ إِنَّهٗ صَرْحٌ
مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬ قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ
نَفْسِيْ وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾

अमानत दार हूं। एक श़ख़्स जिसको किताबे इलाही का इल्म था कहने लगा के मैं पलक झपकते में आपके सामने हाज़िर कर सकता हूँ, फ़िर जब सुलैमान ने उसको अपने सामने रखा देखा तो कहा के मेरे परवरदिगार का फज़्ल है ताके वो मुझको आज़माये के आया मैं शुक्र करता हूँ, या ना शुक्री, और जो शुक्र करता है वो अपने ही नफ़े के लिये करता है, और ना शुक्री करता है तो मेरा परवरदिगार बेनियाज़ है और करम करने वाला है। सुलैमान ने कहा मलिका के लिये उसके तख़्त की सूरत बदल दो, देखें वो अक़्ल रखजी है या नहीं, क्या वो उनमें से है जो अक़्ल नहीं रखते। तो जब मलिका आई तो इससे पूछा गया, क्या आपका तख़्त ऐसा ही है, उसने कहा के ये तो गोया हुबहू वही है, और हमको तो इससे पहले ही इल्म हो गया था और हम फ़रमांबर्दार हैं। और वो जो ख़ुदा के सिवा और की परसतिश करती थी सुलैमान ने उसको उससे मना किया, उससे पहले तो वो काफ़िरों में से थी। और मलिका से कहा के महल में चलिये, जब उसने फ़र्श देखा, तो उसे पानी का हौज़ ख़्याल किया, तो उसने कपड़ा उठा कर अपनी पिंडलियां खोल दीं, सुलैमान ने कहा, ये ऐसा महल है, जिसके नीचे भी शीशे जड़े हुए हैं, मलिका ने कहा ऐ मेरे रब! मैं अपने ऊपर ज़ुल्म करती रही थी, और जब मैं सुलैमान के हाथ पर रब्बुल आलमीन पर ईमान लाती हूँ।

(27:19-44)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ أَوِّبِيْ
مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾ أَنِ
اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا
صَالِحًا ؕ إِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١﴾ وَ
لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बरतरी बख़्शी, ऐ पहाड़ो! तुम उनके साथ अल्लाह की पाकी बयान किया करो, और परिन्दों को भी हुक्म दिया, और हमने उनके लिये लोहे को नर्म कर दिया। के तुम पूरे ज़रहें और कड़ियों को अंदाज़े से जोड़ दो, और तुम सब नेक अमल करो, जो तुम अमल करते हो मैं उनको देख रहा हूँ। और

شَهْرٌ ۚ وَ اَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَ مِنَ
الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ
رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ
مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا
يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَ تَمَاثِيْلَ وَ جِفَانٍ
كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ
شُكْرًا ؕ وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾
فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى
مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ
فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ
الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾

सुलैमान के लिये हवा को (भी) उनके ताबे फ़रमान कर दिया, और उसकी सुबह की मंज़िल एक महीना की राह होती है और शाम की मंज़िल भी एक महीने की राह होती है, और उनके लिये हमने तांबे का चश्मा बहा दिया, और जिन्नात उनके रब के हुक्म से उनके सामने काम करते थे, और जो उनमें से हमारे हुक्म से फ़िरेगा उसको हम दोज़ख की आग का मज़ा चखा देंगे। ये जिन्नात उनके लिये वो चीज़ें बनाते थे जो वो चाहते थे यानी बड़ी बड़ी इमारतें और मूरतें और बड़े बड़े लगन जैसे तालाब, और देगें जो एक ही जगह रखी रहीं, ऐ दाऊद की औलाद! तुम नेक अमल किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्र गुज़ार बहुत कम हैं। फ़िर जब हमने उनकी मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज़ से भी उनकी मौत का पता ना चला, मगर घुन के कीड़े से जो सुलैमान के असा को खा रहा था, जब वो गिर पड़े, तब जिन्नात को पता चला, के वो अगर ग़ैब के इल्म से वाक़िफ़ होते तो वो ज़िल्लत की तकलीफ़ में ना रहते। (34:10-14)

وَ وَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ
اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ
الْجِيَادُ ﴿۳۱﴾ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ
عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾
رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَ
الْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا
بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ
وَ اَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ
لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾

और हमने दाऊद को सुलैमान दिया, वो नेक बन्दा था, और अल्लाह की तरफ़ बहुत रूजू होने वाला। जब शाम को उनके सामने असील, उम्दा घोड़े पेश किये गये। तो कहा (अफ़सोस) मैं इस माल की मोहब्बत में अपने रब के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो गया, यहां तक के सूरज पर्दे में छुप गया। उन घोड़ों को मेरे सामने फ़िर लाओ, फ़िर उनकी टांगों और गर्दनों पर (तलवार से) हाथ फ़ेरना शुरू कर दिया। और हमने सुलैमान को आज़माया और हमने उनके तख़्त पर एक (अधूरे बच्चे की) लाश डाल दी, फ़िर उन्होंने तौबा कर ली। उन्होंने दुआ मांगी, के ऐ मेरे रब! क़सूर माफ़ फ़रमा, और मुझे एक सल्तनत मरहमत फ़रमा के मेरे अलावा किसी को भी नसीब ना हो, बेशक तू बड़ा अता फ़रमाने वाला है। सो हमने हवा

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ
أَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَ
غَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي
الْأَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ
أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا
لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٠﴾

को उनके ताबे कर दिया, के वो उनके हुक्म से जहां वो चाहें नमीं से चला करे। और जिन्नात को भी ताबे कर दिया यानी इमारतें बनाने वालों और ग़ोता.खोरों को भी। और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े रहते थे। (हमने कहा के) ये हमारा अतिया है, सो तुम .ख्वाह किसी को दो या ना दो तुमसे उसको कोई हिसाब ना लिया जायेगा। और (उसके अलावा) उनके लिये हमारे पास .खास हमारा क़ुर्ब है, और नेक अंजामी भी है।

(38:30-40)

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ
سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ
الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ
وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَ
مَارُوتَ ۚ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ
يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۖ
فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ
الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ ۚ وَمَا هُمْ بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ
أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا
يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۚ وَلَقَدْ عَلِمُوا
لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ ۚ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَ
اتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ ۖ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾

उन लोगों ने ऐसी चीज़ (यानी सिह़र) का इत्तेबा किया जिसका तज़केरःसुलैमान के अहेदे हुकूमत में बहुत से शयातीन (यानी .खबीस जिन्न) किया करते थे। सुलेमान उस सिह़र को नहीं मानते थे। अलबत्ता यही शयातीन कुफ्ऱ करते थे और आम आदमियों को भी ये सिह़र सिखाया करते थे और उस सिह़र को भी सिखाया करते थे जो शहर बाबुल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर नाज़िल किया गया था और दोनों फ़रिश्ते ये सिह़र किसी को भी न सिखाते थे जब तक ये ना कह देते के हमारा वजूद ही एक इम्तिहान है तो तुम काफ़िर ना बन जाना। सो लोग उन दोनों से ये सिह़र सीख लिया करते थे जिससे मियाँ और बीवी में फ़र्क़ पैदा कर दे। और ये साहिर उसके ज़रिये किसी को भी कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते थे। मगर अल्लाह के हुक्म से और ऐसी चीज़ सीख लेते हैं जो उनको नुक़सान पहँचाती है। और नफ़ा कोई नहीं होता। और ये यहूद भी जानते हैं। के जो श.ख्स उस सहर को इख्तियार करेगा उस के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है। और बेशक ये बुरी चीज़ है। के उस सहर के लिए अपनी जान दे देते हैं। काश! ये अपनी अक़्ल से जान जाते। और अगर वो ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो अल्लाह के यहाँ मुआवज़ा

.ज़्यादा अच्छा होता (सिहर तो कुफ्र ही है) काश! ये
जानते और अक़्ल से सोचते। (2:102-103)

बनी इस्राईल के इतिहास में हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान प्रतिष्ठित हस्तियाँ हैं। यहूदियों की कहावतों के अनुसार दोनों बादशाह (100-916 ई.पू., और 961-922 ई.पू.)। दाऊद का शासन पुरे कनआन (फ़लस्तीन) पर था और आसपास के क्षेत्रों पर भी उनका अधिकार था। धनदौलत की बहुतात थी और व्यापार बहुत फैला हुआ था जिसकी बदौलत उनके सम्पर्कों का सिलसिला लम्बा था और विचारों का दायरा व्यापक था। दुर्भाग्य से हज़रत दाऊद के कारनामों का कोई रिक०र्ड सुरक्षित नहीं है लेकिन हज़रत सुलैमान के युग के नगर की दीवारों और दरवाजों के कुछ निशान आज भी गिज़र, हज़र और मैंगिडडो जैसे नगरों में देखे जा सकते हैं। हज़रत सुलैमान ने एक इबादतगाह (पूजा स्थल) भी बनाया था हालांकि उसका सामान हज़रत दाऊद ने उपलब्ध कराया था। हज़रत सुलैमान के युग में सुरक्षा के बन्दोबस्त और धन दौलत की अधिकता की बदौलत वहाँ एक सभ्यता और संस्.ति को पनपने के मौक़ा मिला और यह युग बनी इस्राईल के इतिहास का स्वर्णिम युग कहलाता है। क़ुरआन के बयानों के अनुसार हज़रत सुलैमान ने अपना प्रभुत्व 'सबा' साम्राज्य तक फैला लिया था जो लाल सागर के किनारे अरब द्वीप में बसती थी। इस साम्राज्य की महारनी अल्लाह की बन्दगी को मान कर हज़रत सुलैमान की आज्ञाकारी बन गयी थी और उनकी सैनिक, आर्थिक और सभ्यात्मक शक्ति के आगे उसने सर झुका दिया था (27:20-44), लेकिन क़ुरआन में यद्यपि हज़रत सुलैमान के साम्राज्य के निशानों का ज़िक्र है जैसे शीशे का फ़र्श और शानदार सिंहासन वग़ैरह, लेकिन यहूदी कहावतों में कुछ नकारात्मक गुणों का भी बयान है जैसे भारी भरकम टैक्स, बन्धुआ मज़दूरी और विदेशी पत्नियाँ व देवी देवता (देखें अलिंकस 11)। यहूदी कहावतों के अनुसार इन नकारात्मक बातों और अन्य कुछ कारणों से हज़रत सुलैमान का साम्राज्य उनकी मृत्यू के बाद पतन और बिखराव से ग्रस्त हुआ।

क़ुरआन के अनुसार दाऊद और सुलैमान दोनों पैग़म्बर भी थे। इससे यह मालूम होता है कि उस युग से पहले रिश्तेदारी और पैग़म्बरी का सिलसिला अलग अलग हो गया था, जैसा कि क़ुरआन से इशारा मिलता है:"भला तुमने बनी इस्राईल की एक जमाअत को नहीं देखा जिसने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर से कहा कि आप हमारे लिए एक बादशाह नियुक्त कीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में जिहाद करें ..." (2:246)। इस मामले में बादशाह की नियुक्ति या चयन अल्लाह के ज़िम्मे है और क़ुरआन यह कहता है कि " .. उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर तालूत को बादशाह बनाया है"। इन पैगम्बर और उस बादशाह का ज़िक्र बाइबिल में सेमुइल और सावल के नाम से किया गया है। लेकिन क़ुरआन के अनुसार

हज़रत दाऊद और सुलैमान में पैगम्बरी और बादशाहत दोनों इकट्ठा थीं। इसी से यह मालूम होता है कि बाइबिल ने इन दोनों बुज़ुर्ग हस्तियों से जिन ग़लत कामों को जोड़ा है उसे मुसलमान क्यों नहीं मानते, क्योंकि मुसलमानों का अक़ीदा है कि पैग़म्बर इंसानी व्यवहार का उत्तम आदर्श होते हैं और ईमान वालों के लिए अमल का नमूना होते हैं। इनमें दूसरे पैग़म्बर भी शामिल हैं जो अल्लाह के दीन को पहुंचाने में लोगों के साथ संयम से पेश आने में, और केवल अल्लाह पर भरोसा करने में एक दूसरे का नमूना हैं और अल्लाह से उनका प्रत्यक्ष, क़रीबी और मुस्तक़िल सम्बंध होता है और अपने अनुयायियों से वो जिन नैतिक मर्यादाओं पर चलने की मांग करते हैं उन्हें व्यवहारिक रूप से ख़ुद भी बरतते हैं (6:90; 46:35)।

क़ुरआन में हज़रत दाऊद को जिरहबक्तर और ढाल अर्थात हथियार व ओज़ार बनाने वाले के रूप में (21:80; 34:10-11) और एक ऐसे पिता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह के मक़सद को पूरा करने का हौसला रखते है, जो 'जालूत' जैसे बाहुबली को मार देते हैं (12:251) जिसे बाइबिल में गोलियथ कहा गया है, देखें सेमुइलः17)। उन्हें एक ऐसे इबादत गुज़ार के रूप में भी पेश किया गया है जो अपना काफ़ी समय अपने घर के एक कोने में अल्लाह की इबादत में बिताते थे (38:21), और ऐसे न्याय करने वाले बादशाह के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है जिन्हें ज्ञान व युक्ति दी गयी थी और उनके अन्दर अच्छी निर्णय शक्ति थी (34:10; 38:18-19)।

हज़रत दाऊद पर जो आसमानी किताब उतरी उसका नाम क़ुरआन में ''ज़बूर'' बताया गया है (4:163; 17:55) जिसका अर्थ होता है लिखना या किताब, और कुछ प्राचीन मुफस्सिरों ने यह विचार व्यक्त किया है कि इसमें 'हिकमत' (युक्ति) और 'तबलीग़' (प्रचार) के उत्तम निर्देश थे। बाइबिल में जो कि 150 कलमों, दुआओं और मासूरात का संग्रह है जिनमें विभिन्न इंसानी भावनाओँ की तर्जुमानी है और ये सब अल्लाह से मुहब्बत और उसके प्रति गहरी आस्था पर आधारित हैं, उन्हें च्ेंसउे कहा गया है। ये गीत पांच किताबों में एकत्र हैं जिनमें से हर एक के अन्त में अल्लाह की हम्द (वन्दना) की गयी है। यह समझा जाता है कि हज़रत दाऊद के ज़माने में 'साल्म्स' का कोई और पुराना संग्रह था लेकिन उनके संकलन की प्रक्रिया में इस्राईली रिवायतें और ऐतिहासिक कथाएं शामिल होती गयीं और ख़ास तौर से बाबुल से इस्राईलियों की वापसी और पूजास्थल के पुनर्निर्माण के दौरान यह घोल-मेल बहुत अधिक हुआ।

क़ुरआन में उन व्यक्तियो का बयान है जो हज़रत दाऊद के पास उस समय आए जब वह एकान्त में अपने रब की इबादत में व्यस्त थे और उनसे अपना यह मामला बयान किया कि उनमें से एक के पास 99 भेड़ें थीं और वह अपने भाई से उसकी इकलौती भेड़ भी ले लेना चाहता था (38:21-26)। इस बयान को क़ुरआन के कुछ प्राचीन मुफस्सिरों ने जिनमें तिबरी भी शामिल हैं, बाइबिल की उस कहानी से सम्बंधित माना है जिसमें दाऊद ने अपने फ़ील्ड

कमाण्डर के साथ यह मंसूबा बनाया था कि उस सिपाही को मार दिया जाए जिसकी पत्नि से डेविड विवाह करना चाहते थे और इस तरह वह अपनी बहुत सी पत्नियों में एक और पत्नि की बढ़ौतरी चाहते थे। यह मनगढ़त कहानी मुसमलानों के लिए इतनी .ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली है कि हज़रत अली ने कहा था कि जो कोई भी इस कहानी को हज़रत दाऊद से जोड़ेगा और उसे बयान करेगा उसे वह तोहमत दराज़ी (झूटा आरोप लगाना) की सज़ा देंगे। क़ुरआन में यह कहानी जिस तह बयान की गयी है (38:21-26) उसे अलग तरह से समझा जा सकता है, जो टेक्स्ट के मुताबिक़ है और एक साधारण सी समझ में आने वाली बात है। क़ुरआन के टेक्स्ट में जो बात नहीं कही गयी है उसे हज़रत दाऊद से नहीं जोड़ा जा सकता और क़ुरआन की प्रमाणिकता हर शक व संदेह से परे हे। जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है, हज़रत दाऊद ने जब एक वादी का मुक़दमा सुना और एक युक्तिपूर्ण फ़ैसला सुनाया तो वादी से उन्हें इतनी हमदर्दी हुई कि उन्होंने न्याय के मौलिक सिद्धांत के विपरीत प्रतिवादी की बात सुने बिना वादी के पक्ष में फैसला दे दियाँ इस मामले को हल करने में उनके साथ आज़माइश (फ़ितना) पेश आई। अल्लाह ने उन्हें ख़बरदार किया कि वह जल्दबाजी में कोई फैसला न किया करें कि कहीं किसी के साथ अन्याय हो जाए। कोई बी मामला हो वह पूरी तरह इस पर विचार करें और लोगों के बीच फ़ैसला करते समय तमाम तरह के विचारों को सुना करें। तब हज़रत दाऊद को अपनी ग़लती और इसकी गम्भीरता का अहसास हुआ, उन्होंने अल्लाह से तौबा की और अल्लाह ने उनका दोष बख़्श दियाँ

सुलैमान को भी अपने पिता से इल्म व हिकमत (ज्ञान व युक्ति) की विरासत मिली थी लेकिन उनका साम्राज्य अपने पिता के साम्राज्य से .ज़्यादा विशाल और स्थिर था। 21:78-79 आयतों में सुलैमान का जो बयान आया है उसमें वह बहुत ज़हीन और बुद्धिमान मालूम होते हैं और उनके पास जब एक ख़ास विवाद निपटारे के लिए आया तो उन्होंने अपने पिता की अपेक्षा उसे बहुत सूझबूझ से हल किया:''और दाऊद व सुलैमान (का हाल भी सुन लो कि) जब वह एक खेती का मुक़दमा निपटाने लगे जिसमें कुछ लोगों की बकरियाँ रात को चर गयी थीं (और उसे रोन्द गयी) थीं और हम उनके फ़ैसले के समय मौजूद थे। तो हम ने फ़ैसला (करने का तरीक़ा) सुलैमान को समझा दिया और हमने दोनों को हुक्म (यानि हिकमत और पैग़म्बरी) और ज्ञान दिया था''। इन क़ुरआनी आयतों में या प्रमाणित हदीसों में इस घटना का विस्तृत उल्लेख नहीं मिलता लेकिन सहाबियों और उनके बाद के ज्ञानियों (ताबिईन) में से कुछ लोगों ने जो कुछ बयान किया है उनमें इस घटना की कुछ तफ़सील मिलती है हालांकि उसका स्रोत क्या है यह नहीं मालूम है। मैं यहाँ मुहम्मद असद के बयान को नकल करता हूँ जो उन्होंने उपरोक्त आयतों की व्याख्या में अपने नोट नम्बर 70 में लिखा है:''घटना के अनुसार भेड़ों का एक झुण्ड एक रात पड़ोस के खेत में घुस गया और सारी फ़सल बर्बाद कर डाली। यह मामला

बादशाह दाऊद के पास निपटारे के लिए आयाँ हज़रत दाऊद ने यह नतीजा निकाला कि यह बर्बादी भेड़ों के चरवाहे की ला परवाही की वजह से हुई है इसलिए उन्होंने नुक़सान की भरपाई के लिए भेड़ों का पूरा झुण्ड जिसका मूल्य अंदाज से उस फ़सल की क़ीमत के लगभग था जो बर्बाद हो गयी थी, खेत के मालिक को दे दियाँ दाऊद के जवान बेटे सुलैमान ने इस फ़ैसले को दुरुस्त न समझा और कहा कि फ़सल तो केवल एक साल की बर्बाद हुई है, अगले साल नई फ़सल आ जाएगी, लेकिन भेड़ों का मालिक तो कंगाल ही हो जाएगा और उसकी जीविका का साधन हमैशा के लिए छिन जाएगा। इसलिए उन्होंने अपने पिता को यह सलाह दी कि फ़ैसले को बदल दिया जाए:खेत का मालिक भेड़ों से होने वाली कमाई (दूध, ऊन और नए बच्चों) पर अस्थाई रूप से अपना अधिकार रखे, और भेड़ों का मालिक उस खेत पर तब तक .षि करे जब तक खेत पहले जैसी स्थिति पर न आ जाए, उसके बाद दोनों पक्ष अपने अपने मूल धन को दोबारा से प्राप्त कर लें। इस तरह भरपाई भी हो जाएगी, जुर्माना भी अदा हो जाएगा जबकि अपनी सम्पत्ति से कोई पक्ष वंचित भी नहीं होगा। हज़रत दाऊद ने इस बात को स्वीकार किया कि उनके बेटे ने जो हल प्रस्तुत किया है वह उनके फ़ैसले से.ज़्यादा बहतर है, और फिर उसी के मुताबिक़ फ़ैसला सुनायाँ तथापि, दोनों को ही अल्लाह ने युक्ति और योग्यता प्रदान की थी और अल्लाह दोनों ही फ़ैसलों का गवाह था। इसके बाद नोट नम्बर 71 में असद लिखते हैं कि सुलैमान का फ़ैसला.ज़्यादा बहतर होने के बावजूद इस फैसले को मानने से हज़रत दाऊद के अपने फ़ैसले की विश्वसनीयता और महत्व कम नहीं हुआ।

क़ुरआन के अनुसार, हज़रत सुलैमान को अलौकिक शक्तियाँ दी गयी थीं। उनका अधिकार पक्षियों पर, हवा पर और जिन्नों व शैतानों पर भी था (21:82; 34:12-14; 38:37 -38)। वह पक्षियों से बातचीत करते थे और उनकी बोलियाँ समझते थे (67:16-28)। असद अपने नोट नम्बर 77 में यह विचार व्यक्त करते हैं कि सुलैमान से सम्बंधित इस आयत में और कुछ दूसरी जगहों पर क़ुरआन उन काव्यात्मक कथाओँ की तरफ़ इशारा करता है जो उनके नाम से जोड़े गए थे और इस्लाम के आगमन से बहुत पहले यहूदियों, ईसाइयों और अरबों की लोकोत्तियों और लोरियों का अंग बन गए थे। मैं इस विचार से संतुष्ट नहीं हूँ लेकिन असद जैसे एक प्रबु) चिंतक और व्यापक ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को अपने इस अपरम्परागत विचार को स्पष्ट करने का मौक़ा दिया जाए तो अच्छा होगा जैसा कि उन्होंने लिखा है कि:‘‘चूंकि ये कथाएं उन लोगों की कल्पनाओं में बहुत गहराई से समाई हुई थीं जिन्हें क़ुरआन पहली बार सम्बोधित करता है, सुलैमान की हिकमत और चमत्कारी शक्तियों के बारे में ये क़िस्से व कहानियाँ उनकी अपनी संस्.ति का एक अंग बन गयी थीं इसलिए उन नैतिक सच्चाइयों के बयान के लिए जो इस किताब का विषय हैं मिसाल को रूप में इन क़िस्सों को नक़ल करना बहुत उपयुक्त था। अतःइन फ़र्ज़ी क़िस्सों का अनुमोदन करने या उन्हें नकारने के बजाए क़ुरआन उन्हें यह बात

समझाने के लिए स्तेमाल करता है कि तमाम इंसानी ताक़तों और शान व शौकत का स्रोत अल्लाह की हस्ती है और यह कि इंसान के पास जो भी सृजन शक्तायाँ हैं चाहे वह कभी बिल्कुल चमत्कारी अंदाज की हों अल्लाह की सृजन शक्ति के सिवा कुछ नहीं हैं"।

धार्मिक ग्रन्थों के कुछ दूसरे आलोचक भी यह विचार रखते है:स्मिथ ने अपनी बाइबिल डिक्शनरी में हज़रत सुलैमान के बारे में आलेख के अन्त में एक उप-शीर्षक "लीजेण्ड्स" (परम्पारगत क़िस्से) के अन्तर्गत लिखा है कि ऐतिहासिक तथ्यों के आसपास दिलचस्प कथाओँ की एक पूरी दुनिया बसी हुई है चाहे यह यहूदियों के क़िस्से कहानियाँ हों, ईसाइयों की लोकोत्तियाँ हों या मुसलमानों में फैली दास्तानें हों। बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेण्ट अर्थात तौरात की व्याख्या में भी हमें उन (हजरत सुलैमाने) से सम्बंधित अजीब व ग़रीब कहानियाँ मिलती हैं। हमारी बीमार आत्माओँ की तसल्ली व इलाज के लिए उन्होंने अपने पीछे चुटकुलों और जादू मन्त्र की कहानियाँ छोड़ दी हैं। उनकी हिकमत इतनी बढ़ी हुई थी कि वह पक्षियों और चूंटियों की बोली समझ लेते थे। वह सीपों और जड़ी बूटियों के रहस्यों से अवगत थे। अरबों की कल्पना तो यहाँ तक पहुंची कि सुलैमान को जिन्नों पर बर्चस्व प्राप्त हो गया था ..... उनके पास एक जादूई अँगूठी थी जिसमें वह पूर्व, वर्तमान और भविष्य के दर्शन कर लिया करते थे। सबा की रानी से उनकी मुलाक़ात तो एक काफ़ी रोमेण्टिक घटना है।

मेरे विचार में अल्लाह को अफ़सानों और फ़र्जी कथाओं को बयान करने की ज़रूरत नहीं है कि अल्लाह तआला इंसानों को अपना आख़री और शाशवत पैग़ाम देने के लिए इन कथाओं को उदाहरण के रूप में बयान करें। अल्लाह के पास अपनी हिदायत को पहुंचाने के बेगिनती साधन हैं। अल्लाह पाक ऐसी घटनाओं को बयान करने के लिए जो इतिहास में बीत चुकी हैं उनके बारे में वास्तविक जानकारियाँ दे सकते है, या फिर ऐसे मामलों के लिए जो किसी ख़ास व्यक्ति या स्थान या युग से सम्बंधित न हों उदाहरण दे सकते हैं जैसे "वह व्यक्ति जो एक गांव से गुज़रा जो अपनी छतों पर गिरा पड़ा था तो उसने कहा कि अल्लाह इस (के निवासियों को) मरने के बाद फिर से जीवित कैसे करेगा तो अल्लाह ने उसके प्राण रोक लिए (और) सौ साल तक (उसको मृत रखा) फिर उसको जिला उठाया और पूछा कि तुम कितना समय (मरे) रहो हो तो उसने जवाब दिया कि एक दिन या उससे भी कम। अल्लाह ने फ़रमाया कि (नहीं) बल्कि सौ साल (मरे) रहे हो। और अपने खाने पीने की चीजों को देखो कि (इतने लम्बे समय में) गली सड़ी नहीं और अपने गधे को भी देखो (जो मरा पड़ा है) मक़सद (इन बातों से) यह है कि हम तुम को लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानी बनाएं और (हाँ गधे की) हड्डियों को देखो कि हम उनको क्योंकर जोड़ देते हैं, उन पर किस तरह मास चमड़ा चढ़ा देते हैं"। जब यह घटनाएं उसके सामने आईं तो बोल उठा कि मैं विश्वास करता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (2:259)। ऐसी मिसाल जिसमें किसी ख़ास व्यक्ति या जगह या समय की

ताकीद न हो, क़ुरआन में बन्दों को सीख देने के लिए स्तेमाल की गयी हैं, ऐसे बयानें के बारे में तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह किसी व्यक्ति से सम्बंधित कोई वास्तविक घटना है या केवल एक मिसाली कल्पना। लेकिन जब क़ुरआन हज़रत सुलैमान की कुछ ख़ास अलौकिक शक्तियों का ज़िक्र करता है तो उसे सामुदायिक लोकोक्तियाँ और कथाएं नहीं समझा जा सकता केवल इस वजह से कि वो सांस्.तिक सच्चाईयाँ बन गयी हैं। इसलिए मुहम्मद असद के विचार को हालांकि धर्मों के इतिहासकारों और धार्मिक ग्रन्थों के आलोचकों ने माना है, मैं एक मुसलमान की हैसियत से क़ुरआन के हवाले से इसे स्वीकार नहीं कर सकता।

मेरे विचार में हज़रत सुलैमान को जो अलौकिक शक्तियाँ दी गयी थीं जो उन्होंने अपने शासन को मज़बूत करने के लिए स्तेमाल भी कीं, उन्हें इस दुआ का जवाब समझना चाहिए जो उन्होंने अल्लाह से की थी कि "ऐ मेरे परवरदिगार मेरी मग़फ़िरत कर दीजिए और मुझको ऐसी बादशाही प्रदान कीजिए कि मेरे बाद किसी को न मिले, बेशक आप बड़े अता करने वाले हैं"' (38:35)। ये शक्तियाँ बेशक चमत्कारी थीं लेकिन पैग़म्बरी भी ख़ुद अपने आप में एक बहुत बड़ा चमत्कार है। अल्लाह अगर किसी बन्दे (पैग़म्बर) पर अपनी वह्यि उतारते हैं तो वह अगर चाहें तो उसे शरीरिक और नैतिक शक्तियाँ भी दे सकते हैं। मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि अल्लाह को बन्दों के मार्गदर्शन के लिए क़िस्से कहानियों की ज़रूरत है। चूंकि अरबी भाषा और उसकी अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीक़ों में और क़ुरआन की विशेष शैली में वास्तविक घटनाओं और मिसालों की कमी नहीं है इसलिए अल्लाह को क़िस्से कहानियों और सामुदायिक लोकोक्तियों की ज़रूरत नहीं है जो कि ख़ुद इस्लाम की नज़र में नैतिक और अक़ली लिहाज से अनुचित हैं। राष्ट्रीय कथाएं किसी ऐतिहासिक व्यक्ति के लिए गढ़ी जाती हैं लेकिन में यह नहीं मानता कि ये ऐसी धार्मिक पुस्तक में उसके संदेश को समझाने के लिए मुफ़ीद (उपयोगी) होंगी जो ख़ुद बार बार सच्चाई और सच कहने पर ज़ोर देती हो। यह कल्पना कैसे की जासकती है कि अल्लाह तआला एक ऐसे सिद्धांत को किसी भी मामले में या किसी भी कारण से नज़र अंदाज़ करेंगे जबकि उनकी शान तो यह है कि ख़ुद फरमाते हैं "(ऐ मुहम्मद सल्ल.) और पैगम्बरों के वो सब हालात जो हम तुम से बयान करते हैं उनसे हम तुम्हारे मन को स्थिर करते हैं और इन (किस्सों) में तुम्हारे पास सत्य पहुंच गया और (ये) मोमिनों के लिए नसीहत (सीख) और इबरत (सबक़) हैं" (11:120), इनके क़िस्सों में अक़लमन्दों के लिए सबक़ है। यह (क़ुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने मन से) बना ली गयी हो बल्कि जो (किताबें) इससे पहले नाज़िल हुई है) उनकी दस्तीक़ (अनुमोदन) है और हर चीज़ की तफ़सील (खोल कर बयान करने वाली) और मोमिनों के लिए हिदायत व रहमत है" (12:111)।

इस आयत ख्और हमने सुलैमान की आज़माइश की और उनके सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया फिर उन्होंने (अल्लाह की तरफ़) ध्यान किया (38:34द्ध, के बारे में कुछ प्राचीन मुफस्सिरों

ने जो कुछ लिखा है उसे यहाँ नक़ल करना उचित होगा। इस आयत की व्याख्या में पहले से जो विचार चले आ रहे उन्हें अलराज़ी ने रद किया है और तख़्त (सिंहासन) पर "जसद" (शरीर का धड़) डालने का जो बयान है उसे ख़ुद हज़रत सुलैमान के शरीर के लिए माना है। हज़रत सुलैमान एक बार एक ऐसे रोग से पीड़ित हुए जिसने उन्हें बहुत कमज़ोर कर दिया था और उनका शरीर इतना कमज़ोर हो गया था कि जैसे शरीर में जान ही न बची हो। अरबों में बहुत ही दुर्बल व्यक्ति को केवल हड्डियों का ढांचा या बग़ैर जान का जिस्म कहने का चलन था (राज़ी, आयत 38:34 की व्याख्या, खण्ड 26)। इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में लिखा है कि इस आयत की आम तौर से जो व्याख्या की गयी है वह इस्राईली कहावतों पर आधारित है और रद कर दिए जाने योग्य है। असद ने इसी बात का समर्थन किया है और लिखा है कि लगभग ये सारी बातें तलमूद से ली गयी हैं।

जहाँ तक उन जादूई कमालों का मामला है जो हज़रत सुलैमान से जोड़े गए हैं तो क़ुरआन उनके बारे में यह कहता है कि ये शैतान थे जो ग़लत बातें लोगों को बताते थे ".... और सुलैमान ने हरगिज़ क़ुर की बात नहीं की बल्कि शैतान ही क़ुर करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे ..." (2:102)। मुहम्मद असद ने माना है कि क़ुरआन इंसान की उस नैतिक ज़िम्मेदारी का ज़िक्र करता है कि उन्हें चाहिए कि जादू के हर अमल को रद कर दें चाहे वह जादूई अमल सफ़ल हो या असफ़ल हो जाए, इसका मक़सद अल्लाह की बनाई गयी प्राकृतिक व्यवस्था को पलटना होता है ... यहाँ यह सवाल पैदा नहीं होता कि जादू जैसे रहस्यात्मक और गुप्त क्रियाओं की कोई हक़ीक़त भी है या यह केवल एक भ्रम और धोखा है। यहाँ क़ुरआन के बयान का मक़सद इससे कम या ज़्यादा कुछ नहीं कि इंसानों को यह सावधान किया जाए कि घटनाओं की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाली कोई भी ऐसी कोशिश जो अलौकिक प्रभाव रखती हो, चाहे उसको अंजाम देने वाले के अभी मन में ही हो, एक अध्यात्मिक आक्रमण होता है और उसकी वजह से उसे अंजाम देने वाले का रूहानी दर्जा बहुत नीचे गिर जाता है (नोट नम्बर 83, 84 तफ़सीर आयत 2:102)। फिर भी मैं यह समझता हूँ कि हज़रत सुलैमान को जो अलौकिक और चमत्कारी शक्तियाँ एक पैग़म्बर होने की हैसियत से प्राप्त थीं उन्हें इस श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, हालांकि जिन्नों और इंसानों ने ऐसी शक्तियों का दुरुपयोग किया है और इनसे लोगों को भटकाया है, "और सुलैमान ने कुर की बात नहीं की बल्कि शैतान ही कुर करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे"।

हज़रत यूनुस

हजरत यूनुस के ज़िक्र के बारे में देखें आयतें 4:163; 6:686

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ
اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ لَمَّآ اٰمَنُوْا
كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

कोई बस्ती भी ईमान नहीं लाई और ईमान का कोई फ़ायदा हासिल नहीं किया, अलबत्ता क़ौम यूनुस जब ईमान लाई, तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उनसे ज़िल्लत का अज़ाब दूर कर दिया, और एक अर्से तक हमने उनको फ़ायदा पहुंचाया। (10:98)

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ
اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي
الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ
اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاسْتَجَبْنَا
لَهٗ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ
نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

और (मछली वाले) ज़लनून को याद कीजिये, जब वो नाराज़ होकर चल दिये और ख़्याल किया के हम उन पर क़ाबू नहीं पा सकते, पस उन्होंने अंधेरों में पुकारा के तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, हर ऐब से, बेशक मैं क़ुसूरवार हूँ। तो हमने उनकी दुआ क़ुबूल कर ली, और उनको ग़म से निजात दी, और ईमान वालों को हम इसी तरह निजात देते हैं। (21:87-88)

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ
اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ
مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَ
هُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ
الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ
يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ
سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ
يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ
يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى
حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

और बेशक यूनुस भी रसूलों में से थे। जब वो भाग कर भरी हुई कश्ती में पहुंचे। तो उस वक़्त क़ुरआ डाला, तो वही मुल्ज़िम ठहरे। फ़िर मछली ने उनको निगल लिया और वो अपने आपको मलामत कर रहे थे। फ़िर अगर वो अल्लाह की पाकी बयान ना करते। तो वो उसी के पेट में रहते उस रोज़ तक के लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायें। तो हमने उनको एक मैदान में डाल दिया जबके वो बीमार थे। और हमने उन पर कद्दू का दरख़्त उगा दिया। और हमने उनको लाख या उससे भी ज़्यादा लोगों की तरफ़ रसूल बना कर भेजा। तो वो ईमान ले आये, सो हमने उनको एक मुद्दत तक नफ़ा पहुंचाया।

(37:139-148)

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوتِ ۘ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾ لَوْ
لَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ
بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ
فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾

तो अपने रब के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र किये रहा और मछली का लुक्मा बनने वाले यूनुस की तरह ना होना, जबके उन्होंने (ख़ुदा को) पुकारा तो उनका दिल घुट रहा था। अगर उनके रब की नेमत उनकी मदद को ना पहुंच जाती तो वो चटयल मैदान में डाल दिये जाते, और उनका हाल बुरा हो जाता। फ़िर उनके रब ने उनको बरगज़ीदा किया, और उनको नेकोकारों में (शामिल) कर लिया। (68:48-50)

हज़रत यूनुस नेनवा के असीरिया नगर में पैग़म्बर बना कर भेजे गए थे। उनके नगर के लोगों ने उनके पैग़ाम पर कान नहीं धरे और अपनी बुराइयों में लगे रहे तो उन्होंने ग़ुस्से में आकर नगर छोड़ दिया और उनकी तरफ़ से निराश हो कर निकल गए और एक नाव में सवार हो कर नदी पार जाने लगे। इस तरह उन्होंने उस मिशन को त्याग दिया जो अल्लाह की तरफ़ से उनको सौंपा गया था। फिर यह हुआ कि नाव डोलने लगी क्योंकि उस पर क्षमता से अधिक भार आ गया था। तो जब नाव पर सवार लोगों ने स्वयं को मुसीबत और ख़तरे में देखा तो उन्होंने तय किया कि किसी एक आदमी को को नाव से निकाल कर समुद्र में डाल दिया जाए। अब किस व्यक्ति को नाव से निकाला जाए इसके लिए उन्होंने लाटरी डाली। दुर्भाग्य से यह लाटरी हज़रत यूनुस के नाम निकली। इसलिए उन्हें नाव से समुद्र में गिरा दिया गयाँ जैसे ही वह समुद्र में गिरे और डूबने लगे तो उन्हें एक बड़ी मछली ने निगल लियाँ अब हज़रत यूनुस को अपनी ख़ता याद आई और उन्होंने अल्लाह से तौबा की और मआफ़ी मांगी। अल्लाह ने उनकी मआफ़ी क़ुबूल कर ली और मछली ने अल्लाह के हुक्म से उन्हें किनारे पर ले जाकर ऐसी जगह उगल दिया जहाँ वह अकेले तो थे लेकिन खाने पीने का सामान प्राकृतिक रूप से उपलब्ध था। ऐसी जड़ी बूटियाँ भी थीं जिनके खाने से उनका स्वास्थ अच्छा हो गयाँ फिर उन्होंने एक ऐसी क़ौम के पास जा कर अपना प्रचार कर्तव्य अंजाम देना शुरू किया जो एक हज़ार व्यक्तियों पर आधारित थी। उन सब ने उनका संदेश स्वीकार कर लिया क्योंकि वो यह देख रहे थे कि अगर वो अल्लाह के पैग़म्बर की बात नहीं मानेंगे और इंकार व गुनाहों पर चलते रहेंगे तो अल्लाह का अज़ाब (प्रकोप) उन्हें घेरने के लिए तैयार है और वो भी उन लोगों की तरह मारे जाएंगे जिन्होंने अल्लाह के संदेश को झुटलाया था और अपने कुकर्मों में लगे रहे थे तो अल्लाह का फ़ैसला उन पर आ पहुंचा था। हज़रत यूनुस पर ईमान लाने वाले ये लोग आख़िरकार अज़ाब से बचा लिये गए और इस दुनिया की नेअमतें उन्हें ख़ूब मिलीं और दुनिया में तब तक जीते रहे जब तक उन्हें प्राकृतिक रूप से मृत्यू नहीं आई।

हज़रत यूनुसप पर यह जो कुछ बीती उसका बयान बहुत महत्वपूर्ण है। वह अकेले ऐसे पैगम्बर हैं जिनके बारे में हमें यह बताया गया कि वह अपनी क़ौम के विरोध के मुक़ाबले अपना धीरज खो बैठे थे। क्या यह चौंकाने और सोचने वाली बात नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० को हज़रत यूनुस का क़िस्सा याद दिलाया गयाँ हज़रत यूनूस यद्यपि एक पैग़म्बर थे लेकिन इसके बावजूद वह इंसानी भावनाएं रखते थे और जल्दबाज़ी व मायूसी की भावनाएँ उन पर छा गयी थीं। इन भावनाओं से प्रभावित हो कर उन्होंने बड़ी ख़ता की कि अल्लाह की तरफ़ से दी गयी जिम्मेदारी से मुंह मोड़ बैठे। लेकिन फिर उनकी तौबा (पश्चाताप) को अल्लाह ने स्वीकार किया और उनकी तौबा से इस सच्चाई को सामने लाया गया कि जब कभी भी कोई ख़ताकार दोषी पूरी गम्भीरता से अपने दोष को स्वीकार करेगा और अल्लाह से मआफ़ी मांगेगा तो अल्लाह उस पर दया करते हैं और मुसीबत व कठिन स्थिति से उसे निकाल कर उसे राहत देते हैं।

बाइबिल में हज़रत यूनुस का क़िस्सा और ज्यादा विस्तार से बयान हुआ है। बाइबिल में हज़रत यूनुस का एक इस्राईली पैगम्बर के रूप में जिक्र किया गया है जो लगभग आठवी सदी ई.पू. में हुए थे जैसा कि लाइन एन्साइक्लोपीडिया आफ बाइबिल (पाल इलैग्जेण्डरे) में बताया गया है। इस एन्साइक्लोपीडिया में यह भी ज़िक्र है कि जोहना (हज़रत यूनुस) की किताब सम्भवतःउनके बारे में लिखी गयी एक घटना है जो उनके बाद के लोगों ने असीरियाई साम्राज्य के पतन के बाद लिखी है, यह उनकी अपनी किताब नहीं है।

हज़रत इलयास, अलयसअ (Elijah, Elisha)

وَ اِنَّ اِلۡيَاسَ لَمِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذۡ قَالَ
لِقَوۡمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۲۴﴾ اَتَدۡعُوۡنَ بَعۡلًا وَّ
تَذَرُوۡنَ اَحۡسَنَ الۡخَالِقِيۡنَ ﴿۱۲۵﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمۡ وَ
رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۲۶﴾ فَكَذَّبُوۡهُ فَاِنَّهُمۡ
لَمُحۡضَرُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۱۲۸﴾
وَ تَرَكۡنَا عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿۱۲۹﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلۡ
يَاسِيۡنَ ﴿۱۳۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۳۱﴾
اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳۲﴾

और बिला शुबह इल्यास भी रसूलों में से थे। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा, तुम अल्लाह से डरते नहीं। क्या तुम बअल को पूजते हो, और जो सबसे बेहतर बनाने वाला है उसे छोड़ बैठे हो। अल्लाह तुम्हारा रब है, और तुम्हारे अगले बाप दादों का रब है। तो उन लोगों ने उनको झुटलाया, सो वा दोज़ख में हाज़िर किये जायेंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे होंगे (वो दोज़ख में नहीं जायेंगे)। और हमने आख़िर में आने वालों में उनके लिये ये बात रखी। के इल्यासीन पर सलाम हो। बेशक हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। बिला शुबह वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (37:123-132)

इब्रानी पैग़म्बर इलयास (Elijah: Bible: I Kings XVIIff., II Kings 1-2) का ज़िक्र क़ुरआन की आयत 6:85 में और उपरोक्त में नबियों के एक क्रम के साथ आया है। बाइबिल के मुताबिक़ वह इस्राईल के उत्तरी राज्य में रहते थे जो हज़रत सुलैमान की मौत के बाद उस साम्राज्य के टूटने से अस्तित्व में आया था। वह 9वीं शताब्दी ई.पू. में आहाब और आहाज़िया के युग में हुए थे। आहाब और उसकी विदेशी पत्नि जज़ाबील फ़ोनेशिया के प्राचीन देवता बअल की पूजा करते थे जिसे वो भगवान कहते थे। उस पर अल्लाह के पैग़म्बरों को मार डालने का भी आरोप है और उसे एलीजाह ने अल्लाह के अज़ाब के रूप में सूखा पड़ने की आशंका से ख़बरदार किया था। बाइबिल के बयान के अनुसार आख़िरकार यह भविष्यवाणी सही साबित हुई, सूखा पड़ा भी और ख़त्म भी हो गया, यह राजा एक लड़ाई में मारा गया और उसके बाद आहाज़िया उसका उत्तराधिकारी हुआ।

अलयसअ (बाइबिल में एलीशा) हज़रत इलयास के बाद नबी हुए और 50 साल से अधिक समय तक उन्होंने इस्राईलियों के छः राजाओं के युग में पैग़म्बरी का काम किया (19:16ff, II kingss 2¯9, 13:14ff)। बाइबिल का बयान है कि एलीजाह ने अपनी दुआ से एक मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया जबकि एलीशा ने एक मृत व्यक्ति को जीवित करने के अलावा कोढ़ के एक रोगी को ठीक कर दिया। बाइबिल के पैग़म्बर मलाची ने यह भविष्यवाणी की थी कि एलीजाह वापस आएगा, बाद में इंजील में यह ख़बर दी गयी कि मूसा और एलीजाह को ईसा के शिष्यों ने ईसा के साथ कल्पित किया और यह माना गया कि उनका स्वरूप और चेहरा बदल गया है (मालाची 4:5-6, लूक़ा 9:28ff+)। हज़रत ईसा को स्वयं भी कुछ लोगों ने ऐसा ही समझा था और उनसे पूछा था कि क्या वह इलयास (एलीजाह) हैं (मार्क 6:15)। और उन्होंने हज़रत इलयास के साथ हुई घटना को याद दिलाया था और यह बताया था ग़ैर इस्राईलयों ने, ना कि इस्राईलयों ने उनके इलाज से कैसे फ़ायदा उठाया (लूक़ा 4:26-28)।

ज़करिया और यहया (ZACHARIAH and JOHN THE BAPTIST)

إِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ إِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ إِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٣٥ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

जब इमरान की बीवी ने अल्लाह से कहा के ऐ मेरे रब! जो बच्चा मेरे पेट में है मैं उसको तेरी नज़्र करती हूँ उसको मैं दुनिया के कामों से आज़ाद रखूंगी, तू मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू सुनने वाला और जानने वाला है। जब उनके हां लड़की पैदा हुई तो कहने लगीं के ऐ मेरे रब! मेरे तो लड़की हुई, और अल्लाह को ख़ूब मालूम है के उनके हां क्या पैदा हुआ और वो लड़का

وَضَعَتْ ۭ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ
سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ اُعِيْذُھَا بِكَ وَ
ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝٣٦
فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ
اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَـنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ
وَجَدَ عِنْدَھَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى
لَكِ ھٰذَا ۭ قَالَتْ ھُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۗءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٣٧
ھُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ ھَبْ
لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ
سَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝٣٨ ھُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا
رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ ھَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ
ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاۗءِ ۝٣٨
قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ
بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ۭ قَالَ
كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝٤٠ قَالَ
رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا
تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ۭ وَ
اذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَ
الْاِبْكَارِ ۝٤١

उस लड़की के बराबर नहीं, मैंने उसका नाम मरयम रख दिया है और मैं उसको और उसकी औलाद को आपकी पनाह में देती हूँ शैताने मरदूद से। पस उनको उनके रब ने हुस्ने क़बूल के साथ क़बूल किया, और उनके बेहतरीन तरीक़ा परवरिश किया, और ज़क्रिया (अ.स.) को उनका सरपरस्त बनाया। जब कभी ज़क्रिया उनके पास उम्दा मकान में आते तो उनके पास कुछ खाने पीने की चीज़ें पाते। और कहा करते ऐ मरयम! ये चीज़ें तुम्हारे पास कहां से आईं, वो कहतीं के अल्लाह के पास से आईं, बिला शुबह अल्लाह जिसको चाहता है रिज़्क़ बेहिसाब अता फ़रमाता है। उस वक़्त ज़क्रिया (अ.स.) ने अपने रब से दुआ की के ऐ मेरे रब! तू मुझे भी ख़ास अपने पास से कोई अच्छी सी औलाद इनायत फ़रमा, तू बेशक दुआ सुनने और क़बूल करने वाला है। पस फ़रिश्तों ने उनसे पुकार कर कहा, जब वो मेहराब में खड़े नमाज़ पढ़ थे, के अल्लाह आपको ख़ुशख़बरी देता है याहिया की जो कलमातुल्लाह की तसदीक़ करेंगे, मक़तदा होंगे, और अपने नफ़्स को लज़्ज़त से रोकने वाले होंगे, आला दर्जे के शाईस्ता नबी भी होंगे। ज़क्रिया ने अर्ज़ किया के ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा जबकि मुझको बुढ़ापा आ पहुंचा है, और मेरी बीवी बांझ है, अल्लाह ने फ़रमाया के इसी तरह अल्लाह कर देता है जो वो चाहता है। ज़क्रिया ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा दीजिये, अल्लाह ने फ़रमाया तुम्हारी निशानी यही है कि तुम लोगों से तीन रोज़ तक बातें ना कर सकोगे, बजुज़ इशारा के, और अपने रब को बकसरत याद करो और तसबीह करो दिन ढले और सुबह भी।

(3:35-41)

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢ اِذْ
نَادٰى رَبَّهٗ نِدَاۗءً خَفِيًّا ۝٣ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ

ये तुम्हारे रब की मेहरबानी का ज़िक्र है, जो उसने अपने बन्दे ज़क्रिया (अ.स.) पर की थी। जब ज़क्रिया ने अपने

وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَ اشْتَعَلَ الرَّاْسُ
شَيْبًا وَّ لَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ
شَقِيًّا ۝٤ وَ اِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ
وَّرَآءِىْ وَ كَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ
مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۝٥ يَّرِثُنِىْ وَ يَرِثُ مِنْ
اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَ اجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝٦
يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ِۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ
لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ
رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّ كَانَتِ
امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّ قَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ
عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ
عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّ قَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَ لَمْ
تَكُ شَيْئًا ۝٩ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْٓ اٰيَةً ؕ
قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ
لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ
الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً
وَّ عَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَ
اٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّ حَنَانًا مِّنْ
لَّدُنَّا وَ زَكٰوةً ؕ وَ كَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّ بَرًّاۢ
بِوَالِدَيْهِ وَ لَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝١٤ وَ
سَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَ يَوْمَ يَمُوْتُ وَ
يَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥

रब को आहिस्ता आहिस्ता पुकारा। कहा, ऐ मेरे रब! मेरी हड्डियां बुढ़ापे के सबब कमज़ोर हो गई हैं, और सर में सफ़ेदी फ़ैल गई है, और ऐ मेरे रब! आपसे मांग कर कभी मैं महरूम नहीं रहा। और मैं अपने पीछे अपने रिश्तेदारों से ख़ौफ़ खाता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तो मुझे अपने पास से एक वारिस अता फ़रमा। जो मेरा और याक़ूब के ख़ानदान का वारिस बने, और ऐ मेरे रब! उसको ख़ुश अतवार बना। ऐ ज़क्रिया! हम तुम को एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं उसका नाम याहिया है, उससे पहले हमने उस नाम का कोई शख़्स पैदा नहीं किया। ज़क्रिया (अ.स.) ने कहा, ऐ मेरे रब! किस तरह मेरे हां लड़का होगा, जबके मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तहा को ही पहुंच चुका हूँ। फ़रमाया, ऐसा ही होगा, तुम्हारे रब ने फ़रमाया के मुझे ये आसान है, और मैं पहले तुम को भी पैदा कर चुका हूँ, और तुम कोई चीज़ ना थे। ज़क्रिया ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिये कोई निशानी मुक़र्रर कर दे, फ़रमाया, निशानी ये है के तुम (सही व सालिम होकर भी) तीन रात (दिन) लोगों से बात ना कर सकोगे। फ़िर ज़क्रिया (एक दिन) हुज्रे से बाहर आये अपनी क़ौम के पास और उनको इशारे से कहा के तुम सुबह व शाम अपने अल्लाह की पाकी बयान किया करो। ऐ याहिया! किताब को मज़बूत पकड़े रहो, और हमने उनको लड़कपन ही में दानाई अता की थी। और अपने पास से उनको शफ़्क़त और पाकीज़गी भी इनायत की थी, और वो बड़े परहेज़गार थे। और अपने मां बाप के साथ नेकी करने वाले थे, और सरकश और नाफ़रमान नहीं थे। और सलाम हो उन पर जब वो पैदा हुए, और जब वो वफ़ात पायेंगे, और जब वो ज़िन्दा होकर उठाये जायेंगे। और इस किताब में मरयम का भी ज़िक्र कीजिये जब वो अपने घर वालों से अलग होकर एक मकान में चली गईं जो

मशरिक़ की जानिब था। तो उन्होंने उनके सामने पर्दा डाल लिया तो हमने उनके पास अपना फ़रिश्ता भेजा तो वो ठीक आदमी की शक्ल बना गया। मरयम ने कहा मैं अल्लाह की पनाह मांगती हूँ तुम से अगर तुम अल्लाह से डरने वाले हो। फ़रिश्ते ने कहा के मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ (इसलिये आया हूँ) के तुमको एक लड़का अता करूं। (19:2-15)

आयत 3:35 में जिन इमरान का ज़िक्र है वह बाइबिल के अमराम हैं जो मूसा और हारून के पिता हैं। ज़करिया और उनकी पत्नि दोनों हारून की संतान में हैं जो इस्राईलयों में पादरियों का एक परिवार है (Chronicles XXIV: 10 (Lukes 1:5)। इन हवालों में यह भी कहा गया है कि ज़करिया की पत्नि एलिज़ाबेथ हारून की एक बेटी थीं और मूसा की माँ मेरी की चचेरी बहन थीं (लूक़ा:1:36)।

क़ुरआन के अनुसार ज़करिया ने हज़रत मरियम का पालन पोषण किया था क्योंकि लॉट्री में संरक्षक के लिए उनका ही नाम निकला था, और यह लॉट्री इसलिए की गयी थी कि उस बच्ची की माँ ने यह वचन लिया था कि होने वाली बच्ची को गिरजा में सेवा के लिए अर्पित कर दूंगी जिसके कारण उसे गिरजा (पूजा स्थल) में ही रहना था। फिर उन्होंने अपनी पैतृक भावनाओ से प्रभावित हो कर अल्लाह से एक बच्चे के जन्म की दुआ की हालांकि वह और उनकी पत्नि दोनों बूढ़े हो चुके थे। अल्लाह ने उनकी यह दुआ सुन ली और अपने फ़रिशते को भेज कर उन्हें यह अप्रत्याशित ख़ुशख़बरी सुनाई कि उनके यहां एक बेटा पैदा होगा जिसका नाम 'यहया' रखा जाएगा और उस बच्चे को हिकमत (युक्ति) और निर्णय शक्ति दी जाएगी और उस पर अल्लाह की रहमत होगी और वह पवित्रा हस्ती होगा। वह अल्लाह का अच्छा बन्दा होगा, अपने मातापिता के लिए महरबान और सेवक होगा और वह अहंकारी या विद्रोही नहीं होगा (3:39; 19:12-15)। ज़करिया ने इसके लिए अल्लाह से एक निशानी का निवेदन किया जो उनके और उनके लोगों के लिए इसका सुबूत हो कि उनके यहां ऐसा लड़का होने वाला है, और वह व उनके लोग सब मिल कर अल्लाह की पाकी और प्रशंसा का जाप करते रहें (3:41; 19:10-11)। लेकिन लूक़ा में इसके विपरीत यह कहा गया है कि ज़करिया को गूंगा बना दिया गया था (1:20-22)।

हज़रत यहया अर्थात जॉन का सम्बंध हज़रत ईसा के सिलसिले से हे और वह ईसा से कुछ पहले के ही हैं। लूक़ा के उपदेशों के अनुसार वह पैग़म्बर बनाए जाने तक मरुस्थल (रेगिस्तान) में रहे। लोग उनके उपदेश सुनने के लिए और शिक्षा व सीख के लिए उनके पास आया करते

थे:"अपने गुनाहों से तौबा कर लो बपतिसमा लेलो (यानी अल्लाह का रंग चढ़ालो) तो अल्लाह तुम्हें मआफ़ कर देगा"। जीसस (हज़रत ईसा) ने जॉन दि बाप्टिस्ट (हज़रत यहया) से कहा कि वह उन्हें उर्दुन के दरिया में पवित्र स्नान कराएं (बपतिसमा दें)। बाद में जॉन (यहया) को जुदाइया राजा हेराड (37-4 ई.पू.) ने जेल में डाल दिया क्योंकि वह राजा के कामों पर खुले रूप से अलोचना करते थे, और इनजीलों के अनुसार हज़रत यहया के जेल में रहते हुए दोनों के बीच एक समझौता हुआ। और अन्त में हेराड की पत्नि ने राजा को इसके लिए तैयार कर लिया कि वह यहया को मार डाले (मेथीव 3,11, 14:1-2, मार्क 1:2-4; ल्यूक 1,3,7:18 ff)। यद्यपि यहया ने कोई चमत्कार नहीं दिखाया (जॉन 10:41) लेकिन स्मिथ की बाइबिल डिक्शनरी में लिखा है कि उनका चमत्कारी जन्म, कठोर तपस्या वाला जीवन, उनकी असाधारण पवित्रता का चर्चा और यह आम धारणा की वह कोई बहुत महान रुतबा प्राप्त करने वाले हैं, इन सब बातों की वजह से वो लोगों के लिए ध्यान आकर्षण का केन्द्र बने। ईसाइयों के नज़दीक जॉन दि बापटिस्ट (हज़रत यहया) का पैग़म्बरों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि हज़रत ईसा से उनका ख़ास सम्बंध था और हज़रत ईसा के आगमन से पहले वह लोगों को हज़रत ईसा के आने के बारे में बताते थे और उनके स्वागत के लिए लोगों को तैयार कर रहे थे। अच्छे कर्मों के करने और बुरे कर्मों से बचने की उनकी ईमानी और नैतिक भावना जो कि इतनी प्रबल थी कि राजा को भी टोकने से नहीं रुकते थे, आने वाले लोगों के लिए एक उदाहरण और प्रेरणा स्रोत बनी "और जिस दिन वह पैदा हुए और जिस दिन वह मृत होंगे और जिस दिन वह जीवित करके उठाए जाएंगे उन पर सलाम और रहमत है"(क़ुरआन 19:15)।

ईसा मरियम के पुत्र

पैग़म्बरों में उनके नाम का उल्लेख आयत 4:163, 6:85 और 38:40 और 42:13 में आया है।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ
مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَ رَفَعَ بَعْضَهُمْ
دَرَجٰتٍ ؕ وَ اٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا
جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَ لٰكِنِ اخْتَلَفُوْا

उन रसूलों में से हमने बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है। बाज़ से अल्लाह ने गुफ्तगू की। और बाज़ के दीगर उमूर में मर्तबे बुलंद किये हैं। और हमने ईसा इब्ने मरयम को खुली निशानियां दीं। और रूहुलक़ुद्दूस से उनकी मदद की। और अगर अल्लाह चाहता तो उनके बाद जो लोग हुए अपने पास खुली निशानियां आने के बाद आपस में न लड़ते। लेकिन उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया तो उनमें से बाज़ ईमान ले आए। और बाज़ काफ़िर ही रहे। और

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ
وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ
يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۠﴿۲۵۳﴾

अगर अल्लाह चाहता तो लोग बाहम जंगो क़ताल ना करते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है।

(2:253)

وَ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ
اصْطَفٰىكِ وَ طَهَّرَكِ وَ اصْطَفٰىكِ عَلٰى
نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۲﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِىْ لِرَبِّكِ
وَ اسْجُدِىْ وَ ارْكَعِىْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَ
مَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ
اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَ مَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۴۴﴾ اِذْ قَالَتِ
الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ
بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖۗ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ
مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَ يُكَلِّمُ النَّاسَ فِى
الْمَهْدِ وَ كَهْلًا وَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۴۶﴾
قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّ لَمْ
يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۷﴾ وَ يُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ ﴿۴۸﴾ وَ
رَسُوْلًا اِلٰى بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ اَنِّىْ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّىْٓ اَخْلُقُ

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बिला शुबह अल्लाह ने आपको मुंतख़ब फ़रमाया है और पाक बनाया है। और दुनिया जहान की औरतों में से चुना है। ऐ मरयम! फ़रमांबर्दारी करती रहो, अपने रब की, और सजदा किया करो, और रूकू किया करो, रूकू करने वालों के साथ। ये क़िस्से ग़ैब की ख़बरें हैं, हम ये आप पर वही कर रहे हैं, और आप उन लोगों के पास नहीं थे ना तो उस वक़्त जब वो क़ुरआ के तौर पर अपने अपने क़लम पानी में डाल रहे थे, के उन सब में कौन मरयम की किफ़ालत करे, और ना उस वक़्त मौजूद थे जब वो आपस में झगड़ रहे थे (और इख़्तिलाफ़ कर रहे थे)। जब फ़रिश्तों ने कहा के ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुमको ख़ुशख़बरी देता है एक कलमे की जो अल्लाह की तरफ़ से है। उस का नाम और लक़ब मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, जो बावक़ार होगा दुनिया में और आख़िरत में भी। और नीज़ मुक़र्रबीन ख़ुदा में शुमार होंगे। और वो गहवारह में ही लोगों से कलाम करेंगे और बड़ी उम्र में भी, और शाईस्ता लोगों में शुमार होंगे। हज़रत मरयम बोलीं। ऐ मेरे रब! (मुझे बता के) किस तरह मेरे बच्चा होगा जबकि मुझको तो किसी बशर ने हाथ भी नहीं लगाया। अल्लाह ने फ़रमाया के वैसे ही बिला मर्द के होगा। अल्लाह जो चाहे पैदा फ़रमाता है जब वो किसी चीज़ को पूरा करना चाहता है, तो उसको कह देता है कि हो जा तो वो चीज़ हो जाती है। और अल्लाह उनको (ईसा को) आसमानी किताबें, हिकमत की बातें, ख़सूसन तौरेत और इंजील सब सिखा देगा। और उनको अपना रसूल बनाकर तमाम बनी इस्राईल की तरफ़ भेजेगा कि मैं तुम

لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ
فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَ اُبْرِئُ
الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۚ وَ اُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَ مَا
تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ﴿۴۹﴾ وَ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
لِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ
وَ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۵۱﴾
فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ
مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ اشْهَدْ
بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنْزَلْتَ
وَ اتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ مَكَرُوْا وَ مَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَ
اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيْسٰۤى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ وَ
مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ جَاعِلُ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾
فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

लोगों के पास अपनी नबव्वत पर काफ़ी दलील लेकर तुम्हारे रब की तरफ़ से आया हूँ, मैं मिटटी के गारे से एक परिन्दे की शक्ल बनाता हूँ, फ़िर वो अल्लाह के हुक्म से जानदार परिन्दा बन जाता है, और मैं माद्रज़ाद अन्धे को अच्छा कर देता हूँ, और ब्रस (जुज़ाम) के बीमार को अच्छा कर देता हूँ, और अल्लाह ही के हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर देता हूँ, और मैं तुम को बता देता हूँ, जो अपने घरों में खा कर तुम आते हो, और जो तुम घरों में रख आते हो, बिला शुबह उनमें मेरी नबुव्वत की काफ़ी दलील है तुम लोगों के लिए (अगर यक़ीन करो) और ईमान लाओ। और मैं उस किताब तौरात की भी तसदीक़ करता हूँ जो मुझ से पहले थी, और इसलिए मैं आया हूँ के जो बाज़ चीज़ें तुम पर हराम कर दी गई थीं, वो हलाल कर दूं, और तुम्हारे रब की तरफ़ से मैं तुम्हारे पास दलीले नबुव्वत लेकर आया हूँ, तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। बेशक अल्लाह मेरा रब है, और तुम सबका भी रब है, सो तुम सब उसी की इबादत करो, बस यही सीधा रास्ता है। जब हज़रत ईसा ने महसूस किया कि उनमें से कुछ ने इनकार कर रखा है तो आपने फ़रमाया कि ये कौन ऐसे आदमी हैं जो मेरे मददगार बन जायें सिर्फ़ अल्लाह के लिए, तो हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के दीन के मददगार, हम अल्लाह ही पर ईमान लाय और आप गवाह रहें हमारे के हम फ़रमांबरदार हैं। ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए उन अहकामात पर जो अपने नाज़िल फ़रमाए, और पैरवी की रसूल की, सो हमें उनके साथ लिख दीजिये जो तसदीक़ करते हैं। और उन लोगों ने ख़ुफ़िया तदबीरें कीं, और अल्लाह ने भी खुफ़िया तदबीर की, और अल्लाह सबसे अच्छी तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा! (तुम कुछ ग़म ना करो) बेशक मैं तुम को अपने वक़्त पर वफ़ात दूंगा, इस वक़्त मैं तुम को अपनी तरफ़

उठाए लेता हूँ और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूँ, जो मुनकिर हैं, और जो तुम्हारा कहना मानने वाले हैं (मैं क़यामत तक) उनको ग़ालिब रखने वाला हूँ उन लोगों पर जो तुम्हारे मुनकिर हैं, फ़िर तुम सबकी वापसी मेरी तरफ़ होगी, सो मैं तुम्हारे दरमियान अमली फ़ैसला कर दूंगा उन उमूर में जिन में तुम बाहम इख़्तिलाफ़ करते थे। पस जो इख़्तिलाफ़ करने वालों में काफ़िर थे सो उनको सख़्त सज़ा दूंगा दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और उनका कोई मददगार न होगा। और जो मोमिन थे और उन्होंने नेक काम किये थे सो उनको उनके ईमान और नेक कामों के सवाब देंगे। और अल्लाह ज़ुल्म करने वालों के साथ मोहब्बत नहीं रखते। ऐ नबी! ये हम तुम को अल्लाह की आयात और हिकमतों से भरी हुई नसीहते पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं। बेशक ईसा (अ.स.) की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम (अ.स.) की मिसाल से मिलती जुलती है, अल्लाह ने आदम का क़ालिब पहले मिटटी से बनाया फ़िर फ़रमाया के (इन्सान) हो गए। ये बात तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (3:42-60)

شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا لَهُمْ
مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٥٦﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَ
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَ
اللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَٰلِكَ نَتْلُوهُ
عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾
إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ
خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن
فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ
الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

और उनके कुफ़्र के सबब, और इस बात पर के उन्होंने हज़रत मरयम (अ.स.) पर बड़ा अज़ीम बोहतान लगाया था। और इस पर के उन्होंने कहा हमने मसीह ईसा बिन मरयम को जो अल्लाह के रसूल हैं क़त्ल कर डाला है, हालांकि उन्होंने ना उसको क़त्ल किया और ना उसको सूली पर चढ़ाया है, लेकिन उनको शुबह है, और जो उनके बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वो उनकी तरफ़ से शक में हैं उनके पास इस बात पर कोई दलील और सनद नहीं है बजुज़ क़यास और ख़्याली बात के और कुछ नहीं है, और ये यक़ीनी बात है के उन्होंने उनको क़त्ल नहीं किया। बल्के अल्लाह तआला ने उनको अपनी तरफ़

وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ بُهْتَانًا
عَظِيمًا ﴿١٥٦﴾ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ
عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ ۚ وَمَا
قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَ
إِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ
مِّنْهُ ۚ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ﴿١٥٧﴾ بَل رَّفَعَهُ
اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٥٨﴾ وَ

اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿١٥٩﴾ ۚ

उठा लिया है, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है। और अहले किताब में कोई ऐसा शख़्स नहीं जो मरने से पहले हज़रत ईसा के बारे में तसदीक़ ना करता हो, और क़यामत के रोज़ वो उन पर गवाही देगा।

(4:156-159)

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَ لَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَ كَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَ رُوْحٌ مِّنْهُ ز فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚقف وَ لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ م لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾ ع لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَ لَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَ مَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَ اسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में हद से मत निकलो, और अल्लाह की शान में कोई ग़लत बात मत कहो, मसीह ईसा बिन मरयम कोई चीज़ भी नहीं हैं मगर अल्लाह के रसूल और अल्लाह के एक कलमा और बस, अल्लाह ही ने उनको मरयम तक पहुंचाया है, और अल्लाह ही की तरफ़ से एक जान हैं, सो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाओ, और यूं मत कहो के तीन हैं, इससे बाज़ आ जाओ, तुम्हारे लिये यही बेहतर है, हक़ीक़ी माबूद तो एक ही माबूद है, वो औलाद वाला नहीं है इससे वो पाक है और बालातर है, जो भी आसमानों और ज़मीन में है वो सब उसका है, वो कारसाज़ काफ़ी है। मसीह (अ.स.) हरगिज़ भी कोई आर नहीं करेंगे इससे के वो अल्लाह के बन्दे हैं, और ना मुक़र्रब फ़रिश्ते, और जो अल्लाह की बन्दगी से आर और तकब्बुर करेगा तो अल्लाह सबको अपने पास जमा करेगा। फ़िर जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे, तो अल्लाह उनको पूरा पूरा सवाब अता फ़रमाएगा, और अपने फ़ज़्ल से उनको और.ज़्यादा देगा, और जो आर ही करते रहे और तकब्बुर में रहे तो अल्लाह उनको बड़ी सख़्त दर्दनाक सज़ा देगा और वो अल्लाह के सिवा किसी को ना तो अपना दोस्त और ना मददगार ही पायेंगे। (4:171-173)

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ۭ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا
اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَ
اُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ يَخْلُقُ مَا
يَشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٧ وَ
قَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰۗؤُا اللّٰهِ وَ
اَحِبَّاۗؤُهٗ ۭ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۭ
بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۡ وَاِلَيْهِ
الْمَصِيْرُ ۝١٨

बेशक वही लोग काफ़िर हैं जो कहते हैं के अल्लाह ऐने मसीह इब्ने मरयम है, आप फ़रमा दीजिये के अगर यही बात है तो बताओ के कौन है जो अल्लाह से बचाने का इख़्तियार और ताक़त रखता है अगर अल्लाह ये इरादा कर ले के हज़रत मसीह बिन मरयम को और उनकी वालिदा को और उन सबको जो ज़मीन में हैं हलाक करना चाहे, (कोई कहीं भी नहीं है) और अल्लाह ही की हुकूमत है सारे आसमानों और ज़मीन पर और जो भी उन दोनों में हैं उन पर, वो ही है जो चाहे पैदा करे, और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। और यहूद और नसारा ये दावा करते रहते हैं के हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं, आप फ़रमा दीजिये के फ़िर वो तुम्हारे गुनाहों के बदले तुम को क्यों अज़ाब देगा, बल्कि तुम भी ऐसे मामूली आदमी हो जैसा के उसकी दूसरी मख़लूक़ है, अल्लाह ही जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा, और अल्लाह ही की सारी हुकूमत आसमानों मे भी और ज़मीन में भी, और जो कुछ भी उन दोनों में हैं हर जगह अल्लाह ही की हकूमत है, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट जाना है। (5:17-18)

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۠ وَ
اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٦ وَلْيَحْكُمْ
اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۭ وَمَنْ
لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝٤٧

और हमने पीछे उनके ईसा को भेजा जो अपने से पहले नाज़िल शुदा किताब तौरेत की तसदीक़ करते थे, और हमने उनको इंजील अता की थी जिसमे हिदायत थी, और रौशनी थी, और वो अपने से पहले की किताब तौरेत की भी तसदीक़ करती थी और वो अल्लाह से डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत थी। आर इंजील वालों का ये फ़र्ज़ है के वो उसके मवाफ़िक़ हुक्म करें जो उसमें अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है, और जो भी उसके मवाफ़िक़ हुक्म नहीं करेगा जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, तो वो नाफ़रमानी में ही होगा।

(5:46-47)

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَ قَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ؕ
اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَ مَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَ مَا
لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۷۲﴾ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَ مَا
مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَ اِنْ لَّمْ
يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۷۳﴾ اَفَلَا
يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۷۴﴾ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ
اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ
الرُّسُلُ ؕ وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا
يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ
لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۷۵﴾
قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا ؕ وَ اللّٰهُ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۷۶﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا
تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعُوْٓا
اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَ
اَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّ ضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ
السَّبِيْلِ ﴿۷۷﴾

बेशक वो लोग काफ़िर हो गए, जिन्होंने कहा के अल्लाह ऐन मसीह इब्ने मरयम है, हालांके मसीह ने ख़ुद फ़रमाया था, ऐ बनी इस्राईल! तुम अल्लाह ही की इबादत किया करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, बेशक जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक करेगा तो अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा, और उसका ठिकाना दोज़ख है, और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार ना होगा। बेशक वो भी काफिर हैं जो कहते हैं के अल्लाह तीन में का एक है, जबके बजुज़ एक माबूद के और कोई माबूद नहीं है, और अगर ये लोग अपने इन अक़वाल से बाज़ ना आए तो जो लोग उनमें काफ़िर रहेंगे उन पर दर्दनाक अज़ाब होगा। क्या फ़िर भी वो अल्लाह के सामने तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं मांगते, और अल्लाह तो बख़्शने वाला और रहमत वाला है। मसीह इब्ने मरयम कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक रसूल हैं, हैं, जिनसे पहले और भी रसूल गुज़र चुके हैं, उनकी वालिदा एक सच्ची बीबी हैं, दोनों खाना खाया करते थे, देखिये तो हम किस तरह उनसे दलायल बयान कर रहे हैं, फ़िर देखिये वो उल्टे किधर जा रहे हैं। आप फ़रमा दीजिये, क्या अल्लाह के सिवा उसकी इबादत करते हो जो तुम को ना तो कोई नुक़सान करने का इख़्तियार रखता है और ना ही नफ़ा पहुंचाने का हालांकि अल्लाह सबकी सुनने वाला और सबके बारे में ख़ूब जानता है। आप कह दीजिये, ऐ अहले किताब तुम अपने दीन में नाहक़ ग़लू मत करो, और ना उनके ख़्यालात पर चलो जो पहले ख़ुद भी ग़लती में पड़ चुके हैं, और बहुतसों को ग़लती में डाल चुके हैं, और वो सीधे रास्ते से बहुत दूर हो गए हैं।

(5:72-77)

जब अल्लाह कहेगा, ऐ ईसा इब्ने मरयम! तुम मेरे ईनाम को याद करो जो तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किया गया है, जब मैंने तुम को रूहुलक़ुद्दूस से ताईद दी, तुम आदमियों से गोद में भी कलाम करते थे और बड़ी उम्र में भी, और जब मैंने तुमको किताबें और दानाई की बातें, और तौरेत और इंजील की तालीमात दीं, और जब तुम गारे से एक शक्ल बनाते थे मसलन परिन्दे की शक्ल, मेरे हुक्म से फ़िर तुम उसमें फ़ूंक मारते थे, फ़िर मेरे हुक्म से वो परिन्दा बन जाता था, और मेरे ही हुक्म से तुम मादरज़ाद अंधे को, और बर्स के बीमार को अच्छा कर दिया करते थे, और जबके मेरे ही हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे, और जब मैंने बनी इस्राईल को तुम्हारे क़त्लो हलाकत से बाज़ रखा, जब तुम दलीलें लेकर उनके पास आए, फ़िर उनमें जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था के ये तो खुले जादू के सिवा कुछ भी नहीं है। और जब मैंने हव्वारियीन को हुक्म दिया, के मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान ले आओ, तो उन्होंने कहा के हम ईमान ले आए और आप गवाह रहें के हम पूरे फ़रमांबरदार हैं। जब हव्वारियीन ने कहा के ऐ ईसा इब्ने मरयम! आपका रब क्या ये कर सकता है के हक पर आसमान से खाने का .ख्वान नाज़िल करे, उन्होंने कहा, के अल्लाह से डरो, अगर तुम मोमिनीन हो। उन्होंने कहा के ये चाहते हैं, के उसमें से खायें, और हमारे दिलों को तसकीन और इतमीनान हो, और जान लें के आपने हमसे सच बोला है, और गवाही देने वालों में से हो जाये। ईसा इब्ने मरयम ने कहा, ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! हम पर आसमान से खाना नाज़िल फ़रमा। के वो हममें जो अव्वल हैं और जो बाद में हैं सबके लिये .खुशी का बाइस हो जाए, और आपकी तरफ़ से एक निशानी क़ायम हो जाये, और आप हम को रिज्क अता फ़रमायें, और आप तो सबसे अच्छा अता करने वाले

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ
نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَ عَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۙ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي
الْمَهْدِ وَ كَهْلًا ۚ وَ اِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ ۚ وَ اِذْ
تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ
فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَ تُبْرِئُ
الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ تُخْرِجُ
الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَ اِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾
وَ اِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَ
بِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَ اشْهَدْ بِاَنَّنَا
مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ
يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۭ قَالَ
اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا
نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَ تَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَ
نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَ نَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ
السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ
اٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَ ارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا

हैं।? अल्लाह ने कहा के अच्छा वो खाना मैं तुम पर नाज़िल करता हूँ, फ़िर जो तुम में से उसके बाद ना मानेगा तो मैं उसको ऐसा अज़ाब दूंगा के वो अज़ाब दुनिया जहान वालों में से किसी को ना दूंगा। और जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आपने लोगों से कहा था के मुझ को और मेरी मां को भी अल्लाह के सिवा दो और माबूद बना लो, तो ईसा कहेगा (तौबा तौबा) मैं तो आपको इससे बालातर और पाक समझता हूँ मुझे किसी तरह ये मुनासिब नहीं था के मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझको कोई हक़ नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो आपको तो उसका इल्म होगा, आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं, और मैं नहीं जानता जो आपके दिल में है, और आप तो सारे ग़ैबों को जानते हैं। मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा, मगर वो ही जो आपने मुझ से कहने के लिए कहा के तुम अल्लाह की इबादत किया करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी, और मैं उन पर मुत्तलअ रहा जब तक उनमें रहा, फ़िर जब आपने मुझ को उठा लिया तो आप उन पर मुत्तलअ रहे, और आप तो गवाह हैं हर चीज़ के। अगर आप उनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं, और अगर आप उनको माफ़ कर दें तो आप ज़बरदस्त हैं और हिकमत वाले हैं। अल्लाह तआला कहेगा ये वो दिन है के जो सच्चे थे उनकी सच्चाई ही उनके काम आएगी, उनको बाग़ात मिलेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी और ख़ुश और वो अल्लाह से राज़ी और ख़ुश, ये बड़ी ज़बरदस्त कामयाबी है। (5:110-119)

عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ
اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ وَ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَ
اُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ
سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا
لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ؔ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ
عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا
فِيْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾
مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَ رَبَّكُمْ ۚ وَ كُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَ
اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۱۱۷﴾ اِنْ
تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنْ تَغْفِرْ
لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ
صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾

और यहूद ने कहा के अज़ीज़ (अ.स.) अल्लाह का बेटा है, और नसारा ने कहा मसीह (अ.स.) अल्लाह का बेटा है, ये उनका क़ौल है उनके मुंह से कहने का, ये भी उन

وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ۣابْنُ اللّٰهِ وَ قَالَتِ
النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

ही लोगों की सी बातें करने लगे हैं जो इनसे पहले काफ़िर हो चुके हैं अल्लाह इनको ग़ारत करे, ये किधर जा रहे हैं। उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने उल्मा और मशायख़ को रब बना रखा है, और मसीह बिन मरयम को भी, जबके उनको ये हुक्म है के बस एक माबूद की इबादत करें, जिसके सिवा कोई भी इबादत के क़ाबिल नहीं है, वो पाक है उनके शिर्क से।

(9:30-31)

قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ ۚ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ ۚ
أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾ اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَ
رُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَ
الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۖ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا
لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ
سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

और इस किताब में मरयम का भी ज़िक्र कीजिये जब वो अपने घर वालों से अलग होकर एक मकान में चली गईं जो मशरिक़ की जानिब था। तो उन्होंने उनके सामने पर्दा डाल लिया तो हमने उनके पास अपना फ़रिश्ता भेजा तो वो ठीक आदमी की शक्ल बना गया। मरयम ने कहा मैं अल्लाह की पनाह मांगती हूँ तुम से अगर तुम अल्लाह से डरने वाले हो। फ़रिश्ते ने कहा के मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ (इसलिये आया हूँ) के तुमको एक लड़का अता करूं। मरयम (अ.स.) ने कहा, मेरे हां, लड़का कैसे होगा, जबके मुझे किसी बशर ने छुवा तक नहीं और मैं बदकार भी नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने कहा के यूं ही होगा, तुम्हारे रब ने फ़रमाया, के ये मुझे आसान है, हम उसको इसी तरह पैदा करेंगे ताके लोगों के पास उसको अपनी निशानी और ज़रियऐ रहमत बनायें, और ये काम मुक़र्रर हो चुका है। फ़िर वो उस बच्चा के साथ हामला हो गईं और उस हमल को लेकर एक दूर जगह चली गईं। फ़िर दर्दे ज़ेह मरयम को खजूर के तने की तरफ़ ले गया, कहने लगीं, काश मैं इससे पहले मर चुकी होती, और भूली बिसरी हो गई होती। उस वक़्त उनके नीचे की जानिब से फ़रिश्ते ने कहा, आप ग़मनाक ना हों, रब ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ ۘ إِذِ انتَبَذَتْ
مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ
مِن دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا
رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ
إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَٰنِ مِنكَ إِن كُنتَ
تَقِيًّا ﴿١٨﴾ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۖ
لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ أَنَّىٰ
يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَ
لَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذَٰلِكِ ۖ قَالَ رَبُّكِ
هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۖ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِّلنَّاسِ وَ
رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾
فَحَمَلَتْهُ فَانتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾
فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ
قَالَتْ يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ
نَسْيًا مَّنسِيًّا ﴿٢٣﴾ فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا
تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾ وَ

هُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ
عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾ فَكُلِيْ وَ اشْرَبِيْ وَ
قَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ
فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ
اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا
تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا
فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ
سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾
فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ
كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾ قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ
اللّٰهِ ۣ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَ جَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ وَّ
جَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَ اَوْصٰنِيْ
بِالصَّلٰوةِ وَ الزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾ وَّ بَرًّاۢ
بِوَالِدَتِيْ ۡ وَ لَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾
وَ السَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَ يَوْمَ
اَمُوْتُ وَ يَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ عِيْسَى
ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ
يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ
وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا
يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ وَ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ
وَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾

कर दिया है। और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, तुम पर ताज़ा ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। तो तुम खाओ और पियो, और आंखें ठंडी करो, अगर तुम किसी आदमी को देखी तो ये कहना के मैंने अल्लाह के लिये रोज़े की मन्नत मानी है, तो आज मैं किसी आदमी से बात ना करूंगी। फ़िर वो उस बच्चे को उठाकर अपनी क़ौम के पास ले आईं, वो कहने लगे, ऐ मरयम! तूने ये बुरा काम किया। ऐ हारून की बहन! ना तो मेरा बाप बदअतवार था, और ना ही तेरी मां बदकार थी। तो मरयम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया तो वो बोले, हम इससे के गोद का बच्चा है क्योंकर बात करें। बच्चे ने कहा, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी है, और नबी बनाया है। और मुझे बरकत वाला बनाया है, मैं जहां होंगा, और मुझे नमाज़ और ज़कात का हुक्म दिया है, जब तक मैं ज़िन्दा हूँ। और मुझे मेरी मां के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया, और अल्लाह ने मुझे सरकश और बदबख़्त नहीं बनाया है। और सलाम है मुझ पर जब मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा, और जिस दिन दुबारा ज़िन्दा होकर उठाया जाऊंगा। ये हैं ईसा (अ.स.) मरयम के बेटे, मैं सच्ची बात कह रहा हूँ जिसमें लोग शक करते हैं। अल्लाह के लिये ये हरगिज़ मुनासिब नहीं के वो किसी को बेटा बनाये, वो पाक है, वो जब किसी बात का फ़ैसला कर लेता है तो उसको कहता है के हो जा तो वो हो जाता है। और बिला शुबह अल्लाह मेरा भी रब है, और तुम्हारा भी रब है, तो उसी की इबादत किया करो, यही सीधा रास्ता है। (19:16-36)

وَ جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّ

और हमने मरयम के बेटे ईसा और उनकी मां को अपनी निशानी बनाया था और उनको एक ऊँची जगह पर जो

रहने के लायक़ थी, और जहां निथरा हुआ पानी जारी था पनाह दी थी। (23:50)

اٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ
مَعِيْنٍ ۝٥٠

और जब हमने रसूलों से अहद लिया और आप (स.अ.स.) से और इब्राहीम (अ.स.) और मूसा, और मरयम के बेटे ईसा से, और हमने उनसे पुख़्ता अहद लिया। ताके सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में दरयाफ़्त करे, और काफ़िरों के लिये दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (33:7-8)

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ
مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ
عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ
مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝٧ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ
عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٨

और जब मरयम के बेटे ईसा का हाल बयान किया गया, तो आपकी क़ौम के लोग उससे चिल्ला उठे। और वो कहने लगे के क्या हमारे माबूद अच्छे हैं या ईसा? तो उन्होंने जो ये आपसे बयान किया है तो महज़ झगड़े की ग़र्ज़ से, ये लोग तो हैं ही झगड़ालू। वो तो ऐसे बन्दे थे जिन पर हमने अपना फ़ज़्ल किया, और बनी इस्राईल के लिये उनको हमने (अपनी क़ुदरत का) नमूना बनाया था। और अगर हम चाहते तो गुम ही में से फ़रिश्ते पैदा कर देते के वो ज़मीन पर यके बाद दीगरे रहते। और ईसा क़यामत के यक़ीन का ज़रिया हैं तो तुम उसमें शक ना करना, और मेरी पैरवी किये जाओ, यही सीधा रास्ता है। और कहीं शैतान तुमको इससे रोक ना दे, वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। और जब ईसा निशानियां लेकर आये तो फ़रमाया के मैं तुम्हारे पास हिकमत की बातें लेकर आया हूँ, और इसलिये के बाज़ बातें जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो तुम को साफ़ साफ़ बयान कर दूं, पस अल्लाह से डरो, और मेरा कहा मानो। यक़ीनन अल्लाह ही मेरा भी रब है, और तुम्हारा भी रब है, उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। फ़िर उनमें बहुत

وَ لَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا
قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝٥٧ وَ قَالُوْٓا
ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا
جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝٥٨ اِنْ
هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَ جَعَلْنٰهُ
مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩ وَ لَوْ نَشَآءُ
لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ
يَخْلُفُوْنَ ۝٦٠ وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا
تَمْتَرُنَّ بِهَا وَ اتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦١ وَ لَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٦٢ وَ لَمَّا جَآءَ
عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ
بِالْحِكْمَةِ وَ لِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ
تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِيْعُوْنِ ۝٦٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَ رَبُّكُمْ

فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾
فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

से फ़िर्क़े बन गए तो ज़ालिमों के लिये बर्बादी है एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से। (43:57-65)

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا
بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَ
جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ
رَحْمَةً ۭ وَ رَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا
عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا
حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ
اَجْرَهُمْ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

फ़िर उनके बाद रसूलों को यके बाद दीग्रे भेजते रहे और उनके पीछे मरयम के बेटे ईसा का, और उनको इंजील अता की, और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की, उनके दिलों में हमने शफ़्क़त व मेहरबानी डाल दी, और उन्होंने एक नई राह निकाली, (रहबानियत की) हमने उसको हुक्म नहीं दिया था मगर उन्होंने उसको (अपने .ख्याल में) अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिये किया था, फ़िर वो उसको निबाह ना सके जैसा के निबाहने का हक़ था, फ़िर उनमें से जो ईमान लाये हमने उनको उनका अज्र दिया और बहुत से उनमें नाफ़रमान ही थे। (57:27)

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًاۢ
بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ۭ
فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿٦﴾

जब ईसा (अ.स.) बिन मरयम ने कहा, ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ, मुझ से पहले जो तौरेत है, मैं उसकी तसदीक़ करने वाला हूँ, और मेरे बाद जो रसूल आने वाला है, (जिसका नाम) अहमद (अ.स.) है मैं उनकी .खुश.खबरी देता हूं, फ़िर जब उनके पास खुल दलायल लेकर आये तो कहा के ये तो सरीह जादू है। (61:6)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ
اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ
اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ وَ كَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا

मोमिनों! अल्लाह के मददगार हो जाओ जैसे ईसा इब्ने मरयम ने अपने हवारियों से कहा, कौन है जो .खुदा की तरफ़ बुलाने में मेरा मददगार हो, हवारियों ने कहा के हम खुदा के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल का एक गिरोह तो ईमान ले आया, और एक गिरोह काफ़िर ही रहा, बिलआख़िर हमने ईमान लाने वालों की उने दुश्मनों के

मुक़ाबले में मदद की, और वही ग़ालिब रहे। (61:14) الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ

हज़रत ईसा का व्यक्तित्व पैग़म्बरों के इतिहास में सबसे .ज्यादा विवादित बना है। ये विवाद न केवल उन लोगों के बीच हुए जिनहोंने उनको माना और जिन्होंने नहीं माना, बल्कि ख़ुद उनके मानने वालों के बीच भी हुए और होते रहे। उनका चमत्कारी जन्म और अचानक से उनका ग़ायब हो जाना ऐसे मामले हैं जिनकी वजह से उनके व्यक्तित्व और उनके मिशन को लेकर दार्शनिक और धार्मिक परिचर्चाएं होती रही हैं। इन परिचर्चाओं ने तब ज़ोर पकड़ा जब रोम के रहने वाले फ़ार्सी रिब्बी सॉल ने ईसाइ धर्म अपना लिया। यह व्यक्ति तरसूस में पैदा हुआ था, यरुशलम में पला बढ़ा और वहीं इसकी शिक्षा हुई और बाद में राजा नीरो के शासन काल में 67 ई. में उसे मृत्यू दण्ड दिया गया। इस व्यक्ति ने ईसाइयत ग्रहण करके अपना नाम पॉल रखा और ग़ैर ईसाइयों में हज़रत ईसा और उनके संदेश का प्रचार किया और इसी वजह से वह ईसाइयत को समझने का माध्यम बन गया। अन्धों की रोशनी वापस ले आने, कोढ़ के रोगी को रोग मुक्त करने और मृतकों को जीवित कर देने के जो चमत्कार हज़रत ईसा ने दिखाए थे वो भी उनके बारे में तरह तरह के विचार जन्म लेने और विवादित बातों के फैलने की वजह बने।

ईसा पुत्र मरियम का ज़िक्र क़ुरआन में .ज्यादा विस्तार से हज़रत यहया पुत्र हज़रत ज़करिया के साथ क़ुरआन की दो सूरतों 3:33-60; 19:2-37) में आया है और इस जानकारी के साथ आया है कि दोनों आपस में रिश्ते के भाई थे, उन दोनों का जन्म अलग अलग ढंग से बिल्कुल असाधारण घटना के रूप में हुआ था और दोनों के जन्म की भविष्यवाणी फ़रिशतों ने की थे। इंजील के अनुसार वो दोनों समकालीन और लगभग बराबर की उम्र के थे, और उन्होंने ही उर्दुन की नदी में हज़रत ईसा को बपतिसमा (पवित्र स्नान) दिया और कई अवसरों पर उनका साथ दिया और उन्हें मसीह मोऊद (वह उपचारक जिसके आने का वायदा था) घोषित किया, जिसके आगमन का उन्हें इंतेज़ार था और जिनके आगमन के लिए वह माहौल बना रहे थे।

जीसस (ओल्ड टेस्टामेण्ट में जोशुआ) का मतबलब है कि बचाने वाला। अरबी का शब्द मसीह जो उनके लिए बोला जाता है वह आरामी भाषा से लिया गया है जिसमें मसीहा (Meshiha) इस्तेमाल किया गया है। इब्रानी में यह शब्द "M'Shiah" है जिसका मतलब है मसह किया हुआ। यह शब्द बाइबिल में इब्रानी राजाओं के लिए कई बार उपयोग हुआ है जिन्हें राजसिंहासन पर बिराजमान होने के लिए गिरजा से लाए गए एक पवित्र तेल से ‘मसह’ (मालिश) कराया जाता था। यह इब्रानी लोगों में इतनी महत्वपूर्ण रीति थी कि ‘मसह किया हुआ’ शब्द धीरे धीरे राजा का पर्यायवाची या उसका उपनमाम बन गया था (मुहम्मद असद,

मैसेज ऑफ़ क़ुरआन, नोट नम्बर 32, आयत 3:45 की व्याख्या)। यह सम्मानित उपाधि हज़रत ईसा को उनके जीवन में ही दे दी गयी थी क्योंकि उनके समकालीन लोग यह समझते थे कि वह हज़रत दाऊद के शासन क्रम के वारिस हैं। मुहम्मद असद लिखते हैं कि इंजील के यूनानी अनुवाद में जो कि निस्संदेह आरामी भाषा में इंजील के मूल ग्रन्थ पर आधारित है जो कि अब विलुप्त हो चुका है यह शब्द 'क्रस्टोस' (Christos) के रूप में अनुवाद किया गया है और पूरी तरह सटीक है क्योंकि यूनानी में यह शब्द उसके संज्ञा क्रिया ("Chrier") से बना है। जिसका मतलब मसह करना या कराना होता है, और इस तरह पश्चिमी भाषाओं में शब्द "क्राइस्ट" (Christ) प्रचलित हो गया। ईसाइयों और मुसलमानों के नज़दीक हज़रत ईसा का जन्म चमत्कारी रूप से उनकी कुंवारी माता मरियम के गर्भ से बग़ैर पिता के हुआ थाः "और (दूसरी) इमरान की बेटी मरियम जिन्होंने अपने स्त्रीत्व को सुरक्षित रखा तो हम ने उसमें अपनी रूह फूंक दी और वह अपने रब के कलाम और उसकी किताबों को सत्य मानती थीं और आज्ञापान करने वालों में से थीं "(26:12)।

हज़रत ईसा के कुछ दूसरे चमत्कारों पर ईसाई और मुस्लिम आलिमों दोनों ने सवाल उठाए हैं पहले भी और आज के युग में भी। इस्लाम के स्रोत (यानि क़ुरआन व सुन्नत) यद्यपि अंधे को देखने वाला कर देने, कोढ़ी को अच्छा कर देने और मृत को जीवित कर देने के चमत्कारों का अनुमोदन करते हैं लेकिन क़ुरआन केवल इतना कहता है कि (ईसा) लोगों से पालने में भी बातचीत करेंगे (3:46; 5:110), "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं, वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूरत पक्षी के रूप में बनाता हूं फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह अल्लाह के हुक्म से (सचमुच एक जीवित) पक्षी बन जाता हे और अंधे और कोढ़ी को ठीक कर देता हूं और अल्लाह के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूं और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो अपने घरों में छोड़ कर आते हो सब तुम को बता देता हें अगर तुम ईमान वाले हो तो इन बातों में तुम्हारे लिए (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानी है।"(3:49)। मौजूदा इंजील में कुछ ऐसे चमत्कारों का भी ज़िक्र है जिनके बारे में क़ुरआन में कुछ नहीं कहा गया है जिसमें हज़रत ईसा को सूली दिए जाने और उनके फिर से जीवित हो जाने का ज़िक्र भी शामिल है, क़ुरआन इस बात को स्वीकार नहीं करता (4:157 -158), लेकिन क़ुरआन यह कहता है कि उन्हें अल्लाह ने उठा लिया (3:55; 5:158)। क़ुरआन साफ़ तौर से यह नहीं कहता कि हज़रत ईसा की मृत्यू नहीं हुई, बल्कि क़ुरआन की आयत 3:55 में शब्द "मुतवफ़्फ़ीकः" स्तेमाल हुआ है जिसका साधारण और शाब्दिक रूप से तथा ज़्यादा समझ में आने वाला अर्थ है "तुझे मौत दूंगा", आधुनिक मुफ़स्सिरों और आलिमों ने इसी अर्थ को लिया है (देखें मुहम्मद अब्दुहू की तफ़सीर अलमनार में 3:55 की व्याख्या, खण्ड 3, पेज 316-317, और देखें महमूद शलतूत की अलफ़तावा, पेज 59-65, क़ाहिरा 1975)। इस विचार को कि हज़रत ईसा को

आसमान की तरफ़ उठा लिया गया जहां वह जीवित हैं, इन लोगों ने स्वीकार नहीं किया है। ये लोग उस हदीस पर संकोच करते हैं जिसमें कहा गया है कि दुनिया के ख़ात्मे का समय जब क़रीब आएगा तो हज़रत ईसा दुनिया में दोबारा उतारे जाएंगे। आयत 3:42 में हज़रत ईसा के जीवन और उनके संदेश के बारे में जो अपेक्षाकृत विस्तार से बताया गया है उसके मुताबिक़ वह इस दुनिया में "अल्लाह के कलमें" से आए (3:45), जैसा कि क़ुरआन की एक और आयत में कहा गया है:"ईसा बिन मरियम अल्लाह के रसूल थे, उसका कलमा थे जो मरियम की तरफ़ उतारा गया था और उसकी तरफ़ से रूह थे "(14:17)। ईसा पुत्र मरियम अल्लाह का कलमा या अल्लाह का बोल किस तरह थे? कुरआन के अनुसार इंसान का जन्म अर्थात हज़रत आदम की पैदाइश अल्लाह ने उनके अन्दर अपनी रूह फूंक कर की (15:29; 38:72), जबकि हज़रत ईसा की पैदाइश की क्रिया में अल्लाह की तरफ़ से रूह उनकी पवित्र माता जी के गर्भाश्य में फूंकी गयी (21:19; 66:12), हज़रत आदम की तरह मिट्टी से इंसान का पुतला बना कर उसके अन्दर रूह नहीं फूंकी गयी।

उपरोक्त आयतों तथा कुछ अन्य आयतों की इस व्याख्या से हज़रत ईसा का जन्म हालांकि बिल्कुल अनोखा मामला था लेकिन अपने अलौकिक जन्म की वजह से वह देवता (ख़ुदा, ख़ुदा का प्रकटित रूप या ख़ुदाई का कोई अंग) नहीं थे, बिल्कुल ऐसे ही जैसे कि हज़रत आदम को अल्लाह ने सीधे मिट्टी के पुतले में रूह फूंक कर पैदा किया और अपने तमाम जीवों में उन्हें और उनकी पत्नि को प्रतिष्ठित किया तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इस जोड़े को ख़ुदाई का स्थान मिल गया। तथापि हज़रत ईसा की शान अलग थी और लोगों में उन्हें बहुत बुज़ुर्गी और बड़ाई प्राप्त है, और आख़िरत में भी उन पर अल्लाह का ख़ास करम रहेगा, न केवल उनके चमत्कारी जन्म या दुसरे चमत्कारों की वजह से बल्कि अपने पैग़म्बर होने की वजह से और इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह का पैग़ाम बन्दों तक पहुंचाया और जीवन भर अल्लाह के दीन की तरफ़ संदेश के मूल तत्व और उसकी हिकमत उन्हें दी गयी थी जो अक्षरों और शब्दों से कहीं ज़्यादा बुलन्द चीज़ है और उन्हेंने तौरात के निर्देशों को लोगों पर लागू किया (3:48,50; 5:110)।

अल्लाह की तरफ़ से आने वाले सभी पैग़ामों में, जिनमें हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद स. के साथ आई किताबें भी शामिल हैं, "किताब" का उल्लेख आम तौर से "हिकमत" के साथ मिलता है जैसे कि क़ुरआन की कई आयतों में हम देख सकते हें (जैसे 2:129,151,231; 3:81,164; 4:54113; 5:110; 62:2)। इस "हिकमत" से मुराद अल्लाह की हिदायत को समझना और विभिन्न युगों की सांस्कृतिक व सामाजिक परिस्थितियों के लिहाज़ से उसको लागू करने की योग्यता से है। इसके अलावा किताब और हिकमत की शिक्षा को आत्म सुधार (स्वयं को पवित्र करने) के साथ भी जोड़ा गया है (2:129,151,231; 3:81,164; 4:54,113; 5:110;

62:2)। हज़रत ईसा ने तौरात का अनुमोदन किया जो कि उनसे पहले बनी इस्राईल के बीच आ चुकी थी, और इस तरह उन्होंने अल्लाह के दीन की निरन्तरता पर ज़ोर दिया और इस बात पर कि अल्लाह ने "तौहीद" (अल्लाह को अकेला पूजनीय मानने) का संदेश दिया है। हज़रत ईसा के द्वारा फिर से तौहीद की यह शिक्षा इस लिए दी गयी कि इंसानी समाज के हालात लगातार बदलते रहते हैं जिसकी वजह से मूल धर्म में लोगों के बीच मतभेद पैदा हो जाते हैं। हज़रत ईसा की आमद से पहले हज़रत मूसा की शिक्षा के बारे में बनी इस्राईल के बीच जो मतभेद पैदा हो गए थे और मूल धर्म में बहुत कुछ बदलाव हो चुका था उसे दूर करने के लिए हज़रत ईसा के द्वारा पहले आ चुकी आसमानी किताब की तसदीक़ (अनुमोदन) कराया गया और उसी किताब की आस्था की तरफ़ लोगों को बुलाया गया। हज़रत ईसा के द्वारा ऐसे कई कामों और चीज़ों को हलाल (वैध) ठहराया गया जो बनी इस्राईल ने अपने उपर ख़ुद ही हराम (अवैध) कर ली थीं (3:50; और देखें 3:93; 5:146)।

पैग़म्बरी के इतिहास में हज़रत ईसा की जो महत्वपूर्ण भूमिका है उस पर उनके जीवन का चमत्कारी पहलू छा कर रह गया है। उन्होंने इंसान के मन मस्तिष्क की जिन बीमारियों का इलाज किया और इंसानों के अक़्ल के अन्धेपन व नैतिक अन्धेपन को जो दूर किया, उनका वह कारनामा एक विश्व व्यापी और लगातार जारी रहने वाला कारनामा है, जबकि उन्होंने अल्लाह के हुक्म से आंखों के अंधेपन से ग्रस्त लोगों या कुष्ट रोगियों को ठीक करने, और मुर्दों में जान डालने या कुछ बयानों के अनुसार पक्षी का पुतला बना कर उसमें जान डालने के जो चमत्कार दिखाए तो ये केवल उन्ही लोगों ने देखे जो उस समय वहां मौजूद थे, एक ही जगह के एक ही नस्ल के और एक ही ज़माने के लोग। और उन लोगों को यह चमत्कार केवल एक निशानी (प्रतीक) के रूप में दिखाए गए ताकि उनका ध्यान अल्लाह के संदेश की तरफ़ हो जो इंसानियत के लिए लगातार आता रहा है। जो लोग हज़रत ईसा की दावत पर शुरू में ही ईमान ले आए और उनकी मदद की वो वही लोग थे जो पैग़म्बरों या अल्लाह के दीन के सम्बंध में इस "बदलाव" को समझ पाए और एक ऐसा मील का पत्थर बने जो इंसानी इतिहास में बदलाव का एक महत्पूर्ण मोड़ है। क़ुरआन में मुहम्मद सल्ल. के अनुयायियों से कहा गया है कि वे पैग़म्बर की मदद उसी तरह करें जिस तरह हज़रत ईसा की मदद उनके अनुयायियों ने की थी (61:14)। इसलिए कि सिद्धांत व नज़रियों का समर्थन करने का यही वह तरीक़ा है जिससे इतिहास में बदलाव के चरण आते हैं। आयत 3:42-60 और 18:16-37 में हज़रत ईसा के संदेश को सार्थक रूप से समझाया गया है, और यह वह बात है जो मुसलमान मानते हैं:"और मुझ से पहले जो तौरात (उतरी थी) उसका अनुमोदन भी करता हूं और (मैं) इस लिए भी (आया हूं) कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम थीं उन्हें तुम्हारे लिए हलाल कर दूं ..." (3:50), "... और अहले इंजील को चाहिए कि जो निर्देश अल्लाह ने उसमें उतारे हैं उनके मुताबिक़

फ़ैसला किया केरें और जो अल्लाह के उतारे गए निर्देशों के मुताबिक़ फ़ैसला न देगा तो ऐसे लोग नाफ़रमान हैं "(5:46-47); "कहो कि ए अहले किताब जब तक तुम तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) तुम्हारे उपर नाज़िल हुईं उनको क़ायम न रखोगे कुछ भी रास्ता नहीं पा सकते और (यह क़ुरआन) जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर अवतरित हुआ है उससे उनमें अधिकतर की अकड़ और इंकार और बढ़ेगा तो तुम इंकार करने वालों पर अफ़सोस न करो" (5:68)। क़ुरआन में दूसरी जगहों पर मातापिता के साथ विनम्रता और महरबानी से पेश आने और उनके साथ कड़क कर और अकड़ का व्यवहार न रखने को हज़रत ईसा का विशेष गुण बताया गया है कि उनके व्यवहार से उन मर्यादों का प्रदर्शन होता है जिनकी तरफ़ उन्होंने लोगों को बुलाया। अतःयह बात फिर से बयान करना ज़रूरी है कि क़ुरआन ने बार बार जिस बात का खण्डन किया है वह है "तस्लीस" (Trinity) का अक़ीदा, अर्थात ख़ुदा, ईसा और रूहुलक़ुदुस में ख़ुदाई को विभाजित करना (4:171; 5:17,72-77)। क़ुरआन में जहां जहां भी हज़रत ईसा का ज़िक्र है वहां लगभग हर जगह उनका नाम इब्ने मरियम (मरियम पुत्र) के सफ़िक्स के साथ आया है ताकि यह बात दिमाग़ में बसी रहे कि वह एक इंसान थे और इंसान के ही बेटे थे यद्यपि माँ और बेटे दोनों का स्थान अल्लाह के नज़दीक बहुत ख़ास है। हज़रत मरियम को अल्लाह ने चुना था और उन्हें पवित्र बनाया था और दुनिया की सभी महिलाओं से प्रतिष्ठित किया है (3:42), और हज़रत ईसा को दुनिया व आख़िरत में सम्मानित और विशेष बन्दों में रखा गया है (3:45)।

क़ुरआन में हज़रत ईसा का ज़िक्र "अल्लाह के रसूल और उसका कलमा (ख़ुशख़बरी) थे जो उसने मरियम की तरफ़ भेजा था और उसकी तरफ़ से एक रूह" के रूप में किया गया है (4:171), लेकिन यह शब्दावलियां अल्लाह का कलमा और उसकी तरफ़ से रूह मुसलमान जिस तरह समझते हैं वह हज़रत ईसा में ख़ुदाई देखने के नज़रिए से बिल्कुल भिन्न है जैसा कि उपर ज़िक्र किया गया है। अल्लाह के कलमें से अभिप्राय यहां उसका यह फ़रमान है जो उसने फ़रिशतों के द्वारा हज़रत मरियम पर उतारा था कि हज़रत ईसा को इस तरह पैदा किया जाएंगे (3:45-47), और अल्लाह की तरफ़ से रूह का मतलब है वह रूह जो हज़रत आदम में फूंकी गयी और फिर हर इंसान में डाली जाती है (15:29; 38:72; 32:9)। यही वजह है कि क़ुरआन में हज़रत ईसा की मिसाल हज़रत आदम से दी गयी है "जिन्हें उसने (पहले) मिट्टी से उनका आकार बनाया फिर फ़रमाया कि (इंसान) हो जा तो वह (इंसान) हो गए "(3:59)।

ऐसा लगता है कि ख़ुदा को "फ़ादर" कहने का चलन इस्राईलियों में एक संकेत और इशारे के रूप में हज़रत ईसा को फ़ादर कहेने से शुरू हुआ (एक्सोडस 4:22-23)। फिर समय बीतने के साथ साथ यह चलन एक सच्चाई मान लिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि पहले पहल यहूदियों और फिर उनकी देखा देखी ईसाइयों ने दूसरों को अपने से कुछ अलग देखना शुरू कर

दिया। उन्होंने अपने लिए तो मुक्ति मान ली और दूसरों के लिए यह माना कि उन्हें मुक्ति पाने के लिए कठिन तपस्याएं और परिश्रम करना होगा, और फिर भी वो उस प्रतिष्ठा और ऊंचे स्थान तक नहीं पहुंच सकते जिसका पात्र वो स्वयं को मानते हैं। यहूदी ख़ुद को अल्लाह का चहीता समझने लगे और ईसाई ख़ुद को हज़रत मसीह को मानने वाले विशेष लोग, कि हज़रत मसीह उनके मुक्तिदाता हैं और सूली पर चढ़ कर उन्होंने उनकी तरफ़ से प्रायिश्चित कर लिया है (5:18)। मुसलमानों को इस बात की कड़ी चेतावनी दी गयी है कि वो इस तरह के संकेतों और प्रतीकों के चक्कर में पड़ने से बचें, और अल्लाह की तौहीद और उसके सर्वशक्तिमान होने की आस्था को .ढ़ता से पकड़े रहें। वो अल्लाह को इस तरह से मानें कि दुनिया में पाई जाने वाली या पाई जा सकने वाली किसी भी चीज़ से उसकी कोई मिसाल नहीं दी जा सकती। ''लैयसा कमिसलिही शैईःउस जैसी कोई चीज़ नहीं'' (42:11), और ''वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहदःकोई उसका समरूप नहीं है'' (112:3)। फिर भी हम मुसलमानों को यह बात हमैशा याद रखना है कि क़ुरआन में अल्लाह को 'रब' कहा गया है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में 'ल०र्ड' (स्वामी) से किया जाता है, लेकिन जो वास्तव में स्वामी, जीवित रखने वाली हस्ती और पालन पोषण करने वाली हस्ती तीनों का योग है, और वही है जो पैदा करता है, पालता पोसता है और सिखाता है। इस तरह मुसलमान इंसानों से अल्लाह की निकटता को महसूस करते हैं, और बग़ैर किसी भ्रम व शक के वो अल्लाह की रहमत को, उसकी मदद को, उसकी निगरानी व संरक्षण को और उसकी रहमत व मुहब्बत को अपने साथ हर समय महसूस करते हैं। लेकिन यह बात नोट करने की है कि बन्दों से अल्लाह की यह निकटता, यह मित्रता और प्रेम केवल मुसलमानों के लिए ही ख़ास नहीं है, बल्कि उन सभी बन्दों के लिए है जो अल्लाह की इबादत और उसका आज्ञा पालन करते हैं, और उसकी दया व .पा उसके सभी जीवों पर छाई हुई है (उदाहरण के लिए देखें 6:12,54; 7:156; 10:21; 21:107; 30:21; 38:9; 39:53)।

क़ुरआन में अल्लाह और हज़रत ईसा के बीच वार्ता का जो बयान आया है (5:116,119) वह बिल्कुल स्पष्ट है, इस बात से अलग कि यह वार्ता पूर्व काल में कभी हुई हो, या भविष्य में फ़ैसले के दिन होगी, या यह कि यह केवल तथ्यों का बयान है और निश्चित रूप से किसी घटना का बयान नहीं है। कोई भी स्थिति हो, ये आयतें हज़रत ईसा और उनकी माताश्री हज़रत मरियम के बारे में इस्लामी अक़ीदे को व्यक्त करती हैं उस बातचीत के रूप में जो हज़रत ईसा और अल्लाह के बीच हुई जिसमें हज़रत ईसा अपने या अपनी माताश्री के बारे में ख़ुदाई की कल्पना का इंकार करते हैं। ''तसलीस'' की आस्था में हालांकि मरियम को तीन ख़ुदाओं में नहीं गिना गया है लेकिन बहुत से ईसाई उनकी महानता और पवित्रता को भी इसी तरह से मानते हैं और उन्हें गॉड मदर (**God's Mother"s@ La Mere de Dieu**) कहते हैं। वह (हज़रत ईसा) यह बात भी ज़ोर देकर कहते हैं कि उनका जीवन तो सीमित है और उनका ज्ञान

उनकी इंसानी क्षमता और उनके जीवन की सीमाओँ में ही है। हज़रत ईसा और उनकी माताश्री हज़रत मरियम को अल्लाह ने जो कुछ बी चमत्कार प्रदान किए और अलग प्रतिष्ठा दी उसके बावजूद उन दोनों को इंसान ही बनाया था और क़ुरआन के दिए गए अक़ीदे के अनुसार उनकी प्रतिष्ठा इंसान होने में ही है (2:87,253; 3:37,42-43,45-50; 4:171; 5:75,110; 19:16-36; 61:14; 66:12)। क़ुरआन हज़रत ईसा के भक्तों से यह अपील करता है कि वो उनके बारे में अपने अक़ीदे पर ग़ौर करें और फिर से अपनी आस्था को सही आधार पर रखें, और यह वार्ता लगातार तब तक जारी रहेगी जब तक इस्लाम को मानने वाले क़ुरआन के इस सिद्धांत पर टिके रहेंगे कि आस्था के मामले में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं है (2:256, और देखें 10:99; 11:28; 16:125; 29:46)।

अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों को जो रुतबे दिए हैं, उन्हें किसी भी पैग़म्बर के अनुयायियों के बीच विवाद का कारण नहीं बनना चाहिए, क्योंकि एक अल्लाह पर उनका ईमान उनके बीच एक समान आधार है और वो सब के सब अल्लाह के दीन की वहदत (एक होने) पर और परिपूर्ण (मुकम्मल) होने पर विश्वास रखते हैं, और बग़ैर किसी भेदभाव के उसके सभी पैग़म्बरों को मानते हैं और उन सभी पैग़म्बरों का सम्मान करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं। अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इंसानियत एक ही रास्ते पर चलती, और इंसानी अक़ल व सामान्य बुद्धिमता का अनुपालन करती और सत्य व सच्चाई को मान लेते और उनमें आपस में कोई मतभेद नहीं होता, और उसने सब को इस पर सहमत कर दिया होता और किसी भी मतभेद और विवाद को असम्भव बना दिया होता (5:48; 11:118-119; 16:93; 42:8)। लेकिन अल्लाह ने इंसान को चयन की आज़ादी देना पसन्द किया, व्यक्ति को अक़ली और रूहानी शक्तियां द, और अपनी हिदायत का पैग़ाम भेजा, और यह सब कुछ दे देने के बाद हर व्यक्ति को आज़ाद छोड़ दिया कि वह ख़ुद जो चाहे पसन्द करे और जो चाहे फ़ैसला ले। आज़ादी का मतलब है कि आचार विचार का अन्तर। व्यक्ति अलग अलग युगों में अलग अलग तरह के विचारों और तरह तरह के कर्मों वाले हो सकते हैं और समाज में व्यक्तियों के बीच आम तौर से मतभेद तो होते ही हैं। आचार विचार का भेद इंसानी जीवन की एक अनिवार्य सच्चाई है और इसे इंसानी आज़ादी से अलग नहीं किया जा सकता, यह बात क़ुरआन की कई आयतों में कही गयी है (जैसे 2:113; 3:55; 5:48,105; 6:54,60,108,164; 10:4,23,4,93; 11:4; 16:92,124; 22:69; 29:8; 31:15; 32:25; 39:3,7,46; 45:17)।

ईसाइयों और मुसलमानों के बीच धर्म का मतभेद अपनी जगह, लेकिन क़ुरआन में नसारा (ईसाइयें) के पिछले और वर्तमान गुणों और अच्छाइयों को स्वीकार किया गया है। मुहम्मद सल्ल. पर ईमान लाने वालों से कहा गया कि अपने ईमान पर इसी तरह जमे रहो और इस मार्गदर्शक संदेश के इसी तरह समर्थक व सहयोगी बने रहो जिस तरह हज़रत ईसा के अनुयायि

थे (61:14)। पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. के ज़माने में अरब में ईसाइयों को "दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों के नज़दीकी" समझा जाता था इसलिए कि "उनमें आलिम भी हैं और मशाइख़ भी और वो अहंकार नहीं करते" (5:82)। क़ुरआन हालांकि यह कहता है कि हज़रत ईसा के अनुयायियों को रहबानियत (जागीपन) अपनाने का आदेश अल्लाह ने नहीं दिया था लेकिन साथ ही यह भी बताता है कि अल्लाह ने उनके अन्दर विनम्रता और दया डाल दी थी (57:27), कुछ मुफ़स्सिरों ने इसका मतलब यह समझा है कि यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि उन्होंने जो रहबानियत और वैराग को अपनाया वह अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने की भावना से उनके अन्दर परवान चढ़ी (57:27)। मुसलमानों को यह इजाज़त दी गयी है कि वो अहले किताब का खाना खा सकते हैं और उनकी महिलाओं से विवाह कर सकते हैं (5:5)। जहां तक एक ख़ुदा पर ईमान और साथ साथ तसलीस का अक़ीदा अपनाने की बात है तो इस को क़ुरआन में क़ुर कहा गया है जिसका मतलब है जानबूझ कर सत्य का इंकार करना और यह अल्लाह के प्रति नाशुक्री और उसके विरुद्ध विद्रोह के अर्थों में लिया जाएगा, जैसा कि दूसरी बहुत सी आयतों में इसका यही मतलब है और बहुत से लोगों ने इसका यही मतलब लिया है (5:17,72-73, 5:44; 4:34)।

हज़रत ईसा को यहूदियों के द्वारा सूली चढ़ाए जाने के मामले में क़ुरआन यह इशारा करता है कि उन्होंने ईसा को क़त्ल नहीं किया और न सूली पर चढ़ाया बल्कि उनको उनका सा रूप लगा ... बल्कि अल्लाह ने उनको अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह बहुत शक्तिशाली और हिकमत वाला है" (4:157-158)। दूसरी जगहों पर क़ुरआन में कहा गया है कि "अल्लाह ने फ़रमाया कि ईसा मैं तुम्हारी दुनिया में रहने की अवधि पूरी करके तुम को अपनी तरफ़ उठा लुंगा" (3:55), "(तो ईसा ने कहा) जब आपने मुझे दुनिया से उठा लिया तो आप ही उनके निगरां थे "(5:117)। इन आयतों से आसानी से यह समझा जा सकता है कि हज़रत ईसा की मृत्यू मामूल के मुताबिक़ (साधारण तरीक़े से) हुई। कुछ लोगों ने इससे कुछ अलग जो मतलब निकाला है वह वास्तव में हज़रत ईसा की हत्या और उन्हें सूली पर चढ़ाने की वह कहानी है जो किसी अन्य व्यक्ति को जो हज़रत ईसा से मिलता जुलता था सूली दिए जाने से मशहूर हुई। फिर समय बीतने के साथ साथ यही मशहूर हो गया कि हज़रत ईसा को सूली पर लटकाया गया, और यहूदियों व ईसाइयों में यह अक़ीदा फैल गया और फिर उस पर एक फ़िलासफ़ी गढ़ ली गयी कि हज़रत ईसा ने सूली पर चढ़ कर सारी इंसानियत की तरफ़ से उस पाप का प्रायिश्चित कर लिया है जो जन्मजात रूप से इंसान से जुड़ा हुआ है। इंसान जन्म से ही पापी है यह बात क़ुरआन के अक़ीदे के विपरीत है और क़ुरआन इसका खण्डन करता है (2:37; 7:23; 20:122)। हज़रत ईसा के जीवन का अन्त के बारे में क़ुरआन के इस बयान की व्याख्या मुहम्मद असद ने अपनी तफ़सीर में की है (देखें आयत 4:157 पर नोट नम्बर 171,172)।

उनका विचार यह है कि "बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया" (13:55; 4:157) न केवल उनकी रूह (आत्मा) निकाल लिए जाने की तरफ़ इशारा है बल्कि अल्लाह के नज़दीक हज़रत ईसा की महानता का भी एक इज़हार है कि अल्लाह के दरबार में उनका स्थान ऊंचा है। अलबत्ता कुछ प्राचीन मुफ़स्सिरों ने हज़रत ईसा को जीवित उठा लिए जाने का जो ज़िक्र किया है उससे मुहम्द अब्दुहू और महमूद शलतूत सहमत नहीं हैं (देखें तफ़सीर अलमनार, खण्ड 3, पेज 316-318, महमूद शलतूत की अलफ़तावा में आयत 3 56 की व्याख्या)। जिस हदीस में यह आया है कि कियामत से पहले हज़रत ईसा दुनिया में वापस आएंगे, उसे मुहम्मद अब्दुहू इस आधार पर नस-ए-सरीह (क़ुरआन या हदीस का ऐसा साफ़ निर्देश जिसे मानना अनिवार्य है) नहीं मानते क्योंकि इसके बयान करने वालों की संख्या बहुत सीमित है और यह हदीस ए आहाद की श्रेणी में आती है, और ऐसी कोई हदीस प्राचीन आलिमों व मुहद्दिसों के नज़दीक अक़ीदे के मामले में नस -ए-सरीह नहीं होती (तफ़सीर अलमनार, जिल्द 3, पेज 317, महमूद की अलइस्लाम वल अक़ीदा वल शरीआ (12वां एडिशन, क़ाहिरा, 1983) पे 59-61)।

हज़रत ईसा ने अपने बाद मुहम्मद सल्ल. के पैग़म्बर बन कर आने की जो भविष्यवाणी की थी और कहा था कि उनका नाम अहमद होगा (क़ुरआन 61:16) इस पर मुहम्मद असद ने एक संक्षिप्त अर्थपूर्ण नोट लिखा है जिसमें वह लिखते हैं कि "इस भविष्यवाणी का समर्थन सेण्ट जॉन की इंजील में पार्कलिटोस Parklitos (जिन्हें आम तौर से कम्फ़र्टर कहा जाता हैद्ध के बारे में अनेक हवालों से होती है जिन्हें हज़रत ईसा के बाद आना है। यह Periklytos का बिगड़ा हुआ रूप है जिसका मतलब है बहुत .ज्यादा प्रशंसा वाला, और यह आरामी भाषा के शब्द Mawhamana का बिल्कुल सटीक यूनानी अनुवाद है (यह बात याद रहे कि आरामी भाषा हज़रत ईसा के युग में और उनके बाद कई सदियों तक फ़लस्तीन में बोली जाती थी, और निस्संदेह यही वह भाषा है जिसमें इंजील का मूल पाठ लिखा गया था जो कि अब विलुप्त है)। च्मतपबासलजवे और च्तंमबसमजवे शब्दों में जो समानता सी है उसके मद्देनज़र यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि अनुवाद करने वाला या बयान करने वाला इन दोनों शब्दों में कन्फ़्यूज़्ड हुआ। महत्वपूर्ण बात यह है कि आरामी (इबरानी) भाषा के शब्द ड़ीुंउदं और यूनानी भाषा के शब्द Periklytos दोनों के वही अर्थ हैं जो आख़री पैग़म्बर के दोनों नामों मुहम्मद व अहमद के हैं। ये दोनों शब्द 'हमिदा' से निकले हैं जिसका अर्थ है उसने प्रशंसा की और अहमद का मतलब है प्रशंसा। मुहम्मद सल्ल. की आमद की भविष्यवाणी इससे भी .ज्यादा स्पष्ट शब्दों में 'इंजील बरनाबास' में मौजूद है जिसमें यह अरबी नाम ही लिया गया है। बरनाबास की इंजील से हालांकि अब विमुखता बरती जाती है लेकिन 496 ईसवी तक इसे गिरजों में पढ़ा जाता था और उसे ही प्रमाणित (असिल) इंजील माना जाता है। 496 में पोप गेलासीज़ प्रथम (492-96) के आदेश से इस पर पाबन्दी लगा दी गयी थी। लेकिन इस इंजील का मूल टेक्स्ट

अब उपलब्ध नहीं है (इसका अतालवी अनुवाद ही हम तक पहुंचा है जो 16वीं शाताब्दी का है), इसकी प्रमाणिकता विश्वसनीय नहीं मानी जा सकती।'' यहां यह उल्लेख करना भी उपयुक्त होगा कि मुहम्मद असद ने आयत 2:42 की व्याख्या में अपने नोट नम्बर 33 में और आयत 7:157 की व्याख्या में नोट नम्बर 24 में डेट्रोनोमी Deuternomy XVII: 51, 18 का हवाला दिया है जिसमें कहा गया:''तेरा आक़ा ख़ुदा तेरी तरफ़ तुझ से, तेरे भाईयों में, मेरी ही तरह एक नबी भेजेगा, तुम्हें उसकी बात सुननी होगी'' ''मैं उनमें तेरे भाइयों में से एक नबी उठाउंगा, तेरी ही तरह, और उसके मुंह में अपने शब्द डालूंगा''। असद इस पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि बनी इस्राईल के भाई निश्चित रूप से अरब हैं और ये वो लोग हैं जो अपना वंशक्रम इस्माईल और इब्राहीम से जोड़ते हैं, और चूंकि यही वो समूह है जिससे पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. के क़बीले क़ुरैश का सम्बंध है, इसलिए बाइबिल की इन कहावतों को मुहम्मद सल्ल. के संदर्भ में ही देखना चाहिए।

आख़री पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

वातावरण

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾

ऐ हमारे रब! और उन ही में से एक रसूल मबऊस फ़रमा जो उनको आपकी आयात पढ़ पढ़कर सुनाए, और किताब और दानाई की बातें सिखाया करे, और उनके दिलों को पाकीज़ा कर दिया करे। बिलाशुबह तू बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब और बड़ी-बड़ी हिकमतों वाला है। (2:129)

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ
فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا
عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ
لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

बेशक मोमिनीन पर अल्लाह का बड़ा एहसान है के उसने उनमें उनके ही जिन्स से एक रसूल मबऊस किया जो अल्लाह की आयात उनको पढ कर सुनाता है और उनको पाकीज़ा बनाता है और उन्हें किताब और हिकमत की बातें सिखाता है। और ये लोग इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (3:164)

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا

और ये क़ुरआन एक किताब है जिसको हमने बरकत वाली बना कर नाज़िल किया है, सो इसी का इत्तेबा

करो, और डरो ताके तुम पर रहमत हो। ये इसलिए है के कभी तुम कहने लगो के किताब तो हमसे पहले जो दो फ़िर्क़े पर नाज़िल हुई थी, और हम उनके पढ़ने पढ़ाने में महेज़ बेख़बर थे। या ये कहते के अगर हम पर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे ज़्यादा राह पर होते, सो अब तुम्हारे पास रब की तरफ़ से एक खुली रहनुमाई और रहमत वाली किताब आ चुकी है, सो उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो हमारी आयात को झूटा बताए और उससे रोके, हम जल्द ही उनको जो हमारी आयात से रोकते हैं उस रोकने की सख़्त सज़ा देंगे।

(6:155-157)

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝١٥٥ أَنْ تَقُولُوٓا إِنَّمَآ
أُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَ
إِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝١٥٦ أَوْ
تَقُولُوا لَوْ أَنَّآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ
أَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ
مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ
سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ۝١٥٧

वो जो लोग रसूल नबी उम्मी की पैरवी करते हैं जिनके औसाफ़ वो अपने हां तौरात और इंजील में लिखे हुए पाते हैं, वो नेकी का हुक्म करते हैं, और बुरे काम से रोकते हैं, पाक चीज़ों को उनके लिए हलाल करते हैं, नापाक चीज़ें उन पर हराम करते हैं और उन पर जो बोझ और तौक़ हैं उनको उतारते हैं तो जो लोग उन पर ईमान ले आते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की पैरवी करते हैं जो उनके साथ नाज़िल किया गया वो ही लोग कामयाब हैं। आप फ़रमा दीजिये ऐ लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं, जिसकी बादशाही तमाम आसमानों और ज़मीन में है, उसके सिवा कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं, वो ही ज़िन्दगी देता है और वो ही मौत देता है, पस अल्लाह पर ईमान लाओ, और उसके नबी उम्मी पर, जो अल्लाह पर और उसके अहकामात पर ईमान रखते हैं, और उस नबी की पैरवी करो ताके तुम राहे रास्त पर आ जाओ। (7:157-158)

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ
الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ وَالْإِنْجِيْلِ ۬ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَ يَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ
وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ
إِصْرَهُمْ وَ الْأَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ
اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ أُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٥٧ قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّيْ رَسُوْلُ
اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعًا ۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۚ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِيْ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٨

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

तुम ही में से तुम्हारे पास एक रसूल पहुंचे हैं जिनको तुम्हारी तकलीफ़ बड़ी गिरां गुज़रती है तुम्हारे नफ़े और भलाई की बड़ी ख़्वाहिश रखते हैं, और मोमिनीन पर बड़ी शफ़क़त और मेहरबानी रखते हैं। (9:128)

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا
تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

और तुम तो इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे, और ना उसको अपने हाथ से लिख सकते थे, ऐसा होता तो फ़िर अहले बातिल ज़रूर कुछ शुबह करते। (29:48)

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ
اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا
الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ
مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى
اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

और इसी तरह हमने अपने हुक्म से आपके पास रूह (यानी जिब्राईल) को भेजा, आप ना तो ये जानते थे के किताब क्या चीज़ है और ना ये जानते थे के ईमान क्या चीज़ है, लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया के इसके ज़रिये से हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं हिदायत करते हैं और बिला शुबह ऐ नबी! आप सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करते हैं। यानी उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ के उसी का है वो सब कुछ जो आसमानों और ज़मीन में है, याद रखो के सारे उमूर अल्लाह की तरफ़ रूजू होंगे। (42:52-53)

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا
مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٢﴾ وَّاٰخَرِيْنَ
مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿٣﴾

वही तो है जिसने अनपढ़ों में से (मोहम्मद (स.अ.स.)) को रसूल बना कर भेजा, जो उनके सामने उसकी आयात को पढ़ते हैं और उनको पाक करते हैं, और उनको किताब और दानाई सिखाते हैं, और इससे पहले ये लोग खुली गुमराही में थे। और उनमें से दूसरों की तरफ़ भी जो अभी तक उनमें शामिल नहीं हुए, और वही ग़ालिब हिकमत वाला है। (62:2-3)

क़ुरआन उस वातावरण पर रोशनी डालता है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन पोषण हुआ और पैग़म्बर बनने से पहले वह जिस माहौल में रहे, और जिस

माहौल में उन्हें पैग़म्बर बना कर भेजा गया। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के ज़माने में मक्का यमन और सीरिया के बीच आने जाने वाले क़ाफ़िलों के लिए पड़ाव का एक केन्द्र था जो पूरब और पश्चिम के बीच हिन्द महासागर और लाल सागर, रोम सागर के साथ गुज़रने वाले अन्तर्राष्ट्रीय राजमार्गों के चौराहों पर स्थित था। यहां अल्लाह का घर काबा भी स्थित था जो हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे हज़रत इस्माईल के साथ मिल कर बनाया था और जो अरब के लोगों को एक ख़ुदा पर ईमान की याद दिहानी कराता था। इसके अलावा अरब द्वीप में यहूदियों और ईसाइयों के क्षेत्र भी थे जिनकी किताबों में अरब में आने वाले एक पैग़म्बर की भविष्यवाणियां किस न किसी प्रसंग से मौजूद थीं (Deuternomy XVIII:15,18, Gospel of John में दि कम्फ़र्टर का हवाला)। लेकिन स्वयं अरब के लोगों के बीच मुहम्मद सल्ल. से पहले कोई आसमानी पैग़ाम बहुत लम्बे समय से नहीं आया था, क्योंकि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल के द्वारा काबा के निर्माण के समय उस धरती की तरफ़ बहुत.ज़्यादा लोग आकर्षित नहीं हुए थे (देखें 14:37), बल्कि बाद के युग में यहां आबादी बढ़ी और यह जगह आबाद हुई।

मुहम्द सल्ल. एक निरक्षर समाज में पैदा हुए थे और ख़ुद भी निरक्षर (''उम्मी'') थे। वह न केवल इस लिहाज़ से उम्मी थे कि क़ुरआन से पहले कोई और आसमानी किताब उन्होंने नहीं पढ़ी या सीखी बल्कि साक्षरता के साधारण अर्थों में भी वह अक्षरों या शब्दों को मिला कर पढ़ना लिखना नहीं जानते थे। अलबत्ता यह ज़रूर है कि जब वह नौजवान थे तो लोगों की समस्याओं में दिलचस्पी लिया करते थे और क़बीले के ऐसे सम्मेलनों में शामिल होते थे जहां क़बीलों के बीच सामूहिक समस्याओं पर चर्चा होती थी और जिसके नतीजे में विभिन्न क़बीलों के सरदारों के बीच एक गठबन्धन हुआ था जिसका मक़सद उन लोगों की रक्षा करना था जिनके साथ कहीं कोई.ज़्यादती हो ताकि उन्हें न्याय दिलाया जाए और अन्य ज़रूरत मंदों की भी मदद की जाए (यह रिवायत इब्नेहंबल ने नक़ल की है, और देखें इब्नेसाद की तबक़ात अलकुबरा, खण्ड 1, पेज 128-129, बेरूत 1978)। उन्होंने क़ुरैश के विभिन्न सरदारों के बीच एक विवाद का निपटारा भी किया था जो कि काबा के पुनर्निर्माण के दौरान ''हजर असवद'' (विशेष काला पत्थर) को उसकी जगह पर रखने का श्रेय लेने के लिए आपस में लड़ने भिड़ने को तैयार हो गए थे। काबा का यह पुनर्निर्माण इस वजह से हो रहा था कि एक बाढ़ आजाने से उसकी दीवारें गिर गयी थीं और उन्हें फिर से बनाना था (तबक़ात इब्ने सअद, जिल्द 1, पेज 146, 157)। लोग उन्हें एक ईमानदार और सच्चा इंसान जानते थे (तबक़ात इब्ने सअद, जिल्द 1, पेज 121,146)। इन निजी गुणों के अलावा उन्हें यह सम्मान भी प्राप्त था कि वह हाशिम परिवार से सम्बंध रखते थे जो क़ुरैश क़बीले का एक प्रतिष्ठित परिवार था। इसी परिवार के पास काबा की देखरेख और प्रबंधन की ज़िम्मेदारी थी, और ये लोग सारे अरब से आने वाले काबा के यात्रियों की सेवा करते थे।

वह्यि (आसमानी संदेश) का उतरना और पैग़म्बर बनना

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ ① خَلَقَ
الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ ② اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ
الْاَكْرَمُۙ ③ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ ④ عَلَّمَ
الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ ⑤

(ऐ मोहम्मद (स.अ.स.) अपने रब का नाम लेकर पढ़ो जिसने आलम को पैदा किया। जिसने इन्सान को ख़ून की फुटकी से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा करी है। जिसने क़लम (के ज़रिये) से लिखना सिखाया। इन्सान को वो बातें सिखाईं जो वो नहीं जानता था।

(96:1-5)

نٓ وَ الْقَلَمِ وَ مَا یَسْطُرُوْنَۙ ① مَاۤ اَنْتَ
بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍۚ ② مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ
رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍۚ ② وَ اِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ
مَمْنُوْنٍۚ ③ وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ④
فَسَتُبْصِرُ وَ یُبْصِرُوْنَۙ ⑤ بِاَیِّكُمُ
الْمَفْتُوْنُ ⑥ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ
عَنْ سَبِیْلِهٖ ۪ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ⑦
فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِیْنَ ⑧ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ
فَیُدْهِنُوْنَ ⑨

नून, क़लम की क़सम है और जो वो लिखते हैं उसकी क़सम है। के (ऐ मोहम्मद (स.अ.स.) तुम अपने रब के फ़ज़्ल में दीवाने नहीं हो। और तुम्हारे ना ख़त्म होने वाला अज्र है। और तुम्हारे अख़लाक़ आला मेअयार पर हैं। सो अनक़रीब तुम भी देख लोगे और ये काफ़िर भी देख लेंगे। के तुम में से कौन दीवाना है। तुम्हारा रब उसको ख़ूब जानता है जो उसके रस्ते से भटक गया, और उनको भी जानता है जो सीधे रास्ते पर चल रहे हैं। तो तुम झुटलाने वालों का कहना ना मानना। वो चाहते हैं के तुम नर्मी इख़्तियार करो तो ये भी नर्म हो जायें।

(68:1-9)

یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُۙ ① قُمِ الَّیْلَ اِلَّا قَلِیْلًاۙ ②
نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِیْلًاۙ ③ اَوْ زِدْ
عَلَیْهِ وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِیْلًاؕ ④ اِنَّا سَنُلْقِیْ
عَلَیْكَ قَوْلًا ثَقِیْلًا ⑤ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّیْلِ
هِیَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِیْلًاؕ ⑥ اِنَّ لَكَ فِی
النَّهَارِ سَبْحًا طَوِیْلًاؕ ⑦ وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ
تَبَتَّلْ اِلَیْهِ تَبْتِیْلًاؕ ⑧ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ

ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले। रात को क़याम किया करो मगर थोड़ी सी रात। यानी निस्फ़ रात या उससे कुछ कम। या उससे कुछ ज़्यादा और क़ुरआन को ठहर ठहर कर पढ़ा करो। हम अनक़रीब तुम पर एक फ़रमान नाज़िल करेंगे। कुछ शक नहीं के रात का उठना (नफ़्स को) सख़्त पामाल करता है और उस वक़्त बात भी ख़ूब दुरूस्त निकलती है। बिला शुबह दिन में तुम्हें और बहुत से काम होते हैं। तो अपने रब के नामों का ज़िक्र किया करो और हर तरफ़ से बे ताल्लुक़ होकर उसी की तरफ़

الْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝٩ وَ
اصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ اهْجُرْهُمْ هَجْرًا
جَمِيْلًا ۝١٠

मुतवज्जह हो जाओ। वही मशरिक़ो मग़रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपना कारसाज़ बनाओ। और जो दिल आज़ार बातें वो कहते हैं उनको हौसले से बर्दाश्त करते रहो, और उनसे अच्छे अंदाज़ के साथ अलग हो जाओ।

(73:1-10)

وَ الضُّحٰى ۝١ وَ الَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ
رَبُّكَ وَ مَا قَلٰى ۝٣ وَ لَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ
الْاُوْلٰى ۝٤ وَ لَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ۝٥
اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝٦ وَ وَجَدَكَ
ضَآلًّا فَهَدٰى ۝٧ وَ وَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝٨
فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝٩ وَ اَمَّا السَّآئِلَ
فَلَا تَنْهَرْ ۝١٠ وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝١١

दिन की रौशनी की क़सम। और रात की तारीकी की जब वो छा जाये। और तुम्हारे परवरदिगार ने ना तो तुम को छोड़ा और ना मकरूह जाना। और आख़िरत तुम्हारे लिये दुनिया से बदर्जहा बेहतर है। और जल्द ही तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें इतना देगा के तुम राज़ी हो जाओगे। क्या तुम्हें अल्लाह ने यतीत पाकर जग नहीं दी (बेशक दी)। और रस्ते से नावाक़िफ़ देखा तो रस्ता दिखाया। और तंगदस्त पाया तो ग़नी कर दिया। तो तुम भी यतीम पर सख़्ती ना करना। और सवाल करने वाले को झिड़की ना देना। और अपने परवरदिगार की नेमतों का बयान करते रहना। (93:1-11)

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ وَ وَضَعْنَا عَنْكَ
وِزْرَكَ ۝٢ الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣ وَ رَفَعْنَا
لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ اِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧
وَ اِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

(ऐ नबी (स.अ.स.) क्या हमने तुम्हारा सीना कुशादा नहीं किया? और हमने तुम पर से बोझ भी उतार दिया। जिसने तुम्हारी कमर को तोड़ रखा था। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलंद किया। बिला शुबह हर मुश्किल के साथ आसानी भी होती है। और बेशक हर मुश्किल के साथ आसानी भी होती है। तो जब फ़ारिग़ हो जाया करो तो (इबादत में) मेहनत किया करो। और अपन परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो।

(94:1-8)

أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ ۝١ فَذَٰلِكَ ٱلَّذِى يَدُعُّ ٱلْيَتِيمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ۝٣

क्या तुमने उस शख़्स को नहीं देखा जो रोज़े जज़ा का इन्कार करता है। तो ये वही है जो यतीम को धक्के देता है। और फ़क़ीर को खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देता। (107:1-3)

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلْكَٰفِرُونَ ۝١ لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢ وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٣ وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ۝٤ وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ ۝٦

ऐ नबी! कह दो ऐ काफ़िरों! जिनको तुम पूजते हो उन को मैं नहीं पूजता। और जिसको मैं पूजता हूँ उसको तुम नहीं पूजते। और मैं उनको पूजने वाला नहीं हूँ जिनकी तुम पूजा करते हो। और तुम और की पूजा करने वाले नहीं हो जिसकी मैं पूजा करता हूँ। तुम अपने रास्ते पर क़ायम हो मैं अपने रास्ते पर क़ायम हूँ। (109:1-6)

قُلْ هُوَ ٱللَّهُ أَحَدٌ ۝١ ٱللَّهُ ٱلصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُن لَّهُۥ كُفُوًا أَحَدٌۢ ۝٤

ऐ नबी! कह दो वो अल्लाह एक है। वो माबूदे बरहक़ बेनियाज़ है। ना वो किसी का बाप है और ना वो किसी का बेटा है। और ना कोई इसका हमसर है।(112:1-4)

उपरोक्त आयतें यह बताती हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत किस तरह शुरू हुई, उन्हें अपने मिशन को अंजाम देने के लिए किस तरह क्या और कैसे मार्गदर्शन दिया गया और उनकी दावत क्या थी। इस्लाम की शिक्षा में पढ़ना और सीखना अनिवार्य है, और सबसे पहले जो आयतें मुहम्मद सल्ल. पर अवतरित हुईं उनमें 'क़लम' का ज़िक्र दो बार किया गया है (96:1-4; 68:1)। बताया जाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जब पहली बार वह्यि (आसमानी संदेश) आई उनका शरीर कपकपाने लगा था और ठण्डा पड़ गया था, और जब वह घर पहुंचे तो उन्होंने अपनी पत्नि से कहा कि उन्हें कोई कपड़ा ओढ़ा दें और ढांप दें। इसके बाद जो वह्यि उन पर उतरी उसमें कहा गया कि उठ खड़े हों और अब आगे आराम का समय नहीं है, क्योंकि उन्हें एक बड़ा मिशन अंजाम देने की ज़िम्मेदारी उठानी है (74:1-7)। उन्हें अब अल्लाह की इबादत बहुत .ज्यादा करना थी और अल्लाह से तअल्लुक़ के द्वारा अपनी आध्यात्मिक और नैतिक शक्तियों को और .ज्यादा बढ़ाना था ताकि जो कठिनाइयां और प्रतिरोध उनके सामने आने वाली थे उन पर वह नियंत्रण पा सकें (73:1-11)। इसके अतिरिक्त उन्हें यह शिक्षा दी गयी कि वह अल्लाह पर अपने ईमान को पक्का और गहरा करें और लोगों को खोल खोल कर व समझा समझा कर अल्लाह का संदेश पहुंचाएं। सब्र (धीरज) का रवैया रखें और

अपने व्यवहार व बर्ताव को हर लिहाज़ से बहतर और पवित्र रखें। उन्हें ख़ुद को बुराई से दूर रहने के कहा गया ताकि उनका अमल (आचरण) और व्यवहार इस संदेश के लिए एक नमूना हो। उन्हें अपनी दावत और पैग़ाम के बदले निजी रूप से अपने लिए किसी भी तरह से कोई फ़ायदा और नफ़ा प्राप्त नहीं करना था। अक़ीदे के मामले में कोई समझौता करने की क़तई कोई गुंजाइश नहीं थी और साथ ही साथ किसी पर अक़ीदा थोपने और उसे मानने के लिए मजबूर करने की भी कोई गुंजाइश नहीं थीः"तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, और मेरे लिए मेरा दीन" (109:6)

वह़्यि का सिलसिला जब कुछ समय के लिए रुक गया और मुहम्मद सल्ल. को यह आशंका हुई कि अब शायद वहिय नहीं उतरेगी तो कुछ समय बात यह सिलसिला फिर शुरू हुआ और मुहम्मद सल्ल को भरोसा दिलाया गया कि अल्लाह ने उन्हें छोड़ नहीं दिया है, ना वह उनसे से नाराज़ है, और यह कि वह तो हमैशा से अल्लाह की निगरानी में हैं क्योंकि वह यतीम (अनाथ) पैदा हुए थे और उनके के माता की मृत्यू भी उनके बचपन में ही हो गयी थी। अल्लाह ने उन्हें भौतिक साधन भी दिए और अध्यात्मिक शक्ति भी उन्हें दी। इन बातों को ज़हन में रखते हुए मुहम्मद सल्ल. को हमैशा किसी भी अनाथ का दिल दुखाने और किसी भी ज़रूरत मन्द के सवाल को अनदेखा करने से बचने को कहा गया, और अपनी करनी व कथनी से अल्लाह की नेअमतों का इज़हार करने और उन पर शुक्र करने की शिक्षा दी गयी (93:11)। उनका आग्रह तो बस यह था कि केवल एक अल्लाह की इबादत करो, उसका कोई शरीक नहीं और किसी से उसकी तुलना नहीं की जा सकती (12:1-4)। बिल्कुल शुरू में उन्हें केवल यही संदेश देने के लिए कहा गया कि लोग एक अल्लाह की इबादत करें और ज़रूरतमंद लोगों की देख रेख करें (93:9-11; 103:1-3; 107:1-7)।

प्रथम विरोधी

كَلَّآ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَيَطْغَىٰٓ ۝٦ أَن رَّءَاهُ ٱسْتَغْنَىٰٓ ۝٧ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ ٱلرُّجْعَىٰٓ ۝٨ أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يَنْهَىٰ ۝٩ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰٓ ۝١٠ أَرَءَيْتَ إِن كَانَ عَلَى ٱلْهُدَىٰٓ ۝١١ أَوْ أَمَرَ بِٱلتَّقْوَىٰٓ ۝١٢ أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰٓ ۝١٣ أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ ٱللَّهَ يَرَىٰ ۝١٤

बेशक इन्सान सरकश हो जाता है। इसलिये के अपने आपको बेनियाज़ ख़्याल करने लगता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ़ लौटना है। भला तुमने उसको देखा जो मना करता है। एक बन्दे को जब के वो नमाज़ में मसरूफ़ होता है। भला देखो तो अगर ये राहे रास्त पर हो। या परहेज़गारी का हुक्म देता हो (तो उसको मना करना कैसा होगा)। और देख तो अगर उसने (दीने हक़ को) झुटलाया और मुंह तोड़ा। क्या उसको मालूम नहीं के

.ख़ुदा (उसको) देख रहा है। (96:6-14)

وَ لَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ
مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ
اَثِيْمٍ ﴿۱۲﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ﴿۱۳﴾ اَنْ
كَانَ ذَا مَالٍ وَّ بَنِيْنَ ﴿۱۴﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۵﴾ سَنَسِمُهٗ
عَلَى الْخُرْطُوْمِ ﴿۱۶﴾

और किसी ऐसे आदमी के कहे में ना आ जाना जो बहुत क़समें खाने वाला ज़लील है। ताना देने वाला है चुगलियां करने वाला है। माल में बुख़्ल करने वाला हद से आगे बढ़ जाने वाला बदकार है। सख़्त .ख़ू और उसके अलावा बद ज़ात है। इसलिये के माल और औलाद रखता है। जब उस पर हमारी आयात पढ़ी जायें तो वो कहे के ये अगले लोगों के अफ़साने हैं। हम अनक़रीब उसकी नाक पर दाग़ लगा देंगे। (68:10-16)

وَ ذَرْنِيْ وَ الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَ
مَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿۱۱﴾

और मुझ पर छोड़ दो उन झुटलाने वाले मालदारों को, और उनको थोड़ी सी मोहलत दे दो। (73:11)

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿۱۱﴾ وَّ جَعَلْتُ لَهٗ
مَالًا مَّمْدُوْدًا ﴿۱۲﴾ وَّ بَنِيْنَ شُهُوْدًا ﴿۱۳﴾ وَّ
مَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ
اَزِيْدَ ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿۱۶﴾
سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ قَدَّرَ ﴿۱۸﴾
فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﴿۱۹﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَ بَسَرَ ﴿۲۲﴾
ثُمَّ اَدْبَرَ وَ اسْتَكْبَرَ ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا
سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿۲۴﴾ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿۲۵﴾

और हमें उससे समझ लेने दो जिसको हमने अकेला पैदा किया। और जिसको हमने दौलत बहुत दी। बेटे दिये जो हर वक़्त हाज़िरे ख़िदमत रहते हैं। और हर तरह के सामान में बड़ी वुसअत दी थी। फ़िर भी वो .ज़्यादा की .ख़्वाहिश रखता है। हरगिज़ ऐसा ना होगा वो हमारी आयात का दुश्मन है। मैं अनक़रीब उसे दोज़ख के पहाड़ पर चढ़ाऊंगा। उसने फ़िक्र किया, और तजवीज़ किया। ये मारा जाये इसने कैसे तजवीज़ की। फ़िर ये मारा जाये उसने कैसी तजवीज़ की। फ़िर उसने देखा। फ़िर मुंह बनाया और .ज़्यादा मुंह बनाया। फ़िर मुंह फ़ेरा, और तकब्बुर किया। फ़िर कहा, ये तो जादू है, जो अगलों से मुतावातिर चला आता है। (फ़िर बोला) ये (अल्लाह का कलाम नहीं है बल्के) एक बशर का कलाम है। (74:11-25)

चूंकि क़ुरआन का पहला संदेश केवल एक अल्लाह की इबादत करने और जिन लोगों को अल्लाह ने नेअमतों से धनी किया था उन्हें वंचितों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की शिक्षा देने तक ही सीमित था, इसलिए इस्लाम की दावत के पहले विरोधी वही लोग थे जो 'स्टेटस-को' (जूं की तूं स्थिति) को बनाए रखना चाहते थे क्योंकि समाज में उस समय जो चलन था उसी से उनके हित जुड़े हुए थे और वो उससे फ़ायदा उठाते रहना चाहते थे, जबकि मुहम्मद सल्ल. की दावत से उनके उन हितों को नुक़सान पहुंचने वाला था। मक्का में अवतरित होने वाली क़ुरआनी सूरतों व आयतों में इन पहले विरोधियों की तसवीर खींची गयी है कि यह उस नगर के क़बीलाई और व्यवसायिक समाज के सम्भ्रांत लोग थे, जो दौलतमन्द भी थे और परिवार तथा वंश का ज़ोर रखने वाले सरदार थे (68:10-23; 69:28-37; 70:24-25; 74:12-26,40-48; 76:8-9; 83:1-6,14; 89:17-126; 90:5-21; 96:6-7; 104:1-9; 107:1-7; 111:2; और देखें 18:32-46; 19:77-80; 23:55-56; 26:28; 34:4-9)। उनकी बहुदेववादी आस्थाएं न केवल आस्था का मामला था बल्कि अपने पूर्वजों और उनसे चली आ रही परम्पराओं से जुड़े रहने का मामला भी था, जो उस युग की क़बीलाई समाज में शक्ति और सम्मान व श्रेष्ठता की एक ज़मानत होता था (15:6; 21:52; 23:25-70; 34:8,43,46; 36:69; 37:36; 43:39; 44:14; 46:7)। उन्होंने मुहम्मद सल्ल. पर मजनून (पागल) होने, जादूगर होने और झूठा होने के आरोप लगाए। ये वास्तव में एक विशेष युग के विशेष लोगों के व्यक्तिगत हितों और इस्लाम के एक व्यापक .ष्टिकोण के बीच एक टकराव था जिसके नज़दीक समय या ज़माना क़ियामत तक जारी रहना है और जो पूरी इंसानियत को एक कुटुम्ब की तरह देखता है। तमाम इंसानों को एक अल्लाह ने पैदा किया है जिसका आज्ञापालन और अनुपालन तमाम इंसानों को और हर समय व युग में करना चाहिए, और हर इंसान को यह चाहिए कि वह आख़िरत के अनन्त जीवन में अपने इस संसारिक जीवन के कर्मों की जवाबदेही और नतीजे का .ख़्याल रखें।

क़ुरआन

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا

और जब उनको हमारी आयात पढ़कर सुनाई जाती हैं जो बिलकुल वाज़ेह हैं तो जिनको हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं वो कहते हैं, के या तो इसके सिवा कोई और क़ुरआन बना लाओ या इसको बदल दो, कह दो के मुझे ये इख़्तियार नहीं के में इसको अपनी तरफ़ से बदल दूं मैं तो उसी का ताबे हूँ जो मेरी तरफ़ वही के ज़रिये

مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾ قُل لَّوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُم بِهِ ۖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾

से आता है, अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूंगा तो मैं बड़े सख़्त दिन के अज़ाब से डरता हूँ। आप कह दीजिये के अगर अल्लाह चाहता तो मैं ना तो तुमको पढ़ कर सुनाता, और ना ही वो तुमको इससे वाक़िफ़ करता, क्योंकि मैं इससे पहले भी तुम में एक हिस्सा उम्र तक रहा हूँ, फ़िर क्या तुम नहीं समझते। (10:15-16)

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَن يُفْتَرَىٰ مِن
دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ
يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ
مِن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ
قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ
اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا
بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ
كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

और ये क़ुरआन ऐसा नहीं है के अल्लाह के सिवा कोई अपनी तरफ़ से बना सके, लेकिन ये तसदीक़ करता है अपने से पहली किताबों की और तफ़सील बयान करता है ज़रूरी अहकाम की इसमें शक नहीं है के ये तो रब्बुलआलमीन की तरफ़ से है। क्या ये काफ़िर कहते हैं के ये क़ुरआन रसूल ने अपनी तरफ़ से बना लिया है, आप कह दीजिय के अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इस जैसी एक सूरत बना लाओ, और अल्लाह के सिवा जिनको बुला सको बुला लो। असल चीज़ ये है के उन्होंने झुटलाया उस चीज़ को जिसके समझने से वो क़ासिर रहे, और अभी तक उन पर इसकी हक़ीक़त नहीं खुली, इसी तरह उनसे पहले लोगों ने भी झुटलाया था सो देख लो, ज़ालिमों का क्या हश्र हुआ। (10:37-39)

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ
مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم
مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٣﴾

क्या ये लोग कहते हैं के आपने इसको ख़ुद बना लिया है, आप कह दीजिये के अगर तुम सच्चे हो तो ऐसी दस सूरतों को बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिस जिस को बुला सकते हो बुला लो। (11:13)

وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا
فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا
شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ

और अगर तुम इस किताब में शक करते हो जो हमने अपने बंदे पर उतारी है तो तुम ऐसी ही सूरत बना लाओ और अगर तुम इस किताब में शक करते हो जो अपने बंदे पर उतारी है तो तुम ऐसी ही सूरत बना लाओ और

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَ لَنْ تَفْعَلُوْا
فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ
الْحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

अपने हिमायतियों को बुला लो जो अल्लाह के सिवा हो, अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम नकर सको, और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं, वो काफ़िरों के लिए तैयार है। (2:23-24)

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾

हमने इस क़ुरआन को अरबी ज़बान में नाज़िल किया है ताके तुम समझ सको। (12:2)

(और देखें 13:73; 16:103; 20:311; 26:195; 39:28; 41:3; 42:7; 43:3; 46:12)

وَ يَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى
هٰۤؤُلَآءِ ؕ وَ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً وَّ بُشْرٰى
لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿٨٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ
الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى
عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ وَ الْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

और जिस दिन हम हर उम्मत में से ख़ुद उन पर गवाह खड़े करेंगे और ऐ नबी! हम उनमें आपको गवाह बना देंगे, और हमने तुम पर किताब नाज़िल की है जो हर चीज़ को खोल कर बयान करती है, और मुसलमानों के लिये हिदायत, रहमत और बशारत देने वाली है। बिला शुबह अल्लाह तआला इन्साफ़ (1), नेकी (2), अपने क़रीबी रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है, और बेहयाई, बड़े गुनाहों, और सरकशी के काम से रोकता है, अल्लाह तुमको नसीहत करता है, इसलिये के तुम नसीहत क़ुबूल करो। (16:89-90)

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ اَقْوَمُ وَ
يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۙ﴿٩﴾

बेशक ये क़ुरआन वो रास्ता दिखाता है जो सबसे सीधा है और मोमिनीन की जो नेक अमल करते हैं ख़ुशी की ख़बर देता है के उनके लिये अज्रे अज़ीम है। (17:9)

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ
يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ
لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾

आप कह दीजिये अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात के लिये जमा हो जायें के ऐसा क़ुरआन बना लावें तो भी ऐसा ना ला सकेंगे, और अगरचे वो सब एक दूसरे के मददगार भी बन जायें। (17:88)

وَ قُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّ نَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾

और क़ुरआन में हमने फ़ज्ल क़ायम रखा ताके आप लोगों के सामने इसको ठहर ठहर कर पढ़ें, और हमने भी इसको थोड़ा थोड़ा उतारा है। (17:106)

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾

और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिये बहुत सी मिसालें तरह तरह से बयान की हैं, और ये इन्सान सब से बढ़ कर झगड़ालू है। (18:54)

और देखें 6:46; 7:58; 17:41,89; 20:113; 46:27)

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَ رَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿۳۲﴾ وَ لَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿ؕ۳۳﴾

और काफ़िर कहते के इस पर क़ुरआन एक ही मर्तबा क्यों ना उतार दिया गया, इसी तरह नाज़िल होना ही था ताके इसके ज़रिये से आपके दिल को मज़बूत रखें, और ठहर ठहरकर हमने इसको पढ़ कर सुनाया। और ये लोग जो एतराज़ आपके पास लायेंगे हम आपके पास उसका जवाब माक़ूल और मुफ़स्सिल भेज देंगे। (25:32-33)

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿ؕ۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿ۙ۱۹۳﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿ؕ۱۹۵﴾

और ये क़ुरआन परवरदिगारे आलम का उतारा हुआ है। इसको अमानत दार फ़रिश्ता लेकर उतरा है। उसने तुम्हारे दिल में उतारा है, ताके लोगों को नसीहत करते रहें। और उतारा भी साफ़ आर्बि ज़बान में। (26:192-195)

وَ مَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۫۸۶﴾ وَ لَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَ ادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَ لَا

और आपको उम्मीद भी नहीं थी के आप पर किताब नाज़िल की जाएगी, मगर आपके रब की मेहरबानी से नाज़िल हुई फ़िर आप हरगिज़ काफ़िरों के मददगार ना होना। और आपको अल्लाह की आयात के नाज़िल होने के बाद इससे ना रोक दें, और आप लोगों को अपने रब की तरफ़ बुलाते रहें, और मुशरिकीन में हरगिज़ शामिल

تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝٨٧ وَلَا تَدْعُ مَعَ
اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ ۘ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ
هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝٨٨

ना होना। और आप अल्लाह के सिवा किसी और को मामबूद समझ कर ना पुकारना, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसकी ज़ात पाक के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है, उसी की हुकूमत है, और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (28:86-88)

وَمَا كُنتَ تَتْلُو مِن قَبْلِهِ مِن كِتَابٍ وَ
لَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ ۖ إِذًا لَّارْتَابَ
الْمُبْطِلُونَ ۝٤٨ بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي
صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ
بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ۝٤٩ وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَاتٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ
اللَّهِ ۖ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٥٠ أَوَلَمْ
يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ
عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝٥١

और तुम तो इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे, और ना उसको अपने हाथ से लिख सकते थे, ऐसा होता तो फ़िर अहले बातिल ज़रूर कुछ शुबह करते। बल्के ये रौशन आयात हैं, जिनको इल्म दिया गया है उनके सीनों में (महफ़ूज़ हैं) और हमारी आयात से वही इन्कार करते हैं जो ज़ालिम हैं। और काफ़िर कहा करते हैं के उस पर उसके रब की तरफ़ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुई, आप फ़रमा दीजिये के निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं और मैं तो सिर्फ़ खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ। क्या उनके लिये ये काफ़ी नहीं है के हमने आप पर किताब नाज़िल की है, जो उनको सुनाई जाती है कुछ शक नहीं के मोमिनीन के लिये इसमें रहमत और नसीहत है। (29:48-51)

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ
إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝٦٩ لِّيُنذِرَ مَن
كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝٧٠

और हमने रसूल को शेअर कहना नहीं सिखाया, और ना ये उनकी शान के मवाफ़िक़ है, ये तो महज़ नसीहत है और साफ़ साफ़ क़ुरआन है। ताके डराये ऐसे शख़्स को जो ज़िन्दा है, और काफ़िरों पर हुज्जत पूरी हो जाये। (36:69-70)

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا
مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَ

अल्लाह ने निहायत अच्छा कलाम नाज़िल किया है, यानी किताब जिसकी आयात बाहम मिलती जुलती हैं, बार बार दोहराई जाती हैं जिससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं फ़िर उनके दिल और

قُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

बदन नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ़ मुतावज्जह हो जाते हैं, यही अल्लाह की हिदायत है, वो इससे जिसको चाहता है हिदायत देता है, और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे तो उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं। (39:23)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾ لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾

जिन लोगों ने इस क़ुरआन को ना माना जब वो उनके पास आया, और ये बड़ी ज़बरदस्त किताब है। जिस में बातिल ना आगे की तरफ़ आ सकता है और ना पीछे की तरफ़ से ये हकीम सतूदा सिफ़ात की तरफ़ से नाज़िल किया गया है। (41:41-42)

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝

और हमने इसी तरह आप पर ये क़ुरआन अरबी ज़बान में बज़रिया वही उतारा है ताके आप मक्का वालों को आर जो उसके आस पास हैं उनको डरायें, और जमा होने के दिन से डरायें, जिसके आने में शक नहीं है, एक जमात जन्नत में दाख़िल होगी और एक दोज़ख में। (42:7)

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَٰكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ ﴿٥٣﴾

और इसी तरह हमने अपने हुक्म से आपके पास रूह (यानी जिब्राईल) को भेजा, आप ना तो ये जानते थे के किताब क्या चीज़ है और ना ये जानते थे के ईमान क्या चीज़ है, लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया के इसके ज़रिये से हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं हिदायत करते हैं और बिला शुबह ऐ नबी! आप सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करते हैं। यानी उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ के उसी का है वो सब कुछ जो आसमानों और ज़मीन में है, याद रखो के सारे उमूर अल्लाह की तरफ़ रूजू होंगे। (42:52-53)

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ۝٣١ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۭ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۭ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٣٢

और ये कहा के ये क़ुरआन इन दोनों (मक्का तायफ की) बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया। क्या वो आपके रब की रहमत को तक़सीम करते हैं, हमने उनमें उनकी मईशत को दुनियास की ज़िन्दगी में तक़सीम कर दिया है और एक के दूसरे पर दर्जे बुलंद कर दिये हैं, ताके एक दूसरे से ख़िदमत ले, और आपके रब की रहमत तो कहीं बेहतर है उससे जो कुछ ये जमा करते हैं (43:31-32)

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧

और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (54:17)

اَلرَّحْمٰنُ ۝١ۙ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝٢ۭ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝٣ۙ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝٤

रहमान ने। क़ुरआन की तालीम दी। उसी ने इन्सान को पैदा किया। उसी ने उसको बोलना सिखाया। (55:1-4)

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١

अगर हम ये क़ुरआन किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो तुम देखते के वो अल्लाह के ख़ौफ़ से दब जाता और फ़ट जाता, और हम ये बातें लोगों के लिये बयान करते हैं के वो ग़ौर करें। (59:21)

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٦٥

क़सम है आपके रब की ये लोग ईमान ना लायेंगे जब तक वो अपने तनाज़आत में आपको मुनसिफ़ ना बना लें, और जो फ़ैसला आप फ़रमा दें उससे तंगदिल ना हों बल्कि उसको ख़ुशी से मान लें। (4:65)

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۭ وَلَوْ كَانَ مِنْ

क्या वो फ़िर क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते, अगर ये अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें

عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا
كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾

वो बकसरत तफ़ावुत पाते। (4:82)

وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ
فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ
جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا ؕ وَ لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ
لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَاۤ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا
الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَ
اَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ وَ احْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ
بَعْضِ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ
بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ
يَبْغُوْنَ ؕ وَ مَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا
لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

और हमने आप पर ये किताब नाज़िल की जो बज़ाते .ख़ुद भी सच्ची है और इससे पहले उतरने वाली सब किताबों की तसदीक़ करती है और उनकी मुहाफ़िज़ भी है, तो उनके आपस के मामलात का इसी किताब के मवाफ़िक़ फैसला फ़रमाया कीजिये, (दीने) हक़ आपकी तरफ़ आया है इससे दूर हो कर उनकी .ख़्वाहिशात के मवाफ़िक़ अमल ना कीजिये, तुम में से हर एक के लिए हमने .ख़ास शरीअत और .ख़ास तरीक़त बना दी है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन अल्लाह तुम को आज़माना चाहता है इस दीन में जो तुम को दिया है, तो अच्छी बातों की तरफ़ दौड़ कर आओ, तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौट जाना है, फ़िर वो तुमको सब कुछ बता देगा जिनमें तुम इख़्तियार करते थे। हम ताकीद करते हैं के तुम उनमें उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो तुम पर नाज़िल किया है, और उनकी .ख़्वाहिशात की पैरवी ना करो और उनसे बचे रहो के वो तुम को गुमराह ना कर दें बाज़ बातों में जो अल्लाह ने तुम पर नाज़िल की हैं फ़िर अगर वो ना मानें तो जान लो के अल्लाह चाहता है के उनके गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत नाज़िल करे, और लोगों में से बहुत से तो नाफ़रमान हैं। तो क्या वो जाहीलियत के ज़माने का हुक्म चाहते हैं, और यक़ीन रखने वालों के लिए अल्लाह से अच्छा फ़ैसला किस का होगा।

(5:48-50)

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ
الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي

वो जो लोग रसूल नबी उम्मी की पैरवी करते हैं जिनके औसाफ़ वो अपने हाँ तौरात और इंजील में लिखे हुए

التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۫ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ
وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَ
اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۟

पाते हैं, वो नेकी का हुक्म करते हैं, और बुरे काम से रोकते हैं, पाक चीज़ों को उनके लिए हलाल करते हैं, नापाक चीज़ें उन पर हराम करते हैं और उन पर जो बोझ और तौक़ हैं उनको उतारते हैं तो जो लोग उन पर ईमान ले आते हैं और उनकी हिमायत करते हैं और उनकी मदद करते हैं, और उस नूर की पैरवी करते हैं जो उनके साथ नाज़िल किया गया वो ही लोग कामयाब हैं। (7:157)

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا
تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ
بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَ
لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ
اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۟

पस ऐ नबी! आप इसी दीन की तरफ़ लोगों को बुलाते रहें, और इसी पर क़ायम रहें जैसा के आपको हुक्म किया गया है, और आप उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी ना करें, और आप फ़ैसला दें के मैं तो ईमान लाता हूँ उन किताबों पर जो अल्लाह ने नाज़िल की हैं, और मुझे हुक्म हुआ है के मैं तुममें इन्साफ़ करूं, अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, हमारे आमाल का बदला हमको मिलेगा, और तुम्हारे आमाल का बदला तुम को मिलेगा, हममें और तुममें कोई तकरार नहीं है, अल्लाह हम सबको इकटठा कर देगा, और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (42:15)

अल्लाह के रसूल के मक्के में निवास के दौरान, क़ुरआन अक़ीदे (आस्था) की एक किताब बन कर उतरा और अपना पैग़ाम देते हुए क़ुरआन ने हैरत अंगेज़ और चुनौतीपूर्ण चमत्कार सामने रखे। उसने तौहीद अर्थात एक अल्लाह पर विश्वास के अक़ीदे को पेश किया, आख़िरत में अल्लाह के सामने इंसान की जवाबदेही का अक़ीदा दिया जिसके अनुसार दुनिया के इस जीवन में अपने अपने कर्मों के अनुसार हर व्यक्ति को हर अच्छे या बुरे काम का बदला मिलेगा। मक्की जीवन में अवतरित होने वाली क़ुरआनी आयतों और सूरतों में इस अक़ीदे पर ही ज़ोर दिया गया है, और लोगों के मस्तिष्क में यह बात बार बार डाली गयी है कि आख़िरत में अल्लाह का फ़ैसला इंसानों के सामने आएगा। और इसके लिए क़ुरआन ने जन्नत व दोज़ख़ (स्वर्ग व नरक) के मंज़र प्रस्तुत किए हैं। अच्छे कर्म करने वालों को जन्नत मिलेगी जो कि नेअमतों भरे बाग़ हैं जहां हर तरह के मेवे और खाने पीने की स्वादिष्ट व्यंजन बे हिसाब और

हर समय उपलब्ध रहेंगे। और बुरे काम करने वालों के लिए जहन्नम या दोज़ख़ है जो दुखों और कष्ट का घर है और आग ही आग है। क़ुरआन के इस भाग में पहले आ चुकी किताबों का भी हवाला है और पिछले पैग़म्बरों के संदेश को आख़री पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. के संदेश से जोड़ कर बताया गया है। इन पैग़म्बरों के साथ उनके समुदायों ने जो मामला किया और समुदायों को अपने अहंकार व इंकार का जो अंजाम भुगतना पड़ा उसका भी ज़िक्र है और उन से सीख लेने की प्रेरणा दी गयी है। उन पैग़म्बरों की अडिगता, धीरज और क़ुर्बानी का ज़िक्र भी बार बार किया गया है कि समुदाय और समुदाय के सरदारों व बाहुबलियों के द्वारा झुटलाए जाने और सताए जाने के बावजूद वो अपना संदेश देते रहे। अक़ीदे के साथ साथ नैतिक मूल्यों को भी पेश किया गया है और पूरे क़ुरआन में ईमान व अख़लाक़ (नैतिक आचरण) को एक दूसरे से जोड़ कर इस तरह पेश किया गया है कि दोनों एक दूसरे के लिए अनिवार्य और एक दूसरे के पूरक हैं जिन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

मार्गदर्शन के इस संदेश को मक्की जीवन में प्रस्तुत करते हुए क़ुरआन न अरब वासियों को जिन्हें अपनी भाषा की वाक्यपटुता, व्यापकत और प्रभावपूर्ण शैली पर बहुत गर्व था, चुनौती दी है कि वो ऐसा कलाम बना कर दिखाएं। क़ुरआन हालांकि अरबी भाषा में अवतरित हुआ लेकिन उसकी शैली और बनावट अरब-वासियों के अपने गद्य व पद्य से भिन्न था फिर भी उसका संदेश गद्य भाषा की तरह स्पष्ट और सामान्य रूप से समझ में आना वाला और उसकी ध्वनि व गीत शैली काव्य रचना की तरह आनन्दायक और प्रभावी थी। अरब-वासियों को क़ुरआन के इस कलाम ने गद्य और पद्य दोनों तरह के कलाम में उनकी परष्कृित व परिमार्जित भाषा कला के मुक़ाबले लाचार कर दिया था। मक्की जीवन की छोटी छोटी आयतें सुन्ने वालों को इतना प्रभावित करतीं और उनके दिल व दिमाग़ को इतना सहेज लेतीं कि विरोधी भी इसको शिद्दत से महसूस करते और यह कहने पर मजबूर थे, और आज भी हैं, कि क़ुरआन की शैली जादुई है और दिल व दिमाग़ को अपनी तरफ़ खींचती है, लेकिन फिर भी वो इस बात पर अड़े रहे कि यह कोई आसमानी या ख़ुदाई कलाम नहीं है। उनके इस दावे को रद करने के लिए क़ुरआन ने उनके बड़े बड़े कवियों और कथाकारों को यह चुनौती दी कि अगर इसके आसमानी कलाम होने में कोई शक है तो इस तरह का कलाम ख़ुद भी बना कर दिखाओ, इस तरह की दस आयतें या केवल एक आयत ही लिख कर दिखा दो (10:38; 11:13; 2:23)। लेकिन इस चुनौती का कोई गम्भीर जवाब अरब के लोग नहीं दे सके।

अपनी इस लाचारी के बावजूद क़ुरआन और अल्लाह के पैग़म्बर की दावत को झुटलाने वाले अरब अपनी खीज इस तरह निकालते थे कि वो तरह तरह के व्यंग करते थे, कहते थे कि यह क़ुरआन रुक रूक कर थोड़ा थोड़ क्यों उतरता है पूरी किताब एक बार में ही क्यों ने उतार दी गयी (25:32-33, और देखें 17:6; 25:5)। वह यह भूल जाते थे कि यह किसी कवि

की कोई काव्य रचना या किसी साहित्यकार की कोई .ति नहीं है जो पूरा का पूरा एक ख़ास अवधि में तैयार हो जाए, बल्कि यह उनकी चलते फिरते और बीतते हुए जीवन के लिए एक हिदायत नामा (मार्गदर्शक निर्देश) है जो जीवन के सभी पहलुओं को अपने अंदर समेटे हुए है और पहलू से मार्गदर्शन करने वाला है। लिहाज़ा, इसका मार्गदर्शन और इसकी सीख इस स्थिति में .ज्यादा प्रभावपूर्ण है जब यह जीवन की विभिन्न स्थितियों में और विभिन्न घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में अवतरित हो, बजाए इसके कि एक वैचारिक सामग्री के रूप में इसे संकलित कर दिया जाए। इसके अतिरिक्त यह कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है जो उसके पैग़म्बर पर अवतरित हुआ (हो रहा है) जो ख़ुद एक इंसान हैं, और हालांकि उन्हें ज़बरदस्त अध्यात्मिक शक्ति प्राप्त है तथापि एक इंसान होने के नाते उनकी इंसानी शक्तियां, उनकी अध्यात्मिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमता से यह परे है कि पूरा कलाम एकबारगी उन पर उतार दिया जाए, कि इसका भार सहन करना उनके लिए सम्भव या सरल नहीं होगा। क़ुरआन क्रमवार समय समय पर अवतरित हुआ तो इसका फ़ायदा यह भी है कि इस तरह यह सुनने और याद रखने के लिए .ज्यादा प्रभावी और सरल तरीक़ा है। क़ुरआन में विभिन्न प्रकार के बयान है, इसमें वार्ताएँ भी हैं, क़िस्से भी हैं, तर्क और तकरार भी है, जिससे क़ुरआन को पढ़ने वालों और सुनने वालों के दिल इसकी तरफ़ खिंचते हैं और इस तरह क़ुरआन अपने लक्ष्य तक पहुंचता है और उसका पैग़ाम दिलों पर दस्तक देता है। एक आम आदमी भी क़ुरआन के पैग़ाम व मंशा को आसानी से समझ सकता है हालांकि इसके विस्तृत व गहन मतलब, इसकी गहराइयां और दर्शन को वो लोग समझ सकते हैं जो इसमें ध्यान और चिंतन करते हैं और चिंतन मनन व बोध की पर्याप्त क्षमताएं रखते हैं। इसका नैतिक संदेश बहुत स्पष्ट और संक्षिप्त है, जैसे "अल्लाह तुम्हें इंसाफ़ और अहसान करने और रिशतेदारों को देने का हुक्म देता है और बेशर्मी की बातों, बुरे कामों और दमन व शोषण से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याद रखो" (16:90)।

क़ुरआनी कलाम के दीर्घकालिक अध्यात्मिक प्रभाव इससे बहुत ऊंचे हैं कि कोई त्वरित साहित्यिक जवाब इसका पेश कर दिया जाए, क़ुरआन अपने पढ़ने और सुनने वालों के दिल व दिमाग़ में उतर जाता है और पढ़ने या सुनने वाला अपने ख़ुदा के पैग़ाम से अवगत हो जाता है जो कि अज़ीम ;महानद्ध है, हकीम (युक्ति पूर्वक काम करने वाला), रहीम (दया करने वाला), ग़फ़ूर (मआफ़ करने वाला) और रऊफ़ (बहुत ही शालीन और महरबान) है। कोई इंसान शुरू में अल्लाह के सामने तन कर खड़ा हो सकता है लेकिन आख़िरकार "उनकी खालें, उनके दिल अल्लाह की याद से नर्म पड़ जाते हैं और लरज़ने लगते हैं ..." (39:23)। लेकिन जैसा कि पहले कहा गया, क़ुरआन के उन तमाम अध्यात्मिक, नैतिक और साहित्यिक प्रभावों को और उसकी चुनौती को जो उसने अरब के शायरों और साहित्यकारों के सामने रखी, उन लोगों ने केवल

इस आधार पर रद कर दिया कि वो लोग ख़ुद धन दौलत और सामाजिक प्रभाव में बड़े थेः ''और कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों (यानि मक्का और ताइफ़) में से किसे के बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतरा (ताकि वहो उसे मानते)। क्या ये लोग तुम्हारे रब की रहमत को वितरित करने वाले हैं। हम ने उनमें उनकी रोज़ी को दुनिया के जीवन में बांट दिया है और एक दूसरे पर दर्जे ऊंचे किए हैं ताकि एक दूसरे से सेवा लें और जो कुछ य जमा करते हैं तुम्हारे रब की रहमत उससे कहीं बहतर है ''(43:31-32)। प्रभावशाली और रसूख़दार लोग केवल अपनी प्रतिष्ठा और अपने हितों की चिंता में लगे रहे और उन्होंने इस बात की कुछ परवाह नहीं की कि वो जिस संदेश को झुटला रहे हैं वह क्या है और उसमें उनके लिए क्या निर्देश हैं।

मदीना में क़ुरआन ने अपने बुनियादी निमय प्रस्तुत किए और अहल-ए-किताब के सम्बंध में अपने .ष्टिकोण और व्यवहारिक रवैये को उजागर किया। उनके साथ समान मर्यादाओं पर ज़ोर दिया गया और इस बात को पेश किया गया कि यह वही पैग़ाम है जो पहले से चला आ रहा है। मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया कि वो इंसाफ़ का बर्ताव करें और ख़ुद को तथा अहल-ए-किताब को यह याद दिलाते रहें कि उन्हें एक ख़ुदा की ही इबादत करना हैः ''... हमने तुम में से हर एक (समुदाय) के लिए एक संहिता और तरीक़ा निर्धारित किया है और अगर अल्लाह चाहता तो सब को एक ही शरीअत पर कर देता मगर जो आदेश उसने तुम्हें दिए हैं उनमें तुम्हारी परीक्षा करना चाहता है इसलिए नेक कामों में जल्दी करो, तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लोट कर जाना है।''(5:48), ''और कह दो कि जो किताब अल्लाह ने उतारी है उस पर ईमान रखता हूं और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं न्याय करूं, अल्लाह ही हमारा और तुम्हारा रब (पालनहार) है, हम को हमारे कर्मों (का बदला मिलेगा) और तुम्हें तुम्हारे कर्मों का, हम में और तुम में कुछ झगड़ा और विवाद नहीं, अल्लाह हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ़ लोट कर जाना है ''(52:15)।

क़ुरआन में अल्लाह तआला का फ़रमान है कि क़ुरआन को अल्लाह ने ख़ुद ही सुरक्षित कर दिया है और समय बीतने और बदलने का कोई प्रभाव इस कलाम की सुरक्षा पर नहीं पड़ेगा। शाताब्दिया बीत जाने के बाद भी क़ुरआन का यह दावा सच्चा साबित हुआ है कि क़ुरआन के शब्द और क़ुरआन के बयान व धारणाएं सब वैसे के वैसी ही हैं:''बेशक यह ज़िक्र हम ने ही उतारा है और हम ही इसके निगराँ हैं ''(15:9)।

क़ुरआन का खुला आग्रह, आम घोषणा, टकराव और उत्पीड़न

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराईये। और जो मोमिनीन आपके पेरवकार हैं आप उनके साथ तवाज़ो से

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّمَّا
تَعْمَلُونَ ۝٢١٦ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝٢١٧
الَّذِي يَرٰىكَ حِينَ تَقُومُ ۝٢١٨ وَتَقَلُّبَكَ فِي
السّٰجِدِينَ ۝٢١٩ إِنَّهُۥ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٢٢٠

पेश आईये। और अगर ये आप की नाफ़रमानी करें तो उनसे कह दीजिये के मेरा तुम्हारे आमाल से कोई ताल्लुक़ नहीं है। और आप अल्लाह पर जो क़ुदरत वाला, रहम वाला है भरोसा रखिये। जो तुम को देखता है जब तुम तहज्जुद के वक़्त उठते उठते हो। और नमाज़ियों में तुम्हारे फ़िरने को भी देखता है। बेशक वो .ख़ूब सुनने वाला, .ख़ूब जानने वाला है। (26:214-220)

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ أَعْرِضْ عَنِ
الْمُشْرِكِينَ ۝٩٤ إِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِينَ ۝٩٥
الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ۝٩٦ وَ لَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ
صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝٩٧ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
وَ كُنْ مِّنَ السّٰجِدِينَ ۝٩٨ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى
يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝٩٩

पस वो बात ज़रूर सुना दो जिसका हुक्म अल्लाह की तरफ़ से आपको मिला है, और मुशरिकीन की परवा ना करो। बिलाशुबह हम ही तुम्हारे लिये काफ़ी हैं उन इसतेहज़ा करने वालों को। जो अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बनाते हैं तो जल्द ही उनको मालूम हो जाएगा। और हम जानते हैं के उनकी बातों से आपका दिल तंग होता है। तो आप अपने रब की पाकी और .ख़ूबियां बयान करते रहें, और सज्दा करने वालों में से हो जायें। और अपने रब की बन्दगी करते रहो, यहां तक के तुम को मौत आ जाये। (15:94-99)

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ
وَ الْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُۥ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ
حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ مَا مِنْ حِسَابِكَ
عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ
الظّٰلِمِينَ ۝٥٢ وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لِّيَقُولُوٓا أَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ
أَلَيْسَ اللّٰهُ بِأَعْلَمَ بِالشّٰكِرِينَ ۝٥٣

और उनको ना निकालिये जो सुबह व शाम अपने रब को ही पुकारते रहते हैं (उसी का ज़िक्र करते हैं और उसी की रज़ा के तालिब रहते हैं, उनके हिसाब से आपका कोई ताल्लुक़ नहीं है, और ना आपके हिसाब से उनका कोई ताल्लुक़ है के आप उनको निकाल दें, वरना आप ज़ुल्म करने वालों में से हो जायेंगे। और उसी तौर पर हमने बाज़ लोगों को दूसरों के ज़रिये से आज़माईश में डाल दिया है ताकि ये कहा करें के क्या हम सबमें से यही लोग हैं जिस पर अल्लाह न इतना बड़ा एहसान किया है, क्या ये बात नहीं है के अल्लाह अपने क़द्रदानों को .ख़ूब जानता है। (6:52-53)

وَ اصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدٰوةِ وَ الْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَ لَا
تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَ لَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ
ذِكْرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ كَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾
وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۫ فَمَنْ شَآءَ
فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ
اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ
سُرَادِقُهَا ؕ وَ اِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ
وَ سَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ
اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾

और आप अपने आपको उन लोगों के साथ रोके रखा करें जो सुबह व शाम अपने रब की इबादत महज़ उसकी रज़ा जुई के लिये करते हैं और दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक़ के .ख्याल में आपकी नज़र उनसे हटने ना पाये, और जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल बना दिया है, उसका कहना ना माना कीजिये और वो अपनी नफ़्सानी .ख्वाहिश पर चलता है और उसका हाल हद से आगे बढ़ गया है। और आप कह दीजिये के हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे काफ़िर रहे, बेशक हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार रखी है के जिसकी क़नातें उसको घेरे हुए होंगी, और अगर फ़रयाद करेंगे तो उसकी दादरसी उसी खौलते हुए पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की मानिंद होगा जो चेहरों को भून डालेगा, क्या ही बुरा पानी होगा और बुरी आरामगाह होगी। बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये तो हम नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाय नहीं करते। (18:28-30)

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا
وَ هُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ
لَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۳﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ
يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ
اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۵﴾

क्या लोग ये .ख्याल करते हैं के वो सिर्फ़ इतना कहने के बाद के हम ईमान ले आए, वो यूंही छोड़ दिये जायेंगे और उनकी कोई आज़माईश नहीं होगी। और हमने उनको भी आज़माया था जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, और इसको भी आज़मायेंगे, और .खुदा उनको ज़रूर मालूम करेगा जो अपने ईमान में सच्चे हैं और उनको भी जो झूटे हैं। क्या वो लोग जो बुरे काम करते हैं ये समझते हैं वो हमारे क़ाबू से निकल जायेंगे, उनका ये फ़ैसला बहुत ही बुरा है। जो अल्लाह से मुलाक़ात की तवक्क़ो रखता है, क्योंके अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त ज़रूर आने वाला है, वो सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है। (29:2-5)

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤی ۙ﴿۱﴾ اَنۡ جَآءَہُ الۡاَعۡمٰی ؕ﴿۲﴾ وَ
مَا یُدۡرِیۡکَ لَعَلَّہٗ یَزَّکّٰۤی ۙ﴿۳﴾ اَوۡ یَذَّکَّرُ
فَتَنۡفَعَہُ الذِّکۡرٰی ؕ﴿۴﴾ اَمَّا مَنِ اسۡتَغۡنٰی ۙ﴿۵﴾
فَاَنۡتَ لَہٗ تَصَدّٰی ؕ﴿۶﴾ وَ مَا عَلَیۡکَ اَلَّا یَزَّکّٰی ؕ﴿۷﴾
وَ اَمَّا مَنۡ جَآءَکَ یَسۡعٰی ۙ﴿۸﴾ وَ ہُوَ یَخۡشٰی ۙ﴿۹﴾
فَاَنۡتَ عَنۡہُ تَلَہّٰی ﴿ۚ۱۰﴾ کَلَّاۤ اِنَّہَا تَذۡکِرَۃٌ ﴿ۚ۱۱﴾

(मोहम्मद मुस्तफ़ा) तुर्शरू हुए और मुंह फ़ेर लिया। ये के उनके पास एक नाबीना आया। और तुमको क्या .ख़बर शायद वो पाकीज़गी हासिल करता। या नसीहत क़ुबूल करता तो ये नसीहत उसको मुफ़ीद होती। तो जो श.ख़्स (दीन से) बेपरवाई करता है। तो तुम उसकी फ़िक्र में तो पड़ जाते हो। हालांके तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं के वो ना दुरूस्त हो। और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया। और वो (अल्लाह से) डरता है। तो आप उससे बेरूखी करते हैं। हरगिज़ ऐसा ना कीजिये, क़ुरआन तो महज़ एक नसीहत है। (80:1-11)

اِنَّ الَّذِیۡنَ فَتَنُوا الۡمُؤۡمِنِیۡنَ وَ الۡمُؤۡمِنٰتِ
ثُمَّ لَمۡ یَتُوۡبُوۡا فَلَہُمۡ عَذَابُ جَہَنَّمَ وَ لَہُمۡ
عَذَابُ الۡحَرِیۡقِ ﴿ؕ۱۰﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَہُمۡ جَنّٰتٌ تَجۡرِیۡ مِنۡ تَحۡتِہَا
الۡاَنۡہٰرُ ۬ؕ ذٰلِکَ الۡفَوۡزُ الۡکَبِیۡرُ ﴿ؕ۱۱﴾ اِنَّ بَطۡشَ
رَبِّکَ لَشَدِیۡدٌ ﴿ؕ۱۲﴾ اِنَّہٗ ہُوَ یُبۡدِئُ وَ یُعِیۡدُ ﴿ۚ۱۳﴾
وَ ہُوَ الۡغَفُوۡرُ الۡوَدُوۡدُ ﴿ۙ۱۴﴾ ذُو الۡعَرۡشِ
الۡمَجِیۡدُ ﴿ۙ۱۵﴾ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیۡدُ ﴿ؕ۱۶﴾

बिला शुबह जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को तकलीफ़ पहुंचाई, और तौबा ना की तो उनके लिये दोज़ख का अज़ाब है और उनके लिये जलने वाला अज़ाब है। बिला शुबह जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उनके लिये बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, ये बड़ी कामयाबी है। बेशक तुम्हारे रब की गिरफ्त बड़ी स.ख़्त है। वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा ज़िन्दा करेगा। और वही बड़ा ब.ख़्शने वाला और मोहब्बत करने वाला है। अर्श का मालिक बड़ी शान वाला। जो चाहता है कर देता है। (85:10-16)

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ
الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ
بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ
الۡبَصِیۡرُ ﴿۱﴾

वो पाक ज़ात है जो रात के एक हिस्से में अपने बन्दे को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया जिसके चारों तरफ़ हमने अपनी बरकतें रखी हैं, ताके हम उसको अपनी क़ुदरत की निशानियां दिखायें, बेशक वही .ख़ूब सुनने वाला और देखने वाला है। (17:1)

وَ لَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ
الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾ اِذْ
يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَ
مَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ
الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

और उन्होंने उसको एक बार और भी देखा है। परली हद की बेरी के पास। उसी के पास रहने की बहिश्त है। जब के उस बेरी पर छा रहा था जो छा रहा था। उनकी आँख ना तो उसकी तरफ़ मायल हुई और ना हद से आगे बढ़ी। उन्होंने अपने रब की क़ुदरत की बड़ी बड़ी निशानियां देखीं। (53:13-18)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने संदेश की शुरूआत अपने कुछ नज़दीकी मित्रों और रिश्तेदारों से की जो आप पर बहुत.ज्यादा विश्वास करते थे। उन्होंने जब मुहम्मद सल्ल. के पैग़ाम की सच्चाई को स्वीकार कर लिया और आप पर ईमान ले आए तो फिर उन लोगों ने अपने मिलने जुलने वाले लोगों को उसकी तरफ़ बुलाया और उनमें से जो लोग इस संदेश को अपनाने पर राज़ी हुए उन्हें वो अल्लाह के पैग़म्बर के पास लेकर आए। इस तरह एक एक करके इस्लाम के प्रचार को किसी भी तरह से इस्लाम की दावत का गोपनीय चरण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उस समय मक्का का जो समाज था उस जैसे किसी समाज में व्यक्तियों को किसी नई बात की तरफ़ बुलाने की बात छुपी नहीं रह सकती थी, और मक्का में उतरने वाली शुरूआती आयतों में पैग़म्बर सल्ल. के क़बीला क़ुरैश के रसूख़दार लोगों के विरोध और प्रतिरोध का ज़िक्र है।

कुछ समय बाद जिसके दौरान उमर बिन ख़त्ताब और हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब जैसे प्रभावशाली व्यक्ति भी इस्लाम में आ गए तमाम लोगों को इस्लाम की खुली दावत देने का चरण शुरू हो गया और क़ुरआन में कहा गया कि अपने रिश्तेदारों को दीन की तरफ़ बुलाएं और उसे न मानने के नतीजे में बुरे अंजाम से डराएं। विभिन्न ऐतिहासिक परम्पराओं से यह बात स्पष्ट है कि क़ुरैश को इस्लाम की खुली दावत की शुरूआत वह्यि उतरने का सिलसिला शुरू होने के तीन साल बाद हुई, लेकिन यह साफ़ नहीं है कि क़रीबी रिश्तेदारों को ईमान की दावत देने की प्रक्रिया इससे पहले शुरू हो चुकी थी या नहीं और इस अवधि को दावत का एक अलग चरण कहा जा सकता है या नहीं, या यह कि इसे आम घोषणा का ही एक हिस्सा समझा जा सकता है या नहीं।

इस्लाम का पैग़ाम खुले आम देने का काम जैसे ही शुरू हुआ, अल्लाह के रसूल सल्ल. और आप पर ईमान लाने वालों के ख़िलाफ़ शरीरिक और नैतिक हमलों का सिलसिला शुरू हो गया। और इस विरोधपूर्ण माहौल में उतरने वाली आयतों में पैग़म्बर को धीरज और संयम रखने की सीख दी गयी। इन आयतों में पिछले पैग़म्बरों और उनके विरोध तथा उन पर हमलों की

मिसाल दी गयी और दिमाग़ में यह डाला गया कि पहले पैग़म्बरों को भी ये सब उत्पीड़न झेलना पड़ा है। जो लोग ईमान ला रहे थे उनसे आख़िरत में बहुत .ज्यादा अच्छा बदला मिलने का वायदा किया गया और जो लोग अहंकार के साथ इस दावत को झुटला रहे थे और ईमान लाने वालों पर ज़ुल्म व सितम कर रहे थे उन्हें कड़ी यातना (अज़ाब) की ख़बर दी गयी जो आख़िरत में उन्हें मिलेगा। आख़िरत के जीवन में इनाम या सज़ा का ज़िक्र मुसीबत और ईमान की परख के इन हालात में बार बार ज़ोर देकर किया गया। इस बात को ऐतिहासिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देखने की ज़रूरत है ना कि केवल एक आस्था के रूप में।

दमन और उत्पीड़न जब हद से .ज्यादा होने लगा और कुछ ईमान वालों के लिए असहनीय हो गया तो अल्लाह के रसूल सल्ल. ने अपने पैग़म्बर बनने के पांचवे साल में उन लोगों को अन्याय और उत्पीड़न की इस धरती से निकल जाने की सलाह दी और ''हब्शा'' (जिसे अब ऐथूपिया कहा जाता है) चले जाने का सुझाव दिया जहां का राजा अपने न्याय के लिए मशहूर था। पलायन की यह सलाह दे कर अल्लाह के पैग़म्बर ने अपने व्यापक .ष्टिकोण और वैश्विक नज़रिए का सुबूत दिया जिसके तहत अल्लाह पर ईमान लाने के मामले में भौगोलिक, नस्लीय या धार्मिक सीमाओँ का कोई महत्व नहीं है। क़ुरैश का दमन व उत्पीड़न आम तौर से उन लोगों पर था जो सामाजिक रूप से कमज़ोर थे और उनके पीछे क़बीले व रिश्तेदारों की शक्ति नहीं थी। मिसाल के तौर पर ख़ुद मुहम्मद सल्ल. के साथ बर्ताव करने के मामले में उन लोगों ने आपके चाचा अबु तालिब का लिहाज़ रखा जो हालांकि अपनी क़ौम और पूर्वजों की आस्था पर ही थे लेकिन अपने भतीजे मुहम्मद सल्ल. की संरक्षा और सहायता से कभी हाथ नहीं उठाया था। लेकिन इस पास व लिहाज़ के बावजूद भी मुहम्मद सल्ल. और उन पर ईमान लाने वाले लोगों को ये विरोधी नुक़सान पहुंचाने से नहीं रुके। आप और आपके परिवार का आर्थिक व सामाजिक बहिष्कार किया गया और उन लोगों के साथ लेनदेन करने और इनमें विवाह करने पर पूरी तरह पाबन्दी लगा दी गयी। यह बहिष्कार एक साल से अधिक समय तक जारी रहा और तब समाप्त हुआ जब क़ुरैश के कुछ प्रतिष्ठित और शालीन लोगों ने इसे समाप्त करने के लिए हस्तक्षेप किया।

दमन और उत्पीड़न के इस दौर में अल्लाह के पैग़म्बर को सबसे .ज्यादा कठिन और कष्टदायक स्थिति का सामना पैग़म्बरी के दसवें साल में करना पड़ा जब आप की दो बहुत ही घनिष्ट समर्थक और मददगार हस्तियां दुनिया से चली गयीं। एक आप पर सबसे पहले ईमान लाने वाली आपकी पत्नि हज़रत खदीजा (अल्लाह उन से राज़ी हो) और दूसरे आपके संरक्षक चाचा अबु तालिब। इसके तुरन्त बाद अल्लाह की तरफ़ से आपकी सहायता इस तरह हुई कि अल्लाह ने आपको रातों रात मक्का से यरूशलम तक अध्यात्मिक यात्रा कराई और यरूशलम से आसमानों की तरफ़ उठाया जिसको ''असरा'' या ''मेअराज'' कहते हैः''ताकि उन्हें अपनी

(क़ुरदत की) निशानियां दिखाए, बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है'' (17:1), ''ताकि उन्हें अपनी (क़ुदरत की) निशानियां दिखाएं, बेशक वह सुनने (और) देखने वाला है '' (53'18)।

अबु तालिब की मृत्यू के बाद क़ुरैश के कुछ कट्टर इस्लाम विरोधियों नें यह समझा कि अब मुहम्मद सल्ल. से छुटकारा पाने का सही समय आ गया है, क्योंकि अब वह अपने चाचा के संरक्षण से वंचित हो चुके थे। पैग़म्बर सल्ल. को जब दुशमनों के इस इरादे का पता चला कि वह अब उनकी हत्या करने पर उतारू हैं तो आप ने मक्का से निकल जाने का इरादा किया। मक्का में निवास के आख़री साल 'यसरिब' (मदीना) से कुछ लोगों के आने और पैग़म्बर साहब से उनकी मुलाक़ात के बाद मदीना में इस्लाम का संदेश तेज़ी से लोकप्रिय होने लगा था जिसको देखते हुए पैग़म्बर साहब ने मदीना पलायन करने (हिजरत) का फ़ैसला किया और इस तरह अरब में इस्लाम के फैलाव और इस्लामी राज्य की स्थापना का केन्द्र यसरिब (मदीना) बन गया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० का मक्का से मदीना पलायन

وَ قُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِیْرًا ۝۸۰

और आप इस तरह कहा कीजिये के ऐ मेरे रब! मुझ को तू .ख़ूबी के साथ पहुंचाईयो, और मुझको .ख़ूबी के साथ ले जाईयो! और मुझको अपने पास से ऐसा ग़ल्बा दीजिये! जिसके साथ नुसरत हो। (17:80)

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ ظَالِمِیْۤ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِیْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِیْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ قَالُوْۤا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِیْهَا ؕ فَاُولٰٓىِٕكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِیْرًا ۝۹۷ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِیْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ حِیْلَةً وَّ لَا یَهْتَدُوْنَ سَبِیْلًا ۝۹۸ فَاُولٰٓىِٕكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ یَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا

बिलाशुबह जब फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ करते हैं जो अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे, तो फ़रिश्ते उनसे दरयाफ़्त करते हैं के तुम किस काम में थे तो वो कहते हैं के हम सरज़मीन में महज़ मग़लूब और कमज़ोर थे, तो फ़रिश्ते कहते हैं के क्या अल्लाह की सरज़मीन वसीअ ना थी तुम को तर्क वतन करके उसमें चले जाना था, तो उन लोगों का ठिकाना दोज़ख है, और वो जाने के लिए बुरी जगह है। मगर जो कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे इस क़ाबिल नहीं के वो अपनी कोई तदबीर कर सकें और ना रस्ते से वाक़िफ़ हैं। सो उनके लिये उम्मीद है के अल्लाह माफ़ कर दे, और अल्लाह तो है ही बड़ा माफ़ करने वाला और बड़ा बख़्शने वाला। और जो अल्लाह

के रास्ते में हिजरत करेगा तो वो रूए ज़मीन पर जाने के लिए बहुत जगह और बहुत गुंजाइश पायेगा, और जो अपने घर से इस नीयत से चलेगा के वो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिज्रत करेगा फिर उसको मौत आ जाये तब भी उसका सवाब साबित हो गया, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।
(4:97-100)

غَفُوْرًا ﴿۹۹﴾ وَ مَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَ
مَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ
اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۰﴾

और जब काफ़ीन आपके बारे में बुरी बुरी बातें सोच रहे थे के आया आपको क़ैद कर लें या क़त्ल कर दें या ख़ारिज वतन कर दें, वो तो अपनी तदबीरें कर रहे थे, और अल्लाह अपनी तदबीर कर रहा था, और अल्लाह सबसे मज़बूत तदबीर करने वाला है। (8:30)

وَ اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ
اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ
يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾

बेशक जो लोग ईमान लाये, और अपने घरों को छोड़ा, और अल्लाह की राह में मालो जान से लड़े, और जिन लोगों ने रहने को जगह दी, और मदद की, ये लोग आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, और जो ईमान तो ले आये, लेकिन हिजरत नहीं की तो जब तक वो हिजरत ना करें तो तुम्हारा उनसे विरासत का कोई ताल्लुक़ नहीं और अगर वो दीन में तुमसे मदद चाहें तो ज़रूर मदद करो, मगर इस क़ौम के मुक़ाबले में नहीं के तुम में और उनके दरमियान कोई सुलह का मुआहदा हो, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों को देखता है। काफ़िरीन बाहम एक दूसरे के वारिस हैं, अगर तुम इस पर अमल ना करोगे तो दुनिया में बड़ा फ़ितना और फ़साद फ़ैलेगा। और जो लोग मुसलमान हुए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद करते रहे, और जिन्होंने (मुहाजरीन को) जगह दी, और मदद भी की, ये लोग ईमान का पूरा हक़ अदा करने वाले हैं, उनके लिये बड़ी मग़फ़िरत है,

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ
الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ
اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ يُهَاجِرُوْا
مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى
يُهَاجِرُوْا ۚ وَ اِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ
فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَ
بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ﴿۷۲﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ وَ
فَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿۷۳﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا
وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّ

نَصَرُوٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ
بَعْدُ وَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
مِنْكُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

और बड़ी इज़्ज़त की रोज़ी है। और जो लोग बाद के ज़माना में ईमान लाये, और हिज्रत की, और तुम्हारे साथ जिहाद किया, तो फ़िर वो तुम में से ही शुमार होंगे, और जो आपस में रिश्तेदार हैं तो किताब अल्लाह में एक दूसरे की (मीरास में).ज्यादा हक़दार हैं, बिला शुबह अल्लाह हर शै का पूरा पूरा इल्म रखता है। (8:72-75)

اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ
اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ
فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَ اَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ
لَّمْ تَرَوْهَا وَ جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
السُّفْلٰى ؕ وَ كَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَ اللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾

अगर तुम रसूल की मदद नहीं करोगे तो अल्लाह उनकी उस वक़्त मदद कर चुका है जब काफ़िरों ने उनको घर से निकाल दिया था जबके दो आदमियों में दूसर आप (स.अ.स.) थे जब वो दोनों ग़ार में थे, जब आप अपने रफ़ीक़ से फ़रमा रहे थे के ग़म ना करो, अल्लाह हमारे साथ है, तो अल्लाह ने उनको चैने बख़्शा, और आपकी ऐसे लश्करों से मदद की जिनको तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने काफ़िरों की बात का पस्त कर दिया और अल्लाह का बोल बाला रहा और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतों वाला है। (9:40)

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ
الْاَنْصَارِ وَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ
رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ
لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

जिन लोगों ने सब्क़त की (यानी सबसे) पहले (ईमान लाए) मुहाजिरीन में से भी और अंसार में से भी और जिन्हों नेकोकारी के साथ उनकी पैरवी की अल्लाह उनसे ख़ुश रहे और वो अल्लाह से ख़ुश हैं और उसने उनके लिए बाग़ात तैयार किए हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें वो हमेशा रहेंगे, ये बड़ी (ज़बरदस्त) कामयाबी है। (9:100)

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ

और ग़रीब वतन छोड़ने वालों का हक़ है जो अपने घरों और मालों से जुदा कर दिये गए हैं, वो अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रज़ा के तालिब हैं, और ख़ुदा और उसके

اللهِ وَ رِضْوَانًا وَّ يَنْصُرُوْنَ اللهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ۝ وَ الَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَ الْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَ لَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ۟ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ۝

रसूल मददगार हैं, और यही लोग बच्चे ईमानदार हैं। और उन लोगों के लिये भी जो मुजाज्रीन से पहले मदीना में मुक़ीम और ईमान मे मुस्तक़िल रहे, और जो लोग हिज्रत करके उनके पास आते हैं उनसे मोहब्बत करते हैं और जो कुछ उनको मिला उससे अपने दिल में कुछ .ख़्वाहिश और .ख़लिश नहीं पाते और उनको अपनी जानों से मुक़द्दम रखते हैं .ख़्वाह उनको फ़ाक़ा हो और जो श.ख़्स हिर्से न.फ़्स से बचा लिया गया हो तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं। (59:8-9)

मक्का में 13 साल तक दीन की दावत देते रहने के बाद और विरोधियों के विरोध तथा उत्पीड़न व दमन को सहन करते रहने के बाद पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना जन्म स्थान मक्का छोड़ कर यसरिब (मदीना) जाना पड़ा ताकि उन लोगों से मुक्ति मिले जो लगातार ज़ुल्म व सितम कर रहे थे और हत्या कर देने पर उतारू थे। किसी क़बायली समाज में पलायन एक बहुत ही गम्भीर और ख़तरनाक मामला होता था क्योंकि व्यक्ति की सुरक्षा और उसके अस्तित्व का महत्व उसके क़बीले में ही होता था। किसी क़बीले का कोई व्यक्ति अस्थाई रूप से तो किसी दूसरे क्षेत्र में जा सकता था लेकिन वहां स्थाई रूप से निवास नहीं कर सकता था। क़बायली जीवन में किसी दूसरे क़बीले में जा कर स्थायी रूप से रहने लगना न तो उस क़बीले को मंज़ूर होता था जिससे वह व्यक्ति जुड़ा होता है और न वह क़बीला उसे स्वीकार करता था जहां जा कर वह रहना चाहता था। जब एक आम आदमी के साथ यह मामला था तो फिर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जैसी हस्ती के लिए यह कैसे सम्भव होता जिनको उनके अपने क़बीले में एक ख़तरनाक दुशमन समझ लिया गया था और जहां उनको मार देने की योजना बना ली गयी थी। यह अल्लाह की .पा थी कि अल्लाह के पैग़म्बर की यसरिब के कुछ लोगों से मुलाक़ात हुई और यसरिब पलायन कर जाने के मुद्दे पर उनसे बात तय हुई। मदीना मक्का के उत्तर में हिजाज़ से सीरिया जाने वाले मार्ग के क़रीब स्थित एक बस्ती थी। यसरिब से मक्का आने वाले ये लोग वहां के खज़रज क़बीले के लोग थे जो मक्का इस मक़सद से आए थे कि उन्हें यसरिब के एक प्रतिद्वंदी क़बीले औस से मुक़ाबले के लिए समर्थकों और मित्रों की तलाश थी। औस के लोग इन ख़ज़रजियों को चार पांच साल पहले एक क़बायली लड़ाई में पराजित कर चुके थे और अब ये लोग उसका बदला लेने की तैयारी कर रहे थे। मुहम्मद सल्ल. की दावत अरब के ऐसे लोगों तक भी पहुंचने लगी थी जिनका क़बायली या

भौगोलिक दृष्टि से क़ुरैश के लोगों से कोई सम्पर्क या सम्बंध नहीं था।

हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हिजरत (पलायन) इस्लाम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बनी, क्योंकि इसके नतीजे में क़बायली सम्बंधों से उपर उठ कर इंसानी सम्बंधों का एक नया दायरा शुरू हुआ। मक्का से हिजरत करके मदीना आने वाले और मदीना में इन परदेसियों की मदद करने वाले लोगों ने मिल कर एक नई तरह के समाज का आधार रखा जिसमें सम्बंधों का आधार केवल अक़ीदे का रिश्ता (आस्था का सम्बंध) था, और जो एक ऐसे सरदार के अन्तर्गत संगठित हुआ जो मक्का से पलायन करके इस नए नगर में इस नए समाज के सरदार बने थे। मदीना एक बिल्कुल अलग तरह का समाज और नागरिक राज्य बन गया। अरब के दूसरे क़बीलों के व्यक्ति भी इस नए समाज में आकर इसका अंग बनने लगे जिससे इस नए समाज और नए नागरिक राज्य को भी मज़बूती मिली और उन लोगों को भी जो इस नए समाज और राज्य की संरक्षा में आए (8:72)। इस तरह जो लोग इस्लाम के इस भाईचारे वाली व्यवस्था में एक दूसरे के साथ जुड़े उन्होंने एक 'आइडियालोजिकल स्टेट' (विचारधार पर आधारित राज्यद्ध स्थापित किया जो एक क़बायली समाज में भी और तत्कालीन दुनिया में भी बिल्कुल एक नई चीज़ थी।

मदीना आने के बाद पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने जिस संविधान की घोषणा की उसमें इस शहर की आबादी को उसकी क़बायली, क्षेत्रीय, भाषाई और धार्मिक अन्तर के साथ समान उद्देश्यों और हितों वाली और आपसी अधिकारों व ज़िम्मेदारियों पर आधारित एक ही इकाई के रूप में स्वीकार किया गया। मक्का से हिजरत करके आने वाले लोगों ने जो अलग अलग वंशों, क़बीलों और देश की पहचान से जुड़े थे; मदीना में इन मुहाजिरों का स्वागत और सहयोग करने वाले अलग अलग क़बीलों के लोगों ने; मदीना में रहने वाले यहूदियों ने और उन तमाम लोगों ने जो बाद में यहां आकर इस इस्लामी समाज का हिस्सा बने, एक राजनीतिक नैतृत्व के अन्तर्गत एक राजनीतिक व्यवस्था का नमूना पेश किया। इस समाज और वैचारिक राज्य ने अरब के विभिन्न क़बीलों और इलाक़ों के लोगों को तथा बिलाल हबशी और सलमान फ़ारसी जैसे अरब से बाहर के मुसलमानों को भी गले से लगाया और अपने अन्दर समाहित किया।

यह गम्भीर और महत्वपूर्ण प्रगति दो लोगों की हिजरत (पलायन) से शुरू हुई, एक ख़ुद अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल. और दूसरे उनके घनिष्ट साथी हज़रत अबु बक्र रज़ि.। इन दोनों ने मक्का से मदीना जाने के लिए एक अलग और अनजान रास्ता अपनाया, और रास्ते में एक गुफ़ा में शरण ली। उनका पीछा करने वाले दुशमन उनकी खोज में उस गुफ़ा तक आ पहुंचे थे, और इस ख़तरनाक स्थिति में अल्लाह के पैग़म्बर ने अपने साथी हज़रत अबुबक्र को तसल्ली दीः ''ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है, तो अल्लाह ने उन पर निश्चिंता की भावना उतार दी और उनको ऐसे लशकरों से सहायता दी जो तुम्हें दिखाई न देते थे और काफ़िरों को

पस्त कर दिया और बात तो अल्लाह की ही ऊंची है और अल्लाह ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है'' (9:40)।

यह हिजरत इस बात की एक मिसाल बनी कि जिन लोगों के लिए अपने दीन या और किसी कारण से अपने स्थान पर इंसानी सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ जीना दूभर हो जाए वो इस विशाल धरती के किसी दूसरे भाग में पलायन कर जाएं और धरती पर उन्हें बहुत से शरण देने वाले और मदद करने वाले मिलेंगे। और जो इंसान अत्याचार, दमन और अपमान के साथ जीने पर राज़ी हो जाएं हालांकि वो वहां से निकलने की क्षमता रखते हों वो इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी अपने लिए जहन्नम (नरक) को चुन लेते हैं ''और यह जहन्नम क्या ही बुरा ठिकाना है'' (4:97-100)।

इस तरह मदीना ने इस्लाम के इतिहास में भी और पूरी दुनिया के इतिहास में भी एक नया मंच स्थापित किया, जिसमें अक़ीदे और ईमान (आस्था और धर्म) ने तमाम भौगोलिक, जातीय और क़बायली रुकावटों को तोड़ कर एक मुस्लिम व्यक्तित्व स्थापित किया जिसमें दूसरे धर्मों के लोगों के लिए भी जगह थी, और इस तरह विचार और व्यवहार के स्तर पर वैश्विकता बनी और विक्सित हुई:''और जो लोग बाद में ईमान लाए और वतन से हिजरत कर गए और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद करते रहे वो भी तुम्ही में से हैं ..'' (8:75)।

लड़ाईयों का दौर

बेशक अल्लाह मोमिनों को उनके दुश्मनी से बचाता है, बेशक अल्लाह किसी ख़्यानत करने वाले नाशुक्रे को पसंद नहीं करता। लड़ने की इजाज़त दी गई उन लोगों को जिन से लड़ाई की जाती है, इसलिये के उन पर ज़ुल्म हुआ है, और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर क़ादिर है। जो नाहक़ अपने घरों से निकाल दिये गए हैं, उन्होंने कोई क़सूर नहीं किया, सिवाय इसके के ये कहते हैं के हमारा रब अल्लाह है, अगर अल्लाह उनको एक दूसरे से ना बचाता तो राहिबों के सौमए, ईसाइयों के गिर्जे और यहूदियों के इबादतख़ाने और मुसलमानों की मस्जिदें, जिनमें अल्लाह का नाम कसरत से लिया जाता है गिराई जा चुकी होतीं, और जो अल्लाह की मदद करता है, अल्लाह उसकी ज़रूर मदद करता है, बिला शुबह

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾ أُذِنَ
لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾ الَّذِينَ
أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن
يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ
النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ
يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ
وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ

لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٤٠ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي
الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ
عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٤١

अल्लाह बड़ी क़ुव्वत वाला और बड़ा ग़ल्बा रखने वाला है। ये वो लोग हैं के अगर हम उनको हुकूमत दें मुल्क में तो वो नमाज़ क़ायम करें और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का अंजाम अल्लाह ही के इख़्तियार में है। (22:38-41)

وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ
وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِيْنَ ۝١٩٠ وَ اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ
وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَ
الْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَ لَا تُقٰتِلُوْهُمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ
فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ
الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩١ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١٩٢ وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ
وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا
عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩٣

और तुम अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो जो तुम से लड़ते हैं, मगर ज़्यादती ना करना, बिलाशुबह अल्लाह ज़्यादती करने वालों को महबूब नहीं रखता। और उनको क़त्ल कर दो जहाँ भी तुम उनको पाओ, और जहाँ से उन्होंने तुम को निकाला था तुम भी उनको निकाल दो, और दीन से गुमराह करने का फ़साद कहीं शदीद है क़त्ल से, और जब तक वो तुम से ख़ाना काबा के आस पास न लड़ें तुम भी वहाँ उनसे ना लड़ना, हाँ अगर वो तुम से वहाँ लड़ें तो तुम भी उनको क़त्ल कर डालो, काफ़िरों की यही सज़ा है। और अगर वो बाज़ आ जायें, तो अल्लाह तो है ही बड़ा बख़्शने वाला, और बड़ा रहम वाला। और उनसे उस वक़्त तक लड़ते रहना के फ़ितना ना रहे और अल्लाह की का दीन क़ायम हो जाए, अगर वो बाज़ आ जायें तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती ना करना। (2:190-193)

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَ هُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَ
عَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ
عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٢١٦

अल्लाह के रास्ते में लड़ना तुम पर फ़र्ज़ कर दिया गया है, वो तुम को गिराँ तो गुज़रेगा, मगर अजब नहीं के एक चीज़ तुम को बुरी लगे, और वो तुम्हारे हक़ में अच्छी हो, और ये भी अजब नहीं के एक चीज़ को तुम मेहबूब रखते हो मगर वो मुज़िर हो, और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (2:216)

फिर तुम्हारे दिल उन वाक़ेयात के बाद भी सख़्त ही रहे। गोया के तुम्हारे दिल पत्थर के मानिंद हैं, बल्के पत्थर से भी .ज्यादा सख़्त हैं। और बाज़ पत्थर तो ऐसे नर्म होते हैं के उनसे फूट फूटकर बड़ी बड़ी नहरें जारी होते हैं। और उन ही पत्थरों में बाज़ ऐसे हैं जो शक़ हो जाते हैं, फिर उनमें से पानी निकलने लगता है। और उन ही पत्थरों में बाज़ ऐसे भी है। जो अल्लाह के .ख़ौफ़ से ऊपर से नीचे गिरने लगते हैं। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेख़बर नहीं है। क्या अब भी तुम तवक़्क़ो करते हो के ये यहूदी तुम्हारे कहने से ईमान ले आयेंगे। और उनमें एक गिरोह अल्लाह का कलाम सुनता था फिर वो उनका मतलब बदल डालते थे, ये वो सही तौर पर समझने के बाद करते थे, और .ख़ूब जानते थे। और जब ये मुनाफ़िक़ यहूदी मुसलमानों से मिलते हैं तो कहते हैं के हम ईमान ले आए हैं। और जब तनहाई में वो एक दूसरे के पास जाते हैं तो कहते हैं क्या तुम उनको वो बातें बता देते हो जो अल्लाह ने तुम पर ज़ाहिर कर दी हैं तो वो हुज्जत में तुमको मग़लूब कर देंगे तुम्हारे रब के पास, क्या तुम इतनी बात अपनी अक़्ल से नहीं जानते। (2:74-76)

فَلْيُقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ
الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَ مَنْ يُّقَاتِلْ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾ وَ مَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ
مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ
الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَ اجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
وَلِيًّا ۚۙ وَّ اجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ؕ
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ
الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾ع

बद्र की लड़ाई

जैसा के आपके रब ने आपको आप के घर से बड़ी हिकमत के साथ रवाना किया, और मोमिनीन की एक जमात उसको नापसंद करती थी। वो उस हिकमत के बारे में जब वो सबको मालूम हो गई इस अंदाज़ से बहस कर रहे थे गोया के कोई उनको मौत की तरफ़ ले जा रहा है, और वो उसको देख रहे हैं। और तुम लोग उस वक़्त को याद करो जब अल्लाह वादा करता था के तुम को दो जमातों में से एक जमात हाथ आ जायेगी और तुम चाहते थे के ग़ैर मुसल्लह क़ाफ़ला तुमको मिल जाए,

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۙ
وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ﴿٥﴾ۙ
يُجَادِلُوْنَكَ فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا
يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَ هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٦﴾ؕ وَ
اِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ
اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ

يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ
الْكٰفِرِيْنَ ۝۷ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَ يُبْطِلَ
الْبَاطِلَ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۸ اِذْ
تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ
مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ
مُرْدِفِيْنَ ۝۹ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَ
لِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا
مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝۱۰
اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ
يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ
بِهٖ وَ يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَ
لِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ يُثَبِّتَ بِهِ
الْاَقْدَامَ ۝۱۱ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ
اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِيْ
فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا
فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَ اضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ
بَنَانٍ ۝۱۲ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ ۚ وَ مَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۱۳

और अल्लाह ये चाहता था के अपने अहकाम से हक़ का हक़ होना साबित कर दें और उन काफ़ीन की बुनियाद और क़ुव्वत को क़ते कर दे। ताके हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना साबित कर दे गोया ये मुज्रीमीन नापसंद ही करें। उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे, फ़िर अल्लाह ने तुम्हारी फ़रयाद सुन ली के मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूंगा, जो सिलसिलेवार चले आते रहेंगे। और अल्लाह ने ये मदद महज़ इसलिये की के ख़ुशख़बरी हो, और दिलों को सुकून हासिल हो और नुसरत तो अल्लाह की ही तरफ़ से है, बिला शुबह अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। उस वक़्त को याद करो जब वो तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था अपनी तरफ़ से चैन देने के लिए, और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताके तुमको उस पानी के ज़रिये से पाक कर दे, और तुम से शैतानी वसवसा को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और तुम्हारे क़दम जमा दे। उस वक़्त को याद करो जब आपका रब फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था के मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम मोमिनीन की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रौब डाले देता हूँ, सो तुम तुम गर्दनों पर मारो और उनके एक एक पोर पर ज़र्ब लगाओ। ये सज़ा तो इसलिये दी गई है के अल्लाह और उसके रसूल की उन्होंने मुखालफ़त की, और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफ़त करता है तो अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (8:5-13)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝۱۵ وَ
مَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا
مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

मोमिनों! जब मैदाने जंग में तुम्हारा मुक़ाबला काफ़िरों से हो तो उनसे पीठ ना मोड़ना। और जो उनसे उस रोज़ पुश्त फ़ेरेगा मगर हां जो लड़ाई के लिए जगह बदलने वाला हो या जो एक जमात की तरफ़ पनाह लेने वाला हो (वो मुस्तसना है) बाक़ी जो ऐसा करेगा वो अल्लाह

के ग़ज़ब में आ जायेगा, और उसका ठिकाना दोज़ख होगा, और वो बहुत ही बुरी जगह है। (8:15-16)

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾

और तुम उन कुफ़्फ़ारे अरब से इस हद तक लड़ो के फ़सादे अक़ीदा (यानी शिर्क) ना रहे, और ख़ालिस दीन अल्लाह ही का दीन हो जाए, फ़िर अगर ये कुफ़्र को छोड़ दें तो अल्लाह उनके आमाल को ख़ूब देखने वाला है। और अगर वो रूगर्दानी करें तो यक़ीन रखो के अल्लाह तुम्हारा रफ़ीक़ है और बहुत ही अच्छा मददगार है। (8:39 40)

وَ قَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۳۹﴾ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿۴۰﴾

उहुद की लड़ाई

और जब तुम सुबह को अपने घर वालों से अलैहदा हुए और मोमिनों को लड़ाई के लिए मोर्चों पर मुताईय्यन कर रहे थे, और अल्लाह तो ख़ूब सुनने वाला और ख़ूब जानने वाला है। जिस वक़्त तुम में से दो जमातों ने जी छोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनका मददगार था, और मोमिनीन को अपने अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और अल्लाह ने जंगे बद्र में तुम्हारी मदद की, उस वक़्त तुम बे सरो सामान थे, पस तुम अल्लाह ही से डरो, ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो। (3:121-123)

وَ اِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَ اللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

बेशक अल्लाह ने तुम से अपने वाद को सच्चा कर दिखाया, जब तुम कुफ़्फ़ार को अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहां तक के तुम ख़ुद ही कमज़ोर पड़ गए और हुक्म में बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे और तुम कहने पर न चले जबकि हमने तुम्हारी दिली ख़्वाहिश दिखा दी थी बाज़ तुम में दुनिया चाहते थे और बाज़ तुम में आख़िरत, फिर अल्लाह ने तुमको कुफ़्फ़ार से हटा दिया

وَ لَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَ تَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَ لَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَ

اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ
تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ
يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا
بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ
اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾
ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً
نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ
قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ
الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا
مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ
لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ
لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ
بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ
صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ
وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾

ताकि तुम्हारी आज़माईश करे, और यक़ीन जाने अल्लाह ने तुम को माफ़ कर दिया, और मोमिनीन पर अल्लाह बड़ा फ़ज़ल वाला है। जब तुम बढ़े चले जाते थे और किसी को मुड़ कर भी ना देखते थे और रसूल तुम्हारे पीछे से तुम को आवाज़ दे रहे थे, सो अल्लाह तआला ने उस पादाश में तुम को ग़म दिया, ताकि मग़मूम ना हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से निकल गईं, और ना उस मुसीबत के आने पर, और अल्लाह तो तुम्हारे सारे कामो की ख़बर रखता है। फिर उस ग़म के बाद अल्लाह ने तुम को चैन बख़्शा, यानी ऊंघ तुम में से एक जमात पर छाई हुई थी, और एक जमात को अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वो ख़िलाफ़े वाक़ेया अल्लाह के साथ बदगुमानियां कर रहे थे जो महेज़ हिमाक़त ही का ख़्याल था, वो ये कह रहे थे के क्या हमारा कोई इख़्तियार चलता है, कह दो के इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है, वो अपने दिलों में ऐसी बात पोशीदा रखते हैं जिसको वो आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं के अगर हमारा इख़्तियार होता तो यहां मक़तूल ना होते, कह दो अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके मुक़द्दर में क़त्ल लिखा है वो ख़ुद उन मुक़ामात की तरफ़ निकल पड़ते जहां वो गिरे पड़े हैं, और ये इसलिए हुआ के अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात को आज़माए, और तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तो दिलों की बात भी ख़ूब जानता है। बिला शुबह उस रोज़ जो तुम में से पुश्त फेर चुके थे जबकि वो दो फ़रीक़ आपस में मुक़ाबला कर रहे थे इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई के उनको शैतान ने उनके बाज़ आमाल की वजह से लग़ज़िश दे दी, और यक़ीन जानो के अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा हिलम वाला है। (3:152-155)

बनू नज़ीर

वही है जिसने अव्वल बार कुफ़्फ़ारे अहले किताब को उनके घरों से निकाल दिया था, तुम्हारे ख़्याल में भी ना था के वो निकल जायेंगें, और उनका ख़्याल था के उनके क़िले उनको अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे फ़िर अल्लाह ने उनको वहां से आ लिया जहां से उनको गुमान भी ना था, और उनके दिलों में ये दहशत डाल दी के वो अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों उजाड़ने लगे, तो ऐ बसीरत की आंख रखने वालों इबरत पकड़ो। और अगर अल्लाह ने उनके बारे में जिला वतन करना ना लिख दिया होता तो उनको दुनिया ही में अज़ाब देता, और आख़िरत में उनके लिये अज़ाबे दोज़ख है। (59:2-3)

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۭ مَا
ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ
مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ وَقَذَفَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ
بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ فَاعْتَبِرُوْا
يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٢ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمُ الْجَلَاۗءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ
وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣

क्या तुम ने उन मुनाफ़क़ीन को नहीं देखा जो अपने काफ़िर भाईयों से जो अहले किताब हैं कहा करते हैं, के अगर तुम निकाल दिये गए तो हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे, और हम तुम्हारे बारे में कभी किसी की बात नहीं मानेंगे, और अगर तुम से जंग हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाह है के ये झूटे हैं। अगर वो निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं चलेंगे और अगर उनसे जंग हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उनकी मदद भी की तो पीठ फ़ेर कर भाग जायेंगे, फ़िर उनको (किसी से भी) मदद ना मिलेगी। मोमिनों! तुम्हारी हैबत उनके दिलों में अल्लाह से भी बड़ कर है, ये इसलिये के वो ऐसे लोग हैं जो नहीं समझते। ये सब जमा होकर भी तुमसे नहीं लड़ेंगे, मगर हिफ़ाज़त वाली बस्ती में, या दीवारों की ओट में (छुपकर) उनकी आपस की लड़ाई भी बड़ी सख़्त है, तुम ख़्याल करते हो के ये

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَىِٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ
فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝١١ لَىِٕنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ
مَعَهُمْ ۚ وَلَىِٕنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ
لَىِٕنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا
يُنْصَرُوْنَ ۝١٢ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ
صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَفْقَهُوْنَ ۝١٣ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ

قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ
بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا
وَّ قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا
يَعْقِلُوْنَ ۚ﴿۱۴﴾

इकटठे हैं, हालांकि उनके दिल मुत्तफ़र्रिक़ हैं, ये इसलिये है के ये लोग अक़्ल नहीं रखते। (59:11-14)

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَ لَتَجِدَنَّ
اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْۤا
اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ
رُهْبَانًا وَّ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۸۲﴾ وَ اِذَا
سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ
تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشّٰهِدِيْنَ ﴿۸۳﴾

आप उन यहूद और उन मुशरिक़ीन को और आदमियों से .ज़्यादा मुसलमानों से अदावत रखने वाले पायेंगे और उनमें मुसलमानों के साथ दोस्ती रखने के क़रीबतर उनको पायेंगे जो अपने आप को नसारा कहते हैं, ये इस सबब से है के उनमें बहुत से इल्म दोस्त आलिम हैं और बहुत से तारिके दुनिया दुर्वेश हैं, और नीज़ ये के वो तकब्बुर नहीं करते। और जब वो इस किताब को सुनते हैं जो रसूल (मोहम्मद (स.अ.स.) पर उतरी है, तो तुम देखते हो के उनकी आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं, ये सबूत है के उन्होंने हक़ को पहचान लिया, वो अपने रब से दुआ करते हैं के ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए, तो आप हमको मानने वालों में लिख लें। (5:82-83)

विभिन्न क़बीलों का संगठित हमला (जंग-ए-अहज़ाब) और बनू क़ुरेज़ा

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۚ﴿۹﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ
فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَ اِذْ زَاغَتِ
الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ

मोमिनों! .ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो जो उसने तुम पर उस वक़्त की, जब फ़ौजें तुम पर हमला करने को आईं, तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर नाज़िल किये जिनको तुम देख नहीं सकते थे, और जो काम तुम करते हो ख़ुदा उनको देख रहो है। जब वो तुम पर ऊपर से और नीचे की तरफ़ से चढ़ आये, और जब आंखें फ़िर गई और दिल मारे दहश्त के गलों तक पहुंच गए और तुम .ख़ुदा की निसबत तरह तरह के गुमान

تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝١٠ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ
الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝١١ وَ
اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا
غُرُوْرًا ۝١٢

करने लगे। वहां मोमिनों की आज़माईश की गई और .ख़ूब स.ख़्ती से झंझोड़े गए। और जब मुनाफ़िक़ और वो लोग जिनके दिलों में बीमारी थी कहने लगे के .ख़ुदा और उसके रसूल ने हमसे महज़ धोके का वादा किया था। (33:9-12)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝٢١ وَ لَمَّا رَاَ
الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا
وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗ ۫ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّ
تَسْلِيْمًا ۝٢٢ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا
مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى
نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَ مَا بَدَّلُوْا
تَبْدِيْلًا ۝٢٣ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ
بِصِدْقِهِمْ وَ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ
اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝٢٤ وَ رَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ
لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
الْقِتَالَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝٢٥ وَ
اَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَ قَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَ تَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝٢٦

बेशक तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल की पैरवी में बेहतरीन नमूना अमल मौजूद है, उस श.ख़्स के लिये जो अल्लाह पर और आ.ख़िरत के दिन पर अक़ीदा रखता है, और कसरत से अल्लाह को याद करता रहता है। और जब मोमिनीन ने (काफ़िरों का) लश्कर देखा तो कहने लगे के ये वही है जिस का वादा अल्लाह ने और उसके रसूल ने हमसे किया था, और अल्लाह ने और उसके रसूल ने सच कहा था, और उससे उनके ईमान और इताअत में इज़ाफ़ा हुआ। ईमान वालों में कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने जो अल्लाह से वादा किया था सच कर के दिखा दिया, बाज़ उनमें वो हैं जो अपने नज़राने से फ़ारिग़ हो गए और बाज़ इन्तिज़ार कर रहे हैं (और अपने क़ौल पर क़ायम हैं) ज़रा भी नहीं बदला। ताके अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला अता फ़रमाये, और मुनाफ़िक़ों को चाहे अज़ाब दे या तौबा की तौफ़ीक़ दे बिला शुबह अल्लाह ब.ख़्शने वाला रहम करने वाला है। और काफ़िरों को अल्लाह ने फेर दिया जो ग़ुस्से से भरे हुए थे, वो कोई भलाई हासिल ना कर सके, और मोमिनीन के लिये जंग में अल्लाह काफ़ी था, और अल्लाह बड़ी ताक़त वाला और बड़ा ज़बरदस्त है। और अहले किताब में से जिन्होंने उनकी मदद की थी, उनको उनके क़िलों से उतार दिया, और इनके दिलों में दहश्त पैदा कर दी, बाज़ को तुम क़त्ल कर डालते थे, और बाज़ को क़ैद कर लेते थे। और उनकी ज़मीन, और इनके घरों, और उनके मालों, और

وَ اَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ دِيَارَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ وَ اَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرًا ۟

उस ज़मीन का जिस में तुमने पाऊँ भी नहीं रखा था, तुम को वारिस बना दिया और अल्लाह हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (33:21-27)

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِیْنًا ۟ۙ لِّیَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَ یُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكَ وَ یَهْدِیَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِیْمًا ۟ۙ وَّ یَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِیْزًا ۟ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ السَّكِیْنَةَ فِیْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِیْنَ لِیَزْدَادُوْۤا اِیْمَانًا مَّعَ اِیْمَانِهِمْ ؕ وَ لِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا ۟ۙ

(ऐ मोहम्मद) हमने तुमको खुली फ़तह अता की। ताके अल्लाह तुम्हारे अगले आर पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुम को सीधे रास्ते पर चलाये। और अल्लाह तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे। वो अल्लाह ऐसा है जिसने मोमिनों के दिलों में सकून बख़्शा ताके उनके ईमान के साथ उनके ईमान में और इज़ाफ़ा हो, और आसमानों और ज़मीन के लश्कर सब अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ख़ूब जानने वाला और हिकमत वाला है। (48:1-4)

اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَكَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا یَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَیْهُ اللّٰهَ فَسَیُؤْتِیْهِ اَجْرًا عَظِیْمًا ۟

जो लोग आपसे बैत कर रहे हैं तो (हक़ीक़त में) वो अल्लाह ही से बैत कर रहे हैं, अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है, फ़िर जो इस अहद को तोड़ेगा तो अहद तोड़ने का वबाल उसी पर होगा, और जो अपने अहद को पूरा करेगा जो उसने (उस बैत में) अल्लाह से किया है तो अल्लाह जल्द उसको बड़ा अज्र देगा। (48:10)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِیْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِیْعُوْا یُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّیْتُمْ مِّنْ قَبْلُ یُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا ۟

जो देहाती पीछे रह गए थे उनसे कह दीजिये के जल्द एक सख़्त जंगजू क़ौम से लड़ाई के लिये तुम बुलाये जाओगे, उनसे तुम जंग करते रहोगे, या वो मतीइ हो जायेंगे, अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम को अच्छा बदला देगा, और अगर मुंह फ़ेर लोगे, जैसे पहली बार किया था तो वो तुमको दर्दनाक अज़ाब देगा। (48:16)

बिलतहक़ीक़ अल्लाह उन अहले ईमान से ख़ुश हुआ जबके ये लोग दरख़्त के नीचे आपसे बैत कर रहे थे, और जो (सिदक़ व ख़ुलूस) उनके दिलों में था वो उसने मालूम कर लिया, तो उसने उनको सकून बख़्शा, और उनको जल्द फ़तह अता की। और बहुत सी ग़नीमतें जो उन्होंने हासिल कीं, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है। अल्लाह ने तुमसे बहुत से माले ग़नीमत का वादा फ़रमाया है जिनको तुम लोगे, तो फ़िलहाल तुम को ये दे दी, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये, और ताके मोमिनों के लिये एक निशानी हो जाये, और ताके तुमको सीधी राह पर चलाये। और एक फ़तह और भी जिस पर तुम क़ादिर नहीं हुए अल्लाह तआला उसको आहाता में लिये हुए है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और अगर तुमसे ये काफ़िर लड़ते तो वो पीठ फ़ेर कर भाग जाते फ़िर ना किसी को दोस्त पाते और ना मददगार। अल्लाह की ये आदत है जो पहले से चली आती है, और आप अल्लाह की आदत बदलती नहीं देखेंगे। और वही है जिसने उन काफ़िरों के हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये ऐन मक्के में बाद उसके के तुम को उन पर क़ाबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा था। ये वो लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदे हराम से रोका, और क़ुर्बानियों को भी, के अपनी जगह पहुंचने से रूकी रहीं, और अगर ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें ना होतीं, जिनको तुम जानते ना थे यानी उनके रौंदे जाने का एहतमाल ना होता जिस पर उनकी वजह से तुम को भी बेख़बरी में नुक़सान पहुंचता तो सब मामला तय कर दिया जाता (मगर ऐसा ना हुआ) इसलिये के अल्लाह दाखिल कर दे अपनी रहमत में जिसको चाहे अगर ये हट गए होते तो जो उनमें काफ़िर थे, हम उनको दर्दनाक सज़ा देते। जब उन काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की,

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَ
اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً
يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ
عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ وَّ اُخْرٰى
لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَ لَوْ
قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا
يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ
الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَ لَنْ تَجِدَ
لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ كَفَّ
اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ
عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ
يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَ لَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ
نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ
تَطَئُوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ
عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ

يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ
الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَلْزَمَهُمْ
كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَ كَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَ
اَهْلَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿۲۶﴾
لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ
لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ
اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِيْنَ ۙ
لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ
مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۲۷﴾ هُوَ الَّذِيْۤ
اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا ﴿۲۸﴾

और ज़िद भी जाहिलियत की, तो अल्लाह ने अपनी तरफ़ से अपने रसूल और मोमिनीन पर तसकीन नाज़िल फ़रमाई और मोमिनों को तक़वे की बात पर जमाये रखा, और वो उसके .ज्यादा हक़दार और अहल थे, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। बिला शुबह अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा .ख़्वाब दिखाया है जो बिलकुल वाक़ेआ के मुताबिक़ है, तुम लोग इंशाअल्लाह मस्जिदे हराम में ज़रूर दाख़िल होंगे अमनो अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कतरवाओगे, तुम को किसी क़िसम का अंदेशा ना होगा वो उन बातों को जानता है जिनको तुम नहीं जानते, इसलिये उसने ये क़रीबी फ़तह तुम को अता की। वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत की और दीने हक़ दे कर भेजा, ताके उसको तमाम दीनों पर ग़ल्बा अता करे, और अल्लाह गवाह काफ़ी है। (48:18-28)

मक्का पर विजय (मक्का को वापसी)

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ ﴿۱﴾ وَ رَاَيْتَ
النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ﴿۲﴾
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ اسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
تَوَّابًا ﴿۳﴾

जब अल्लाह ने मदद की और फ़तह नसीब हुई। और तुमने देखा के लोग जूक़ दर जूक़ इस्लाम में दाख़िल हो रहे हैं। तो अपने रब की हम्दो सना के साथ तसबीह करते रहो और उससे मग़फ़िरत मांगों, बेशक वो माफ़ करने वाला है। (110:1-3)

हुनैन की लड़ाई

अल्लाह ने तुम को अक्सर मौक़ों पर कुफ्फ़ार के मुक़ाबले में ग़ल्बा अता किया और हुनैन के रोज़ भी जबके तुमको अपने मजमे की कसरत से गुर्रा हो गया था, फ़िर वो कसरत तुम्हारे लिये कोई मुफ़ीद ना रही, और तुम पर ज़मीन बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंग होने लगी, फ़िर आख़िरकार तुम पीठ दिखा कर भाग निकले। फ़िर अल्लाह ने अपने रसूल पर और दूसरे मोमिनीन पर अपनी तसल्ली नाज़िल की, और ऐसे लश्कर नाज़िल किये जिनको तुम ने नहीं देखा और काफ़िरों को सज़ा दी, और ये काफ़िरों की सज़ा है। फ़िर अल्लाह जिसको चाहे तौबा की तौफ़ीक़ अता कर दे, और अल्लाह बख़्शने वाला, और रहम करने वाला है। (9:25-27)

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّ يَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۷﴾

तबूक की लड़ाई और उत्तरी क्षेत्र में सीमाओं पर झड़पें

अगर कुछ मिलने वाला होता और सफ़र भी आसान होता तो ये ज़रूर आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको मुसाफ़त ही लम्बी मालूम होने लगी, और अभी अल्लाह की क़समें खायेंगे के अगर हमारे बस में होता तो हम तुम्हारे साथ ज़रूर निकल जाते, ये अपने आपको तबाह कर रहे हैं और अल्लाह जानता है के ये यक़ीनन झूटे हैं। (9:42)

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّ سَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَ لٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۴۲﴾

और चन्द देहाती तुम्हारे गिर्दोपेश वाले और कुछ मदीना वाले, कट्टर मुनाफ़िक़ हैं, आप उनको नहीं जानते, उनको हम जानते हैं, हम उनको बहुत जल्द दोहरी सज़ा देंगे, फ़िर (आख़िरत में) वो बड़े अज़ाब की तरफ़ भेजे जायेंगे। और चन्द और हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार कर

وَ مِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ؕۛ وَ مِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ؔۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى

عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾ وَ اٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا
بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ
سَيِّئًا ۭ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

लिया है, उन्होंने अच्छे और बुरे कामों को मिला दिया था, क़रीब ही है के अल्लाह उन पर तवज्जह फ़रमाये, बिलाशुबह अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला है और बड़ा ही रहम वाला है। (9:101-102)

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ
الْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ
مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّهٗ بِهِمْ
رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾

अल्लाह ही ने अपने नबी पर और मुहाजरीन और अनसार पर जिन्होंने मुश्किल घड़ी में अपने रसूल की ताबेदारी की, तवज्जह फ़रमाई बाद इसके के बाज़ों के दिल जल्द फ़िर जाने को थे, फ़िर अल्लाह ने उन पर तवज्जह फ़रमाई, यक़ीनन अल्लाह उन पर शफ़्क़त वाला और रहम वाला है। (9:117)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ
مِّنَ الْكُفَّارِ وَ لْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ۭ وَ
اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾

मोमिनों! उन कुफ़्फ़ार से लड़ो, जो तुम्हारे आस पास रहते हैं, उनको तुम्हारे अन्दर सख़्ती पाना चाहिये, और यक़ीन जानों, अल्लाह की मदद परहैज़गारों के लिये है। (9:123)

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ لَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ
وَ رَسُوْلُهٗ وَ لَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ
عَنْ يَّدٍ وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾

अहले किताब, जो ना अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ना क़यामत पर, और ना उन चीज़ों को हराम समझते हैं जो अल्लाह ने और उसके रसूल ने हराम की हैं और ना सच्चे दीन को क़ुबूल करते हैं, यहां तक लड़ो के वो मातहत होकर और रईय्यत जिज़िया देना मंज़ूर करें। (29:9)

मुनाफ़िक़ (दिखावे के झूटे मुसलमान)

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ
بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ مَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨﴾

और बाज़ आदमी कहते हैं के हम अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान ले आए। दरअसल ये ईमान नहीं लाए। ये अल्लाह को और मोमिनीन को धोका देते हैं

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَ مَا
يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ۚ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ ۙ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠
وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١١ اَلَآ اِنَّهُمْ
هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَ لٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٢ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا
اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ
السُّفَهَآءُ وَ لٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣ وَ اِذَا لَقُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰى
شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٤ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَ
يَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١٥ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۠ فَمَا
رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَ مَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝١٦
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ
اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَ
تَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ۝١٧ صُمٌّ ۢ
بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝١٨

मगर दरअसल ये अपने आपको ही धोका दे रहे हैं। .ख़ुद तो अपने शऊर और (एहसास की क़ुव्वत) से भी महरूम हैं। अज़ाब है इसलिए के वो झूठ बोलते हैं। और जब उनसे कहा जाता है के ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ तो कहते हैं, अरे हम तो इस्लाह कर रहे हैं। .ख़बरदार! बेशक यही फ़साद करने वाले हैं, मगर काई शऊर नहीं रखते। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी ईमान लाओ जैसा के ये लोग लाए हैं तो कहते हैं क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा (के) ये बेवक़ूफ़ लाए हैं। .ख़बरदार दरअसल यही बेवकूफ़ हैं मगर नहीं जानते अल्लाह उस मुनाफ़िक़ीन से मज़ाक करता है और वो उनकी रस्सी दराज़ कर रहा है ताके शरारत और सरकशी में भटकते रहें। ये वही हैं जो हिदायत के बदले गुमराही .ख़रदते हैं। न तो उनको तिजारत मफ़ीद हुई और न हिदायत ही मिली। इनकी मिसाल तो उस श.ख़्स की मानिंद है जिसने (अंधेरी रात में) आग जलाई और जब उसके आस-पास चीज़ें रौशन हो गई तो अल्लाह ने उनकी रौशनी सलब कर ली, और उनको अंधेरे में छोड़ दिया (अब) वो कोई चीज़ (भी) नहीं देखते। वो बहरे हैं, वो गूंगे हैं, वो अंधे हैं, सो वो अब वापस न होंगे। (2:8-18)

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً
نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَ طَآئِفَةٌ
قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ

फिर उस ग़म के बाद अल्लाह ने तुम को चैन ब.ख़्शा, यानी ऊंघ तुम में से एक जमात पर छाई हुई थी, और एक जमात को अपनी जान ही की फ़िक्र पड़ रही थी, वो .ख़िलाफ़े वाक़ेया अल्लाह के साथ बदगुमानियां कर रहे

الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۖ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا
مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۗ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ
لِلَّهِ ۗ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ
لَكَ ۖ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ
شَيْءٌ مَا قُتِلْنَا هَاهُنَا ۗ قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي
بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ ۖ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي
صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۗ وَ
اللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ
تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۖ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ﴿١٥٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا
كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا
ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَوْ كَانُوا
عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ
ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ يُحْيِي وَ
يُمِيتُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١٥٦﴾ وَ
لَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ
لَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِمَّا
يَجْمَعُونَ ﴿١٥٧﴾ وَلَئِنْ مُتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ
لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ﴿١٥٨﴾

थे जो महेज़ हिमाक़त ही का ख़्याल था, वो ये कह रहे थे के क्या हमारा कोई इख़्तियार चलता है, कह दो के इख़्तियार तो सब अल्लाह ही का है, वो अपने दिलों में ऐसी बात पोशीदा रखते हैं जिसको वो आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते, कहते हैं के अगर हमारा इख़्तियार होता तो यहां मक़तूल ना होते, कह दो अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके मुक़द्दर में क़त्ल लिखा है वो ख़ुद उन मुक़ामात की तरफ़ निकल पड़ते जहां वो गिरे पड़े हैं, और ये इसलिए हुआ के अल्लाह तुम्हारे दिलों की बात को आज़माए, और तुम्हारे दिलों की बात को साफ़ कर दे, और अल्लाह तो दिलों की बात भी ख़ूब जानता है। बिला शुबह उस रोज़ जो तुम में से पुश्त फेर चुके थे जबकि वो दो फ़रीक़ आपस में मुक़ाबला कर रहे थे इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई के उनको शैतान ने उनके बाज़ आमाल की वजह से लग़ज़िश दे दी, और यक़ीन जानो के अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा हिलम वाला है। मोमिनों! तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो काफ़िर हैं और कहते हैं अपने भाईयों की निस्बत, जब किसी सर ज़मीन में सफ़र करते हैं, या वो ग़ाज़ी होते हैं, अगर ये हमारे पास रहते तो ना मरते और ना मारे जाते, ताकि अल्लाह इस बात को उनके दिलों में मोजिबे हसरत कर दे और अल्लाह ही तो ज़िन्दा करता है और वही मारता है, और अल्लाह तो ख़ूब देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो ज़रूर अल्लाह की मग़फ़िरत और रहमत बेहतर है उनसे जिनको ये लोग जमा कर रहे हैं। और अगर तुम मर गए या मारे गए तो ज़रूर तुम अल्लाह ही के पास जमा किये जाओगे।

(3:154-158)

اَوَ لَمَّآ اَصَابَتۡكُمۡ مُّصِيۡبَةٌ قَدۡ اَصَبۡتُمۡ
مِّثۡلَيۡهَا ۙ قُلۡتُمۡ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلۡ هُوَ مِنۡ
عِنۡدِ اَنۡفُسِكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ
قَدِيۡرٌ ﴿۱۶۵﴾ وَ مَاۤ اَصَابَكُمۡ يَوۡمَ الۡتَقَى
الۡجَمۡعٰنِ فَبِاِذۡنِ اللّٰهِ وَ لِيَعۡلَمَ
الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۶۶﴾ وَ لِيَعۡلَمَ الَّذِيۡنَ نَافَقُوۡا ۖۚ وَ
قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا قَاتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَوِ
ادۡفَعُوۡا ؕ قَالُوۡا لَوۡ نَعۡلَمُ قِتَالًا لَّا
اتَّبَعۡنٰكُمۡ ؕ هُمۡ لِلۡكُفۡرِ يَوۡمَئِذٍ اَقۡرَبُ
مِنۡهُمۡ لِلۡاِيۡمَانِ ۚ يَقُوۡلُوۡنَ بِاَفۡوَاهِهِمۡ مَّا
لَيۡسَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ وَ اللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا
يَكۡتُمُوۡنَ ﴿۱۶۷﴾ اَلَّذِيۡنَ قَالُوۡا لِاِخۡوَانِهِمۡ وَ
قَعَدُوۡا لَوۡ اَطَاعُوۡنَا مَا قُتِلُوۡا ؕ قُلۡ
فَادۡرَءُوۡا عَنۡ اَنۡفُسِكُمُ الۡمَوۡتَ اِنۡ كُنۡتُمۡ
صٰدِقِيۡنَ ﴿۱۶۸﴾

और जब तुम को हार हुई जिससे दो हिस्से तुम जीत चुके थे तो तुम कहते हो के ये कहां से आई, आप फ़रमा दीजिये के ये हार ख़ास तुम्हारी तरफ़ दीजिये के ये हार ख़ास तुम्हारी तरफ़ से हुई है, बेशक अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। और जो मुसीबत तुम पर आ पड़ी उस रोज़ जब दोनों गिरोह बाहम मुक़ाबिल हुए अल्लाह ही की मशीयत से हुई और ताकि अल्लाह मोमिनीन को भी देख ले। और नीज़ मुनाफ़िक़ीन का हाल भी मालूम हो जाए, और उनसे कहा गया के आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मनों का दिफ़ा करो, वो बोले, अगर हम कोई ढंग की लड़ाई देखते तो ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते, ये मुनाफ़िक़ीन कुफ्र से ज़्यादा क़रीब थे उस रोज़ (ख़ुसूसन) बनिस्बत इस्लाम के, ये लोग अपने मुंह से ऐसी बातें करते हैं जो उनके दिलों में नहीं, और अल्लाह ख़ूब जानता है वो जो अपने दिलों में छुपाए हुए हैं। ये वही हैं जो अपने भाईयों की निस्बत बैठे हुए बातें बनाते हैं। कि अगर ये हमारी बातें मानते तो क़त्ल न होते आप फ़रमा दीजिये के अच्छा! तो अपने ऊपर से मौत को हटा दो, अगर तुम सच्चे हो। (3:165-168)

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ قِيۡلَ لَهُمۡ كُفُّوۡۤا
اَيۡدِيَكُمۡ وَ اَقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيۡهِمُ الۡقِتَالُ اِذَا فَرِيۡقٌ
مِّنۡهُمۡ يَخۡشَوۡنَ النَّاسَ كَخَشۡيَةِ اللّٰهِ اَوۡ
اَشَدَّ خَشۡيَةً ۚ وَ قَالُوۡا رَبَّنَا لِمَ كَتَبۡتَ
عَلَيۡنَا الۡقِتَالَ ۚ لَوۡ لَاۤ اَخَّرۡتَنَاۤ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيۡبٍ ؕ قُلۡ مَتَاعُ الدُّنۡيَا قَلِيۡلٌ ۚ وَ الۡاٰخِرَةُ
خَيۡرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۟ وَ لَا تُظۡلَمُوۡنَ فَتِيۡلًا ﴿۷۷﴾

क्या आप ने उन लोगों को नहीं देखा जिन से कहा गया था के अपने हाथों को रोके रखो, और नमाज़ पाबंदी से पढते रहो, और ज़कात देते रहो, फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया, तो बाज़ उन में से लोगों से ऐसे डरने लगे जैसे अल्लाह से डरते हैं, बल्कि उससे भी ज़्यादा, और कहने लगे के ऐ हमारे रब! तूने हम पर जिहाद क्यों फ़र्ज़ किया, और थोड़ी मोहलत क्यों ना दी, कह दो, के दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है, और बहुत अच्छी चीज़ तो परहेज़गार के लिए आख़िरत ही है, वहां तुम पर एक तागे के बराबर भी ज़ुल्म ना होगा। तुम कहीं रहो, मौत तो आकर ही रहेगी, ख़्वाह तुम बड़े

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ
فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ
يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا
يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾ مَاۤ اَصَابَكَ
مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ٝ وَ مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ
سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَ اَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ
رَسُوْلًا ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾ مَنْ يُّطِعِ
الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَ مَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ
اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿٨٠﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ
طَاعَةٌ ٝ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَ اللّٰهُ
يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٨١﴾ اَفَلَا
يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَ لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ
غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَ
اِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ
اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى
اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ
يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

मज़बूत क़िलों में रहो, और अगर उनको फ़ायदा होता है तो कहते हैं के ये तो अल्लाह की तरफ़ से है, अगर कोई नुक़सान होता है तो कहते हैं ये आप (रसूल) से है, कह दीजिये के (रंजो राहत) सब अल्लाह ही की तरफ़ से है, उन लोगों को क्या हो गया है इतनी सी बात भी नहीं समझ सकते। तुझे जो फ़ायदा पहुंचता है वो तो अल्लाह ही की तरफ़ से है, और जो मुसीबत तुझे मिलती है वो तुम्हारे अपने आमाल के सबब मिलती है, ऐ नबी! हम ने तुम को तमाम लोगों की तरफ़ अपना रसूल बना कर भेजा है, और अल्लाह गवाह काफ़ी है। जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह ही की इताअत की, और जो रूगर्दानी करे सो हमने तुम को उनका निग्रां करके नहीं भेजा है। और ये लोग कहते हैं के हमारा काम इताअत करना है, फ़िर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो उनमें से बाज़ लोग रात को तुम्हारी बातों के ख़िलाफ़ मशवरे करते हैं और जो मशवरे ये करते हैं ख़ुदा उनको लिख लेता है तो उनका कुछ ख़्याल ना करो, और ख़ुदा पर भरोसा रखो, और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ है। क्या वो फ़िर क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते, अगर ये अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो इसमें वो बकसरत तफ़ावुत पाते। और जब उनको किसी बात की ख़बर मिलती है ख़्वाह अमन की बात हो या ख़ौफ़ की बात हो तो वो उसको मशहूर कर देते हैं, और अगर वो रसूल और अपने सरदारों के पास उस ख़बर को पहुंचाते तो तहक़ीक़ कुनिंदा तो उस ख़बर की तहक़ीक़ कर ही लिया करते और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और रहमत ना होती तो तुम सब के सब शैतान के ताबे हो जाते, मगर थोड़े से ताबे ना होते। (4:77-83)

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَ اللّٰهُ
اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ
تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ
كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا
مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَ اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَ لَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا
وَّ لَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى
قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ
جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ
يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَ لَوْ شَآءَ
اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ
اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَ اَلْقَوْا
اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿۹۰﴾ سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَ يَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ
كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ
لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَ يُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ
يَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَ اقْتُلُوْهُمْ
حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَ اُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ
عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۹۱﴾

तुम मुनाफ़िक़ीन के बारे में किस सबब से दो गिरोह बन गए जबके अल्लाह ने तो उनको उल्टा फ़ेर दिया है, बसबब उनके अमल के, क्या तुम चाहते हो के उनको सीधे रास्ते पर लाओ जिनको अल्लाह ने गुमराह कर दिया है और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई रास्ता ना पा सकोगे। काफ़िर तो यही चाहते हैं के जिस तरह वो काफ़िर हैं उसी तरह तुम काफ़िर होकर सब बराबर हो जाओ, पस तुम उनमें से किसी को दोस्त मत बनाओ, जब तक वो अल्लाह की राह में वतन ना छोड़ दें और अगर वो एराज़ करें तो उनको पकड़ लो और मार डालो जहां भी उनको पाओ, और उनमें से किसी को अपना रफ़ीक़ ना बनाओ। और ना मददगार बनाओ। मगर जो ऐसे लोगों से जा मिले हों जिनमें और तुम में सुलह का अहद हो, या तुम्हारे पास इस हालत में आयें के उनके दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम से लड़ने से तंग आ गए हों, और अगर अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर ग़ालिब कर देता तो वो तुम से ज़रूर लड़ते, फ़िर अगर वो तुम से जंग करने से किनारा कशी करें और लड़ें नहीं, और तुम्हारी तरफ़ सुलह का पैग़ाम दें तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर ज़बरदस्ती करने की कोई सबील मुक़र्रर नहीं की। तुमको दूसरे लोग ऐसे भी मिल जायेंगे जो ये चाहते हैं के तुमसे भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें लेकिन जब वो फ़ितना अंगेज़ी को बुलाये जायें तो उसमें औंधे मुंह गिर पड़ें, अगर ये लोग तुम से किनारा कशी ना करें और तुम्हारी तरफ़ सुलह का पैग़ाम ना दें, और ना अपने हाथों को रोकें तो उनको पकड़ लो, और मार डालो जहां भी पाओ, और हमने उन पर तुमको एक सनदे सही दी है। (4:88-91)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ

बिलाशुबहः जो मुसलमान हुए, फ़िर काफ़िर हो गए, फ़िर

كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ
لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾
بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَا ﴿١٣٨﴾ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَيَبْتَغُوْنَ
عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾ وَ
قَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ
اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا
تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِىْ حَدِيْثٍ
غَيْرِهٖٓ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْكٰفِرِيْنَ فِىْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ﴿١٤٠﴾
الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ
فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَ
اِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ قَالُوْٓا اَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَ نَمْنَعْكُمْ مِّنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وَ لَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ
ذٰلِكَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَ
مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَتُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾ اِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ

मुसलमान हुए, फ़िर काफ़िर हो गए, फ़िर कुफ़्र में बढते चले गए, तो अल्लाह ऐसों को हरगिज़ ना बख़्शेंगे और ना उनको रास्ता दिखायेंगे। मुनाफ़िक़ीन को ये ख़ुशख़बरी सुना दीजिये के उनके लिये बड़ा दर्दनाक अज़ाब है। वो मुनाफ़िक़ जो मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते है, क्या उनके पास मोअज़्ज़िज़ रहना चाहते हैं, सो एजाज़ तो सारा अल्लाह ही के पास है। और अल्लाह इस किताब में ये हुक्म करता है के जब तुम अहकामे इलाहिया के साथ कुफ़्र और मज़ाक़ होता सुनो तो उन लोगों के पास मत बैठा करो जब तक के वो कोई दूसरी बात शुरू ना कर दें। इस हालत में तो तुम उन ही जैसे हो जाओगे, बिला शुबह अल्लाह मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को सबको दोज़ख में जमा कर देगा। और ये लोग तुम पर उफ्ताद पड़ने का इन्तिज़ार कर रहे हैं, फ़िर अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी फ़तेह हो जाए तो बातें बनाते हैं के हम तुम्हारे साथ ना थे और अगर काफ़िरों को कुछ हिस्सा मिल गया तो बातें बनाते हैं के क्या हम तुम पर ग़ालिब ना आने लगे थे और क्या हमने तुमको मुसलमानों से बचा नहीं लिया, सो अल्लाह तुम्हारा और उनका क़यामत में फ़ैसला कर देगा, और अल्लाह हरगिज़ काफ़िरों को मुसलमानों के मुक़ाबले में ग़ालिब ना करेगा। बिलाशुबहः मुनाफ़िक़ लोग अल्लाह को धोका देते हैं, वो उस चाल की उनको सज़ा देने वाला है, और जब वो नमाज़ को खड़े होते हैं तो बहुत काहिली के साथ खड़े होते हैं, सिर्फ़ आदमियों को दिखाते हैं, और अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते, मगर बहुत ही मुख़्तसर। वो दोनों के दरमियान में मोअल्लिक़ हो रहे हैं, ना ही इधर के ना ही उधर के, बीच में लटके हुए हैं और जिसको अल्लाह गुमराही में डाल दे तो तुम ऐसे शख़्स के लिये कोई सबील ना पाओगे। मोमिनों! तुम मोमिनीन को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ, क्या तुम चाहते हो के

وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا
وَ اَصْلَحُوْا وَ اعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَ اَخْلَصُوْا
دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ وَ
سَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا
عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾

अल्लाह की खुली दलील को अपने ऊपर क़ायम कर लो। बिलाशुबह मुनाफ़िक़ीन दोज़ख के सबसे नीचे के तबक़े में जायेंगे, और तुम उनका कोई मददगार ना पाओगे। मगर जो तौबा कर लें और इस्लाह कर लें, और अल्लाह पर यक़ीन कर लें और अपने दीन को ख़ालिस अल्लाह के लिए कर लें, तो ये लोग मोमिनीन के साथ होंगे और मोमिनीन को अल्लाह जल्द अज्रे अज़ीम अता फ़रमायेगा। (4:137-146)

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّ سَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوْكَ وَ لٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ
الشُّقَّةُ ۖ وَ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ
اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ
اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾
لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ
اَنْفُسِهِمْ ۖ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾
اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ
الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ ارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ
رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ لَوْ اَرَادُوا
الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ
اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا
مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا
زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّ لَا۠ اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ
يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ
لَهُمْ ۖ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَقَدِ

अगर कुछ मिलने वाला होता और सफ़र भी आसान होता तो ये ज़रूर आपके साथ हो लेते, लेकिन उनको मुसाफ़त ही लम्बी मालूम होने लगी, और अभी अल्लाह की क़समें खायेंगे के अगर हमारे बस में होता तो हम तुम्हारे साथ ज़रूर निकल जाते, ये अपने आपको तबाह कर रहे हैं और अल्लाह जानता है के ये यक़ीनन झूटे हैं। अल्लाह ने आपको माफ़ कर दिया, आपने उनको इजाज़त क्यों दी, जब तक सच्चे लोग आपके सामने ना ज़ाहिर होते और झूटों को मालूम ना कर लेते। और जो अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर यक़ीन करते हैं वो अपने माल से जिहाद करने के बारे में रूख़्सत ना चाहेंगे (बल्के हुक्म पर दौड़ पड़ते हैं) और अल्लाह उन मुत्तक़ीन को ख़ूब जानता है। (जिहाद से बचने के लिये) वो ही लोग रूख़्सत चाहते हैं जो अल्लाह पर और रोज़े आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते और उन के दिल शक में हैं, वो अपने शक में हैरान हैं। और अगर वो निकलने का इरादा करते तो उसके लिये सामान तैयार करते, लेकिन अल्लाह ने उनका निकलना पसंद नहीं किया, तो उन को हिलने जुलने ही ना दिया और उनको कह दिया गया के माजूदों के साथ (तुम भी) बैठे रहो। अगर वो तुम में शामिल होकर निकलते भी तो वो फ़साद ही ज़्यादा करते, और तुम्हारे दरमियान फ़ितना बर्पा करने की तलाश में दौड़े

ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوْا لَكَ
الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَ ظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ
هُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
ائْذَنْ لِّيْ وَ لَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ
سَقَطُوْا ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ
بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ
تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا
قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا وَّ
هُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا
كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ هَلْ
تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ
وَ نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ
بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۫ۖ
فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ مَا
مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ
اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَ لَا يَاْتُوْنَ
الصَّلٰوةَ اِلَّا وَ هُمْ كُسَالٰى وَ لَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا
وَ هُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ
وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ
لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ
تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾
وَ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَ مَا هُمْ
مِّنْكُمْ وَ لٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ

दौड़े फ़िरते, और तुम में उनके जासूस हैं, और अल्लाह तो उन ज़ालिमों को .ख़ूब जानता है। उन्होंने पहले भी फ़ितना परदाज़ी की थी और आपके लिये बहुत सी बातों में उलट फ़ेर करते रहे हैं, यहां तक के हक़ आ पहुंचा, और अल्लाह ही का हुक्म ग़ालिब रहा और वो बुरा मानते ही रहे। और उनमें से बाज़ वो श़ख़्स है जो कहता है के मुझे इजाज़त दीजिये और मुझको .ख़राबी में ना डालिये, ख़ूब जान लो कि ये मुनाफ़िक़ फ़ितने में तो पड़ ही चुके हैं, बिलाशुबह दोज़ख इन काफ़िरों को घेर लेगी। अगर आपको कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उनको बुरा लगता है और अगर आपको कोई तकलीफ़ होती है तो कहते हैं के हमने पहले ही अपना काम कर लिया था, और .ख़ुश होते हुए चले जाते हैं। आप कह दीजिये के हमको कोई मुसीबत नहीं आती मगर जो अल्लाह ही ने मुक़द्दर में लिख दी हो, वो ही हमारा मालिक है, और अल्लाह ही पर सब मोमिनों को पूरा भरोसा करना चाहिये। आप कह दीजिये के तुम हमारे हक़ में दो नेकियों में से एक नेकी का इंतिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे हक़ में इसका इन्तिज़ार कर रहे हैं के अल्लाह या तो अपने पास से तुम पर कोई अज़ाब नाज़िल फ़रमा दे, या हमारे हाथों से ही अज़ाब दिलवा दे, तो तुम भी इन्तिज़ार करो और हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं। ये भी फ़रमा दीजिये के तुम माल .ख़ुशी से या ना.ख़ुशी से .ख़र्च करो, वो तुमसे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा क्योंके तुम नाफ़रमान लोग हो। और कोई चीज़ माने नहीं है इस बात के लिए के उनका .ख़ैर .ख़रात क़बूल हो जाये सिवाये इसके के उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल को नहीं माना, और नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्त होकर, और .ख़र्च नहीं करते मगर ना.ख़ुशी से। और उनके माल और औलाद आपको ताज्जुब में ना डालें, अल्लाह चाहता है के उन चीज़ों की वजह से

يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا
لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَ هُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧ وَ مِنْهُمْ
مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا
مِنْهَا رَضُوْا وَ اِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ
يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨ وَ لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ
اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۙ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗٓ ۙ
اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩

दुनिया की ज़िन्दगी में उनको अज़ाब दे, और उनकी जान हालते कुफ़्र में निकले। और वो अल्लाह की क़सम खाते हं के वो तुम ही में से हैं, हालांक वो तुम में से नहीं हैं, लेकिन वो डरपोक लोग हैं। अगर उनको कोई बचाओ की जगह मिल जाती या ग़ार, या कोई घुस बैठने की ज़रा सी जगह मिल जाती तो ये ज़रूर मुंह उठा कर चल देते। और उनमें से बाज़ वो हैं जो आप पर सदक़ात की तक़सीम के बारे में ताअन करते हैं, सो अगर उनको (उनकी .ख्वाहिश पर) अता हो तो .खुश होते हैं और अगर उनको (उनकी .ख्वाहिश के मुताबिक़) ना मिले तो वो नाराज़ हो जाते हैं। और अगर ये .खुश रहते उस पर जो अल्लाह और उसके रसूल ने दिया था और कहते के हमें अल्लाह काफ़ी है, अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और रसूल अपनी मेहरबानी से हमें और दे देगा, और हम तो अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। (9:42-59)

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ
اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا
تَحْذَرُوْنَ ۝٦٤ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ
اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ نَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَ
اٰيٰتِهٖ وَ رَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦٥ لَا
تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ
نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ
طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦
اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ
بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ يَنْهَوْنَ

मुनाफ़क़ीन डरते हैं के मुसलमानों पर कोई सूरत नाज़िल ना हो जाये के जो उनके दिलों की बातों को उनको बता दे, आप फ़रमा दीजिये के तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो, बिलाशुबह अल्लाह उसको ज़ाहिर करके रहेगा जिससे तुम अन्देशा करते थे। और अगर आप उनसे दरयाफ़्त करें तो कह देंग हम तो ये महज़ मशग़ला और .खुश तबई के तौर पर करते थे आप (स.) कह दीजिये क्या तुम अल्लाह के साथ उसकी आयात के साथ और उसके रसूल के साथ हंसी करते थे। अब तुम उज़्र ना करो तुम तो अपने आप को मोमिनीन कह कर कुफ़्र करने लगे, अगर हम तुम में से बाज़ को छोड़ दें तो बाज़ को हम ज़रूर सज़ा देंगे, इस वजह से के वो मुजरिम थे। मुनाफ़िक़ मर्द और औरत एक दूसरे के हम जिन्स हैं, ये बुरे काम करने को कहते हैं और नेक काम से मना करते हैं और (.खर्च करने से) हाथ बन्द किये रहते हैं, उन्होंने अल्लाह को भुला दिया,

عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ
نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ
الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۶۸﴾

तो अल्लाह ने भी उनको भुला दिया, बिला शुबह ये मुनाफ़िक़ीन नाफ़रमान हैं। अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरत और काफ़िरों को दोज़ख की आग (में डालने) का वादा किया है जिसमें वो हमेशा रहेंगे, वो उनके लिये काफ़ी है, और अल्लाह ने उन पर लानत कर दी, और उनके लिये हमेशा का अज़ाब होगा।

(9:64-68)

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ
مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَ
رِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿۷۲﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ
الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۷۳﴾ يَحْلِفُوْنَ
بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَ لَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ
وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا بِمَا لَمْ
يَنَالُوْا ۚ وَ مَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ
رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا
لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ وَ مَا
لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ ﴿۷۴﴾ وَ
مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ
فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

ऐ नबी! कुफ्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद कीजिये, और उन पर सख़्ती कीजिये और उनका ठिकाना दोज़ख है और वो बुरी जगह है। वो अल्लाह की क़समें खाते हैं कि हमने ये नहीं किया, जबके ये हक़ीक़त है के उन्होंने कुफ़्र की बातें की हैं, और अपने इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गए, और उन्होंने ऐसी बात का इरादा किया, जो उनके हाथ न लगी, ये उन्होंने सिर्फ़ इसका बदला दिया है के अल्लाह ने और उसके रसूल ने रिज़्क़े खुदावंदी से मालदार कर दिया तो (उसके बाद भी) अगर तौबा करें तो उनके लिये बेहतर होगा, और अगर रूगर्दानी करें तो अल्लाह उनको दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब देगा, और उनका दुनिया में ना कोई दोस्त होगा, और ना ही कोई मददगार। और मुनाफ़िक़ीन में बाज़ वो हैं जो अल्लाह से अहद करते हैं के अगर अल्लाह अपने फ़ज़्ल से हम को अता कर दे तो हम ख़ूब ख़ैरात करेंगे और ख़ूब अच्छे अच्छे काम करेंगे। सो जब अल्लाह ने उनको अपने फ़ज़्ल से दे दिया तो बुखल रकने लगे, और रूगर्दानीह करने लगे। सो अल्लाह ने उनकी सज़ा में उनके दिलों में निफ़ाक़ पैदा कर दिया, जो अल्लाह के पास जाने के दिन तक रहेगा, इसलिये के जो वादा उन्होंने अल्लाह से किया था वो पूरा नहीं किया, और इसलिये के वो झूट बोलते थे। क्या वो नहीं जानते के

بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾
فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰی یَوْمِ
یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ
بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ
اللّٰهَ یَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ
عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِیْنَ یَلْمِزُوْنَ
الْمُطَّوِّعِیْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ فِی
الصَّدَقٰتِ وَ الَّذِیْنَ لَا یَجِدُوْنَ اِلَّا
جُهْدَهُمْ فَیَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ
اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿٧٩﴾
اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ
الْفٰسِقِیْنَ ﴿٨٠﴾ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ
خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَ كَرِهُوْۤا اَنْ
یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ
سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ قَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِی الْحَرِّ ؕ قُلْ
نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا
یَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾ فَلْیَضْحَكُوْا قَلِیْلًا وَّ لْیَبْكُوْا
كَثِیْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاِنْ
رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰی طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا
مَعِیَ اَبَدًا وَّ لَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ

अल्लाह उनके दिलों की बात से और उनकी सरगोशी से .खूब वाक़िफ़ है, और अल्लाह तमाम ग़ैब की बातों को .खूब जानता है। ये मुनाफ़िक़ीन ऐसे हैं नफ़ली सदक़ात देने वाले मुसलमानों पर ताअन करते हैं, और उन लोगों पर जिनको मेहनत मज़दूरी के सिवा और कुछ मयस्सर नहीं यानी उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह ताला इस मज़ाक़ उड़ाने का बदला उनको देगा, और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब होगा। आप उन मुनाफ़िक़ीन के लिये बख़्शिश की दुआ मांगिये, या ना मांगिये अगर आप उनके लिये सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ मांगेगा तो अल्लाह उनको ना बख़्शेगा, ये इस सबब से है के वो अल्लाह और उसके रसूल के मुनकिर हुए और अल्लाह ऐसे सरकशों को हिदायत नहीं देता। ये पीछे रह जाने वाले मुनाफ़िक़ .खुश होंगे रसूल अल्लाह के बाद अपने बैठे रह जाने पर, और उनको अल्लाह की राह में अपने मालो जान से जिहाद करना नागवार गुज़रा, और दूसरों को भी कहने लगे के तुम गर्मी में मत निकला, आप कह दीजिये के जहन्नुम की आग उससे भी .ज़्यादा गर्म होगी, क्या ही अच्छा होता, अगर वो समझते। ये चन्द रोज़ इस दुनिया में हंस लें, और बहुत दिनों रोयेंगे उन कामों के बदल में जो वो करते थे। फ़िर अगर अल्लाह आपको उनके किसी गिरोह की तरफ़ वापस लाये, फ़िर ये लोग (किसी जिहाद में) चलने की इजाज़त मांगे तो आप कह दीजिये के तम मेरे साथ कभी ना चलोगे और ना मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे, तुम ने पहले भी बैठे रहने को पसंद किया था, तो उन्हीं के साथ बैठे रहो, जो पीछे रहने के लायक़ हैं। और ये नबी! उनमें से कोई मर जाये तो हरगिज़ उसके जनाज़े पर नमाज़ ना पढ़ना और ना उसकी क़ब्र पर खड़े होना, उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है, और वो हालते कुफ़्र में मरे हैं। और उनके माल और उनकी औलाद आपको

رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا
مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿۸۳﴾ وَ لَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ
مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّ لَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ
اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ مَاتُوْا وَ
هُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ لَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَ
اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِى الدُّنْيَا وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَ هُمْ
كٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَ جَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ
اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَ قَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ
الْقٰعِدِيْنَ ﴿۸۶﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ
الْخَوَالِفِ وَ طُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۷﴾

ताज्जुब में ना डालें, उन चीज़ों से अल्लाह उनको दुनिया में इताब देना चाहता है, और जब मरें तो काफ़िर ही मरें। और जब कोई सूरत नाज़िल होती है के तुम अल्लाह पर ईमान लाओ, और उसके रसूल के साथ होकर लड़ाई करो तो उनमें से दौलतमंद आपसे इजाज़त मांगते हैं और कहते हैं के हमें रहने दीजिये के जो घरों में रहेंगे हम भी उनके साथ रहेंगे। ये इस बात से .खुश होते हैं के औरतों के साथ घरों में बैठ जायें, और उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई है, जिससे वो समझते ही नहीं। (9:73-87)

وَ جَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ
لَهُمْ وَ قَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ
سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿۹۰﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَ لَا عَلَى
الْمَرْضٰى وَ لَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا
يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ
مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَ اللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۱﴾ وَّ لَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ
اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ
اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۪ تَوَلَّوْا وَّ اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ

और चन्द देहीती बहानेबाज़ भी माज़रत के लिये आये, के (घर पर रहने की) इजाज़त दी जाये, और वो तो बिलकुल घर पर बैठे रह गए, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से झूट बोला था, उनमें जो काफ़िर रहेंगे उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है। ज़ईफ़ों पर कोई गुनाह नहीं है, या बीमारों पर, और ना उन पर जो खर्च नहीं उठा सकते, जबके ये अल्लाह और उसके र सूल के मुख़्लिस हैं, उन नेकूकारों पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, और बड़ा ही रहम वाला है। और ना उन लोगों पर कोई इल्ज़ाम है, जो आपके पास इसलिये आते हैं, के आप उनको सवारी दें आप उनसे कह दीजिये के मेरे पास तो कोई चीज़ नहीं है, जिस पर मैं तुमको सवार कर दूं तो वो वापस चले जो हैं, इस हाल

مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا
يُنْفِقُوْنَ ؕ﴿۹۲﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ
يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ
يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۳﴾ يَعْتَذِرُوْنَ
اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا
تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ
مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَ سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ
رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾
سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا
عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾
يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا
عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾

में के उनकी आंखों से आंसू जारी हैं के अफ़सोस उनको कोई चीज़ नहीं मिली खर्च करने को। पस इल्ज़ाम तो सिर्फ़ उन पर है के जो बावजूद ये के सामान भी रखते हैं (और क़ुव्वत भी) फ़िर भी वो (घर में रहने की) इजाज़त मांगते हैं वो लोग ख़ाना नशीन औरतों के साथ रहने पर राज़ी हैं, और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है, जिससे वो नहीं जानते। ये लोग आपसे उज्ज़ करेंगे जब आप उनके पास वापस जायेंगे तो आप ये कहें के उज्ज़ मत करो। हम हरगिज़ तुम्हारी बात ना मानेंगे, अल्लाह ने हमको तुम्हारी सब ख़बरें दे दी हैं, और अभी अल्लाह और उसके रसूल तुम्हारे अमलों को और देखेंगे फ़िर तुम ग़ायब हाज़िर के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ़ लौटाये जाओगे तो वो तुमको बता देगा जो अमल तुम करते थे। वो अब तुम्हारे सामने अल्लाह की क़सम खायेंगे जब तुम उनके पास लौट कर जाओगे ताके तुम उनसे दरगुज़र कर दो, तुम उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात ना करना, ये नापाक हैं, और उनका ठिकाना दोज़ख है, ये उन कामों का बदला है जो ये करते रहे थे। ये तुम से क़सम खायेंगे ताके तुम उनसे ख़ुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उनसे ख़ुश हो जाओगे तो अल्लाह तो ऐसे नाफ़रमानों से ख़ुश नहीं होता।

(9:90-96)

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ
تَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ
حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ
لَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ
يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ
اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ

और उनमें वो भी हैं जो मस्जिद बनाते हैं (महज़ मुसलमानों को) नुक़सान पहुंचाने के लिये, और कुफ़्र करने के लिये, और मोमिनीन में तफ़र्रूक़ा डालने के लिये, और जो अशख़ास अल्लाह और रसूल से पहले जंग कर चुके हैं, उनके लिये घात की जगह बनाने के लिये, और क़समें खायेंगे के हमारा मक़सद तो भलाई था, मगर अल्लाह गवाही देता है के वो झूटे हैं। आप उस मस्जिद में कभी ना खड़े हों, अलबत्ता वो मस्जिद जिस की बुनियाद

أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ۚ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ أَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۚ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ۗ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

अव्वल दिन से तक़वे पर ही रखी गई हो वो इस लायक़ है के आप उसमें नमाज़ के लिये खड़े हों, उसमें ऐसे आदमी हैं जो पाकी को पसंद करते हैं और अल्लाह .ख़ूब पाक रहने वालों को पसंद करता है। फ़िर आया वो श.ख़्स बेहतर है, जिसने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह से डरने पर और अल्लाह की .ख़ुशनूदी के लिये रखी हो या वो श.ख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी घाटी के किनारे पर जो गिरने वाली हो, रखी हो फ़िर वो इमारत उसको लिये दोज़ख की आग में गिर पड़े, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को समझ नहीं देता। (9:107-109)

وَ إِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ إِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾ وَ إِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓأَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ يَسْتَأْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ إِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَ مَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ إِنْ يُّرِيْدُوْنَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَ لَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ إِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْأَدْبَارَ ۚ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا ﴿١٥﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَ إِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَ

और जब मुनाफ़िक़ और वो लोग जिनके दिलों में बीमारी थी कहने लगे के .ख़ुदा और उसके रसूल ने हमसे महज़ धोके का वादा किया था। और जब उनमें से एक जमात कहती थी के ऐ यसरब वाले! यहां तुम्हारे ठहरने की कोई जगह नहीं, तुम घरों को वापस चलो, और उनमें से एक गिरोह रसूल से इजाज़त मांग रहा था ये कह कर के हमारे घर खुले पड़े हैं, हालांकि वो खुले नहीं थे, वो तो सिर्फ़ भागना चाहते थे। अगर उन पर फ़ौजें मदीने के अतराफ़ से हमला आवर होतीं, और उनसे कुफ़्र का मुतालबा करतीं तो बहुत तवकुफ़ के बाद उनकी .ख़्वाहिश पूरी कर देते। हालांके वो पहले अल्लाह से इक़रार कर चुके थे के पीठ ना फ़ेरेंगे, और अल्लाह से जो इक़रार किया जाता है उसकी (ज़रूर) पुरसिश होगी। आप कह दीजिये के अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो तो तुम को भागना कोई फ़ायदा नहीं दे सकता, और उस वक़्त तुम बहुत ही कम फ़ायदा उठाओगे। आप कह दें के अगर अल्लाह तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे तो कौन तुम को उससे बचा सकता है, या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे तो कौन उसको हटा सकता है,

بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَ لَا
يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا
نَصِيْرًا ﴿۱۷﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ
مِنْكُمْ وَ الْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ
وَ لَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۸﴾ اَشِحَّةً
عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِیْ
يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ
الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً
عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ
اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿۱۹﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ
يَذْهَبُوْا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ
اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ
اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَ لَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿۲۰﴾

और ये लोग अल्लाह के सिवा किसी को ना अपना दोस्त पायेंगे और ना मददगार। अल्लाह तो तुम में उन लोगों को भी जानता है जो मना करते हैं और अपने भाईयों से कहते हैं, हमारे पास चले आओ, और लड़ाई में नहीं आते, मगर बहुत ही कम। तुम्हारे बारे में वो बुख़्ल करते हैं, फ़िर जब डर का वक़्त आए तो तुम उनको देखो के तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं उनकी आंखें फिर रही हैं जैसे किसी को मौत से ग़शी तारी हो जाती है, फ़िर जब ख़ौफ़ जाता रहे तो तेज़ ज़बानों से तुम्हारे बारे में ज़बान दराज़ी करें माल पर हिर्स लिये हुए, ये लोग (दरअसल) ईमान ही नहीं लाये, तो अल्लाह ने उनके आमाल बर्बाद कर दिये, और ये अल्लाह के लिये आसान है। ये ख़्याल करते हैं के फ़ौजें नहीं गईं, और लश्कर आ जायें तो तमन्ना करें के गंवारों में जाकर रहें (और) तुम्हारी खबर पूछा करें, और अगर वो तुम्हारे दरमियान हों तो लड़ाई ना करें मगर बहुत कम। (33:12-20)

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ لَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ
فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّ ذُكِرَ فِيْهَا
الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿۲۰﴾ طَاعَةٌ وَّ قَوْلٌ
مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا
اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿۲۱﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ

और मोमिन लोग कहते हैं के जिहाद की कोई सूरत क्यों नाज़िल नहीं हुई, लेकिन जब कोई साफ़ साफ़ सूरत नाज़िल होती है और उसमें जिहाद का ज़िक्र हो तो तुम देखोगे के जिनके दिलों में निफ़ाक़ की बीमारी है वो आपकी तरफ़ इस तरह देखेंगे जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी तारी हो रही है तो उनके लिये खराबी ही ख़राबी है। फ़रमांबर्दारी, और पसंदीदा बात (ये दोनों बातें बड़ी) अच्छी हैं, फ़िर जिहाद की बात पुख़्ता हो जो तो ये लोग अगर अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिये

إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَ
تُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

बेहतर होता। मुनाफ़िक़ों! तुम से तो कोई चीज़ बईद नहीं है, अगर तुम को हाकिम बना दिया जाये तो मुल्क में .खराबी फ़ैला दो और अपने रिश्तों को भी तोड़ डालो। (47:20-22)

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ
لَهُمْ ۖ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا
لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي
بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

25. जो लोग राहे हिदायत ज़ाहिर होने के बाद पीठ देकर फ़िर गए तो शैतान ने उनको ये फ़िरना अच्छा करके दिखा दिया, और दूर के वादे दिये। ये इसलिये हुआ के जो लोग अल्लाह की उतारी हुई किताब को नापसंद करते हैं, उनसे उन्होंने कहा के बाज़ बातों में हम तुम्हारी बात मानेंगे और अल्लाह .खूब जानता है उनकी .खुफ़िया बातें करने को। (47:25-26)

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ
لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَاءُ
لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ ۚ وَ
لَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

क्या जिन लोगों के दिलों में मर्ज़ है वो ये .ख्याल करते हैं के अल्लाह उनके उन कीनों को कभी ज़ाहिर ना करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको आपको दिखा भी देते, तो आप उनको उनके हुलिये से ही पहचान लेते, और आप उनको उन के तर्ज़े गुफ्तगू से ज़रूर पहचान लेंगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल से .खूब वाक़िफ़ हैं। (47:29-30)

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ
شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَ أَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ
لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي
قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ
نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ

और पीछे रहने वाले देहाती आपसे कहेंगे हमको हमारे मालो अयाल ने फ़ुरसत ना लेने दी, आप हमारे लिये माफ़ी की दुआ कीजिये, ये लोग ज़बान से वो बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं हैं, आप फ़रमा दीजिये के वो कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिये किसी चीज़ का इ.ख्तियार रखता है, अगर अल्लाह तुम को कोई नुक़सान पहुंचाना चाहे या कोई नफ़ा देना चाहे, बल्के अल्लाह तुम्हारे आमाल से .खूब वाक़िफ़ है। बल्के तुमने ये गुमान किया के रसूल और मोमिन अपने घर वालों में

الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا
وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ
السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ﴿۱۲﴾

कभी लौट कर ना आयेंगे, और ये बात तुम्हारे दिलों को भी अच्छी लगी थी और तुम ने बुरे गुमान किये थे, और तुम बर्बाद होने वाले बन गए। (48:11-12)

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى
مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ
تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا
يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ
الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ
شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ
تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ
تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ
عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾

जो लोग पीछे रह गए थे वो अनक़रीब कहेंगे जब तुम लोग ग़नीमतें लेने चलोगे, के हमको इजाज़त दीजिये के हम तुम्हारे साथ चलें, वो चाहते हैं के अल्लाह के हुक्म को बदल डालें, आप फ़रमा दीजिये, तुम हमारे साथ हरगिज़ नहीं चल सकते, अल्लाह ने पहले ही से यूं ही फ़रमा दिया है, तो वो कहेंगे बल्के तुम हमसे हमद करते हो, बल्के ये लोग ख़ुद बहुत कम बात समझते हैं। जो देहाती पीछे रह गए थे उनसे कह दीजिये के जल्द एक सख़्त जंगजू क़ौम से लड़ाई के लिये तुम बुलाये जाओगे, उनसे तुम जंग करते रहोगे, या वो मतीइ हो जायेंगे, अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम को अच्छा बदला देगा, और अगर मुंह फ़ेर लोगे, जैसे पहली बार किया था तो वो तुमको दर्दनाक अज़ाब देगा। (48:15-16)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ لَا نُطِيْعُ
فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ
لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ
مَعَهُمْ ۚ وَ لَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ
لَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا
يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲﴾

क्या तुम ने उन मुनाफ़क़ीन को नहीं देखा जो अपने काफ़िर भाईयों से जो अहले किताब हैं कहा करते हैं, के अगर तुम निकाल दिये गए तो हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे, और हम तुम्हारे बारे में कभी किसी की बात नहीं मानेंगे, और अगर तुम से जंग हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, मगर अल्लाह गवाह है के ये झूटे हैं। अगर वो निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं चलेंगे और अगर उनसे जंग हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे, और अगर उनकी मदद भी की तो पीठ फ़ेर कर भाग जायेंगे, फ़िर उनको (किसी से भी) मदद ना मिलेगी। (59:11-12)

ऐ नबी! जब मुनाफ़िक़ लोग आपके पास आते हैं तो कहते हैं के हम गवाही देते हैं के आप यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है के हक़ीक़त में तुम उनके पैग़म्बर हो, लेकिन अल्लाह गवाह है के मुनाफ़िक़ झूट लोग हैं। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, फ़िर ये अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, यक़ीनन ये काम बुरा है जो वो करते हैं। ये इसलिये है के (पहले तो) ये ईमान लाये फ़िर काफ़िर हो गए तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई, सो अब ये समझते ही नहीं। और जब तुम उनके मुतनासिब आज़ा को देखते हो तो उनके जिस्म तुम्हें क्या ही अच्छे मालूम होते हैं, और जब वो गुफ़्तगू करते हैं तो तुम उनकी तक़रीर को तवज्जह से सुनते हो तो गोया ये लकड़ियां हैं जो दीवारों से लगा दी गई हैं (बुज़दिल ऐसे के) हर ज़ोर की आवाज़ को बला समझें यही दुश्मन हैं इनसे डरें, अल्लाह इन को हलाक करे, ये किधर भटके फ़िरते हैं। और जब उनसे कहा जाये के आओ रसूल के पास चलें, या तुम्हारे लिये दुआए मग़फ़िरत कर देंगे तो सर हिला देते हैं और तुम उनको देखो के वो तकब्बुर करते हुए मुंह फ़ेर लेते हैं। तुम उनके हक़ में दुआए मग़फ़िरत मांगो उने लिये बराबर है, अल्लाह उनको हरगिज़ ना बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमानों को हिदायत नहीं दिया करता। यही हैं वो लोग जो कहते हैं के जो लोग अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं उन पर कुछ ख़र्च ना करो, यहां तक के वो ख़ुद बख़ुद भाग जायें, हालांके आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के पास हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ समझते ही नहीं। वो कहते हैं के अगर लौट कर मदीने पहुंचे तो इज़्ज़त वाले ज़लील लोगों को वहां से निकाल बाहर करेंगे हालांके इज़्ज़त तो ख़ुदा की है और उसके रसूल की, और मोमिनों की है, लेकिन मुनाफ़िक़ लोग नहीं जानते। (63:1-8)

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ
لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَ
اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ ﴿۱﴾
اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا
فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَ
اِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَ اِنْ
يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ
مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ
هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَ
رَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَ هُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾
سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۶﴾ هُمُ
الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَ لِلّٰهِ خَزَآئِنُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا
يَفْقَهُوْنَ ﴿۷﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى
الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ
وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ
لٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۸﴾

अरब के देहाती (बद्दू)

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ
لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ
سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝٩٠

और चन्द देहीती बहानेबाज़ भी माज़रत के लिये आये, के (घर पर रहने की) इजाज़त दी जाये, और वो तो बिलकुल घर पर बैठे रह गए, जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से झूट बोला था, उनमें जो काफ़िर रहेंगे उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है। (9:90)

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ
اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٩٧ وَمِنَ
الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ
يَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ
السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٩٨ وَمِنَ
الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَ
صَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ
سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٩٩

देहाती लोग सख़्त काफ़िर और सख़्त मुनाफ़िक़ हैं और इस लायक़ हैं के जो अहकामे शरीयत अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किये हैं, वो उनसे वाक़िफ़ ना हों, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला, बड़ी हिकमतों वाला है। और बाज़ देहाती जो खर्च करते हैं वो इसका तावान ख़्याल करते हैं, और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों के मुन्तज़िर हैं, उन्हीं पर बड़ी मुसीबत पड़ने वाली है, और अल्लाह तो ख़ूब सुनने वाला है और ख़ूब जानने वाला है। और बाज़ देहाती वो हैं जो अल्लाह पर और रोज़े आखिरत पर ईमान रखते हैं और वो जो ख़र्च करते हैं उसका अल्लाह की क़ुर्बत और रसूल की दुआ का ज़रिया ख़्याल करते हैं, देखो! वो बिलाशुबह उनके लिये मौजिबे क़ुर्बत है, अनक़रीब अल्लाह उनको अपनी रहमत में दाख़िल कर लेगा, बिला शुबह अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा ही रहम वाला है। (9:97-99)

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ
وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى
النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ
سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى
عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝١٠١

और चन्द देहाती तुम्हारे गिर्दोपेश वाले और कुछ मदीना वाले, कटटर मुनाफ़िक़ हैं, आप उनको नहीं जानते, उनको हम जानते हैं, हम उनको बहुत जल्द दोहरी सज़ा देंगे, फ़िर (आख़िरत में) वो बड़े अज़ाब की तरफ़ भेजे जायेंगे। (9:101)

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَ مَنْ حَوْلَهُمْ
مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ
وَ لَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّ لَا نَصَبٌ وَّ لَا
مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا
يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَ لَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا
اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ لَا يُنْفِقُوْنَ
نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً وَّ لَا يَقْطَعُوْنَ
وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ
اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

मदीना वालों और उनके आसपास देहात के रहने वालों के लिये ये मुनासिब ना था के अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें और ना ये अपनी जानों को उनकी जान से .ज्यादा अज़ीज़ जानें, ये इसलिये के अल्लाह कीराह में जो तकलीफ़ पहुंचती है प्यास की, या मेहनत और भूक की, या वो ऐसी जगह चले जाते हैं के काफ़िरों को ग़ुस्सा आ जाए, या दुश्मनों से कोई चीज़ लेते हैं तो हर बात पर उनके लिये अमल नेक लिखा जातो है, बिला शुबह अल्लाह नेकोकारों का कोई अज्र ज़ाये नहीं करता। और नीज़ ये के जो उन्होंने खर्च किया छोटा या बड़ा और जो मैदान उन्होंने तय किये, ये सब भी उनके नाम (नेकियों में) लिखा गया ताके अल्लाह उनको उनके कामों का अच्छा बदला दे। (9:120-121)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ
اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ
اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ
اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ
مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾

जो देहाती पीछे रह गए थे उनसे कह दीजिये के जल्द एक सख़्त जंगजू क़ौम से लड़ाई के लिये तुम बुलाये जाओगे, उनसे तुम जंग करते रहोगे, या वो मतीइ हो जायेंगे, अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम को अच्छा बदला देगा, और अगर मुंह फ़ेर लोगे, जैसे पहली बार किया था तो वो तुमको दर्दनाक अज़ाब देगा। (48:16)

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ
لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا يَدْخُلِ
الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ

ये देहाती कहते हैं के हम ईमान ले आये, कह दो के तुम ईमान नहीं लाये, बल्के यूं कहो, हम इस्लाम लाये हैं, और ईमान तो हनूज़ तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबर्दारी करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ कमी नहीं करेगा, बिला शुबह अल्लाह बख़्शने वाला रहम वाला है। पूरे मोमिन तो वो हैं जो अल्लाह और

उसके रसूल पर ईमान लाये, फ़िर शक में ना पड़ें और अल्लाह की राह में अपने मालो जान से जिहाद करें, यही लोग सच्चे हैं। (49:14-15)

يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۱۵

मुशरिकों (बहुदेववादियों) को काबा की परिक्रमा से रोकना और मुसलमानों से किए गए वायदे को पूरा न करने पर उनका सार्वजनिक बहिष्कार

अल्लाह और उसके रसूल की जानिब से उन मुशरिक़ीन से दस्तबर्दारी है जिनसे तुमने (बिला ताईय्यने मुद्दत) अहद कर रखा था। सो तुम चार महीने उस सर ज़मीन में चल फ़िर लो, और जान लो के तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते, और ये भी जान लो के बिला शुबह अल्लाह काफ़िरों को रूस्वा करेगा। और अल्लाह व रसूल की तरफ़ से बड़े हज की तारीख़ों मे आम लोगों के सामने ये एलान किया जाता है के अल्लाह और उसके रसूल मुशरिक़ीन से दस्तबर्दार हैं, पस अगर तुम कुफ़्र से तौबा कर लो तो वो तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुमने (इस्लाम से) एराज़ किया तो ये समझ लो के तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते हो, और काफ़्रीन को दर्दनाक अज़ाब की ख़बर दे दो। हां मगर वो मुशरिक़ीन इससे मुसतसना हैं जिनसे तुम ने अहद कर रखा है, फ़िर उन्होंने तुम्हारे साथ ज़रा भी कमी नहीं की, और ना तुम्हारे मुक़ाबले मं किसी की मदद की, सा उनके मुआहेदे को उनकी मुद्द तक पूरा करो बेशक अल्लाह बदअहदी से परहेज़ करने वालों को पसंद फ़रमाता है। पस जब अशहरे हुरूम गुज़र जावें तो उस वक़्त उन मुशरिक़ीन को जहां पाओ मारो, पकड़ो, बांधो, और दाव घात हर मौक़े पर उनकी ताक में बैठे रहो, फ़िर अगर वो (कुफ़्र से) तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने लगें और

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۱ؕ فَسِيْحُوْا فِي
الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّ اعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي
الْكٰفِرِيْنَ ۲ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى
النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ
مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۳ اِلَّا الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ
يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّ لَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ
اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى
مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۴ فَاِذَا
انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ

خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ
كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥ وَ اِنْ اَحَدٌ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى
يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦ كَيْفَ يَكُوْنُ
لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عِنْدَ
رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا
لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧ كَيْفَ وَ
اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا
وَّ لَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ
تَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَ اَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨
اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝٩ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّ لَا
ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝١٠ فَاِنْ
تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ
فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝١١ وَ اِنْ نَّكَثُوْۤا اَيْمَانَهُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
فَقَاتِلُوْۤا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَاۤ اَيْمَانَ
لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝١٢

ज़कात देने लगें, तो उसका रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला और बड़ा ही रहम करने वाला है। और अगर कोई मुशरिक़ आप से पनाह चाहे तो आप उसको पनाह दे दीजिये यहां तक के वो कलामे इलाही सुन ले, फ़िर उसको अमन की जगह पहुंचा दीजिये, ये इसलिये है के वो लोग इल्म नहीं रखते। अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक मुशरिक़ीन का अहद कैसे क़ायम रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने अहद लिया है, मस्जिद हराम के नज़दीक, तो जब तक वो तुम से सीधे रहें तुम उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह डरने वालों को अज़ीज़ रखता हैं क्योंकर अहद यिका जाए उनसे जो अगर तुम पर ग़ल्बा पा लें तो ना वो क़राबत का लिहाज़ करते हैं और ना किसी अहद का, मुंह से तो तुम को ख़ुश करते हैं, लेकिन दिल से उन बातों को क़बूल नहीं करते और अक्सर उनमें नाफ़रमान हैं। ये अल्लाह की आयात के बदले थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करते हैं, तो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं, यही हैं जो बुरा काम करते हैं। मोमिन के बारे में तो ना रिश्तेदारी का लिहाज़ करते हैं और ना अहद ही का, और ये लोग हद से आगे बढ़ने वाले हैं। फ़िर अगर ये तौबा कर लें और नमाज़ के पाबंद हो जायें और ज़कात देने लगें तो वो तुम्हारे दीनी भाई हैं और समझदारों के लिये हम अपनी आयात साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अगर ये काफ़िर अहद करने के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन पर तान करें तो तुम इन पैशवायाने कुफ़्र से इस इरादे से लड़ो के ये बाज़ आ जायें, क्योंके इस सूरत में उनकी क़समें नहीं रहीं।

(9:1-12)

क़ुरआन की आयतों से यह स्पष्ट है कि लड़ाई मुसलमानों ने शुरू नहीं की थी और न ही वो लड़ाई को पसन्द करते थे। इसके विपरीत, इसके बावजूद कि उन्हें दमन व उत्पीड़न के ज़ोर पर अपने घर बार छोड़ कर निकल जाने पर मजबूर कर दिया गया, मुसलमान उन लोगों से लड़ाई से बचते हुए लगते हैं जिन्होंने उन्हें निकल जाने पर मजबूर किया था (उदाहरण के लिए देखें 2:216; 4:74-77; 8:7,15-16)। लेकिन क़ुरैश इस बात को नहीं भूले कि मुहम्मद सल्ल. उनकी तमाम साज़िशों और योजनाओँ को विफ़ल करते हुए मक्का से सही सलामत निकल जाने में कामयाब हो गए थे और उन्हें यसरिब में शरण मिल गयी थी। जबकि अल्लाह के पैग़म्बर अपने तौर पर जिस बात को नहीं भुला सके वह यह थी कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल ने अल्लाह की इबादत का जो घर बनाया था वहां मूर्तियां रखी हुई थीं और लोग अल्लाह के बजाए या अल्लाह के साथ उन मूर्तियों को पूजा करते थे, और यह बात कि मक्का में जो कि तौहीद का एक प्राचीन केन्द्र था उन लोगों का बर्चस्व और ज़ोर था जो मूर्ति पूजा के समर्थक थे। उन लोगों ने एक अल्लाह पर ईमान लाने वालों को सताया और उनको उस बस्ती से निकल जाने पर मजबूर कर दिया था।

यसरिब को जिसका नाम पैग़म्बर साहब के वहां पहुंच जाने के बाद ''मदीनतुन नबी'' (पैग़म्बर का शहर) पड़ गया था, अपनी भौगोलिक स्थिति के चलते एक ख़ास महत्व प्राप्त था। यह मक्का के उत्तर में मक्का से सीरिया जाने वाले राजमार्ग के क़रीब स्थित था। मुसमलानों ने इस स्थिति से फ़ायदा उठाने का सोचा और मक्का में इस्लाम लाने वालों पर ज़ुल्म करने या मदीना के मुसलमानों के ख़िलाफ़ उग्र उपाय करने से मक्का वालों को रोकने के लिए उन पर दबाव बनाने की रणनीति अपनाई। चुनांचि सीरिया से मक्का आने वाले एक क़ाफ़ले का रास्ता रोकने की योजना पैग़म्बर साहब ने बनाई जिसके नतीजे में हिजरत के दूसरे साल (624 ईसवी में) मुसलमानों और क़ुरैशी काफ़िरों के बीच बद्र के कुंवे के पास एक लड़ाई हुई, लेकिन कारवां बच कर निकल गया। मगर जब यह लड़ाई लड़ना ज़रूरी हो गया तो कुछ मुसलमान इससे ख़ुश नहीं दिखे। फिर भी इस लड़ाई में मुसलमानों को विजय प्राप्त हुई जिसकी बदौलत उनका मनोबल बढ़ गया।

क़ुरआन कहता है कि बद्र की लड़ाई में मुसलमानों को अल्लाह ने फ़रिशतों के द्वारा मदद दी, लेकिन क़ुरआनी आयतें इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं कि वो फ़रिशते वास्तव में लड़े, इन आयतों से यह इशारा मिलता है कि फ़रिशतों की भूमिका ईमान वालों को नैतिक और अध्यात्मिक रुप से सशक्त करने तक सीमित थी (देखें 3:126; 8:10)। ये शब्द कि ''उनके सर मार (कर) उड़ा दो और उनका पोर पोर मार (कर तोड़) दो'' निश्चित रूप से अल्लाह की तरफ़ से फ़रिशतों को दिया गया आदेश नहीं है, बल्कि फ़रिशतों के द्वारा मोमिनों को अल्लाह का पैग़ाम हो सकता है कि वो अपने दुशमनों पर हर पहलू से चोट लगाएं और उन्हें पूरी तरह तहस

नहस कर दें। इस स्थिति में फ़रिशतों की भूमिका केवल मोमिनों को शक्ति देने, उनको जमाए रखने और लड़ाई में उनका उत्साह वर्धन करने तक सीमित हो सकता है। यही व्याख्या अल्लाह के नियमों के अनुसार है:"जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उनकी गर्दनें उड़ा दो यहां तक कि जब ख़ूब क़त्ल कर चुको तो (जो जीवित पकड़े जाएं उनको) मज़बूती से क़ैद कर लो फिर उसके बाद या तो अहसान रख कर छोड़ देना चाहिए या कुछ माल लेकर यहां तक (दूसरा पक्ष) लड़ाई के हथियार (हाथ से) रख दे, यह (आदेश याद रखो) और अगर अल्लाह चाहता तो (और तरह) इनसे बदला लेलेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी परीक्षा एक (को) दूसरे से (लड़वाकर) करे और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए उनके कर्मों को अल्लाह व्यर्थ नहीं करेगा" (47:7)।

बद्र की लड़ाई में मुसलमानों की विजय और मक्का के मुशरिकों की हार ने मुशरिकों को बदले की आग से भर दिया और नतीजे के तौर पर उन्होंने बदला लेने के लिए उहुद पहाड़ के दामन में आ कर डेरे डाल दिए, जिसके बाद हिजरत के तीसरे साल (625 ईसवी में) उहुद की मशहूर लड़ाई हुई। इस जंग में शुरू में तो मुसलमानों का पलड़ा भारी रहा लेकिन जीत की ख़ुशी में मुसलमानों की एक टुकड़ी पैग़म्बर साहब के निर्देश को भूल बैठी और मोर्चे की जगह छोड़ कर माल-ए-ग़नीमत (दुशमन का छोड़ा हुआ माल) समेटने में शामिल हो गई। इससे दुशमन फ़ौज की एक टुकड़ी को मौक़ा मिल गया और मोर्चे की जगह को ख़ाली देख कर उसने उध ार हमला कर दिया जिससे मुसलमानों को नुक़सान हुआ। बद्र की जीत और उहुद के नुक़सान को क़ुरआन में मुसलमानों के लिए नसीहत वाले अंदाज़ (उपदेश पूर्ण शैली) में प्रस्तुत किया गया है (13:121-129,137-160,165-175,179)।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में वहां के विभिन्न गुटों और क़बीलों के साथ मामलों के लिए जो समझौता किया था उसमें मदीना के यहूदियों के अधिकारों का ख़ास ध्यान रखा गया था और उन यहूदियों से इस बात की अपेक्षा की जाती थी कि वो अकेले अल्लाह की इबादत के पैग़ाम को ज़्यादा बहतर ढंग से समझेंगे मक्का के मुशरिक क़रैश के लोगों की तुलना में। पैग़म्बर साहब अल्लाह की इबादत के लिए जिस दिशा में खड़े होते थे वो यरूशलम में स्थित बैतुल मक़दिस की दिशा थी, और उन्होंने पहले के आसमानी पैग़ामों में मौजूद समान बातों पर ज़ोर दिया, और ख़ास तौर से हज़रत इब्राहीम की शिक्षाओं तथा अहले किताब के अक़ीदों में शामिल समान बातों पर ज़ोर दिया। लेकिन मदीना के यहूदियों ने यह सोचा कि मुहम्मद सल्ल. जैसे किसी व्यक्ति का कोई भविष्य नहीं है कि जिन्होंने ख़ुद अपने क़बीले में फूट डाल दी और अपने क़बीले के सरदारों और उनके पीछे चलने वाले लोगों से झगड़ा मोल लिया हुआ है। इस तरह उन्होंने मुहम्मद सल्ल. को अरब में "तौहीद" के एक ऐसे चिराग़ (दीपक) के रूप में नहीं देखा कि जिस का सभी तौहीद का अक़ीदा रखने वाले

समर्थन करें, बल्कि उन्होंने अरब के लोगों और उनके बीच आने वाले पैग़म्बर के बजाए स्वयं को ही एक अल्लाह पर ईमान रखने वाले सच्चे और अल्लाह के चुने हुए बन्दे समझा।

इस अभिमान और घमण्ड ने उनके दिलों में पैग़म्बर साहब की दुशमनी को बढ़ाया और वो मुहम्मद सल्ल. और उनके संदेश के सहायक बनने के बजाए क़ुरैश के बहुदेववादियों के समर्थक और सहायक बन गए। इस तरह के वातावरण में यहूदी क़बीले 'बनू क़ैनक़ाअ' और मुसलमानों के बीच टकराव शुरु हुआ और बद्र की लड़ाई के बाद मुसलमानों ने 'बनू क़ैनक़ाअ' का घेराव कर लिया और फिर उन्हें मदीना से बाहर चले जाने के लिए मजबूर कर दिया गया। ऐसा ही अंजाम उहुद की लड़ाई के बाद एक अन्य यहूदी क़बीले 'बनू नज़ीर' का हुआ।

उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को नुक़सान पुहंचाने के बाद क़ुरैश के लोगों ने सोचा कि यह मौक़ा अच्छा है कि मुहम्मद साहब और उनके अनुयायियों के विरुद्ध एक और निर्णायक हमला किया जाए ताकि मुहम्मद सल्ल. और मुसलमानों का अन्त ही हो जाए। चुनांचि उन्होंने कुछ बद्दू क़बीलों को उकसाया और इसके लिए तैयार किया कि वो उनके साथ मिल कर मदीना पर चढ़ाई करें। इस स्थिति ने मदीना के मुनाफ़िक़ों और यहूदी क़बीले 'बनू क़ुरैज़ा' को भी मौक़ा दिया कि वो मदीना के अन्दर से मुसलमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करें। इस तरह मुसलमानों को हिजरत के पांचवे साल (626 ई. में) बहुत से अलग अलग दुशमनों और गुटों ("अहज़ाब") की संयुक्त फ़ौज के हमले का मुक़ाबला करना पड़ा। इस ख़तरनाक स्थिति में मुसलमानों ने एक ख़ास तरह की रक्षात्मक रणनीति अपनाई क्योंकि उनके पास इतनी संख्या नहीं थी कि दुशमनों की इतनी बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला मदीना के बाहर खुले मैदान में कर पाते। उन्होंने अपनी रक्षात्मक सीमाओं को मज़बूत करने के लिए मदीना के बाहर के खुले मैदान में एक लम्बी चौड़ी खाई खोद दी। यह विचार एक फ़ार्सी (ईरानी) मुसलमान हज़रत सलमान फ़ार्सी ने दिया था क्योंकि इस तरह की तदबीर अरब में कभी किसी ने स्तेमाल नहीं की थी। अतःआक्रमणकारी अरबों के लिए भी यह एक नई तरह की स्थिति थी और वो खाई के उस पार ही रुके रहने पर मजबूर हो गए क्योंकि खाई के दूसरी तरफ़ मुसलमानों की रक्षात्मक क़तार को तोड़ना उनके लिए आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने वहीं पड़ाव डाल दिया और मौक़े का इंतेज़ार करते रहे इस उम्मीद पर कि मुसलमान आख़िरकार घेराबन्दी से मजबूर हो कर ख़ुद ही बाहर निकल कर लड़ाई करने पर मजबूर होंगे। लेकिन उनकी उम्मीद पूरी नहीं हो रही थी और पड़ाव लम्बा होता जा रहा था जबकि मुसलमान .ढ़ता से मोर्चे पर डटे हुए थे, "जब तुम्हारे उपर और नीचे की तरफ़ से तुम पर चढ़ आए और जब आंखें फिर गयीं और दिल (डर के कारण) हलक़ तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के बारे में तरह तरह के गुमान करने लगे, वहां मोमिन आज़माए (परखे) गए और ज़ोर से हिलाए गए" (33:10-11)। आख़िरकार मुसलमान अपनी अडिगता और जो कुछ भौतिक संसाधन उनके पास थे, तथा जो मानसिक स्थिति उस समय उनकी थी उसकी

बदौलत जीत गए और आक्रमणकारियों को पांव ख़ुद ही उखड़ गए:"जब फ़ौजें तुम पर (हमला करने को) आईं तो हम ने उन पर हवा भेजी और ऐसे लशकर (उतारे) जिन को तुम देख नहीं सकते थे" (33:9)।

आक्रमणकारियों ने जब अपना घेरा उठा लिया और छोड़ कर चले गए तो मुसलमानों ने बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ ध्यान दिया जिन्होंने मदीना के अन्दर से आक्रमणकारियों का साथ देने की कोशिश की थी। अल्लाह के पैग़म्बर ने उन्हें हथियार डालने पर मजबूर कर दिया और इस तरह मदीना में यहूदियों का आख़री गढ़ भी ख़त्म हो गया। इस लड़ाई ने जिसका सामना मुसलमानों ने कामयाबी से किया मुसलमानों का हौसला और आत्मविश्वास बढ़ाया। फिर छटी हिजरी (668 ई.) में अल्लाह के पैग़म्बर ने एक शान्तिपूर्ण मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक क़दम उठाया और काबा में 'उमरा' की इबादत करने के लिए मक्का की तरफ़ क़दम उठाया ताकि अल्लाह के पाक घर की परिक्रमा करें। यह एक बहुत ही युक्तिपूर्ण क़दम था जिसका नतीजा बराबर बराबर की जीत के रूप में निकला। अगर क़ुरैश काबा के तीर्थयात्रियों को काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करने के लिए मक्का में दाख़िल होने से रोकते तो यह उनके लिए बड़ी शर्मिन्दगी की बात होती और पूरे अरब में उनकी बदनामी होती और अरब वासियों को मुहम्मद सल्ल. से हमदर्दी हो जाती। और अगर क़ुरैश उन्हें आने की अनुमति दे देते तो इसमें भी उनकी नाक नीची होती थी। क़ुरैश ने यह फ़ैसला किया कि मुसलमानों को इस समय तो काबा की ज़ियारत (दर्शन) का मौक़ा न दें लेकिन अगले साल आने का वायद कर लें। इसके लिए उन्होंने मुसलमानों से एक समझौता किया। यह समझौता मक्का से बाहर "अलहुदैबिया" के स्थान पर हुआ जहां मुसलमानों ने पड़ाव डाला था। इस समझौते के अनुसार क़ुरैश ने मुसलमानों के साथ अगले दस साल के लिए युद्ध बंदी की एक सन्धि की और दोनों पक्ष इस बात पर राज़ी हुए कि दोनों अरब द्वीप में आज़ादी के साथ कहीं भी आ जा सकते हैं और दोनों ही पक्ष अरब के दूसरे क़बीलों को भी इस समझौते में शामिल होने का आग्रह करेंगे। कोई भी क़बीला दोनों में से किसी भी पक्ष के साथ गठबंधन कर सकता है और एक दूसरे से कोई दुशमनी नहीं करेगा।

यह एक ऐसा समझौता था जिसे क़ुरआन में "फ़तह मुबीन" (खुली हुई जीत) कहा गया (48:11), इस समझौते के अनुसार मुसलमानों को हालांकि काबा का तवाफ़ किए बिना वापस जाना पड़ा लेकिन इसके अन्तर्गत वो अगले साल काबा के दर्शन व परिक्रमा के लिए आ सकते थे। इस समझौते के नतीजे में अल्लाह के पैग़म्बर और उन पर ईमान लाने वाले मुसलमानों को क़ुरैश के द्वारा एक क़ानूनी अस्तित्व के रूप में स्वीकार कर लिया गया, और इस्लाम की तबलीग़ (प्रचार प्रसार) के लिए और समर्थकों व मित्रों को जोड़ने के लिए उनकी गतिविधियों को मंज़ूरी मिल गयी। इस तरह इस्लाम को अरब द्वीप में फलने फूलने का मौक़ा मिल गया।

लेकिन इस सन्धि व समझौते के बावजूद सन आठ हिजरी (630 ई.) में अल्लाह के पैग़म्बर के एक सहयोगी क़बीले 'बनू खज़ाआ' पर क़ुरैश ने हमला कर दिया। यह स्पष्ट रूप से हुदैबिया के समझौते का उल्लंघन था और क़ुरैश ने समझौता तोड़ा था, जिसकी वजह से पैग़म्बर सल्ल. ने मुसलमानों को साथ ले कर मक्का का रुख़ किया और बिना किसी प्रतिरोध के मक्का में दाख़िल हो गए। उस समय अल्लाह के पैग़म्बर ने एक आम मआफ़ी की घोषणा की और काबा में जो बुत रखे हुए थे उन्हें हटा कर काबा की पवित्रता को बहाल किया और जिस मक़सद के लिए हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल ने अल्लाह के इस घर का निर्माण किया था उस मक़सद के लिए उसको पवित्र किया। मक्का की इस जीत के बाद इस्लामी कारवां की धमक पूरे अरब में गूंज गयी और जहां कहीं भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई विरोध प्रतिरोध मौजूद था उसे हटाने के लिए क़दम उठाए गए और कुछ जगहों पर कुछ झड़पें और लड़ाइयां भी हुईं जिनमें अल्लाह के पैग़म्बर को विजय प्राप्त हुई जैसे कि हुनैन की लड़ाई।

इसके बाद 9 हिजरी (630 ई.) में पैग़म्बर साहब ने बाज़ेण्टाइन (रोम) साम्राज्य से मिलने वाली उत्तरी सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए उपाय किए। सीरिया में तबूक के स्थान पर ररुमी सेना के जमा होने की सूचना आप को मिली तो उस तरफ़ आगे बढ़े लेकिन वहां रुमी सेना से आपका सामना न हुआ अलबत्ता रोम साम्राज्य के आधीन रहने वाले ईसाई और यहूदी क़बीलों से आप ने शान्ति समझौते किए। तबूक चूंकि मदीना से बहुत दूर था इसलिए मुनाफ़िक़ीन (दिखावे के मुसलमान) और वो लोग जिनके दिलों में रोग था या जो अपनी आस्था में अभी कच्चे थे उन्होंने बहाने बनाना शुरू कर दिए और इस अभियान पर शक व आशंकाएं व्यक्त करने लगे। उन लोगों को सूरह तौबा में अल्लाह ने बेनक़ाब किया। अहले किताब के विरुद्ध अल्लाह के पैग़म्बर की लड़ाई (9:29) को केवल धार्मिक आधार पर होने वाली लड़ाई नहीं कहा जा सकता जैसा कि उपर की आयत से ज़ाहिर है। इसके बजाए इस आयत को क़ुरआन की अन्य उन आयतों से मिला कर देखना ज़रूरी है जो जिहाद के सम्बंध में आयी हैं। (देखें इस पुस्तक के अध्याय ''लड़ाईयां'' में 'लड़ाई के नियम')। मुहम्मद असद ने यह बिल्कुल सही बात लिखी है कि ''इस आयत को क़ुरआन के इस स्पष्ट सिद्धांत की रोशनी में देखना चाहिए कि लड़ाई की इजाज़त केवल आत्मरक्षा में दी गयी (जैसे 2:190-194), और इस लिए आयत का सम्बंध मुसलमानों की जमाअत या उनकी हुकूमत के विरुद्ध उग्र कार्रवाई की घटना से है, या उनकी सुरक्षा को होने वाले ख़तरे और धमकी से है।'' यही विचार मुहम्मद असद से पहले मुहम्मद अबदुहू भी व्यक्त कर चुके हैं। मुहम्मद अब्दुहू ने इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखा है कि ''इस्लाम में लड़ाई हक़ और हक़ पर चलने वालों की रक्षा के लिए अनिवार्य की गयी है .... अल्लाह के रसूल की सभी लड़ाईयां रक्षात्मक उद्देश्य से ही थीं, और बाद में शुरूआती युग में सहाबियों ने भी इसी उद्देश्य से लड़ाईयां कीं'' (तफ़सीर अलमनार ग:323)।

उन्होंने लिखा है कि "अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बर के द्वारा मना की गयी बात को मना न मानना ऐसा है जैसे अल्लाह पर ईमान न लाना। और बग़ैर उत्तेजना के लड़ाई करना ऐसी वर्जित बात है जो अल्लाह ने अपने सभी पैग़म्बरों के द्वारा लोगों पर वर्जित की है। अतःउपरोक्त आयत को अहले ईमान के लिए एक ऐसे आदेश के रूप में देखना चाहिए जो पहले आ चुकी आसमानी शिक्षाओं के उन तथाकथित अनुयायियों के विरुद्ध दिया गया जो क़ुरआन पर ईमान लाने वाले और उसका अनुसरण करने वाले लोगों को दमन व उत्पीड़न का निशाना बना कर ख़ुद अपनी आस्थाओं और शिक्षाओं का उल्लंघन कर रहे थे" (तफ़सीर अलमनार ग:338)।

जब इस्लाम अरब द्वीप में फैल गया तो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के लिए यह बात बिल्कुल जायज़ थी कि वो उन मुशरिक क़बीलों को वहां सहन न करें जिन्होंने मुसलमानों से किए हुए वचन को तोड़ दिया था, या मक्का में कुछ तीर्थयात्रियों को मुशरिकाना अमल (बहुदेववादी क्रियाएं) न करने दें जबकि काबा को बुतों से पाक कर दिया गया था और एक अल्लाह की इबादत के लिए उसे विशुद्ध कर लिया गया था। लिहाज़ा, 9वीं हिजरी (631 ई.) में इन दोनों कर्तव्यों का आदेश सूरत तौबा (सूरत नम्बर 9) में दिया गया और इस आदेश को सुनाने के लिए अल्लाह के रसूल ने हज़रत अबुबक्र को ज़िम्मेदारी दी कि हज के मौक़े पर अल्लाह के ये आदेश लोगों को सुना दें। सूरत तौबा की पांचवी आयतः"जब इज़्ज़त के महीने बीत जाएं तो मुशरिकों को जहां पाओ क़त्ल कर दो ..." को उसके परि.श्य और परिवेश से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। मुहम्मद असद ने लिखा है कि इस आयत में "क़ुरआन यह आदेश देता है कि अल्लाह के रास्ते में उन लोगों से लड़ो जो तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई पर उतारू हैं, लेकिन अपनी तरफ़ से ज़्यादती न करो कि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता" (2:190), और "अगर तुम से (लड़ने से) वो न रुकें और न तुम्हारी तरफ़ सन्धि (का संदेश) भेजें और न अपने हाथों को रोकें तो उनको पकड़ो और जहां पाओ क़त्ल कर दो उन लोगों के मुक़ाबले में हम ने तुम्हें (लड़ने के लिए) खुली सनद (छूट) देदी है (4 91)"। इस तरह असद इस बात को जताते हैं कि "लड़ाई की अनुमति केवल आत्मरक्षा के लिए है, और इस शर्त के साथ कि 'अगर वो बाज़ आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है' (2:192), और 'अगर वो (लड़ाई से) बाज़ आ जाएं तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं (करनी चाहिए)' (2:193)। जिन लोगों से मोमिनों की लड़ाई हो रही हो उनके इस्लाम में आने की सम्भावना को क़ुरआन की कई आयतों की रोशनी में सामने रखना चाहिए, 'जैसे दीन (इस्लाम) में ज़बरदस्ती नहीं है' (2:256), जो स्पष्ट रूप से यह सिद्धांत देती है कि ज़ोर ज़बरदस्ती से धर्म परिवर्तन की कोई भी कोशिश इस्लाम में मना है और मुसलमानों की तरफ़ से ऐसी मांग या अपेक्षा की सम्भावना को रद करती है कि पराजित सेना इस्लाम क़ुबूल कर ले" (दि मैसेज आफ़ क़ुरआन, आयत 9:5 का तफ़सीरी नोट नम्बर 9)।

इस दृष्टिकोण का समर्थन उन आयतों से भी होता है जिनमें उन लोगों को अलग कर दिया गया है जो अपनी वचनं पूरे करें :''अलबत्ता जिन मुशरिकों के साथ तुम ने समझौता किया हो और उन्होंने तुम्हारा किसी तरह का नुक़सान न किया हो और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो तो जिस अवधि तक उन के साथ समझौता किया हो उसे पूरा करो (कि) अल्लाह मुत्तकियों (नाफ़रमानी से बचने वालों) को दोस्तो रखता है'''(9:4), ''जिन लोगों के साथ तुम ने मस्जिद हरम (काबा) के नज़दीक समझौता किया है अगर वो (अपने वचन पर) टिके रहें तो तुम भी अपने वचन (पर) प्रतिब्द्ध रहो ''(9:79)।

अपने पैग़ाम और मिशन की कामयाबी के तौर पर अल्लाह के रसूल ने अपने जीवन का पहला और अकेला हज किया जिसे ''हज्जतुल विदा'' कहते हैं क्योंकि इसके कुछ दिन बाद ही 11 हिजरी (632 ई.) में आप इस दुनिया से परलोक सुधार गए। इस हज में अल्लाह के पैग़म्बर ने एक ख़ुत्बा ;अभिभाषणद्ध दिया जिसमें आपने इस्लाम के मौलिक सिद्धांतों को दोहराया और इस्लामी शिक्षाओं का निचोड़ प्रस्तुत किया। इसमें ख़ास तौर से इंसानों की एकता व समानता और महिलाओं का विशेष .ख्याल करने पर ज़ोर दिया गया।

मुनाफ़िक़त (ग़द्दारी और दोग़लापन) इंसानी इतिहास में एक जानी पहचानी बात है। इस्लाम और मुसलमान जब मक्का के उत्पीड़न के काल से निकल कर मदीना में आकर सत्ताधारी हुए तो उन लोगों में मुनाफ़िक़त (दोग़लेपन और दिखावा) ज़ाहिर हुआ जो इस्लाम के बर्चस्व के प्रभाव से किसी गम्भीर इच्छा के बग़ैर केवल देखा देखी में मुसलमान हो गए थे। ये मुनाफ़िक़ लोग ख़ास तौर से मदीना के मूलनिवासियों में हुए जो अपने देशावासियों के इस्लाम के प्रति समर्पण और मुहम्मद सल्ल. के यहां आने और फिर लोगों का सरदार बन जाने से कमज़ोर पड़ गए थे। इसके अलावा मुनाफ़िक़ अरब के उन अवसरवादी देहातियों (बद्दुओं) में सामने आए जिन्हें स्थायी रूप से निवास करके जीवन बिताने का मौक़ा अभी नहीं मिला था जिससे वो इस्लाम के पैग़ाम को गम्भीरता से सोच कर अपनाने योग्य बने होते, पैग़म्बर साहब की संगत में रहे होते और दैनिक जीवन में उनका मोमिनों के साथ मिलना जुलना रहा होता (9:101)।

मुनाफ़िक़ लोग अपने मुंह से अपने ईमान का इज़हार करते हैं और पीठ पीछे लोगों को सच्चाई के रास्ते से भटकाने के लिए सक्रिय रहते हैं, और वो सोचने समझने या अपनी मानसिकता बदलने को तैयार नहीं होते। उनके बुरे इरादे और उनका घमण्ड उनके दिल व दिमाग़ पर छाया रहता है और उन का एक ही उद्देश्य है कि इस्लाम और इस्लाम के पैग़म्बर को पराजित देखें। लेकिन उनके दिल इस आशंका से भरे रहते हैं कि उनकी बतौलबाज़ियों और उनके दिखावे के हुलिए के बावजूद उनके असिल उद्देश्य पहचान लिए जाएंगें (63:1-18)। वो खुल कर दुशमनी दिखाने का साहस नहीं रखते बल्कि अंधेरे में साज़िशें करते रहते हैं। वो ख़ुद अपने भीतर अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत आचरण से डरे रहते हैं। यही वजह है कि लड़ाई ने

मुनाफ़िक़ों को बेनक़ाब कर दिया, और वो केवल दबाव में इबादत व दान पुण करने तक ही सीमित रहते हैं (4:77-81)। वो केवल छुपे ढंग से ही काम करते हैं, अफ़वाहें फैलाते हैं और संकट या सुविधा के समय शक व आशंकाएं फैलाते हैं, डर, निराशा और असंतोष फैलाते हैं (3:53-157, 167-168,173-175; 4:83,88-89; 9:47-48,79)। स्वयं अल्लाह के पैग़म्बर भी उनकी आलोचनाओं और निन्दाओं से बचे नहीं थे (9:61)।

मुनाफ़िक चूंकि कायर होते हैं इसलिए दोनों पक्षों से अपने सम्पर्क बनाए रखते हैं और हर एक को संतुष्ट करने के लिए उन से अलग अलग चेहरों से मिलते हैं (4:91,137-145)। चूंकि मुनाफ़िक़ हर समय डरे रहते हैं इसलिए वो जो कुछ कर सकते हैं कर डालते हैं, झूटे बहाने भी बना लेते है, जीवन में अपनी स्थिति के लिए कोई ख़तरा मौल नहीं लेते, इसलिए क़ुरआन उनकी इस कायरता और नैतिक खोखलेपन की निन्दा करता है, जो लड़ाई में खुल कर सामने आ गया था (9:2-57,62-67,74-77,81-96; 17:20-21; 48:11-12)। इसके बावजूद उनका लालच उन्हें हितों को साधने की तरफ़ इसी तरह लगाए रखता है जिस तरह वह हर ख़तरे से बच निकलने में लगे रहते हैं (9:42-57; 48:15)। उन्होंने अपनी साज़िशों का केन्द्र बनाने के लिए एक मस्जिद का निर्माण किया (9:107-110)। वो इस्लाम के सभी दुशमनों से गठबंधन के प्रस्ताव करते रहे (5:51-52; 39:11-12)। यह देखने वाली बात है कि मुनाफ़िक़ अपनी विघटनकारी गतिविधियों को अपने धार्मिक भेस में छुपाए रखने के लिए किस तरह लगे रहते हैं, और किस तरह वो एक राडी चेहरे के साथ ख़तरनाक गतिविधियों में लगे रहते हैं। यहां तक कि मस्जिद जैसे पवित्र स्थल को भी अपनी साज़िश का अड्डा बना लेते हैं।

दोग़ले पन का यह नैतिक दीवालियापन, अंधापन, डरपोकी, लालच, कंजूसी, अवसरवादिता और षडयंत्रकारी व्यवहार वास्तव में क़ुर (सत्य को झुटलाना) की तरह है बल्कि उससे भी बढ़ कर है क्योंकि यह चरित्र स्वयं मुनाफ़िक़ (दोग़ले) इंसान के लिए भी और दूसरे लोगों के लिए भी क़ुर से भी.ज़्यादा हानिकारक है (4:145; 9:74,80,84; 63:1-6)। लेकिन ऐसे विघटनकारी तत्वों को जो कि इस्लाम और मुसलमानों को अन्दर से नुक़सान पहुंचाते हैं, अल्लाह ख़ुद अपने पैग़म्बर के सामने भी बेनक़ाब करना पसन्द नहीं करता सिवाय इसके कि उनके कुकर्म ख़ुद ही उनके चरित्र को स्पष्ट करने वाले हों। न अल्लाह ने इसको पसन्द किया है कि केवल मुनाफ़िक़त के गुणों या शक के आधार पर किसी को मुनाफ़िक़ कहा जाए, अलबत्ता मुनाफ़िक़ की पहचान अल्लाह ने स्पष्ट कर दी है (9:101; 47:30)। अल्लाह का इंसाफ़ और उसकी रहमत (दया) मुनाफ़िक़ों के लिए भी तौबा करने और सही बात की तरफ़ पलटने का दरवाज़ा खुला रखती है (4:164), क्योंकि हर इंसान के अन्दर भलाई का कुछ न कुछ तत्व मौजूद होता है जो विक्सित हो सकता है और वह भलाई की तरफ़ वापस आ सकता है:“हां जिन्होंने तौबा की और अपनी हालत को ठीक कर लिया और अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ा और

केवल अल्लाह के आज्ञाकारी हो गए तो ऐसे लोग मोमिनों की श्रेणी में होंगे और अल्लाह जल्दी ही मोमिनों को बड़ा सवाब (इनाम) देगा ''(4:146)।

पैग़म्बर साहब के परिजन (अहले बैत)

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ
جَوْفِهٖ ۚ وَ مَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِ
تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَ مَا جَعَلَ
اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَ هُوَ
يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ
اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ
فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ مَوَالِيْكُمْ ؕ وَ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَ
لٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ
مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَ اُولُوا
الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ
اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ
اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ
ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝

अल्लाह ने किसी आदमी के पहलू में दो दिल नहीं बनाये और ना तुम्हारी बीवियों को जिनको तुम मां कह बैठते हो तुम्हारी मां बनाया और ना तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे बेटे बनाया, ये सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं, और अल्लाह हक़ बात कहता है, और वही सीधा रास्ता दिखाता है। तुम ले पालकों को उनके असली बापों के नाम से तुम्हारा करो ये अल्लाह के नज़दीक बेहतर है, अगर तुम उनके बापों को नहीं जानते तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं और दोस्त, और उसमं तुम पर कोई गुनाह नहीं है, जो तुम से भूल चूक हो जाये, लेकिन जो तुम दिल के इरादे से करो (उस पर मवाख़िज़ा है) और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। रसूल मोमिनों पर उनकी जानों से भी .ज्यादा हक़ रखते हैं और आप (स.अ.स.) की बीवियां उनकी मायें हैं, और रिश्तेदार आपस में अल्लाह की किताब की रू से मुसलमानों और मुहाजिरों से .ज्यादा हक़दार हैं, मगर ये के तुम अपने दोस्तों पर एहसान करना चाहो, ये हुक्म किताब में लिख दिया गया है। (33:4-6)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ
تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝ وَ

ऐ नबी! आप अपनी बीवियों से कह दीजिये, के अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी, उसकी ज़ीनत (व आराईश) चाहती हो तो आओ मैं तुम को कुछ माल दूं, और अच्छी तरह रूख़सत कर दूं। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर (यानी बहिश्त) चाहती हो

اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ
الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ
اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ
مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا
الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾ وَ مَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَ
رَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا
مَرَّتَيْنِ ۙ وَ اَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾
يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ
اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا
مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَ قَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَ لَا
تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَ اَقِمْنَ
الصَّلٰوةَ وَ اٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾
وَ اذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ
اللّٰهِ وَ الْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا
خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

तो तुम में जो नेक होंगी उनके लिये अल्लाह ने बहुत बड़ा बदला तैयार कर रखा है। ऐ नबी की बीवियों! तुम में से जो सरीह ना शाईस्ता हरकत करेगी उसको दोगुनी सज़ा दी जायेगी ये बात अल्लाह को आसान है। और जो तुम में से अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगी, और नेक अमल करेगी तो हम उसको दोगुना सवाब अता करेंगे, और उसके लिये हमने इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर खी है। ऐ रसूल की बीवियों, तुम दूसरी औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो बाप करने में नमी मत करो के वो शख़्स जिसके दिल में मर्ज़ है कोई उम्मीद पैदा हो, और दस्तूर के मुताबिक़ बात कहो। और तुम अपने घरों में क़रार से रहो, और मत फ़िरो क़दीम जाहेलियत के तौर तरीक़े पर, और नमाज़ पढ़ती रहा करो, और ज़कात देती रहो, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करती रहो, अल्लाह तो यही चाहता है ऐ घर वालो! के तुम से नापाकी (मेल कुचैल) सब दूर कर दे और तुम को पाक साफ़ कर दे। और तुम याद रखो जो अल्लाह की आयात तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं, और हिकमत की बातें सुनाई जाती हैं यक़ीनन अल्लाह बड़ा बारीक बीन (और) ख़ूब वाक़िफ़े हाल है। (33:28-34)

وَ اِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَ اتَّقِ
اللّٰهَ وَ تُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَ
تَخْشَى النَّاسَ ۚ وَ اللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ

और जब आप उस शख़्स से जिस पर अल्लाह ने एहसान किया और आपने भी एहसान किया ये कहते थे के अपनी बीवी को अपने पास रहने दो और अल्लाह से डरो और अपने दिल में वो बात पोशीदा रखे हुए थे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप लोगों

تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا
زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾
مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ
اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلُ ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ﴿۳۸﴾
الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَ يَخْشَوْنَهٗ وَ
لَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ
حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ
رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ
النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾

से डरते थे, हालांकि अल्लाह ही इस का ज़्यादा मुस्तहिक़ है के उससे डरें, फ़िर जब ज़ैद का दिल उससे भर गया (यानी उसको तलाक़ दे दी) तो हमने आपसे उसका निकाह कर दिया, ताके मोमिनों के लिये उनके मुंह बोले बेटों की बीवियों के साथ निकाह करने के बारे में कुछ तंगी ना रहे, जब वो उन से अपना दिल भर लें (यानी तलाक़ दे दें) और अल्लाह का ये हुक्म वाक़े होने वाला था ही। इस रसूल पर उस काम में कोई तंगी नहीं है, जो अल्लाह ने उन पर फ़र्ज़ कर दिया है, जो पहले गुज़र चुके हैं उनमें भी अल्लाह का दस्तूर चला आ रहा है, और अल्लाह का हुक्म मुक़द्दर हो चुका होता है। जो अल्लाह के पैग़ाम पहुंचाते थे, और उससे डरते थे, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफ़ी है। मोहम्मद (स.) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों के ख़त्म पर हैं, और अल्लाह ही हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है। (33:37-40)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ
اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَ مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ
اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَ بَنٰتِ عَمِّكَ وَ بَنٰتِ
عَمّٰتِكَ وَ بَنٰتِ خَالِكَ وَ بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ
هَاجَرْنَ مَعَكَ ؗ وَ امْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ
نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ
عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَ مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ
حَرَجٌ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۰﴾ تُرْجِيْ

ऐ नबी! हमने आप के लिये आपकी बीवियां जिनको आपने उनके मेहर दे दिये हैं, हलाल कर दी हैं, और आपकी लौंडियां भी जो अल्लाह ने आपको बतौर माले ग़नीमत दिलवाई हैं, और आपके चचा की बेटियां और आपकी फूपी की बेटियां, और आपके मामू की बेटियां, और आप की ख़ालाओं की बेटियां जो आपके साथ वतन छोड़ कर आई हैं (ये सब हलाल की हैं) और वो मोमिन औरत जो अपने आपको रसूल को बख़्श दे, बग़ैर मेहर लिये, बशर्ते ये के रसूल भी उससे निकाह करना चाहे उसको आप के लिये भी हलाल किया है, ये इजाज़त ख़ास आपके लिये है, और मुसलमानों को नहीं, हमने उनकी बीवियों और लौंडियों के बारे में जो मेहर मुक़र्रर कर दिया है हमको मालूम है, ताके आप पर

مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ تُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ
تَشَآءُ ؕ وَ مَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ
اَعْيُنُهُنَّ وَ لَا يَحْزَنَّ وَ يَرْضَيْنَ بِمَآ
اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ
قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝٥١ لَا
يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَ لَآ اَنْ تَبَدَّلَ
بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ
اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝٥٢ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا
تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ
اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ لٰكِنْ اِذَا
دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ
لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَ اللّٰهُ لَا
يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا
فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ
لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ
تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ لَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا
اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝٥٣ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ
تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٥٤
لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَ لَآ
اَبْنَآئِهِنَّ وَ لَآ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَآ اَبْنَآءِ

किसी तरह की तंगी ना रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। आप उनमें से जिसको चाहें तो अपने से दूर रखें और जिसको चाहें तो अपने नज़दीक रखें और जिनको आप ने दूर किया था, तो आप पर कोई गुनाह नहीं है, ये इजाज़त इसलिये है के उनकी आंखें ठंडी रहें, और वो ग़मनाक ना हों और जो कुछ आप उनको देंगे तो वो उससे .खुश रहेंगी, और जो तुम्हारे दिलों में है अल्लाह उसको .खूब जानता है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दबार है। (ऐ नबी) इनके सिवा और औरतें आपके लिये जायज़ नहीं हैं, और ना ये जायज़ है के आप इन बीवियों को छोड़ कर और बीवियां कर लें, .ख्वाह आपको उनका हुस्न कितना ही अच्छा लगे, मगर वो आपकी ममलूका हो, और अल्लाह हर चीज़ पर निगाह रखता है। मोमिनों! तुम रसूल के घरों में ना जाया करो, मगर उस वक़्त जब तुम को खाने की इजाज़त दी जाये, इस तौर पर के उसके पकने का इन्तिज़ार करना चाहिये, लेकिन जब तुम को बुलाया जाए, तो जाओ, और खाना खा चुको चल दो, और बातों में जी लगा कर ना बैठे रहो, ये बात रसूल को ईज़ा देती है, और वो तुम से शर्म करते हैं, लेकिन अल्लाह सच्ची बात कहने से शर्म नहीं करता, और जब रसूल की बीवियों से कोई सामान मांगों तो पर्दे के बाहर से मांगो, ये तुम्हारे और उनके दिलों के लिये बहुत पाकीज़गी की बात हैं और तुम को ये शायान नहीं के तुम रसूल को तकलीफ़ दो, और ना ये के उनकी बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो, बिला शुबह अल्लाह के नज़दीक ये बड़ी भारी बात है। अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको म.ख़्फ़ी रखो तो अल्लाह हर चीज़ से बा .खबर है, .खूब जानता है। औरतों पर अपने बाप से पर्दा ना करने में कोई गुनाह नहीं है, और ना अपने बेटों से, और ना अपने भाईयों से, और अपने भतीजों से, और

اِخْوَانِهِنَّ وَ لَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَ لَا
نِسَآئِهِنَّ وَ لَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَ
اتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾

ना अपने भांजों से, और ना अपनी क़िस्म की औरतों से, और ना लौंडियों से, और अल्लाह से डरती रहा करो, बिला शुबह अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है। (33:50-55)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ
نِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ
جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا
يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾

ऐ नबी! अपनी बीवियों, बेटियों और मुसलमान औरतों से कह दीजिये के (जब वो बाहर किला करें) तो अपने ऊपर अपनी चादरें थोड़ी सी नीची कर लिया करें, ये अम्र उनके लिये मौजिबे शनाख़्त और इम्तियाज़ होगा, तो कोई उनको ईज़ा ना देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (33:59)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ
لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ
تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَ هُوَ
الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾ وَ اِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى
بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ
اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَ
اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ
قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ
الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٣﴾ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ
صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِيْلُ وَ صَالِحُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ

ऐ नबी! (स.अ.स.) जिस चीज़ को अल्लाह ने आप के लिये हलाल किया है, आप (क़सम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम करते हैं (फ़िर वो भी) आप अपनी बीवियों की ख़ुशी के लिये, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला रहम वाला है। अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी क़समों को कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वो बड़ा जानने वाला और हिकमत वाला है। और जब रसूल (स.अ.स.) ने अपनी किसी बीवी से चुपके से एक बात कही, फ़िर जब उस बीवी ने दूसरी बीवी से वो बात कह दी, और अल्लाह ने रसूल (स.अ.स.) को उसकी ख़बर कर दी (बज़रिया वही) तो रसूल (स.अ.स.) ने थोड़ी सी बात जतला दी, और थोड़ी सी टाल गए, सो जब रसूल ने उस बीवी को वो बात जतलाई तो वो कहने लगी आपको इसकी ख़बर किसने दी, आपने फ़रमाया मुझे बड़े जानने वाले, ख़बर रखने वालों ने ख़बर दी। अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है) क्योंके तुम दोनों के दिल टेढ़े हो गए हैं, और अगर रसूल (स.अ.स.) के मुक़ाबले में

يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ
مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ
سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝٥

बाहम मदद करोगी तो अल्लाह और जिब्राईल और नेक किरदार मुसलमान उनके हामी और दोस्तदार हैं और उनके अलावा और फ़रिश्ते भी मददगार हैं। अगर रसूल तुम को तलाक़ दे दे तो अजब नहीं के उनका रब तुम्हारे बदले उनको तुम से बेहतर बीवियां दे दे, मुसलमान, साहिबे ईमान, फ़रमांबर्दार, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालियां, कुछ बेवा और कुछ कुंवारियां। (66:1-5)

क़ुरआन की कई आयतों में अल्लाह के रसूल के गृह जीवन का ज़िक्र और हवाला है। क़ुरआन से यह तो मालूम होता है कि अल्लाह के रसूल की कई पत्नियां थीं लेकिन उनके घरेलू जीवन के बारे में बहुत अधिक जानाकारी नहीं मिलती, न उस ज़माने में अरब समाज में परिवार की जो आम हालत थी उसके बारे में कुछ मालूम होता है। हम यह तो समझते हैं कि अल्लाह के रसूल का जीवन एक आदर्श था लेकिन हम अकसर यह भूल जाते हैं कि मुहम्मद सल्ल. एक ऐसे समाज में पैदा हुए थे जिसकी स्थितियां उस ज़माने में बाक़ी लोगों से बहुक कुछ अलग थीं, और इसलिए उनके ज़माने में आदर्श उदाहरण हमारे आज के जीवन से अलग है। अगर मुहम्मद सल्ल. केवल हमारे आज के ज़माने, अर्थात अपने ज़माने के 1400 बाद वाले युग के विचारों और सोचों का जवाब देने के लिए भेजे गए होते और अगर वो ख़ुद अपने ज़माने और अपने समय की स्थितियों से अनुकूलता न रखते होते तो अपना संदेश अपने लोगों के दिल व दिमाग़ में बैठाने में असफ़ल रहते, और यदि ऐसा होता तो फिर इस बात की भी कोई सम्भावना नहीं थी कि उनका संदेश बाक़ी रहता और हम तक पहुंचता। क़ुरआन कहता हैः"और हमने कोई पैग़म्बर नहीं भेजा मगर अपनी क़ौम की भाषा बोलता था ताकि उन्हें (अल्लाह के आदेश) खोल खोल कर बतादे..." (4:14)। भाषा का अर्थ केवल बोली ही नहीं लेना चाहिए, बल्कि इसमें वह संस.ति और वह सामाजिक परम्पराएं भी शामिल हैं जो पैग़म्बर के संदेश की नैतिक मर्यादाओं के विपरीत न हों।

यदि पैग़म्बर आदर्श बनने के लिए अपनी समस्त सामाजिक परिस्थितियों की अनदेखी करें या उनके विपरीत रवैया अपनाएं तो वह अपने लोगों को व्यवहारिक भाषा में संदेश देने योग्य नहीं होंगे, और उनके संदेश को स्वीकार्यता (लोकप्रियता) नहीं मिलेगी और न उनका संदेश समय और स्थान के हिसाब से फल फैल सकेगा। अल्लाह का पैग़ाम लाने वाले पैग़म्बर कभी भी बुराइयों को स्वीकार नहीं करते न उनके साथ सामंजस्य बनाते है, उन्हें हमैशा के लिए एक नैतिक आदर्श बनना होता है। लेकिन जो चीज़ें स्वीकार्य हो सकती हैं उनके अलग अलग स्तर

हैं। उन्हें अपने समाज के लिए अनुकूल होना ज़रूरी है, यद्यिप वह लगातार होने वाली सामाजिक प्रगति का रास्ता भी बनाएंगे और एक ऐसी व्यवस्था देगे जो लगातार बदलती हुई परिस्थियों में आदर्श और स्तर निर्धारित करने में मददगार हो और अल्लाह के पैग़ाम में बदलाव के आयामों, सिद्धांतों और आम मर्यादाओं के अनुसार हो।

इस लिहाज़ से यह बात समझ में न आने वाली या भ्रामक नहीं है कि इस्लाम एक वैश्विक संदेश है जो एक अरब पैग़म्बर के द्वारा और अरबी भाषा में उतरने वाली किताब से दिया गया और इस पैग़ाम का प्रथम सम्बोधक सातवीं सदी का अरब समाज था। एक ऐसे क़बायली समाज में सामाजिक स्थिरता और शक्ति का अकेला साधन पत्नियां व बच्चे और वैवाहिक रिश्तेदारियां थीं। मिसाल के तौर पर केथौलिक चर्च ने अभी हाल ही में यह समझा है कि अफ़्रीक़ा के क़बायली समाज में अगर लोगों को ईसाइयत की मौलिक शिक्षाएं सुनाना हैं तो अस्थाई रूप से ही सही, इस तरह के सामाजिक तथ्यों को गवारा करना ही होगा। इस्लाम और इस्लाम के पैग़म्बर ने अरब के क़बायली समाज में अल्लाह की तौहीद और आख़िरत में जवाबदेही के अक़ीदे का संदेश देने के लिए बहु विवाह को सैद्धांतिक रूप से रद करने के बजाए और लोगों का ध्यान खींचने व उन्हें अपना पैग़ाम समझने का मौक़ा खो देने के बजाए कुछ ख़ास शर्तों और रुकावटों के साथ एक से अधिक शादियों की इजाज़त देने को पसन्द किया, और साथ ही ऐसे सिद्धांत दिए जो बहुविवाह को एक स्थायी नमूना और आदर्श नहीं बनाते, बल्कि ज़रूरत के चलते उसकी सम्भावना को बनाए रखते हैं और एक पति व एक पत्नि के मॉडल को आदर्श बनाने का रास्ता हमवार करते हैं। यह बात नोट की जानी चाहिए कि यह उस समय के क़बायली जीवन को इस्लामी परिवारिक व्यवस्था में लाने की तरफ़ एक बुनियादी क़दम था। क़ुरआन में परिवारिक मामलों (निकाह, तलाक़, माता पिता और बच्चों के बीच सम्बंध, विरासत वग़ैरहे) के सिलसिले में विस्तृत निर्देश दिए गए हैं, जबकि उसकी बहुत सी आयतों और पैग़म्बर की बहुत सी हदीसों में क़बायली पक्षपात और अपने क़बीले के लोगों के अंधाधुंध समर्थन की निन्दा आई है जो उस समय एक बुनियादी चलन था।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल. ने एक अरब होते हुए बहुविवाह वाले समाज में जीवन बिताया। हालांकि पचास साल की उम्र तक और जवानी का बड़ा हिस्सा बीत जाने तक आप एक ही पत्नि यानि हज़रत ख़दीजा के साथ रहे। उनकी मृत्यू के बाद आप ने कई महिलाओं से निकाह किए, लेकिन उन महिलाओं में अधिकतर विधवा थीं। मुहम्मद हुसैन हेकल ने अपनी पुस्तक दि लाइफ़ आफ़ मुहम्मद में पैग़म्बर साहब की पत्नियों और उनके निकाहों से सम्बंधित मामलों पर विस्तार से रोशनी डाली है। वह लिखते हैः ''मुहम्मद सल्ल. ने हज़रत ख़दीजा से निकाह उस समय किया जब आप की उम्र 23 साल थी, और आपके भरपूर यौवन का समय था, आपकी मर्दांगी, शान और शक्ति के पूरे उभार का ज़माना था। आप 28 साल यानि अपनी

उम्र के पचास साल पूरे होने तक हज़रत ख़दीजा के सच्चे साथी बने रहे। आपका यह सुलूक एक ऐसे ज़माने और ऐसी परिस्थितियों में था जब अरबों में कई कई विवाह का एक आम चलन था। फिर यह कि हज़रत ख़दीजा से होने वाली नर संतान (बेटे) जीवित नहीं रही थी इस वजह से आपके लिए इस बात की पूरी वजह थी कि आप दूसरी महिला से निकाह करते। लेकिन हज़रत ख़दीजा के साथ अपने पूरे वैवाहिक जीवन में और अपनी जवानी की पूरी अवधि में मुहम्मद साहब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महिलाओँ की तरफ़ आकर्षित नहीं देखे गए। लिहाज़ा यह बात बिल्कुल अप्रा.तिक होगी कि उम्र के पचास साल बीत जाने के बाद आपके अन्दर महिलाओं की तरफ़ आकर्षण की भावना उभरी हो ...।

''जब हज़रत ख़दीजा की मृत्यू हो गयी तो आप ने सौदह बिन्त ज़मआ से निकाह किया जो सकरान इब्ने उमर इब्ने अब्दुश्शम्स की विधवा थीं। किसी भी रावी (बयान कर्ता) ने हज़रत सौदह का ज़िक्र एक सुन्दर महिला के रूप में नहीं किया है, न ही किसी ने यह कहा है कि हज़रत सौदह मालदार व दौलत मन्द या किसी ख़ास सामाजिक रूतबे वाली महिला थीं। बल्कि हज़रत सौदह इस्लाम क़ुबूल करने वाले पहले लोगों में शामिल एक सहाबी की पत्नि रह चुकी थीं जो हबशा हिजरत कर गए थे और हज़रत सौदह भी अपने पति के साथ ही ईमान लाई थीं और पति के साथ हिजरत करके हबशा चली गयी थीं। उन्होंने भी अपने पति के साथ मक्का वासियों का ज़ुल्म व सितम सहन किया था और अपने पति की तरह सब्र (संयम) के साथ झेला था। अगर मुहम्मद साहब ने उनके पति की मृत्यू के बाद (उनके पति लड़ाई में शहीद हो गए थे) उनकी संगत के लिए और उन्हें उम्मुल मोमिनीन (ईमान वालों की मां) का रुतबा देने के लिए उनसे निकाह किया तो यह निश्चित रूप से आपका बहुत ही ऊंचा और सराहनीय अमल था।''

''आयशा और हफ़सा आपके क़रीबी सहाबियों हज़रत अबुबक्र और हज़रत उमर की बेटियां थीं। उनके मातापिता का मुहम्मद सल्ल. से सम्बंध ही था जिसे और अधिक मज़बूत करने के लिए आप ने उनकी बेटियों से निकाह किया ... रिश्तों को मज़बूत करने के इसी उद्देश्य से आपने हज़रत उसमान और हज़रत अली के निकाह में अपनी बेटियां दी थीं। अगर यह बात सच है कि मुहम्मद सल्ल. को हज़रत आयशा से मुहब्बत थी तो यह मुहब्बत शादी के बाद ही परवान चढ़ी थी.. ''

हज़रत मुहम्मद सल्ल. की शादियों का सम्बंध सामाजिक मामलों और रणनीति से था इसका एक और सुबूत आप का ज़ेनब बिन्त ख़ज़ीमा और उम्मे सलमा से निकाह करना है। ज़ेनब बिन्त खज़ीमा उबैदा बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की पत्नि थीं जो बद्र की लड़ाई में शहीद हो गए थे। वह भी कोई सुन्दर महिला नहीं थीं, लेकिन इतनी शरीफ़ और सुशील महिला थीं कि उनका उपनाम ही ''बे सहारों की मां'' पड़ गया था। मुहम्मद सल्ल. के साथ उन्होंने अपने

जीवन का अन्तिम दौर गुज़ारा और केवल साल या दो साल ही रहीं। हज़रत खदीजा के अलावा वही एक पत्नि थीं जिनकी मौत पैग़म्बर साहब के जीवन में ही हो गयी थी। जहां तक उम्मे सलमा का मामला है वह उमय्या बिन मुग़ीरा की बेटी थीं और अबु सलमा की पत्नि थीं जिनसे उनके कई बच्चे हुए। अबु सलमा उहुद की लड़ाई में घायल हो गए थे और बाद में इन घावों की वजह से ही उनकी मौत हो गयी थी। उनकी मौत के चार महीने बाद जब मुहम्मद सल्ल. ने उम्मे सलमा का हाथ मांगा तो उन्होंने अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी और ख़ुद अपनी उम्र .ज्यादा होने की वजह से असहमति व्यक्त की। लेकिन पैग़म्बर साहब ने उनके बच्चों की देखभाल और पालन पोषण की ज़िम्मेदारी अपने उपर लेने का वायदा किया तो वह राज़ी हो गयी। फिर पैग़म्बर साहब ने उनके बच्चों की ज़िम्मेदारी अपने उपर ली। अगर मुहम्मद सल्ल. हुस्न (ख़ुबसूरती) की चाह में शादी करने वाले होते तो मुहाजिरों (मक्का से आए हुए साथियों) और अंसार (मदीना के मुसलमानों) में बहुत से सहाबियों की बेटियां थीं जो उन महिलाओं से कहीं .ज्यादा हसीन थीं, जवान थीं, रुतबे और दौलत वाली थीं जिनमें से आप किसी को भी चुन सकते थे और अपने निकाह में ले सकते थे। इस लिहाज़ से आप को ऐसी महिलाओं का चयन करने की कोई ज़रूरत नहीं थी जिनके साथ बहुत से खाने वाले व्यक्ति जुड़े हुए थे और जो ख़ुद बड़ी उम्र की थीं जिनकी देखभाल की ज़िम्मेदारी आप के उपर आई।'' जिन सामाजिक ज़िम्मेदारियों का यहां ज़िक्र किया गया है उनके अलावा हेकल ने मुहम्मद सल्ल. की नर संतान की ज़रूरत को भी रेखांकित किया है, जो उस ज़मान में हर अरब की एक इच्छा होती थी (अंग्रेज़ी अनुवाद इस्माईल फ़ारूक़ी, इण्डियानपोलिस, इण्डियाना 1976, पेज 289-292)।

जहां तक ज़ेनब बिन्त हजश के साथ आपके निकाह का मामला है जिन का ज़िक्र उपरोक्त आयत (33:37) में आया है और जिनसे पैग़म्बर साहब ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा से तलाक़ के बाद निकाह किया जो कि आप के दत्तक पुत्र (ले-पालक) थे (उस समय तक क़ुरआन में ले-पालक बनाने पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया था), हेकल ने लिखा है कि ज़ेनब उमेमा की बेटी और अब्दुलमुत्तलिब की नवासी थीं (और इस तरह ज़ेनब पैग़म्बर साहब की फूफी (बुआ) की बेटी थीं) ... उनका पालन पोषण मुहम्मद सल्ल. की आंखों के सामने हुआ था और इस वजह से आप उन्हें बहुत अच्छी तरह जानते थे, और ख़ुद आपने ही अपने मुंह बोले बेटे ज़ेद के लिए उनका हाथ मांगा था ... लेकिन उनके भाई अब्दुल्लाह ने क़ुरैश परिवार और बनी हाशिम की सम्मानित बेटी और अल्लाह के पैग़म्बर की फूफेरी बहन का निकाह एक ग़ुलाम (दास) के साथ करने से मना कर दिया जिसे हज़रत ख़दीजा ख़रीद कर लाई थीं और मुहम्मद सल्ल. ने जिन्हें बाद में आज़ाद करके अपने बेटे की तरह पाला था। लेकिन मुहम्मद सल्ल. इस नस्लीय और जातीय भेदभाव तथा वर्णक्रम को ख़त्म करना चाहते थे और इस महान सिद्धांत को लागू करने के लिए आपने अपने क़बीले और परिवार से बाहर की किसी महिला को राज़ी करना पसन्द

नहीं किया। इसलिए आप अपने ले-पालक बेटे ज़ैद का निकाह ख़ुद अपनी फूफेरी बहन से करना चाहते थे (आप के इस इरादे के संदर्भ में यह आयत (33:36, जिसकी अगली आयत में ज़ैद के मामले का भी हवाला है) उतरी:“किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और अल्लाह का रसूल कोई फ़ैसला करें तो वह उस मामले में अपना कुछ भी इख़्तेयार समझें और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगे वह खुली गुमराही में पड़ गया) ...”। पैग़म्बर साहब ने हज़रत ज़ैद के निकाह का सामान उपलब्ध कराया और फिर यह शादी हो गयी। शादी के बाद हज़रत ज़ैद के लिए अपनी पत्नि के मिज़ाज (स्वभाव) को बरतना मुश्किल हो गया। वह किसी तरह की पाबन्दी करने को तैयार नहीं थीं ... इसलिए हज़रत ज़ैद ने उनके रवैये की शिकायत कई बार पैग़म्बर साहब से की और आख़िरकार तलाक़ देने की इच्छी व्यक्त की। इस पर पैग़म्बर साहब ने उन्हें समझाया कि अपनी पत्नि का हाथ थामे रहो और अल्लाह से डरो। लेकिन इसके बावजूद हज़रत ज़ैद के घरेलू जीवन में कोई बहतरी नहीं आई ... और उन्होंने ज़ेनब को तलाक़ देदी। यह समय था जब लेपालक को बेटा या बेटी बनाने और उसके साथ पिता का सम्बंध जोड़ने के चलन को समाप्त कर देने का मौक़ा था, और यह कि मुंह बोले बेटे को विरासत में शरीक करना या उसकी पूर्व पत्नि से निकाह नहीं करना वग़ैरहे का मामला (आयत 33:5 और पत्नि के साथ ज़िहार करना अर्थात उसको माँ समान घोषित करके अपने उपर हराम कर लेने के चलन की भर्त्सना में उतरने वाली आयत 58:1-4, और परिवारिक नियमों के अन्तर्गत विवाह से सम्बंधित अध्यायद्ध। हेकल स्पष्ट करते हैं कि इसी संदर्भ में यह आयत उतरी है कि “और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे बेटे बनाया है, यह सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं ..”.(33:4)।

“इससे यह नतीजा निकलता है कि मुंह बोला पिता अपने मुंह बोले बेटे की पूर्व पत्नि से निकाह कर सकता है। लेकिन इस व्यवस्था को कैसे लागू किया जाता? अरबों में कौन इस नए क़ानून का सूत्रपात कर सकता था और प्राचीन परम्परा को तोड़ सकता था? यहां तक कि मुहम्मद सल्ल. भी अपनी प्रबल इच्छा शक्ति और अल्लाह के आदेशों की हिकमत को समझने के बावजूद इस फ़ैसले पर अमल करने और ज़ैद की तलाक़ शुदा पत्नि ज़ेनब के साथ निकाह करने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे।” हेकल लिखते हैं कि इस परिप्रेक्ष्य में निम्न सम्बोधन पैग़म्बर के लिए है:“जब ज़ैद ने उससे (अपनी कोई) ज़रुरत (अब) न रखी (अर्थात उसको तलाक़ देदी) तो हम ने तुम से उसका निकाह कर दिया ताकि मोमिनों के लिए उनके मुंह बोले बेटों की पत्नियों (के साथ निकाह करने के मामले) में जब वो उनसे मतलब न रखें (अर्थात तलाक़ देदें) कुछ तंगी न रहे और अल्लाह का आदेश पूरा होकर रहने वाला था” (33:37), वह आगे लिखते है:“अलबत्ता यह सच्चाई है कि मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के आदेशों पर अमल करने के लिए नमूना हैं, आपका जीवन आप पर उतरने वाले संदेश का व्यवहारिक उदाहरण था।

लिहाज़ा मुहम्मद सल्ल. ने ज़ेनब से निकाह किया ताकि आप अल्लाह के फ़रमान पर अमल करने का शानदार नमूना लोगों के सामने रख सकें। इन आयतों में जो प्रावधान दिए गए हैं उनका एक ख़ास मक़सद है और वह यह कि आज़ाद किए गए ग़ुलामों को आज़ादी का पूरा दर्जा मिले, और मालिकों, संरक्षकों और लेपालक बनाने वाले मातापिता के अधिकारों को साफ़ तरीक़े से बयान कर दिया जाए'' (हेकल, 298)।

क़ुरआन का यह बयान कि हमने तुम से उसका निकाह कर दिया का मतलब यह है कि अल्लाह के रसूल ने केवल अल्लाह के हुक्म को पूरा किया, आपकी अपनी कोई निजी इच्छा नहीं थी। और यह बात उसके बिल्कुल विपरीत है जो मुहम्मद सल्ल. के बारे में कुछ लोगों ने कही है कि मुहम्मद सल्ल. ख़ुद उनसे विवाह करने के इच्छुक थे। अगर मुहम्मद सल्ल. की अपनी भी कोई ऐसी इच्छा थी तो भी मुझे इसमें कुछ ग़लत नज़र नहीं आता क्योंकि ज़ेनब का निकाह ज़ैद के साथ पूरी तरह ख़त्म हो गया था और अब उनके फिर से आपस में निकाह की गुंजाइश नहीं बची थी। मुहम्मद सल्ल. ने ज़ैनब से निकाह करने के बारे में सम्भवतःइसलिए सोचा कि आपको इस निकाह के टूट जाने से जिसके लिए आपने ज़ैनब के घर वालों को ख़ुद राज़ी किया था अपने उपर नैतिक ज़िम्मेदारी महसूस हुई, जैसा कि मुहम्मद असद ने लिखा है (नोट 42, संदर्भ आयत 33 37, दि मैसेज अ०फ़ क़ुरआन)।

पैग़म्बर साहब की एक और आदरणीय पत्नि जुवैरिया थीं। हुसैन हेकल ने अपनी इस किताब में उनके निकाह से सम्बंधित बातें भी विस्तार से बयान की है:''वह एक सम्भ्रांत परिवार की महिला थीं। बनू अलमुसतलक़ के साथ हुई लड़ाई में वह मुसलमानों के हाथ आईं। उनके नाम का क़ुरआ (लाट्री) एक अंसारी सहाबी के नाम निकला। उन्हेंने अपनी रिहाई के लिए मुआवज़े लेने का प्रस्ताव दिया लेकिन जिन साहब के संरक्षण में वह आई थीं उन्होंने यह जानते हुए कि वह बनू अलमुसतलक़ के सरदार हारिस की बेटी हैं बहुत .ज्यादा मुआवज़े की मांग की। जुवैरिया हज़रत आयशा के मकान पर पैग़म्बर साहब से मिलने के लिए आईं और अपने बारे में बताया कि बनू अलमुसतलक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़रार की बेटी हैं। उन्होंने पैग़म्बर साहब से फ़रियाद की कि उनकी रिहाई में मदद करें। उनकी कहानी सुनने के बाद पैग़म्बर साहब ने उनकी क़िस्मित के बारे में एक बहतर बात सोची। आप ने फ़रमाया कि आप मुआवज़ा अदा कर देंगे और रिहाई के बाद (अगर वह चाहेंगी तो) उन से निकाह भी कर लेंगे। जुवैरिया ने आप का यह प्रस्ताव मंज़ूर कर लिया। यह ख़बर जब मदीना में फैली तो जिस किसी पास बनू अलमुसतलक़ के क़ैदी थे सबने (पैग़म्बर साहब के सुसराली रिशते का लिहाज़ करते हुए) अपने अपने क़ैदियों को रिहा कर दिया। इस पर हज़रत आयशा ने फ़रमाया था कि मैं और किसी महिला को नहीं जानती जो अपने परिवार के लिए इतनी बरकत वाली हुई हो जितनी की जुवैरिया। इस संदर्भ में एक और रिवायत (रिपोर्ट) में है कि जुवैरिया और उनके

पिता के इस्लाम क़ुबूल करने के बाद पैग़म्बर साहब ने उनसे निकाह कर लिया।

(दि लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद, पेज 333-334)

ऐसी ही स्थितियों में ख़ैबर की लड़ाई जीतने के बाद पैग़म्बर साहब ने बनू नज़ीर के यहूदी सरदार हई इब्ने अख़तब की बेटी सफ़िया से निकाह किया था जो इब्नुर्रबी की पत्नि थीं और इब्नुर्रबी ख़ैबर की लड़ाई में मारे गए थे। सफ़िया क़ैदी बन कर आई थीं और पैग़म्बर साहब ने उन्हें रिहा करके उनसे निकाह कर लिया था ''ताकि उनका दुख कम हो जाए उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे। सफ़िया पैग़म्बर साहब के जीवन भर उनके साथ रहीं।''

(दि लाइफ़ अ०फ़ मुहम्मद, पेज 373-374)

अल्लाह के पैग़म्बर की एक और माननीय पत्नि उम्मे हबीबा (अबु सुफ़ियान की बेटी) थीं जो अब्दुल्लाह बिन हजश की पत्नि रह चुकी थीं। वो दोनों हबशा जाने वाले मुहाजिरों के साथ हिजरत करके हब्शा गए थे, लेकिन वहां जाकर अब्दुल्लाह ईसाई बन गए और वहीं उनकी मृत्यू हुई। उम्मे हबीबा ईमान पर जमी रहीं और हब्शा में कठिन हालात को बर्दाश्त किया। उनकी इस मज़बूती और ईमान के लिए सब कुछ झेलने की भावना को सम्मान देते हुए और पति की जुदाई का दुख महसूस करके आपने उन से निकाह करके उनका संरक्षक बनना और अपनी देखरेख में रखना पसन्द किया (दि लाइफ़ अ०फ़ मुहम्मद, 373-374)। उस ज़माने में ऐसी महिलाओँ का संरक्षण और देखरेख करने की इसके अलावा कोई व्यवस्था नहीं थी कि उनसे विवाह करके उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी में लिया जाए, ख़ास तौर से पैग़म्बर साहब के लिए। यह बात भी ज़हन में रखने की है कि उम्मे हबीबा के पिता अबु सुफ़ियान क़ुरैश के एक बड़े सरदार थे और पैग़म्बर साहब पर ईमान लाने वाले मुसलमानों से उनकी दुशमनी मशहूर थी। उम्मे हबीबा की इस्लाम व ईमान पर अडिगता और फिर पैग़म्बर साहब से उनके विवाह के नतीजे में अबु सुफ़ियान को अपने व्यवहार पर सोचने और व्यवहार को बदलने का प्रेरक बन सकती थी और दीगर बहुत से लोगों में इस्लाम के प्रति सकारात्मक भावना पैदा करने का ज़रिया बनती।

पैग़म्बर साहब की एक और पत्नि हज़रत मैमूना हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की ख़ाला (मोसी) और हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (पैग़म्बर साहब के चाचा) पत्नि की बहन थीं। जब वह इस्लाम ले आईं तो पैग़म्बर साहब ने उनसे निकाह कर लिया। इस रिशते के माध्यम से पैग़म्बर साहब के सम्बंध कई ऐसे बड़े क़बीलों से हो गए जो उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे, और इस्लाम विरोधियों के समर्थक व सहायक बने हुए थे। हुदैबिया की सन्धि होने के अगले साल अपनी मक्का यात्रा के महत्व और उसके प्रभाव के मद्देनज़र पैग़म्बर साहब ने उन क़बीलों को इस सुखद अवसर में शरीक होने की दावत दी और इस तरह इन सम्बंधों को और अधिक असरदार बनाने की कोशिश की। हज़रत मैमूना पैग़म्बर साहब की मृत्यू के 50 साल

बाद तक जीवित रहीं, और उन्होंने वसीयत की कि उनको उसी जगह दफ़न किया जाए जहां उनका निकाह हुआ था। (लाइफ़ ऑफ़ मुहम्मद, पेज 384-385, और देखें इब्नुल क़य्यिम की किताब ज़ादुल मआद:105-114, बैरूत 1979)।

अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तमाम निकाहों की अलग अलग समीक्षा करने पर यह बात साफ़ तौर से सामने आती है कि इन तमाम निकाहों में कुछ ख़ास बातें समान थीः आपने उन महिलाओं से निकाह करके जो कष्ट में थीं और जिन्हें मदद की ज़रूरत थी, उन्हें मदद सहारा दिया और उन क़बीलों से सम्बंध मज़बूत किए जो दुशमनी पर उतारू थे और इस तरह उनकी दुशमनी को कम करने का प्रयास किया जो उस समय के सामाजिक तथ्यों के बिल्कुल अनुरूप था, और इसके लिए इस्लाम के स्थाई सिद्धांतें व मर्यादाओं के विपरीत भी कुछ नहीं किया। इसका मतलब यह नहीं लेना चाहिए कि इसमें निजी इच्छा का कोई दख़ल ही नहीं था और आपने उन महिलाओं से निकाह किया जो आप को पसन्द नहीं थीं या आप को उनकी कोई परवाह नहीं थी। यह मतलब लेना एक अतिवाद होगा. जिससे पैग़म्बर साहब की निजी पसन्द और एक इंसान होने के रूप में अपने निजी अधिकारों का खण्डन होता है (18:110; 4:6), जबकि सच्चाई यह है कि आपके व्यक्तित्व में पैग़म्बरी और इंसानी व्यक्तित्व दोनों का संगम था, और आप की यह दोनों हैसियतें आपस में बहतरीन तरीक़े से इन्ट्रेक्ट करती थीं। यह इस्लाम की एक शाश्वत सच्चाई है कि यह एक आसमानी संदेश है जो अल्लाह के पैग़म्बर ने इंसानों को पहुंचाया ताकि इंसान अपने समस्त पहलुओं के लिहाज़ से एक बहतरीन जीवन बिताएं, और यह पैग़ाम अपने आदर्श और व्यवहारिक योजना के लिहाज़ से सच्चाई पर आधारित पैग़ाम है। (7:158; 10:57; 14:1; 30:30; 39:41)

इस तरह यह मालूम होता है कि आप ने निजी आकर्षण की वजह से इन शादियों का फ़ैसला नहीं किया। पैग़म्बर साहब ने जिस तरह जीवन बिताया, वह एक ऐसे व्यक्ति का जीवन नहीं था जो इस दुनिया के आनन्द प्राप्त करने में लगा हुआ हो या महिलाओँ की संगत से आनन्दित होता हो। ''अल्लाह के पैग़म्बर का जीवन बहुत ही सादा और दुनियादारी से बचे रहने वाला था'' (इब्ने सअद, अलतबक़ात, बैरूत, 1978, खण्ड 1, पेज 400-409,464-468) और आप पर अपने पैग़ाम की ज़िम्मेदारियों का भारी बोझ था, आप.ज्यादा समय अपने सहाबियों (मर्द साथियों) के साथ रहते और उन्हें अपनी संगत में शिक्षा और सीख देते और अपना संदेश पहुंचाने या उसका बचाव करने के कामों में व्यस्त रहते थे। आपको अपनी पवित्र पत्नियों से यह कहना पड़ा कि कि अपने निकाह के रिश्तों को बनाए रखने के लिए उन्हें आपकी अध यात्मिक और नैतिक ज़िम्मेदारियों को महसूस करना होगाः''ऐ पैग़म्बर अपनी पत्नियों से कह दीजिए कि अगर तुम दुनिया के जीवन (के सुख) और उसकी साज सज्जा की इच्छुक हो तो आओ में तुम्हें कुछ माल दूं और अच्छी तरह से विदा कर दूं, और अगर तुम अल्लाह और उसके

पैग़म्बर और आख़िरत के घर (अर्थात जन्नत) की तलबगार हो तो तुम में जो नेक काम करने वाली हैं उनके लिए अल्लाह ने बहुत बड़ा बदला रखा है" (23:28-29)। इस बिन्दु की व्याख्या करते हुए मुहम्मद असद ने उन परिस्थितियों को बयान किया है जिनमें अल्लाह ने पैग़म्बर साहब की पत्नियों को यह चेतावनी दी। "जिस समय यह आयत उतरी, मुसलमान ख़ैबर की लड़ाई जीत कर आए थे जो कि एक उपजाऊ और .षि प्रधान क्षेत्र था जिसकी बदौलत मुसलमानों को सुख सम्पन्नता मिली। लेकिन जब अधिकतर लोगों के लिए जीवन कुछ सरल हो रहा था तो यह सरलता और आराम पैग़म्बर साहब के घर में नज़र न आये क्योंकि आप ने अपने और अपने घर वालों के लिए इसी पर बस किया जो आपके गुज़ारे के लिए कम से कम हद तक पर्याप्त था। बदली हुई परिस्थिति में यह बात कोई अस्वभाविक नहीं थी कि आप की पत्नियां भी उस सुख की इच्छुक हुईं जो दूसरी महिलाएं अब भोग रही थीं। लेकिन पैग़म्बर साहब यदि उनकी इच्छाओं या मांगों को पूरा करते तो यह बात आप के उन सिद्धांतों के विपरीत होती जो आपने अपने पूरे जीवन में बरते थे यानि यह कि ख़ुद पैग़म्बर का जीवन स्तर पैग़म्बर पर ईमान लाने वाले अत्यधिक ग़रीब आदमी के जीवन से भी ऊंचा न हो। इन आयतों के उतरने के तुरन्त बाद जब यह आयतें पैग़म्बर साहब ने अपने घर वालों को सुनाईं तो उन सब ने अलग होने के विचार को रद कर दिया और यह कहा कि उन्होंने अल्लाह, रसूल और आख़िरत के बदले को अपने लिए पसन्द कर लिया है (बुख़ारी, मुस्लिम व अन्य हदीस संग्रहो से नक़ल)" (आयात 33:28-29 पर व्याख्यात्मक नोट नम्बर 31,32, दि मैसेज आफ़ क़ुरआन)।

पैग़म्बर साहब ने अपने जीवन में उस समय के अरब समाज के तथ्यों और चलन का जो लिहाज़ रखा उसके साथ एक तरफ़ तो उन स्थाई सिद्धांतों व मर्यादाओं को पूरा किया जो बहतर सामाजिक हालात की तरफ़ मार्गदर्शन करते हैं और दूसरी तरफ़ एक से अधिक पत्नियां रखने की अनुमति देने के लिए कुछ ख़ास शर्तें भी लगाईं। एक से अधिक पत्नियां रखने की इजाज़त "यतीमों के मामले में अन्याय की आशंका" के संदर्भ में उतरी थीं, जिसका इशारा लड़ाईयों में महिलाओं के विधवा हो जाने और पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं का अनुपात अधिक हो जाने की स्थिति की तरफ़ है कि ऐसी स्थिति में बहुत से बच्चे अनाथ और उनकी माताएं विधवा हो कर बे सहारा हो जाती हैं। जहां तक पैग़म्बर सल्ल. का अपना मामला है कि आपकी पत्नियों की संख्या चार से भी अधिक थी तो यह बात न तो आप के पैग़म्बर और सरदार होने की प्रतिष्ठा के मुताबिक़ होती और न ही आपकी पत्नियों के लिए उचित होती कि उनमें से किसी को तलाक़ दी जाए जब कि वो "अल्लाह व उसके रसूल और आख़िरत की भलाई" को अपने लिए चुन चुकी थीं। इसके अलावा यह कि ख़ुद पैग़म्बर साहब को भी और निकाह करने से रोक दिया गया था:"(ऐ पैग़म्बर) उनके सिवा और महिलाएं तुम को जायज़ नहीं और न यह कि इन पत्नियों को छोड़ कर और पत्नियां करो चाहे उनका हुस्न (सुन्दरता) तुम को (कितना

भी) अच्छा लगे मगर वो जो तुम्हारे हाथ का माल है (यानि बान्दियों के बारे में तुम को अधि ाकार है) और अल्लाह हर चीज़ पर नज़र रखता है" (33:52)।

पैग़म्बर साहब की पवित्र पत्नियों को अपने पति के पैग़म्बर होने की वजह से और ख़ुद अपने लिए उम्महातुल मोमिनीन (मुसलमानों की माताओं) का दर्जा रखने की वज से दूसरों के साथ अपने व्यवहार में कुछ विशेष संस्कारों व शर्तों का लिहाज़ रखना होता था। उन्हें अपने लिबास (पहनावे) में भी शालीनता और हया (लज्जा) का लिहाज़ रखने की ताकीद की गयी थी (33:59), साज सज्जा के दिखावे से रोका गया, अजनबियों के साथ लचीली आवाज़ में बात करने से मना किया गया और उनसे कहा गया कि:"अल्लाह चाहता है कि तुम से नापाकी (का मेल कुचेल) दूर कर दे और तुम्हें बिल्कुल पाक साफ़ कर दे। और तुम्हारे घरों में जो अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत (की बातें सुनाई जाती हैं) उनको याद रखो..." (33:33-34)। मोमिनों को हुक्म दिया गया कि अल्लाह के रसूल के घर में इजाज़त मिलने के बाद दाख़िल हुआ करें और ताकीद की गयी कि उन्हें अगर खाने पर बुलाया गया है तो पहले से आकर गपशप करने में न लग जाएं। जब पैग़म्बर साहब की किसी पत्नि को किसी ज़रूरत से घर के बाहर के किसी आदमी से बात करना हो तो बीच में एक आड़ होना ज़रूरी है (33:53), हालांकि यह पाबन्दियां सगे रिश्तेदारों के लिए नहीं थीं (33:55)।

मुसलमानों की इन माओं को सम्बोधित करते हुए क़ुरआन में कहा गया कि "ऐ पैग़म्बर की बीवियो, तुम और औरतों की तरह नहीं हो" (33:32), इसी तरह यह आयत कि "तुम्हारे घरों में जो अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत (की बाते सुनाई जाती हैं) (33:34)" इस वजह से उनके नेक कामों पर उनका बदला और उनके गुनाहों पर उनकी सज़ा भी दूसरी औरतों के मुक़ाबले दो गुणी है (33:30-31)। मुसलमानों की इन माओं पर यह पाबन्दी भी लगाई गयी कि वो पैग़म्बर साहब के बाद किसी से निकाह नहीं कर सकतीं (33'52)।

पैग़म्बर साहब ने लोगों को बार बार ताकीद की कि औरतों का ख़्याल रखा करें और उनके साथ नर्मी का बर्ताव किया करें, और आपका अपना पूरा जीवन, जिसमें आपका अन्तिम हज भी शामिल है, आप की इस शिक्षा का व्यवहारिक नमूना था। रिवायत है कि एक बार हज़रत उमर की पत्नि ने किसी तकरार के समय अपने पति से कहा कि ऐ ख़त्ताब के बेटे तुम कितने कठोर हो, तुम तो मुझे अपनी मर्ज़ी के विपरीत बात से भी रोकते हो जबकि तुम्हारी बेटी (हफ़सा) तो ख़ुद अल्लाह के रसूल से भी तकरार करती हैं (बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, नसई)। अल्लाह के रसूल घरेलू कामों में अपनी पत्नियों की मदद करते थे, हां जब अज़ान होती थी तो आप सब काम छोड़ कर नमाज़ की तैयारी में लग जाते।

(इब्ने सअद, तबक़ात, खण्ड 1, पेज 366, बैरूत, 1978)।

लेकिन फिर भी, अपनी पत्नियों के साथ अल्लाह के पैग़म्बर की अत्यधिक नर्मी और दयाशीलता के बावजूद कभी कभी उनके साथ कुछ मतभेद और समस्याएं भी खड़ी हुईं, जैसा कि और घरों में भी होता है। आयत 66:1-5 किस ख़ास अवसर पर उतरी यह तय करना मुश्किल है क्योंकि इस सम्बंध में अलग अलग रिवायतें हैं। मुहम्मद असद लिखते हैं कि ख़ुद इन क़ुरआनी आयतों से और प्रमाणित हदीसों से जो बात समझ में आती है वह यह कि मदीना के जीवन के अन्तिम वर्षों में किसी समय अल्लाह के पैग़म्बर ने यह प्रतिज्ञा कर ली कि वह एक महीने तक किसी पत्नि से वैवाहिक सम्बंध नहीं रखेंगे। इसका वास्तविक कारण क्या था यह बात ठोस तरीक़े से नहीं कही जा सकती लेकिन हदीसों से यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि इस अस्थाई, भावनात्मक नाराज़गी की वजह पैग़म्बर साहब कि पत्नियों के बीच आपसी हसद (जलन) का सामने आना था। कुछ प्राचीन मुफ़स्सिर इस आयत के उतरने को पैग़म्बर साहब की उस राज़दारी वाली बात के फ़ाश हो जाने से जोड़ते हैं जो आपने अपनी एक पत्नि से कही थी और जिसमें आपने भविष्यवाणी की थी कि मेरे बाद अबु बक्र और उमर इस उम्मत (मुसलमानों) के सरदार बनेंगे। कहा जाता है कि यह राज़ की बात आप ने हज़रत उमर की बेटी हफ़सा से कही थी और हज़रत अबुबक्र की बेटी आयशा ने इस राज़ को फ़ाश कर दिये था (बग़वी, इब्नुल अब्बास और कल्बी तथा ज़मख़शरी के हवाले से)। अगर यह बात दुरूस्त है तो इससे यह स्पष्ट होगा कि पैग़म्ब साहब ने ऐसा क्यों किया कि राज़ की कुछ बात तो बता दी और कुछ बात रोक रखी।" एक तरफ़. एक बार उनकी एक राज वाली भविष्यवाणी खुल गयी तो अब इसे आम मुसलमानों से छुपा कर रखने की आप ने कोई ज़रुरत न समझी। दूसरी तरफ़, आप ने इसे जानबूझ कर अस्पष्ट रखा शायद इसलिए कि अबूबक्र व उमर के ख़लीफ़ा बनने की बात को वसीयत न समझा जाए बल्कि इसे उम्मत पर छोड़ दिया जाए कि वो क़ुरआन के शूराई सिद्वांत 42:38 के मुताबिक़ तय करें ।

"बहरहाल इस क़ुरआनी इशारे की मंशा केवल इस मामले में एक घटना बयान करना ही नहीं है बल्कि इससे एक नैतिक सबक़ देना भी मक़सद है जो तमाम तरह की परिस्थितियों में लागू हो सकता है: जैसे अल्लाह की हलाल की हुई किसी चीज़ को हराम न मान लेना चाहिए चाहे यह किसी दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों को ख़ुश करने के मक़सद से ही क्यों न हो। इसके अलावा इससे यह हक़ीक़त भी सामने आती है जिस पर क़ुरआन में बार बार ज़ोर दिया गया कि पैग़म्बर सल्ल. एक इंसान ही थे और इंसानी भावनाएं रखते थे यहां तक कि क्षणिक रूप से आप से दुनियावी मामलों में केई ग़लती होना भी सम्भव था, केवल निजी मामले में, वह्यि या पैग़म्बरी के मामले में नहीं" । (मुहम्मद असद, दि मैसेज आफ़ क़ुरआन, आयत 66:1,3,4 की व्याख्या में नोट नम्बर 1,4,7 और 2:224 की व्याख्या में नोट नम्बर 212, तथा देखें आयत 5:89)।

जहां तक बात पत्नियों को तलाक़ देने की चेतावनी और ख़ुद पैग़म्बर साहब को उन से बहतर पत्नियां देने की तसल्ली की है कि जो अध्यात्मिक और नैतिक रूप से ज़्यादा परिपक्व हों, विवाहित या अविवाहित (66:5), इस बारे में मुहम्मद असद ने यह बात बिल्कुल ठीक लिखी है कि इस आयत में जताई गयी सम्भावना पैग़म्बर साहब की पत्नियों की वास्तविक स्थिति के समान है जो ज़्यादातर पहले से विवाहित थीं और उनमें केवल एक यानि हज़रत आयशा ही ऐसी थीं जिनका निकाह पहले किसी से नहीं हुआ था। वह लिखते हैं कि "यह इशारा और फिर यह हक़ीक़त कि पैग़म्बर साहब ने अपनी किसी भी पत्नि को तलाक़ नहीं दी, और इस आयत की एक वैचारिक तरकीब यह ज़ाहिर करती है कि यह एक पैग़म्बर की पत्नियों को अप्रत्यक्ष रूप से एक नसीहत (उपदेश) है जो अपनी क्षणिक कमज़ोरियों के बावजूद इन्ही गुणों वाली थीं जिनका हवाला इस क़ुरआनी आयत (6:4) में दिया गया है। पवित्र पत्नियों को दी गयी यह नसीहत व्यापक रूप से सभी ईमान वाले मर्दों और औरतों के लिए भी है ...." (आयत 66:4 पर व्याख्यात्मक नोट नम्बरर 10, दि मैसेज आफ़ क़ुरआन)।

अल्लाह के पैग़म्बर का अपनी तमाम पत्नियों के साथ महरबानी और दया व प्रेम का रवैया और उन सब के साथ अद्‌ल (परम न्याय) व हुस्ने सुलूक (बहतरीन व्यवहार) से रहने की आपकी कोशिश आपके जीवन की अन्तिम घड़ी तक रही। पैग़म्बर साहब की पित्र भावना व प्रेम का हाल हालांकि क़ुरआन में ख़ास तौर से बयान नहीं हुआ है लेकिन आपकी बातचीत और आपके व्यवहार से यह पूरी तरह स्पष्ट है। अपने बच्चों और नातियों से आपकी मुहब्बत आपके बहुत से कथनों और व्यवहार से ज़ाहिर होती है। अपनी बेटी फ़ातिमा से आपका रवैया, अपने बेटे इब्राहीम के सम्बंध में आपकी भावनाएं जो कि बचपन में ही फ़ौत (मृत) हो गए थे और नाती हसन व हुसैन के साथ आपका लगाव इसके बहतरीन उदाहरण हैं। पैग़म्बर साहब (सल्ल.) ने अपने परिवार (बनू हाशिम) के साथ भी अच्छे सम्बंध बना कर रखे, एक अपने चाचा अबु लहब को छोड़ कर जो आपका खुला दुशमन था, आपका पीछा किया करता था, आपको सताया करता था और आपका संदेश सुन्ने वा मानने से लोगों को रोकने के लिए हर समय तत्पर रहता था। क़ुरैश ने जब मुहम्मद सल्ल. का आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार किया तो आपके परिवार बनू हाशिम के लोगों ने, सिवाय अबू लहब के, पैग़म्बर साहब का साथ दिया और उनकी ख़ातिर इस सामाजिक बहिष्कार को झेला। लगभग दो साल या उससे भी अधिक समय तक क़ुरैश ने बनू हाशिम के साथ किसी भी तरह का लेनदेन करने, ख़रीदने बेचने और निकाह के रिश्ते बनाने पर प्रतिबंध बनाए रखा (इब्ने सअद, अलतबक़ात, बैरूत, 1978, खण्ड 1, पेज 208-210)। पैग़म्बर साहब के सबसे चहीते चाचा हज़रत हमज़ा थे जो लगभग आपकी उम्र के ही थे और पैग़म्बर बनने के पांच साल बाद आप पर ईमान लाए थे, और अबु तालिब जो मुस्तक़िल आपका संरक्षण और समर्थन करते रहे वह आप पर ईमान नहीं

लाए थे। पैग़म्बर साहब ने आदरणीय महिला हलीमा से भी अपने लगाव और सम्मान को जताया जिन्होंने आपको बचपन में पाला था और आपको दूध पिलाया था और आपकी माँ समान बन गयी थीं। उनके बच्चों से भी पैग़म्बर साहब को लगाव था जो आपके भाई व बहन समान थे (तबक़ात, बैरूत,1978, खण्ड 1, पेज 108-109)।

ईमान लाने वालों के साथ पैग़म्बर साहब का सम्बंध और सदव्यवहार

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾

उसके बाद अल्लाह ही की रहमत से आप उनके साथ नर्म रहे, और अगर आप तुंदखू सख़्त तबीयत होते तो ये सब आपके पास से मुनतशिर हो जाते, सो आप उनको माफ़ कर दीजिये, और उनके लिये असतग़फ़ार कर दीजिये, और उनसे ख़ास ख़ास बातों में मशवरह लेते रहा कीजिये, फ़िर जब आप राय पुख़्ता कर लें तो अल्लाह ही पर एतमाद कीजिये, बिला शुबह अल्लाह एतमाद करने वालों से मोहब्बत करता है। (3:159)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۗ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿٦٤﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٦٥﴾

और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर महेज़ इसलिए के अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ उनकी इताअत की जाए और ये लोग जब अपने हक़ में ज़ुल्म कर बैठे थे अगर तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफ़ी मांगते और अल्लाह का रसूल उनके लिए बख़्शिश तलब करते तो वो अल्लाह को भी माफ़ करने वाला और बड़ा मेहरबान पाते। क़सम है आपके रब की ये लोग ईमान ना लायेंगे जब तक वो अपने तनाज़आत में आपको मुनसिफ़ ना बना लें, और जो फ़ैसला आप फ़रमा दें उससे तंगदिल ना हों बल्कि उसको ख़ुशी से मान लें। (4:64-65)

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ

और आप उन की तरफ़ से कोई जवाब देही ना किया करें जो अपनी ही ज़ात से ख़्यानत करते हैं, बिला शुबह

خَوَّانًا اَثِيْمًا ۝ يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ وَ هُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ۝

अल्लाह उसको क़तई पसंद नहीं फ़रमाता जो बड़ा ख़्यानत करने वाला बड़ा गुनाह करने वाला हो। जो लोग आदमियों से डर कर अपने गुनाह छुपाते हैं लेकिन अल्लाह से नहीं शर्माते हालांके वो उस वक़्त उनके पास होता है, जब वो मर्ज़ी-ए-इलाही के ख़िलाफ़ गुफ्तगू के मुताल्लिक़ तदबीरें करते हैं, और अल्लाह उनके सारे आमाल अपने आहाते में पूरे तौर पर लिये हुए है। (4:107-108)

وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَ رَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَ مَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ۝

और अगर आप पर अल्लाह का फज्ल और रहमत ना हो तो उन लोगों में से एक गिरोह ने तो आप को ग़लती में डाल देने का इरादा कर लिया था और वो ग़लती में नहीं डास सकते मगर सिर्फ़ अपनी जानों को और आपको वो ज़र्रा भर नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, और अल्लाह ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाई हैं और आपको वो बातें बतलाई हैं, जो आप ना जानते थे, और आप पर अल्लाह का बड़ा फ़ज्ल है। (4:113)

وَ مَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَ يَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَ نُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ۝

और जो रसूल की मुखालिफ़त करेगा जबकि उस पर अम्रे हक़ ज़ाहिर हो चुका था, और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ते पर हो लिया तो हम भी उसको वो ही करने देंगे जो कुछ वो करता है, और हम उसको जहन्नुम में दाख़िल करेंगे और वो जगह जाने के लिए बहुत बुरी है। (4:115)

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝

अल्लाह ने आपको माफ़ कर दिया, आपने उनको इजाज़त क्यों दी, जब तक सच्चे लोग आपके सामने ना ज़ाहिर होते और झूटों को मालूम ना कर लेते। (9:43)

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ
اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ
اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ
اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ
اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩

और उनमें से बाज़ वो हैं जो आप पर सदक़ात की तक़सीम के बारे में ताअन करते हैं, सो अगर उनको (उनकी .ख़्वाहिश पर) अता हो तो .ख़ुश होते हैं और अगर उनको (उनकी .ख़्वाहिश के मुताबिक़) ना मिले तो वो नाराज़ हो जाते हैं। और अगर ये .ख़ुश रहते उस पर जो अल्लाह और उसके रसूल ने दिया था और कहते के हमें अल्लाह काफ़ी है, अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और रसूल अपनी मेहरबानी से हमें और दे देगा, और हम तो अल्लाह ही की तरफ़ राग़िब हैं। (9:58-59)

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ
هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ
بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ
لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦١

और उनमें से बाज़ ऐसे हैं जो नबी को ईज़ा देते हैं, और कहते हैं के आप हर बात कान देकर सुनते हैं, आप फ़रमा दीजिये, वो नबी कान देकर तो वो ही बात सुनते हैं जो .ख़ैर ही .ख़ैर है तुम्हारे हक़ में वो अल्लाह पर यक़ीन करते हैं, और मोमिनीन पर यक़ीन करते हैं और आप उन पर मेहरबानी करते हैं जो तुम में ईमान का इज़हार करते हैं और जो अल्लाह के रसूल को ईज़ा देते हैं उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है। (9:61)

لَقَدْ جَاۗءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ
بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢٨ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ڶ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝١٢٩

तुम ही में से तुम्हारे पास एक रसूल पहुंचे हैं जिनको तुम्हारी तकलीफ़ बड़ी गिरां गुज़रती है तुम्हारे नफ़े और भलाई की बड़ी .ख़्वाहिश रखते हैं, और मोमिनीन पर बड़ी शफ़्क़त और मेहरबानी रखते हैं। फ़िर अगर ये लोग फ़िर जायें (और ना मानें) तो कह दो के मुझे अल्लाह ही काफ़ी है, उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं, मैं ने उस पर भरोसा कर लिया, और वो ही अर्शे अज़ीम का मालिक है। (9:128-129)

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ

और आप सब्र कीजिये आपका सब्र करना अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है, और आप उन पर ग़म ना करें, और

عَلَيۡهِمۡ وَ لَا تَكُ فِیۡ ضَیۡقٍ مِّمَّا یَمۡکُرُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّ الَّذِیۡنَ هُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾	जो तदबीरें वो करते हैं उनसे भी तंग ना होजिये। और अल्लाह उनके साथ होता है जो (अल्लाह से) डरते हैं, और जो नेक काम करते हैं। (16:127-128)
لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفۡسَكَ اَلَّا یَکُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۳﴾	(ऐ रसूल) अगर ये इस कलाम (क़ुरआन) पर ईमान ना लायें तो शायद आप इनके पीछे रंज करते करते अपने आपको हलाक कर डालेंगे। (18:6 (और देखें 26:3)
وَ اصۡبِرۡ نَفۡسَكَ مَعَ الَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ رَبَّهُمۡ بِالۡغَدٰوۃِ وَ الۡعَشِیِّ یُرِیۡدُوۡنَ وَجۡهَهٗ وَ لَا تَعۡدُ عَیۡنٰكَ عَنۡهُمۡ ۚ تُرِیۡدُ زِیۡنَةَ الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا ۚ وَ لَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَهٗ عَنۡ ذِکۡرِنَا وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ وَ کَانَ اَمۡرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾	और आप अपने आपको उन लोगों के साथ रोके रखा करें जो सुबह व शाम अपने रब की इबादत महज़ उसकी रज़ा जुई के लिये करते हैं और दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक़ के ख़्याल में आपकी नज़र उनसे हटने ना पाये, और जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल बना दिया है, उसका कहना ना माना कीजिये और वो अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता है और उसका हाल हद से आगे बढ़ गया है। (18:28 (और देखें 35:52
اِنَّمَا کَانَ قَوۡلَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اِذَا دُعُوۡۤا اِلَی اللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ لِیَحۡکُمَ بَیۡنَهُمۡ اَنۡ یَّقُوۡلُوۡا سَمِعۡنَا وَ اَطَعۡنَا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵۱﴾	मोमिनीन की ये बात है के वो जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाये जाते हैं ताके वो उनमें फ़ैसला करें तो कहें हमने हुक्म सुन लिया और मान लिया, और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (24:51)
اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِاللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ وَ اِذَا کَانُوۡا مَعَهٗ عَلٰۤی اَمۡرٍ جَامِعٍ لَّمۡ یَذۡهَبُوۡا حَتّٰی یَسۡتَاۡذِنُوۡهُ ؕ اِنَّ الَّذِیۡنَ یَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ ۚ فَاِذَا	मोमिन तो वो हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाये, और जब कभी ऐसे काम के लिये जो जमा होकर करने वाला हो, पैग़म्बरे ख़ुदा के पास जमा हों तो उनसे इजाज़त लिये बग़ैर नहीं जाते, (ऐ नबी) जो आपसे इजाज़त हासिल करते हैं, वही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं, सो जब ये किसी काम के लिये आपसे इजाज़त मांगा करें, तो उनमें से आप जिसे चाहें

اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

इजाज़त दें, और उनके लिये अल्लाह से बख़्शिश मांगा करें, कोई शक नहीं के अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (मोमिनों!) तुम रसूल के बुलाने को ऐसा .ख्याल ना करो जैसा के तुम एक दूसरे को बुलाते हो, अल्लाह को मालूम है जो तुम में से आंख बचा चले जाते हैं, जो लोग रसूल के हुक्म की मुखालफ़त करते हैं, इनको .ख़ौफ़ करना चाहिये के ऐसा ना हो के कोई आफ़त उन पर आ पड़े, या उन पर दुख देने वाला अज़ाब नाज़िल हो जाए। (24:62-63)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾

मोमिनों! तुम उन लोगों की तरह ना होना जिन्होंने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अज़ीयत दी थी तो अल्लाह ने उनको बेऐब साबित कर दिया, और मूसा अल्लाह के नज़दीक बड़ी वजाहत वाले थे। (33:69)

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۖ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۗ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُم مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

मोहम्मद अल्लाह के रसूल है, और जो लोग उनके साथ हैं, वो काफ़िरों पर बहुत सख़्त हैं, और आपस में रहमदिल ऐ मुखातिब! तो उनको देखेगा तो उनको रूकू, सजूद और अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी .ख़ुशनूदी की तलब में मशग़ूल पायेगा सज्दों के असरात उनके चेहरों पर मौजूद हैं यही औसाफ़ तौरात और इंजील में लिखे गए हैं, के गोया एक खेती की मिस्ल हैं जिसने पहले ज़मीन से अपनी सूई निकाली, फ़िर वो मोटी हो गई, फ़िर वो अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई, और काश्तकारों को .ख़ुश करने लगी, ताके काफ़िरों का जी जलाये, उस गिरोह के जो लोग ईमान लाये, और नेक काम करते रहे उनसे अल्लाह ने मग़फ़िरत और बड़े अज्र का वादा फ़रमाया है। (48:29)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ
كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ
اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٢ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ
اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ
لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٣
اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ
اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤ وَ لَوْ اَنَّهُمْ
صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

ऐ ईमान वालों! तुम अपनी आवाज़ों को रसूल की आवाज़ से बुलंद ना किया करो, जिस तरह आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो उनके रूबरू ज़ोर से ना बोला करो, ऐसा ना हो के तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जायें और तुम को ख़बर भी ना हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के सामने दबी आवाज़ से बोलते हैं ये वो लोग हैं के अल्लाह ने उनके दिलों को तक़वे के लिये ख़ालिस कर दिया है, और उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सिला है। जो लोग तुम को हुज्रों के बाहर से आवाज़ देते हैं, उनमें अक्सर बेअक़्ल हैं। अगर वो सब्र किये रहते यहां तक के आप ख़ुद निकल कर उनके पास आते तो ये उनके लिये बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम वाला है। (49:2-5)

وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ
يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَ
لٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَ زَيَّنَهٗ
فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ كَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَ
الْفُسُوْقَ وَ الْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ نِعْمَةً ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

और जान लो! के तुम में अल्लाह के पैग़म्बर हैं, अगर वो बहुत सी बातों में तुम्हारा कहना मान लिया करें तो तुम मुश्किल में मुबतला हो जाओगे, लेकिन अल्लाह ने तुम्हारे लिये ईमान को अज़ीज़ बना दिया, और तुम्हारे दिलों में उसको ज़ीनत बख़्शी, और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिये नापसंदीदा बना दिया, यही लोग हिदायत की राह पर हैं। (यानी) ख़ुदा के फ़ज़्ल और एहसान से, और अल्लाह खूब जानने वाला और हिकमत वाला है। (49:7-8)

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤى ۝١ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝٢ وَ
مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰۤى ۝٣ اَوْ يَذَّكَّرُ
فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝٤ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝٥
فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ۝٦ وَ مَا عَلَيْكَ اَلَّا

(मोहम्मद मुस्तफ़ा) तुर्शरू हुए और मुंह फ़ेर लिया। ये के उनके पास एक नाबीना आया। और तुमको क्या ख़बर शायद वो पाकीज़गी हासिल करता। या नसीहत क़ुबूल करता तो ये नसीहत उसको मुफ़ीद होती। तो जो शख़्स (दीन से) बेपरवाई करता है। तो तुम उसकी फिक्र में तो पड़ जाते हो। हालांके तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं के वो

يَزَّكّٰىٓ ۙ﴿۷﴾ وَ اَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۙ﴿۸﴾ وَ هُوَ
يَخْشٰى ۙ﴿۹﴾ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّآ اِنَّهَا
تَذْكِرَةٌ ۚ﴿۱۱﴾

ना दुरूस्त हो। और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया। और वो (अल्लाह से) डरता है। तो आप उससे बेरूखी करते हैं। हरगिज़ ऐसा ना कीजिये, क़ुरआन तो महज़ एक नसीहत है। (80:1-11)

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ۚ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَكَ
لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ۚ﴿۳﴾ وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ
عَظِيْمٍ ﴿۴﴾

के (ऐ मोहम्मद (स.अ.स.) तुम अपने रब के फ़ज़्ल में दीवाने नहीं हो। और तुम्हारे ना ख़त्म होने वाला अज्र है। और तुम्हारे अख़लाक़ आला मेअयार पर हैं। (68:2-4)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल. किसी मर्द के पिता नहीं थे, यानि आपकी कोई नर औलाद (बेटा) नहीं था। हज़रत ख़दीजा से आपके जो बेटे हुए थे उनकी बचपन में ही मृत्यू हो गयी थी और ज़ैद बिन हारिसा को आप ने अपना मुंह बोल बेटा बनाया था (33:40)। लेकिन वास्तव में आप सभी ईमान वालों के लिए एक पिता की तरह निगरां और संरक्षक थे और उनके सरदार थे, इसी तरह आपकी पत्नियां सब ईमान वालों के लिए माँ समान (उम्महातुल मोमिनीन) थीं (33:6)। पैग़म्बर साहब और मोमिनों के बीच सम्बंधों में आपस के अधिकार और ज़िम्मेदारियां भी तय थीं। मोमिनों को शिक्षा दी गयी थी कि पैग़म्बर साहब की तरफ़ हमैशा ध्यान लगाए रखा करें, और आप से बहुत आदर व सम्मान से मिला करें (4:64-65,115; 24:51; 49:2-5,7-8), और ख़ुद पैग़म्बर सल्ल. मोमिनों के लिए हर समय चिंतित, दयावान और महरबान रहा करते थे (3:159; 9:43,61,128; 21:107; 49:7)। आप एक तरफ़ अल्लाह के नबी (पैग़म्बर) थे और दूसरी तरफ़ अल्लाह पर ईमान लाने वाली जमाअत के सरदार, और मदीना में आकर आप प्रथम इस्लामी राज्य के शासक बने।

बहुत से अरब, ख़ास तौर से रेगिस्तानों में रहने वाले बद्दू जो मक्का और मदीना जैसी बस्तियों के नागरिक जीवन के तौर तरीक़ों से अवगत नहीं थे, उन्हें वे संस्कार और ढंग नहीं आते थे जो ज़रूरी थे, और उन्हें दीन व दुनिया के मामलों में रहनुमाई (दिशा निर्देश) लेने के लिए अपने पैग़म्बर और सरदार के पास आने की ज़रूरत होती थी। वो अपने ग़लत कामों से तौबा करने और उनकी भरपाई के लिए भी आपके पास आते थे और आप से अपनी बख़्शिश के लिए दुआओं की गुहार करने भी आते थे (4:64-65; 9:90-91, 117-118)। उनके लिए ज़रूरी था कि वह आपको सही सही बात बताया करें और आपसे झूट न बोला करें (4:107-108,113; 49:6-8)। क़ुरआन की कई आयतों में उन लोगों को यह बात बार बार याद दिलाई गयी कि पैग़म्बर साहब की इताअत (अनुपालन) ही अल्लाह की इताअत है:''जो व्यक्ति

रसूल का आज्ञापालन करेगा तो बेशक उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया और जो नाफ़रमानी करे तो ऐ पैग़म्बर हमने तुम्हें उनका चौकीदर बना कर नहीं भेजा" (4:80), "जो चीज़ तुम को पैग़म्बर दें वह लेलो और जिससे मना करें (उस से) बाज़ रहो और अल्लाह से डरते रहो" (59:7)। उन्हें समझाया गया कि पैग़म्बर साहब जब अपने घर में आराम कर रहे हों तो घर के बाहर से आपको ऊंची आवाज़ से न पुकारा करें, न उनके साथ इस तरह से बात किया करें जैसे आपस में करते हैं, न आप से बातचीत करते समय अपनी आवाज़ आपकी आवाज़ से ऊंची किया करें (24:63; 49:2-5)। जब आप लोगों के साथ बैठक कर रहे हों और सार्वजनिक मुद्दों पर कोई बात चल रही हो तो अगर किसी को जाने की ज़रूरत हो तो इजाज़त लेकर जाया करें, यूं ही उठ कर न चल दिया करें (24:62-63)। वो लोग पैग़म्बर साहब के घर में आपकी इजाज़त के बग़ैर दाख़िल नहीं हो सकते थे, न उन्हें खाने के इंतेज़ार में देर तक पैग़म्बर साहब के घर में बैठ कर बतियाने की इजाज़त थी (33:53)।

इस्लाम मुसलमानों से बहतरीन अख़लाक़ व आदाब (आचार व संस्कार) का तक़ाज़ा करता है, ख़ास तौर से अपने पैग़म्बर और सरदार के साथ। ये आदाब अरब के क़बायली समाज में अल्लाह के दीन के द्वारा और पैग़म्बर साहब व मोमिनों के बीच सम्बंधों, तथा मोमिनों के आपस में एक दूसरे से मिलने की शिक्षाओं से विक्सित हुए। मुसलमानों से ज़ोर देकर यह कहा गया कि वो पैग़म्बर साहब के आदर्श को अपनाए:"अल्लाह के रसूल (के आचरण) में तुम्हारे लिए बहतरीन नमूना है (तो तुम्हें उनका ही अनुसरण करना चाहिए) हर उस व्यक्ति के लिए जिसे अल्लाह (से मिलने) और क़ियामत का दिन (आने) की उम्मीद हो और वह अल्लाह का बहुत ज़िक्र (अल्लाह के नामों व गुणों का जाप) करता हो (33:21)।

क़ुरआन के अनुसार अल्लाह के रसूल को कभी कभी अपने कुछ अनुयायियों के व्यवहार से दिक़्क़त होती थी, जो हमैशा उनकी अज्ञानता या संस्कारी न होने की वजह से ही नहीं होती थी। उदाहरण के तौर पर कुछ लोगों ने जिहाद के हुक्म को पूरा करने से बचने के लिए झूटा बहाना बनाया (9:42-57)। लड़ाई में हाथ लगने वाली शत्रु सम्पत्ति (माले ग़नीमत) के बंटवारे में पैग़म्बर साहब पर टिप्पणी कर देते थे या ज़कात देने में कंजूसी से काम लेते थे (9:58)। उनमें से कुछ कभी आपके उन सहाबियों (घनिष्ठ साथियों) से जलन भी होती थी जो आपके बहुत क़रीबी थे और जिन पर आप भरोसा करते थे, और पैग़म्बर साहब को यह सुनावट देदी कि आप उनकी बातों को बे सोचे समझे मान लेते हैं (9:61)।

जो लोग वास्तविक ईमान के बग़ैर ही मुसलमान बन गए थे, केवल इसलिए कि इस्लाम की बढ़ती हुई रफ़तार को देख कर उसके साथ हो जाएं और सम्भावित फ़ायदे प्राप्त करे, वो अल्लाह के पैग़म्बर के बारे में ईमान के उस स्तर पर नहीं थे जिसकी ईमान वालों से अपेक्षा की जाती है। वो पैग़म्बर और पैग़म्बर पर ईमान लाने वालों के बीच उस सम्मान व आदर का

लिहाज़ नहीं करते थे जो उन्हें करना चाहिए था। ऐसे ही लोग शंकाएं और शक फैलाते थे तथा मुस्लिम समाज और उसके सरदार को पहुंचने वाली चोट पट पर ख़ुश होते थे। अतःपैग़म्बर साहब के अनुयायियों को यह याद दिलाया गया कि वो हज़रत मूसा के अनुयायियों की तरह का व्यवहार न करें जिन्होंने अपने पैग़म्बर को तकलीफ़ दी और उनके विरुद्ध आक्रामकता पर उतर आए यहां तक कि अल्लाह ने उनकी रक्षा की और उन पर जो आरोप लगाए गए उन से हज़रत मूसा के बरी होने की घोषणा की (33:69)। मौजूद बाइबिल में है कि (और ख़ुदा ने कहा) मेरा बन्दा मूसा ... जो मेरा वफ़ादार है..... मैं उससे कलाम करता हूं.... क्या तुम मेरे बन्दे मूसा के ख़िलाफ़ बोलने से नहीं डरते। और उनके ख़िलाफ़ ख़ुदा का ग़ुस्सा भड़कता है ..'' [Numbers XII:6-9] ।

अल्लाह के पैग़म्बर और मुस्लिम उम्मत के सरदार तथा इस्लामी राज्य के शासक हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह की रहमत और दया का प्रतीक थे जो कि उनकी शिक्षा और संदेश का मूल तत्व और उनके मिशन का मौलिक उद्देश्य था (3:59; 21:10)। वो सभी लोगों से हमैशा नर्मी और महरबानी से मिलते थे, चाहे वो सच्चे मोमिन हों या मुनाफ़िक़ हों या दुशमन हों। उनका रवैया न तो दुष्ट होता था और न वह कठोर ह्रदेय के थे (3:59)।

एक पैग़म्बर की हैसियत से भी मुहम्मद साहब से कहा गया कि आप संयम, शालीनता और क्षमा व दया से काम लिया करें (5:13; 7:99; 15:85; 34:89), और मोमिनों की बख़्शिश के लिए अल्लाह से दुआ किया करें। आप से कहा गया कि सार्वजनिक मामलों में अपने साथियों से मशौरा किया करें, चाहे उनमें से किसी की नियत या चरित्र अच्छा न भी हो, और जब कोई फ़ैसला इस मशौरे के अनुसार कर लिया करें तो फिर उस मशौरे को पूरी तरह बिना किसी संकोच के लागू करें। उन्हें ताकीद की गयी कि मोमिनों में से किसी से कोई ख़ता हो जाए तो उनकी मआफ़ी के लिए अल्लाह से दुआ किया करें (4:64; 3:159)। अल्लाह ने उन लोगों को जो क्षमताएं और योग्यताएं दी थीं उन सब को आप स्तेमाल करते थे, और अपने विवेक से काम लेते हुए अल्लाह पर भरोसा करते थे, क्योंकि अल्लाह ही सारी क़ुदरतों का स्रोत है और उसी ने सब कुछ पैदा किया है।

अल्लाह के रसूल की इन सारी ज़िम्मेदारियों के बावजूद क़ुरआन बार बर इस पर ज़ोर देता है कि पैग़म्बर साहब एक इंसान थे, इंसानी भावनाएं रखते थे। लोगों के ईमान न लाने पर उन्हें दुख होता था, क्योंकि वह तो लोगों के हित में उन्हें अल्लाह की तरफ़ बुला रहे थे और अपना पैग़ाम पहुंचाने की ज़िम्मेदारी पूरी कर रहे थे (18:6; और देखें 26:3)। कभी क्षणिक रूप से आपका ध्यान शक्तिशाली और दौलत मन्द लोगों की तरफ़ हो जाता था ताकि वो आपके संदेश पर ईमान लाएं तो क़बायली समाज में उनके आधीन लोग भी उनके साथ ईमान ले आएं (18:28-29; और देखें 6:35,52; 80:1-11)।

अल्लाह के पैग़म्बर की प्रिय पत्नि और सहयोगी बीबी ख़दीजा का और बच्चे इब्राहीम का जब देहान्त हुआ तो आप बहुत अधिक दुखी हुए। आपने दर्द और दुख को व्यक्त किया लेकिन अपना संतुलन और आत्म नियंत्रण नहीं खोया, जैसा कि ख़ुद आपके शब्द हैः“आंखों में आंसू हैं और दिल बहुत दुखी है, लेकिन हम वह बात कभी नहीं कहते जो अल्लाह को ना पसन्द है” (हदीसःबुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल, इब्ने माजा)। आपके बेटे इब्राहीम की मृत्यू के समय जब सूरज को संयोग से ग्रहण लगा और कुछ लोगों ने यह समझा कि अल्लाह के पैग़म्बर के दुख में सृष्टि और प्र.ति भी शरीक है तो आप ने इस तरह के विचारों का खण्डन किया और तुरन्त ही मस्जिद में आकर ख़ुत्बा दिया किः“सूरज और चांद अल्लाह की निशानियां हैं, किसी की मृत्यू से और न किसी के जीवन के लिए उन पर ग्रहण लगता है” (हदीसःबुख़ारी, मुस्लिम इब्ने हंबल, अबुदाऊद, नसई, इब्ने माजा और अलदारमी)।

दूसरे इंसानों की तरह पैग़म्बर साहब को भी ग़ुस्सा आता था, जब आपकी पत्नि ने आपके भरोसे को तोड़ा और आपकी राज़ की बात एक दूसरी पत्नि को बता दी तो आपको बहुत दुख हुआ (66:1-5)। इस अवसर पर आपका ग़ुस्सा आपके चेहरे से भी और आपक व्यवहार से भी ज़ाहिर हुआ, और कुछ लोगों को लगा कि आप ने शायद अपनी पत्नियों को तलाक़ दे दी है क्योंकि उन्हें ठीक तरह से यह पता नहीं था कि पैग़म्बर साहब की भेद वाली बात किस ने खोली है (66:2-5)। जब आपका चाचा और बराबर की उम्र वाले साथी हज़रत हमज़ा को उहुद की लड़ाई में दुशमनों ने मार डाला तो भी आपको बहुत दुख हुआ और अत्यधिक क्रोध आयाःःःऔर अगर तुम उनको तकलीफ़ देना चाहो तो उतनी ही तकलीफ़ दो जितनी तकलीफ़ तुम्हें उनसे पहुंची है और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत ही अच्छा है। और सब्र ही करो और तुम्हारा सब्र भी अल्लाह ही की मदद से है और उनके बारे में ग़म न करो और जो यह बद अंदेशी करते हैं उससे तंग दिल न हो। कुछ शक नहीं कि जो परहेज़गार हैं और जो अहसान करने वाले हैं अल्लाह उनका मददगार है” (16:126-128)। एक और अनिवार्य गुण जो पैग़म्बर के लिए ज़रूरी होता है और ख़ास तौर से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अन्दर था वह था “सब्र” अर्थात धैर्य व संयम। क़ुरआन में 80 जगह सब्र करने की प्रेरणा दी गयी है। पैग़म्बर से कहा गया कि सब्रे जमील (उत्तम धीरज) से काम लें (70:5), और पिछले नबियों के सब्र को याद दिलाया गयाःः“तो (ऐ मुहम्मद) जिस तरह और साहसी पैग़म्बर सब्र करते रहे हैं उसी तरह तुम भी सब्र करो” (46:35)। अल्लाह पैग़म्बर की निगरानी और रक्षा करता है, जो भी कठिनाइयां और ख़तरे पैग़म्बर साहब के सामने आए उन सब से निकल आने के लिए अल्लाह की मदद पर्याप्त हैः“और तुम अपने रब के हुक्म के इंतेज़ार में सब्र किए रहो तो हमारी आंखों के सामने हो और जब उठा करो तो अपने रब की वन्दना के साथा उसका गुणगान किया करो” (52:48), “तो (ऐ मुहम्मद) जिस तरह और साहसी पैग़म्बर

सब्र करते रहे हैं उसी तरह तुम भी सब्र करो" (46:35)।

इसके अतिरिक्त यह कि क़ुरआन पैग़म्बर को और उन पर ईमान लाने वालों को यह प्रेरणा देता है कि हक़ (सत्य) और सकारात्मक इंसानी सम्भावनाओँ के बारे में आश्वस्त रहें:"तअज्जुब नहीं कि अल्लाह तुम में और उन लोगों में जिनसे तुम दुशमनी रखते हो दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह क़ादिर है और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। जिन लोगों ने तुम से दीन के बारे में लड़ाई नहीं की और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई और न्याय क व्यवहार करने से अल्लाह तुम को मना नहीं करता। अल्लाह तो न्याय करने वालों को दोस्त रखता है (60:7-8)। अल्लाह पर, अपने संदेश पर और सकारात्मक इंसानी सम्भावनाओँ पर विश्वास ही था कि जब आपसे कहा गया कि अल्लाह से अपने दुशमनों की बर्बादी की दुआ करें तो आप ने फ़रमाया कि:"मैं दयावान बना कर भेजा गया हूं कष्टदायक बना कर नहीं भेजा गया। हो सकता है कि अल्लाह इनकी पीढ़ियों में से ऐसे लोग उठाए जो केवल एक अल्लाह की इबादत करने वाले हों। ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को सीधा रास्ता दिखा, वो जानते नहीं हैं" (हदीस:बुख़ारी, मुस्लिम)।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नैतिक आचरण और चरित्र को क़ुरआन ने इन शब्दों में बयान किया है:"लोगो तुम्हारे पास तुम ही में से एक पैग़म्बर आए हैं, तुम्हारी तकलीफ़ उनको भारी लगती है और तुम्हारी भलाई के बहुत इच्छुक रहते हैं और ईमान वालों पर बहुत ही दया करने वाले (और) महरबान हैं" (9:128), "बेशक आप उत्तम नैतिक आचरण वाले हैं" (68:4)। जब पैग़म्बर साहब की पत्नि आयशा से पैग़म्बर साहब के नैतिक आचरण के बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि आपका आचरण और चरित्र क़ुरआन की शिक्षाओं का व्यवाहारिक नमूना था (इब्ने सअद, अलतबक़ात, बैरूत 1978)।

तमाम पैग़म्बरों का एक ही संदेशः अल्लाह के आगे समर्पण

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۠ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝

हाँ ये हक़ीक़त है जो अल्लाह के सामने झुकेगा, और वो मुखलिस भी हो। उसके लिए अपने रब के पास उसका बदला है उनके लिए ना कोई .ख़ौफ़ होगा और ना ग़मो रंज। (2:112)

क़ुरआन के अनुसार इस्लाम का व्यापक अर्थ बस यह है कि इंसान अपनी सभी इच्छाओं को अल्लाह की मर्ज़ी का पाबन्द कर ले और उसके दिशा निर्देशों के आगे आत्मसमर्पण कर दे, और आखरित में अल्लाह के सामने अपने सभी कर्मों की जवाबदेही का यक़ीन रखे। इस

तरह इस्लाम केवल कुछ ख़ास रस्मों और कर्मकाण्ड का नाम नहीं है। अल्लाह के सभी पैग़म्बरों ने जिनमें मुहम्मद सल्ल. आख़री हैं, अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण का ही आग्रह किया, और हर इंसान अपनी नियत और इच्छा के मुताबिक़ और अपने ज्ञान, योग्यताओं व परिस्थितियों के साथ अल्लाह के आज्ञाकारी बन्दों में शामिल हो सकता है। अल्लाह के आदेश व निर्देश का पालन और उसके नियमों की पाबन्दी इस समूची सृष्टि में और इसके अन्दर सांस लेने वाले सभी प्राणियों की शरीरिक भाषा से व्यक्त है (3:83; 13:15; 17:44; 24:41), जबकि इंसान को ख़ुद अपनी इच्छाशक्ति से अपनी अक़्ल और आचार विचार की आज़ादी के साथ अल्लाह के आगे झुक जाने और उसकी बन्दगी को व्यक्त करने की योग्यता दी गयी है। अल्लाह ने इस दुनिया में जो शक्तियां व योग्यताएं बख़्शी हैं उनके लिए, और पैग़म्बरों के द्वारा जो शिक्षाएं उसे दी गयी हैं उनके सम्बंध में अपने रवैये के लिए वह आख़िरत में जवाबदेह है। जो कोई इंसान इस शिक्षा के अनुसार अपनी शक्ति और योग्यता को सकारात्मक रूप से अमल में लाता (क्रियान्वित करता) है और सही आचरण को अपनाता है वह अल्लाह की बन्दगी कर रहा होता है (2:112,208; 3:83; 4:125; 6:71; 16:81; 22:34; 31:22; 39:54; 72:214)।

وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۲۸﴾

और जब इब्राहीम और इसमाईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊँची कर रहे थे तो ये दुआ भी करते जाते थे के ऐ हमारे रब! ये हमारी ख़िदमत मंज़ूर फ़रमा, बिलाशुबह तू .ख़ूब सुनने वाला और .ख़ूब जानने वाला है। ऐ हमारे रब! तु हमको फ़रमाँबरदार बनाए रख! और हमारी औलाद में से भी एक जमाअत को अपना मतीअ बना। और हमें अपनी इबादत के तरीक़े सिखा दे, और हमारी तरफ़ अपनी रहमत से तवज्जह फ़रमा, बिलाशुबहः तू अपने बन्दों पर तवज्जोह फ़रमाता है और अपनी रहमतों से नवाज़ता है। (2:127-128)

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ وَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ

जब उनके रब ने उनसे फ़रमाया के इस्लाम ले आओ, तो कहा दुनिया जहान के रब के आगे अपना सर .ख़म करता हूँ। और इब्राहीम ने अपने बेटों को इस बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी, ऐ बेटों! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसंद किया है, तो तुम मरना नहीं मगर मुसलमान ही मरना। क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे

الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي ۖ قَالُوا نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

जब याक़ूब वफ़ात पाने लगे, जब याक़ूब ने अपने बेटों से कहा तुम मरे बाद किस की बंदगी किया करोगे? तो सब ने यही कहा के आपके माबूद की, और आप के बाप दादा इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के माबूद की बंदगी करेंगे जो माबूद यकता है, और हम उसी के हुक्म की इताअत करेंगे। (2:131-133)

इन आयतों में इस हक़ीक़त पर ज़ोर दिया गया है कि अल्लाह के आगे आत्म समर्पण अर्थात इस्लाम अल्लाह के पिछले सभी पैग़म्बरों का भी अक़ीदा रहा है, जिसकी तरफ़ उन्होंने अपनी क़ौमों को बुलाया। यह कोई नया अक़ीदा नहीं है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जारी किया हो, बल्कि पिछले सभी पैग़म्बरों और रसूलों हज़रत इब्राहीम और उनके बेटे इस्माईल व इस्हाक़ का भी यही अक़ीदा था जो अरब वासियों और इस्राईलयों के परम पूर्वज थे। एक अल्लाह पर ईमान और अपने आप को पूरी तरह उसके आगे समर्पित कर देना और उसकी हिदायत को पूरी तरह स्वीकार कर लेना किसी क़बीले या नस्ल तक सीमित नहीं रह सकता, वह समूची सृष्टि का रब है और सभी इंसानों को उसे अपना रब मानना चाहिए और उसकी इबादत करना चाहिए। इस लिहाज़ से इस्राईली और अरब वासी और अन्य सभी लोग जो बराबर से उसकी नेअमतों से लाभान्वित होते हैं, सब को अपना सब कुछ अल्लाह के आगे प्रस्तुत कर देना चाहिए और उसका आभारी हो कर उसके मार्गदर्शन का अनुसरण करना चाहिए। इसके लिए वो आख़िरत के अनन्त जीवन में उसके समक्ष जवाबदेह होंगे। फ़ैसले के दिन हर व्यक्ति का फ़ैसला होगा और हर व्यक्ति क उसकी अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने कर्मों का बदला मिलेगा (19:95), किसी विशेष वर्ग या समुदाय का सदस्य होने के आधार पर नहीं। यह समस्त जगतों के पालनहार अल्लाह के पैग़ाम का सार है जो विभिन्न युगों में और विभिन्न जगहों पर सारी इंसानियत को दिया गया है।

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

तुम कहो के हम अल्लाह पर यक़ीन लाए हैं और उस पर जो हमारे ऊपर उतरी है, और नीज़ उस पर जो इब्राहीम और इसमाईल, औ इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िली हुई हैं, और उस पर भी जो मूसा और ईसा पर उतरी हैं, और उस पर भी जो दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से मिली हैं, और हम उन सब रसूलों में कोई फ़र्क़ नहीं करते, और हम सब उसी एक ही ख़ुदा की इताअत करते हैं। (2:136)

चूंकि अल्लाह के संदेश का मूल तत्व यही है जो सभी पैग़म्बरों के द्वारा पूरी इंसानियत को दिया गया है अर्थात अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण और उसकी बन्दगी करना जिसे अरबी में इस्लाम कहा जाता है, इसलिए मुहम्मद सल्ल. के अनुयायि इसी आस्था पर अमल करते हैं और अल्लाह की पिछली किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं, और उनमें कोई भेद नहीं करते। अल्लाह ''रब्बुल आलमीन'' (तमाम जगतों का रब) है और उसका पैग़ाम एक ही है। यह मानना कि इन ख़ुदाई पैग़ामों में केवल एक ही पैग़ाम अल्लाह का पैग़ाम है और बाक़ी को अहंकार के साथ रद कर देना और उससे दुशमनी रखना अल्लाह की वहदानियत (एक होने की आस्था) और उसके संदेश की वास्तविकता से दूर कर देता है, और अल्लाह व उसकी हिदायत के आगे सिर झुकाने से रोकता है।

آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَ
الْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَ
كُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن
رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से रसूल पर नाज़िल हुई है (यानी क़ुरआन) उस पर रसूल को और तमाम मोमिनीन को पूरा अक़ीदा है। सबके सब अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर अक़ीदा रखते हैं, कि हम अल्लाह के रसूलों में से किसी में तफ़रीक़ नहीं करते। और उन सब ने यही कहा के हमने आपका कलाम सुना हम ने ख़ुशी से इताअत की हम तेरी बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब! और आप ही की तरफ़ लौटना है। (2:285)

यह आयत इस बात पर ज़ोर देती है कि अल्लाह के सभी पैग़म्बर जिस दीन (धर्म) को लेकर आए वह एक ही दीन है और यह एक ऐसी मान्यता है जिससे अल्लाह और उसके फ़रिशतों पर ईमान को अलग नहीं किया जा सकता। ईमान वाले लोग मुहम्मद सल्ल. का अनुसरण इसी दीन में करते हैं और अपने आप को अल्लाह की बन्दगी में देते हैं और उसकी हिदायत का अनुसरण करते हैं, और इसी लिए उन्हें मुसलमान कहा जाता है क्योंकि मुसलमान का मतलब अरबी भाषा में आत्मसमर्पण या अनुपालन ही होता है।

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ
أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ
أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا
مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

जब हज़रत ईसा ने महसूस किया कि उनमें से कुछ ने इनकार कर रखा है तो आपने फ़रमाया कि ये कौन ऐसे आदमी हैं जो मेरे मददगार बन जायें सिर्फ़ अल्लाह के लिए, तो हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के दीन के मददगार, हम अल्लाह ही पर ईमान लाय और आप

गवाह रहें हमारे के हम फ़रमांबरदार हैं। (3:52)

जिस तरह इब्राहीम और इस्माईल व इस्हाक़ और याक़ूब (उन सब पर सलामती हो) और उनकी संतानें (''अलअस्बात'') ने एक अल्लाह और उसकी हिदायत के आगे आत्मसमर्पण पर ज़ोर दिया और अरबी भाषा में शब्द मुस्लिम के सामान्य अर्थों के अनुसार मुंसलमान कहलाए गए उसी तरह हज़रत ईसा के शिष्यों ने भी अपनी आस्था की पहचान के लिए ऐसा ही शब्द प्रयोग किया। हालांकि कुछ लोग मुस्लिम शब्द को मुहम्मद सल्ल. पर उतरने वाले अल्लाह के दीन को अपनाने वाले लोगों के लिए स्तेमाल करते हैं लेकिन इस शब्दावली का अर्थ भाषाई और कल्पनात्मक रूप से केवल यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि यह उन सभी लोगों पर पूरा उतरता है जो स्वयं को अपनी मर्ज़ी से अल्लाह और उसकी हिदायत के आगे समर्पित कर देते हैं।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ
يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ
عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا
نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ
دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ
مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾

क्या ये काफ़िर अल्लाह के दीन के सिवा दूसरे दीन की तलाश में हैं, हालांकि सब उसी के फ़रमांबरदार हैं जो भी आसमानों और ज़मीन में हैं.ख्वाह .खुशी से.ख्वाह ज़बरदस्ती से, और उसी की तरफ़ वापस जाने वाले हैं। इस तरह कहो के हम अल्लाह पर ईमान लाए और जो किताब हम पर उतरी, और जो सहीफ़े इब्राहीम, इसमाईल इसहाक़, याक़ूब और उनकी औलाद पर उतरे, और जो किताबें मूसा, ईसा, और दूसरे अंबिया पर उतरीं (उनके रब की तरफ़ से) हम उनमें से किसी नबी में कोई फ़र्क़ नहीं करते और हम सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। और जो इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा उससे हरगिज़ क़बूल किया जाएगा, और वो ही आख़िरत में नुक़सान उठाने वाला होगा। (3:83-85)

उपर की आयत में से पहली आयत यह सच्चाई बयान करती है कि अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण अर्थात इस्लाम उसकी सभी रचनाओं से अभिव्यक्त है, चाहे प्रा.तिक नियमों के अन्तर्गत पाबन्द रहते हुए और उसकी बनाई हुई प्रवृत्ति के अनुसार क्रियाएं करते हुए जैसा कि इंसान सहित सभी जीव जन्तु करते हैं, या अपनी इच्छा और इरादे से जैसा कि ख़ास तौर से इंसान को अधिकार दिया गया है कि वह अपनी बौद्धिक व अध्यात्मिक क्षमताओं से काम लेते हुए यह रवैया अपनाए। इंसान का अपनी मर्ज़ी से अल्लाह के आगे झुकना और उसके

मार्गदर्शन को अपनाना एक ऐसी आस्था और धर्म है जो इंसान में भौतिक और नैतिक संतुलन, स्थिरता, शान्ति, आनन्द और सफलता को सुनिश्चित करता है, दुनिया के इस जीवन में भी और आख़िरत के अनन्त जीवन में भी। इसके विपरीत इंसान और उसके पैदा करने वाले के बीच इस प्रा.तिक सम्बंध को नज़रअंदाज़ करने या अहंकार के साथ उसे रद कर देने से इस दुनिया में व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर भौतिक और मानसिक उथलपुथल पैदा होती है और भविष्य के अनन्त जीवन में इससे बड़ी वंचिता और विनाश की आशंका है।

وَ مَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ وَّ اتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَ اتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾

और उससे अच्छा और किस का दीन होगा जो अपना रूख अल्लाह की तरफ़ करे, और वो मुख़्लिस भी हो, और वो मिल्लते इब्राहीम (अ.स.) का इत्तेबा करे जिसमें कजी का नाम ना हो, और अल्लाह ने इब्राहीम को .ख़ालिस दोस्त बनाया था। (4:125)

यह आयत इस बात को उजागर करती है कि अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण और उसकी हिदायत का अनुसरण सभी पैग़म्बरों की शिक्षा और आस्था पर ईमान को ज़ाहिर करता है। हज़रत इब्राहीम जिन्हें अल्लाह ने अपना प्रिय (''ख़लील'') घोषित किया था (4:125), एक अल्लाह पर ईमान का ऐसा नमूना थे जिसका अनुसरण अल्लाह के सभी पैग़म्बरों और उनकी शिक्षाओं पर ईमान रखने वाले सभी लोगों को करना चाहिए। क़ुरआन में यह बात ज़ोर देकर कही गयी है कि मुहम्मद सल्ल. तो इब्राहीम के तरीक़े का ही अनुसरण करते हैं (2:30,135-136; 3:68,84,95-97; 4:125; 6:161; 16:120-123; 22:78; 33:7; 42:13; 60:4)। मुहम्मद सल्ल. के अनुयायि दिन में कई बार अपनी नमाज़ों में हज़रत इब्राहीम का नाम लेते हैं और उनके हवाले से अपने लिए रहमत की दुआ करते हैं।

وَ اِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَ بِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَ اشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

और जब मैंने हव्वारियीन को हुक्म दिया, के मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान ले आओ, तो उन्होंने कहा के हम ईमान ले आए और आप गवाह रहें के हम पूरे फ़रमांबरदार हैं। (5:111)

देखें आयत 3:52 पर उपर की गयी व्याख्या

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ هُوَ يُطْعِمُ وَ لَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ

आप कह दीजिये, क्या मैं अल्लाह के सिवा जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, और कोई उसको

اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۴﴾

खाने को नहीं देता, किसी और को माबूद बनाऊँ आप कह दीजिये के मुझे तो ये हुक्म है के मैं सबसे पहले इस्लाम क़बूल करूं और तुम मुशरिक़ीन में से हरगिज़ ना होना। (6:14)

अल्लाह के आगे आत्मसमर्पण और उसकी बन्दगी इंसान और उसके पैदा करने वाले रब जो कि समूची सृष्टि का जनक है के बीच एक स्वभाविक और अनिवार्य सम्बंध है। उसने इंसान को तरह तरह की बहुत सी योग्यताओं और शक्तियों के साथ पैदा किया हे और उसे ऐसे साधन उपलब्ध कराए हैं जो इस दुनिया में उसकी सभी इंसानी ज़रूरतों को पूरा करते हैं, साथ ही इंसान को वह आवश्यक अक़ल दी गयी है जिसको स्तेमाल करके वह उन साधनों को काम में लाता है और उनसे प्राप्त होने वाली चीज़ों को उचित रूप से वितरित कर सकता है, और उन संसारिक ससाधनों तथा ख़ुद इंसानी क्षमता को अल्लाह के दिशा निर्देश के अनुसार विक्सित कर सकता है। उसका संरक्षण और निगरानी इंसान को अपनी तरफ़ आकर्षित करती है और यह प्रेरणा देती है कि इंसान अपने पैदा करने वाले को पहचाने, और जनक व जनित के बीच जो अन्तर है उसे समझे। इंसान यह देखे कि पैदा करने वाले की हस्ती तो बिल्कुल बे नियाज़ है उसे किसी दूसरे की ज़रूरत नही, जबकि इंसान और अन्य सभी जीव जन्तु पैदा करने वाले पर ही आश्रित हैं, उसके बनाए हुए प्रा.तिक नियमो से बंधे हैं, और ख़ुद इंसान उसके मार्गदर्शन का मोहताज है। केवल एक अल्लाह की बन्दगी इंसानी बुद्धि और इंसान की व्यक्तिगत व सामाजिक नैतिकता की रक्षा करती और उसे बढ़ने का रास्ता दिखाती है।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۶۳﴾

आप कह दें के बिला शुबह मेरी नमाज़, मेरी सारी इबादत, मेरा जीना, और मेरा मरना, ये सबकी सब अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का मालिक है। उसका कोई शरीक नहीं हैं और उसी का मुझको हुक्म हुआ है, और मैं मानने वालों में सबसे पहला हूँ। (6:162-163)

यह अल्लाह की बन्दगी की एक मौखिक प्रतिज्ञा (ज़बानी इक़रार) है जो इंसान को व्यवहारिक रूप से अल्लाह का बन्दा और आज्ञाकारी बनने की तरफ़ ले जाती है और न केवल इबादत बल्कि सभी संसारिक मामलों में जीवन भर यानि मौत आने तक चलते रहने का रास्ता दिखाता है। अल्लाह की बन्दगी और उसकी हिदायत की पाबन्दी का जज्बा मोमिन को ऐसी हर प्रेरणा और डर से दूर करता है जो उसे अल्लाह की हिदायत से फेर ले जाए जोकि उसे अपने दीन से मिलती है और नैतिकता की इंसानी कल्पना से ज़ाहिर होती है।

وَ قَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ
بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ
مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

और मूसा (अ.स.) ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आए हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम फ़रमांबर्दार हो। (10:84)

अल्लाह पर ईमान रखने वालों के लिए यह एक प्रा.तिक और तार्किक बात है कि वो उस पर भरोसा रखें, और जीवन में जो कुछ भी कठिनाइयां आएं उनमें उसके दिशा निर्देश का पालन करें। इस दुनिया में उसकी मदद व हिमायत और आख़िरत के अनन्त जीवन में उसका इनाम हर तरह के दबाव से उपर हो। अल्लाह पर आश्रित होना और उस पर भरोसा करना उस पर ईमान का अनिवार्य तक़ाज़ा है जो कि समूची सृष्टि का रब है, सर्वशक्तिमान है और ज़बरदस्त व महान है।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَ عَلَّمْتَنِيْ
مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۚ
تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

उनके क़िस्सों में अक़्ल वालों के लिये इबरत है, ये क़ुरआन तराशी हुई बात नहीं है, बल्के इससे पहली किताबों को तसदीक़ करता है, और हर चीज़ को खोल कर बयान करता है, और जो ईमान लाते हैं उनके लिये हिदायत और रहमत का ज़रिया है। (12:101)

यह हज़रत यूसुफ़ (जोज़फ़) का ज़िक्र है जिन्होंने अल्लाह के बन्दे बन्ने का प्रण लिया और अल्लाह से दुआ की कि वह अपनी सहायता और सहारे से उन्हें अपने ईमान पर जमे रहने वाला बनाए और अन्तिम सांस तक सही कर्म (अनुपालन के रास्ते पर चलते रहने) पर लगाए रखे और फिर आख़िरत में वह स्वॉलिहीन (सदकर्मियों) में शामिल हों। सच्चा मोमिन अल्लाह पर भरोसा करता है, वह उससे मदद व हिमायत की दुआ करता है और उसकी हिदायत पर चलता है, और इस तरह यह ईमान इंसानी अख़लाक़ और व्यवहार पर अपने प्रभाव डालता है और मोमिन को संतोष व संयम देता है।

وَ جَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ
اجْتَبٰىكُمْ وَ مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ
مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ
سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَ فِيْ هٰذَا

और अल्लाह की राह में जिहाद करो, जैसा के जिहाद का हक़ है, उसने तुम को चुन लिया है, और तुम पर दीन की कोई तंगी नहीं की, अपने बाप इब्राहीम के दीन पर क़ायम रहो, उसी ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, पहले भी और इस किताब में भी, ताके रसूल तुम्हारे बारे में

لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا
شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ
اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ
فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَ نِعْمَ النَّصِيْرُ ۝۷۸

गवाह रहे, और तुम लोगों के बारे में गवाह रहो, तो तुम लोग नमाज़ पाबंदी से पढ़ा करो, और ज़कात अदा किया करो, और अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़े रहो, वही तुम्हारा कारसाज़ है तो कैसा ही अच्छा कारसाज़, और कैसा ही अच्छा मददगार। (22:78)

यहां भी क़ुरआन इस बात पर ज़ोर देता है कि जिन्होंने अपने आपको अल्लाह की बन्दगी में दे दिया या मुसलमान बन गए वह कोई नया ईमान और नई आस्था नहीं अपना रहे हैं बल्कि उसी ईमान व आस्था को अपना रहे और व्यक्त कर रहे हैं जिसकी तरफ़ अल्लाह के सभी पिछले पैग़म्बरों ने अपनी क़ौमों को बुलाया था। उसी की तरफ़ हज़रत इब्राहीम ने लोगों को बुलाया और उसी की तरफ़ हज़रत मुहम्मद साहब ने दावत दी।

❁ ❁ ❁